इस्लामी
तारीख़े आलम
लेखक सुग़रा बशीर क़ादरी
प्रकाशक
हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बज़्में ख़्वातीन
मुकुन्द नगर, अहमद नगर, महाराष्ट्र
रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6

अस्सलातु वस्सलामु अलैका या रसूलुल्लाह
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

नायाब इस्लामी मालूमाती ख़ज़ाना

इस्लामी
तारीख़े आलम

लेखिका

सुग़रा बशीर क़ादरी

सदर : हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बज़्मे ख़्वातीन
सदर मुअल्लिमा मदरसा हज़रत आइशा तालीमुल-बनात
मुकुन्द नगर, अहमद नगर, महाराष्ट्र

प्रकाशक

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बज्मे ख़्वातीन
मुकुन्द नगर, अहमद नगर, महाराष्ट्र

रज़वी किताब घर
425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फ़ोन : 011-23264524

नाम किताब : इस्लामी तारीख़े आलम

लेखक : सुग़रा बशीर क़ादरी

बइहतमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली–6

प्रूफ़–रीडिंग : मंज़ूरुल–हक़ जलाल निज़ामी

हिन्दी एडीशन : पहली बार 2011

प्रकाशक : हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बज़्मे ख़्वातीन
रज़वी किताब घर, दिल्ली – 6

पेज : 400

तादाद : 1100

क़ीमत : 140

विषय सूची

उनवानात	सफ़ा

दूसरा बाब

तीसरा बाब

उनवानात	सफ़ा
हज़रत लूत अलैहिस्सलाम	80
हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम	80
हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम	81
हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम	82
हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम	84
हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम	88
हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम	89
हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम	89
हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम	92
हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम	92
हज़रत जुल–क़रनैन	93
हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम	94
हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम	95
हज़रत शमऊन अलैहिस्सलाम	96
हज़रत ज़करिया और यहिया अलैहिमुस्सलाम	96
हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम	98
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम	103
हज़रत मरयम अलैहस्सलाम	106

पाँचवां बाब

नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम	108
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से क़बल...	109
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुनिया में तशरीफ़ आवरी	110
वालिद का इंतिक़ाल	111
नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सिलसिल–ए–नसब	111
दोनों ख़ानदान में मआ़रका आराई	112
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के – सिलसिल–ए–नसब के अस्मा	112
हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घराना	112

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा
	202

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा

उनवानात	सफ़ा
अट्ठारहवां बाब	
निकाह का बयान	333
निकाह के लिए मुस्तहब बातें	333
निकाह के लिए गवाह	333
निकाह के लिए इज़्न और वकालत	334
मुहर्रिमात यानी जिन से निकाह हराम है	334
मुहर का बयान	334
तलाक़ का बयान	335
तलाक़ की शरई इजाज़त	335
तलाक़ के लिए शराइत	335
तलाक़ की इद्दत	336
इद्दत के शराइत	336
हामिला की इद्दत	337
हलाला	337
बेवह की इद्दत	338
उन्नीसवां बाब	
उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ७३ फ़िर्क़े	339
चन्द फ़िरक़ों की मुख़्तसर मालूमात	339
बीसवां बाब	
इल्म का बयान	345
इल्म की फ़ज़ीलत	345
क़ुरआन का इल्म	346
नुक़्ता "ब" की हिकमत	347
हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का इल्म	348
हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की तेज़ रफ़्तारी	348
यौमुल–मीसाक़ (अहद का दिन)	349
जिस्म और रूह	350
रहमते ख़ुदावन्दी	351
नेक बन्दों पर अज़ाब	352
नेकी का फल	352
नुस्ख़ा–ए–कीमिया	352
इल्म की प्यास	353
मुक़द्दस महफ़िल	353

उनवानात	सफ़ा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
अस्सलातु वस्सलाम अलैका या रसूलुल्लाह!

इंतेसाब

मैं अपनी किताब **"तारीख़े आलम"** हुसूले सवाब के लिए सरवरे काइनात रिसालते मआब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अंबियाए किराम, अह्ले बैते रसूले मक़्बूल, ख़ुलफ़ाए राशिदीन, सहाबा किराम, शुहदाए किराम, सहाबियात, अइम्मा किराम, मुहद्देसीन, मुफ़स्सेरीन, मुज्तहेदीन, कातेबीन, औलियाए किराम, सिलसिल–ए–क़ादरीया, चिश्तीया, नक़्श बन्दिया, सुहरवर्दिया, बन्दा नवाज़िया, रज़वीया और मेरे वालिदैन को नज़्र करती हूं।

दुआ की तालिबा
सुग़रा बशीर क़ादरी

इज़हारे ख़्याल

नहमदुहू वनुसल्ली अला रसूलेहिल–करीम।

किताब **"इस्लामी तारीख़े आलम"** का मुसव्वदा पेशे नज़र हुआ, अहक़र को सफर और वक़्त की तंगी दामनगीरी रही इसलिए बिल–इस्तीआब मुताला का मौक़ा मयस्सर न आया। अल्बत्ता चौदह चौदह मक़ामात को मुलाहिज़ा किया, अबवाब की तरतीब और उनवानाते मज़ामीन की फेहरिस्त को देखने के बाद यह महसूस हुआ कि मोहतरमा सुग़रा बशीर क़ादरी साहिबा ने बहुत सारी कुतुबे दीनीया व रसाइल के वसीअ़ मुताले और छान बीन के बाद यह किताब तरतीब दी है। इस लिहाज़ से मुअल्लिफ़ा क़ाबिले सताइश व मुबारकबाद की मुस्तहिक़ हैं।

मौसूफ़ा ने ख़िदमते ख़ल्क़ और इशाअते सुन्नियत को अपना शिआर बना लिया है जिसके लिए अपनी मताअ़े हयात लगा दी। यही वह जज़्ब–ए–ख़िदमते दीन था जिस ने आपको इज़्दवाजी बंधन में बंधने से माने रखा। आपने अपनी हयाते मुस्तआर को लिखने पढ़ने के अलावा दीनी इदारा बनाम **"मदरसा आइशा निसवां"** अहमद नगर की निगरानी में लगा दिया। माशाअल्लाह।

दुआ है रब्बे क़दीर उनकी जुमला मसाई जमीला व ख़िदमाते दीनीया को शर्फ़े कुबूलियत बख़्शे और मोहतरमा की मुरतबा किताब **"इस्लामी तारीख़े आलम"** को कुबूले आम बनाए। आमीन बजाह सैयदुल–मुरसलीन अलैहित्तहीया वत्तस्लीम।

अख़ीर में यह बताना ज़रूरी समझता हूं कि यह किताब इस्लामी तारीख़ी मालूमात का इंसाइक्लोपेडिया है, जिस में इस्लामी मालूमात का बेश बहा क़ीमती ख़ज़ाना है। जिसके मुताला से तलबा व तालिबात और आम इंसान भी भर पूर फाइदा हासिल कर सकता है। उम्मीद क़वी है कि लोग इस किताब को हाथों हाथ लेकर मुअल्लिफ़ा की हौसला अफ़्ज़ाई फरमाएंगे, उनके लिए तोश–ए–बख़्शिश व मग़्फ़िरत फरमाएंगे। इन्शाअल्लाह।

फ़क़त ख़ादिमुल–इल्म वल–उलमा
क़ाज़ी मुहम्मद इब्राहीम मक़्बूली
प्रिंसिपल दारुल उलूम इमाम अहमद रज़ा, कोकन, रतनागीरी

अर्ज़े मुअल्लिफ़ा

मोहतरम कारेईन! इंसान की फ़ितरत होती है कि वह दुनिया की अजीब व ग़रीब चीज़ों की खोज व जुस्तजू में लगा रहता है। बाज़ औक़ात उसके दिल व दिमाग़ में ऐसे–ऐसे सवालात पैदा होते हैं कि यह कायनात यह लौह व क़लम क्या चीज़ है? अल्लाह तआला ने यह ज़मीन आसमान चांद, सूरज, जन्नत दौज़ख़ और यह तमाम मख़लूक़ को किस तरह पैदा किया होगा। इन्हीं सवालात के मद्दे नज़र रखकर यह तारीख़े आलम किताब अब उर्दू के बाद हिन्दी में भी निहायत सादा व सरल ज़ुबान में शाया की जा रही है। ताकि आम आदमी भी इसे पढ़कर इस्तेफ़ादा कर सके।

इंसान चाहे कितना भी पढ़ लिखकर इल्म हासिल कर ले आलिम व फ़ाज़िल बने तो इसका मतलब यह नहीं कि उसे तमाम कुदरती चीज़ों का इल्म हासिल है लिहाज़ा कायनात की हर चीज़ का इल्म तो अल्लाह तआला के सिवा किसी को नहीं और यह तारीख़े आलम तो उसकी ला महदूद कारखानए कुदरत ने ज़र्रा बराबर भी हैसियत नहीं। और न ही समुंद्र बेकरां में एक क़तरा की बराबरी भी हो सकती है।

मैं एक रियार्टर टीचर हूं। रियार्टमेंट के बाद मैंने दस साल यहां अहमद नगर में हज़रत गुलाम मुहीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैहि शाह क़ादरी एजूकेशन सोसायटी के बानी हज़रत शफ़ीउद्दीन शाह क़ादरी के मातेहत फ़ैज़ाने क़ादरिया तालिमे निसवां अहमद नगर में अरबी व दीनी दर्स व तदरीस का काम अंजाम दिया। और अब भी उससे वाबस्ता हूं। इसके अलावा मैंने हज़रत आइशा के नाम अल्पसंख्यक सामाजिक शैक्षिणक महिला मंडल की एक कमेटी

तशकील दी, इसी इदारे के तहत हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा मदरसा तालीमुल बनात क़ायम किया जिसमें लड़कियों को आलिमा की कोर्स की तालीम दी जाती है।

अल्लाह तआला का लाख लाख शुक्र एहसान है कि उसने हबीबे ख़ास हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल इस किताब तारीख़े आलम को मुरत्तब करने की सआदत बख़्शी। जो हिन्दी कारेईन के बेहद इसरार व फ़रमाईश पर हिन्दी में शाया की जा रही है उम्मीद है कि कारेईन को पसंद आयेगी।

आख़िर में उनका भी शुक्रिया अदा करती हूं जिन्होंने इसे शाया करने में ताव्वुन दिया। बशरी तक़ाज़ों के तहत ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई ग़लती या ख़ामी नज़र आये तो फ़ौरन आगाह करें ताकि आइंदा एडिशन में इस्लाह की जा सके।

दुआओं की तालिबा

सुग़रा बुशरा क़ादरी

सदर मुअल्लिमा मदरसा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा तालीमुल–बनात

सदर : हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बज़्मे ख़्वातीन

अल्पसंख्यक सामाजिक शैक्षणिक महिला मंडल

सदस्य : ज्येष्ठ नागरिक संघ मुकुन्द नगर, अहमद नगर, महाराष्ट्र

दुरूद शरीफ़

शहनशाहे अर्ज़ व समां बलग़ल–उला बेकमालेही
ऐ बादशाहे ज़मीन व आसमां के आप पहुंचे बुलन्दी पर अपने कमाल से

वस्फ़े रुख़ा उद्दुहा कशफ़द्दुजा बेजमालेही
आपका रुख़े अनवर से दूर कर दिया अन्धेरे को अपने जमाल से

कुरआं बइख़्लाक़ुश गवाह हसनत जमीओ ख़िसालेही
कुरआन गवाह है कि हसीन है आपकी तमाम ख़स्लतें

सदक़न यक़ीनन रासिख़न सल्लू अलैहि व आलेही
यक़ीन के साथ सिद्क़े दिल से दुरूद भेजो उन पर और उनकी आल पर

इस्तिग़ासा बारगाहे रिसालत मआब
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं निहायत ग़रीब व बेकस हूं। इस दुनिया में मेरा आपके सिवा कोई हमदर्द नहीं है और आप ही मेरे हबीब हैं। मैं कि ऐसे मरज़ में मुब्तला हूं जिसका कोई इलाज नहीं। मगर आप मेरे तबीब हैं आपके करम से शिफ़ा पा सकती हूं। मुझे इस पर नाज़ है कि मैं आपकी उम्मती हूं।

बेशक मैं गुनाहगार हूं खुशनसीब हूं कि आप की उम्मती हूं।

(ऐ मेरे शफ़ीअ् मोहतरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ नाचीज़ह मुरत्तबा का भी वही इस्तिग़ासा है जो मुन्दरजा बाला है लिहाज़ा मुझे भी अपनी रहमत व शफ़ाअत का शर्फ़ बख़्शिए)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

पहला बाब

तख़्लीक़े काइनात

ख़ालिके काइनात अल्लाह तआला ने सबसे पहले नूरे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तख़्लीक़ फरमाया, जो एक हज़ार साल तक अल्लाह तआला की तस्बीह व तहलील के साथ तवाफ़ करता रहा।

अल्लाह तआला ने उस नूर से चार क़िस्म के अनासिर पैदा किए :

पहली क़िस्म : पहली क़िस्म से अर्शे आज़म पैदा किया, फिर उस से सात आसमान (एक आसमान से दूसरा आसमान पांच सौ बरस की मसाफ़त का है) फिर ज़मीन बनाई, ज़मीन के भी सात तबक़ात हैं। हर तबक़ का फासिला पांच सौ बरस मसाफ़त का है।

दूसरी क़िस्म : दूसरी क़िस्म से क़लम बनाया, फिर लौह बनाया। फिर क़लम को हुक्म हुआ लिख **"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"** क़लम ने **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** के बाद कहा, अब क्या लिखूं? हुक्म हुआ लिख "ला इलाहा इल्लल्लाहु" क़लम ने लिखना शुरू किया। एक हज़ार साल तक लिखता रहा। जब **मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** लिखना शुरू किया तो मारे हैबत के उसका मुंह शक़ हो गया, फिर एक हज़ार साल तक लिखा।

तीसरी क़िस्म : तीसरी क़िस्म से जन्नत और दोज़ख़ बनाई।

चौथी क़िस्म : फ़रिश्ते, जिन्नात, आलमे अरवाह पैदा किए। फ़रिश्तों को आसमान पर और जिन्नात को ज़मीन पर बसाया। जिन्नात ज़मीन पर सात हज़ार साल तक आबाद रहे। फिर उन में फसाद बरपा हो गया। यहां तक कि ख़ूंरेज़ जंग शुरू हो गई। जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने उन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में बसाया, जो हमेशा के लिए वहीं आबाद हो गये।

लौहे महफ़ूज़ : लौहे महफ़ूज़ को लौहे महफ़ूज़ इसलिए कहा जाता है कि वह शैतान के शर से महफ़ूज़ है, इसके अलावा उसके अन्दर तमाम मख़्लूक़ की तक़्दीरें लिख कर महफ़ूज़ कर दी गई हैं।

लौह की जिल्द सफेद मोतियों से, वर्क़ सुर्ख़ याक़ूत से और हर्फ़ सुर्ख़ मोतियों से बनाए गये हैं। वह सातवें आसमान पर मुअल्लक़ है। उसकी

लम्बाई सात सौ बरस और चौड़ाई मश्रिक़ से मग़्रिब तक की मसाफ़त की है। लौह का कलाम नूर है।

लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ कुरआन का हर हर्फ़ कोहे काफ़ के बराबर है। लौह में सहीफ़े सुर्ख़ याकूत से लिखे हैं।

क़लम : क़लम एक सफ़ेद चमकदार मोती से बना है, जो लौह से बंधा है। क़लम सात सौ सालों की मसाफ़त के बराबर है। क़लम की बारह क़िस्में हैं। जो मुख़्तलिफ़ काम के लिए मुक़र्रर हैं :

क़ुदरत, तक़्दीर, वही, जिस्म की हिफ़ाज़त, रिज़्क़, हुक्म, हुक़ूक़, तवारीख़, दिन, रात की गर्दिश, चांद सूरज की गर्दिश, लुग़त, तमाम अक़्लाम, जिस से निज़ामे आलम चलता है।

आसमान

अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी क़ुदरत से सात पारे बनाए, उन सात पारों से सात आसमान बनाए। पहला आसमान पानी से, दूसरा तांबे से, तीसरा लोहे से, चौथा चांदी से, पांचवां सोने से, छठा मरवारीद से और सातवां सुर्ख़ याकूत से बनाया। सातवें आसमान पर अल्लाह तबारक व तआला की कुर्सी है, जिसे बैतुल–मअ़्मूर कहते हैं। अर्ज़ी दुनिया के बीचों बीच कअ़्बतुल्लाह है। जिस तरह ज़मीन पर मुसलमान ख़ान–ए–काबा का तवाफ़ करते हैं, उसी तरह आसमान पर बैतुल–मअ़्मूर के फ़रिश्ते तवाफ़ करते हैं। अल्लाह तआला ने जो सात आसमान बनाए हैं उनके नाम यह हैं : (१) रुक़अ़् (२) फलो (३) क़ुदूम (४) माऊन (५) रिबक़ा (६) दफ़्ना (७) अरूबा।

आसमान दो अश्ख़ास के लिए इतना रोया कि वह सुर्ख़ हो गया, जो तुलूअ़् आफ़्ताब और ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त सुर्ख़ नज़र आता है। एक हज़रत यहिया पर, जिस वक़्त ज़ालिम बादशाह ने आपका सर क़लम करके तश्त में पेश किया, दूसरे हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को शिम्रे लईन ने सज्दे में शहीद किया।

ख़ुदावन्दे करीम ने आसमान से चार अनासिर ज़मीन पर उतारे हैं :
(१) लोहा (२) आग (३) पानी (४) नमक।

सातवें आसमान पर सिदरतुल–मुन्तहा एक मक़ाम है जहां पर एक बेरी का दरख़्त है। उस दरख़्त की तीन सिफ़तें हैं : (१) उसका साया तवील है। (२) उसकी जड़ें छठे आसमान तक पहुंची हुई हैं। (३) उसका मज़ा लतीफ़ है।

सिदरतुल–मुन्तहा

ऐसा मकाम है जहां तक किसी को भी जाने की इजाज़त नहीं है। तमाम उलूम व फ़ुनून वहां मुन्क़ता हो जाते हैं। फ़रिश्तों की भी वहां रसाई नहीं है। अगर कोई फ़रिश्ता उसकी हद से आगे बढ़े तो उसके पर जल जाते हैं। सिवाए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वहां कोई नहीं पहुंचा।

रिवायत है कि सिदरतुल–मुन्तहा की चार जड़ों से चार नहरें निकली हैं। **ज़ाहिरी** : दरियाए नील, दरियाए फ़ुरात। **बातिनी** : दरियाए सुम्माल, दरियाए सज्जान। सातों आसमानों की पैदाइश यक्शंबा को हुई। अर्शे आज़म के (सातवें आसमान) के छेः लाख पर्दे हैं।

ज़मीन

हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आसमान से पहले ज़मीन वजूद में आई। बाद में उस में तब्दीली हुई।

ज़मीन पहले पानी थी। कुदरत ने उस पर झाग पैदा किया। वह झाग चालीस साल तक साकित रहा। फिर उस झाग को फैला दिया गया। वह सूख कर ज़मीन बन गई।

सबसे पहले ज़मीन वहां बनी जहां आज ख़ान–ए–काबा है। ज़मीन का फैलाव पांच सौ साल की मसाफ़त का है। जिस में तीन हिस्से पानी और एक हिस्सा ख़ुश्की का है।

अल्लाह तआला ने ज़मीन की हरकत रोकने के लिए उस पर पहाड़ रख दिए, जिन में चन्द पहाड़ यह हैं। (१) कोहे क़ाफ़ (२) कोहे जूदी (३) कोहे अबुल–क़ुबैस (४) कोहे लुबनान (५) कोहे तूर (६) कोहे सीना वग़ैरह

एक रिवायत के मुताबिक़ बड़े–बड़े पहाड़ों की तादाद ६६७३ है। जिन में सख़रा–ए–बैतुल–मक़दिस ज़मीन का वह हिस्सा है जो सबसे बुलन्द है

और आसमान से सबसे ज़्यादा क़रीब है। ज़मीन पर सबसे पहले पहाड़ मक्का मुकर्रमा में अबुल–क़बीस है।

ज़मीन के सात तबक़ात : पहले तबक़े में इंसान बसते हैं, दूसरे में हवा, तीसरे में ऐसी मख़्लूक़ है जिन के चेहरे इंसानों की तरह, मुंह कुत्ते की तरह, पैर बैलों की तरह और जिस्म पर बाल भेड़ की ऊन तरह हैं।

चौथे तबक़े में गन्धक और पत्थर जो दोज़ख़ियों के लिए हैं।

पांचवें तबक़े में सांप और बिच्छू हैं।

छठे में कुफ़्फ़ारों की रूहें और सातवें में इबलीस और उसका लश्कर है।

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुतला तैयार करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत इज़्राईल को ज़मीन पर मुख़्तलिफ़ मक़ामात से मिट्टी लेने के लिए भेजा और उस वक़्त मदीना मुनव्वरह में, जिस मक़ाम पर अब मस्जिदे नबवी है, वहां जन्नत का टुकड़ा भेज दिया ताकि अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिस्मे अतहर उसी मिट्टी से तैयार हो और वही मदफ़ून हों। इसलिए मस्जिदे नबवी में एक जगह थोड़ी सी जन्नत के टुकड़े में से रह गई है, जिसे जन्नत की क्यारी कहा जाता है। ज़मीन के उस हिस्से पर दो रकअत नमाज़ पढ़ना बेहद अफ़ज़ल है।

जन्नत (बहिश्त)

अल्लाह तबारक व तआला ने बहिश्त बरोज़ दोशंबा को बनाई। रिवायत है कि जन्नत सफेद मोती, सुर्ख़ याक़ूत और ज़ुमुरुद से बनी है और मुश्क व ज़ाफ़रान के गारे से दीवार सोने चांदी की ईंटों से बनी है। घास अंबर ज़ाफ़रान की बिछी है।

जन्नत के आठ दरजात :

जन्नत के आठ दर्जे हैं। (१) जन्नतुल–फ़िर्दौस (२) जन्नतुल–अ़दन (३) जन्नतुल–मावा (४) दारुल–ख़ुल्द (५) दारुस्सलाम (६) दारुल–मक़ामा (७) जन्नतुन्नईम (८) इल्लीन।

जन्नत के आठ दरवाज़े :

(१) सोने का दरवाज़ा, जिस पर कलिम–ए–तैयबा लिखा है। उसमें से पैग़म्बर और शुहदा दाख़िल होंगे।

(२) बाबे मुसल्लीन, इसमें नमाज़ी और हर वक़्त बावुज़ू रहने वाले दाख़िल होंगे।

(३) बाबुल–मुजक्कीन, जिस में से ज़कात देने वाले दाख़िल होंगे।

(४) दारुल–ख़ुल्द, से नेकियों का हुक्म देने वाले और बुराईयों से रोकने वाले दाख़िल होंगे।

(५) दारुस्सलाम, से ख़्वाहिशे नफ़सानी को क़तअ़ करने वाले।

(६) दारुल–मक़ामा, से हज और उमरा करने वाले।

(७) जन्नतुन्नईम, से जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह करने वाले।

(८) इल्लीन, से मुहरिमात से नीची निगाह करने वाले दाख़िल होंगे।

जन्नत की चार नहरें :

(१) ज़नजबील (२) सलसबील (३) रहीक़ (४) तस्नीम

जन्नत के चार दरिया : (१) शहद (२) शीर (दूध) (३) आब (४)शराब

रिवायत है कि जन्नत के इतने दरवाज़े हैं जितने क़ुरआन मजीद के हुरूफ़। जन्नत में एक दरख़्त है जिसे अल्लाह तआला ने अपने दस्ते क़ुदरत से लगाया है, उसका नाम तूबा है। उस दरख़्त के मुतअल्लिक़ बताया जाता है यह दरख़्त जन्नतियों के लिए है। अल्लाह तआला फरमाता है उसकी जड़ें मेरी ख़ुशनूदी है। उसका पानी तस्नीम, उसकी ठण्डक काफ़ूर, उसका ज़ाइक़ा ज़ंजबील सा है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार जन्नती बेहिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल होंगे और हर जन्नती के साथ सत्तर हज़ार जन्नती होंगे।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी इरशाद फरमाया कि पहली उम्मतों में बहत्तर फ़िर्क़े थे। मेरी उम्मत में तिहत्तर फ़िर्क़े होंगे। जिन में एक फ़िरक़ा जन्नत में जाएगा, बहत्तर जहन्नम में।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया कि जन्नत में क़ुरआन मजीद का कोई हिस्सा बाक़ी न रहेगा सिवाए सूरः ताहा और सूरः यासीन के, क्योंकि यह दोनों सूरतें अह्ले जन्नत के सीनों में महफ़ूज़ होंगी।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया कि जन्नत में एक टोटो नामी महल है जिसमें सत्तर–सत्तर छोटे महल होंगे। हर महल में सत्तर हज़ार कमरे होंगे। हर कमरे में सत्तर तख़्त होंगे। हर तख़्त पर सत्तर दस्तर्ख़्वान और हर दस्तर्ख़्वान पर सत्तर क़िस्म के खाने होंगे।

अगर जन्नती एक दूसरे से मुलाक़ात का इरादा करेंगे तो तख़्त ख़ुद बख़ुद एक दूसरे के पास चले जाएंगे।

जन्नत में सबसे पहले हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाख़िल होंगे और उम्मते मुहम्मदी में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु दाख़िल होंगे।

अदना से अदना जन्नती के लिए अस्सी (८०) हज़ार ख़ादिम होंगे।

जन्नत में मर्दों की उम्र ३३ साल और औरतों की उम्र १६ साल होगी।

ख़्वातीन में सबसे अव्वल हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा दाख़िल होंगी।

जन्नत में तमाम जन्नतियों की ज़बान सिर्फ़ अरबी होगी।

जन्नत में जन्नतियों की पहली ग़िज़ा मछली की कलेजी होगी।

जन्नत के दारोग़ा का नाम रिज़वान है।

दोज़ख़

अल्लाह तआला ने दोज़ख़ पंज शंबा को पैदा की।

हदीस शरीफ़ में मज़्कूर है कि जहन्नम की चारों दीवारों की मसाफ़त चालीसं साल की है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जहन्नम की आग को पहले एक हज़ार साल तक जलाया गया। यहां तक कि वह सफेद हो गई। फिर एक हज़ार साल और जलाई गई वह सियाह हो गई और क़यामत तक सियाह ही रहेगी।

दुनिया की आग को जहन्नम से सत्तर बार पानी में डिबोने के बाद दुनिया में भेजा गया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जहन्नम के सात दरजात हैं और हर दर्जे पर एक दारोग़ा मुक़र्रर है।

जहन्नम के सात तबक़े :

अव्वल दर्जे की जहन्नम का नाम जहन्नम है उसके दारोग़ा का नाम मूकाईल है। उस में अह्ले तौहीद दाख़िल किए जाएंगे फिर आमाल के मुताबिक़ सज़ा दे कर निकाल दिए जाएंगे।

दूसरा दरजा जिसका नाम नती है। जिसका दारोग़ा तूमाईल है। उस में यहूद दाख़िल होंगे।

तीसरा दरजा हतमा है। दारोग़ा तरफ़ाईल है। उसमें नसारा दाख़िल होंगे।

चौथे दर्जे का नाम सईर है। दारोग़ा समताईल है। इसमें शराबी दाख़िल किए जाएंगे।

पांचवें का नाम सक़र है। दारोग़ा तूमताईल है। और इसमें मजूसी (आतिश परस्त) दाख़िल होंगे।

छठे दर्जे का नाम जहीम है। दारोग़ा समताईल है। उसमें मुश्रेकीन दाख़िल होंगे।

सातवें का नाम हाविया है। दारोग़ा तमताईल है। उसमें मुनाफ़िक़ीन दाख़िल होंगे।

हर जहन्नम में उन्नीस फ़रिश्ते हैं। उन सबका दारोग़ा रबानिया है। दोज़ख़ में सबसे पहले क़ाबील को दाख़िल किया जाएगा। जिसने हाबील को क़त्ल किया था।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जहन्नम में सबसे हल्का अज़ाब आपके चचा अबू तालिब को होगा।

सातवें जहन्नम के दारोग़ा का नाम मालिक है और वह सियाह मिंबर पर बैठे होंगे उस मिंबर के आठ लाख पाए हैं। हज़रत अब्बास से रिवायत है कि क़्यामत के दिन दोज़ख़ को सातवें ज़मीन के नीचे से ऐसी हालत में लाया जाएगा कि उसके गर्द फ़रिश्तों की सत्तर सफ़ें होंगी। हर सफ़ में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो दोज़ख़ की लगाम पकड़े खींचते हुए अर्श की बाईं तरफ़ ला कर रखेंगे।

मलाइका

अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से साठ हज़ार साल क़ब्ल आसमान में बसाया फ़रिश्ते तमाम मख़्लूक़ से नौ हिस्से ज़्यादा हैं जिन में बाज़ फ़रिश्ते आसमान पर बाज़ ज़मीन पर मुक़र्रर हैं। उनकी तादाद का इल्म सिवाए अल्लाह तआला के किसी को नहीं है।

एक रिवायत के मुताबिक़ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शबे मेअ़राज में फ़रिश्तों की एक क़तार जाते हुए देखी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिब्रीले अमीन से फ़रमाया कि फ़रिश्ते कहां से आ रहे

हैं और कहां जा रहे हैं? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं तो यह नहीं जानता क्योंकि जब से मैं पैदा हुआ हूं इस क़तार को इसी तरह जाते हुए देख रहा हूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा आप की उम्र कितनी है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा मैं यह तो नहीं जानता कि मेरी उम्र कितनी है? मगर एक सितारा है जो सत्तर हज़ार साल के बाद निकलता है और वह सितारा मैंने सत्तर हज़ार बार देखा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम जानते हो वह सितारा मैं था।

आसमान पर बेशुमार फ़रिश्ते अल्लाह तआला की तस्बीह व तहलील में मशग़ूल हैं। अगर उन में से कोई एक फ़रिश्ता भी इबादत से एक लहज़ा भी ग़ाफ़िल रहा तो फिल–फौर वह सज़ा का मुस्तहिक़ हो जाता है। उसका ऊपर का आधा जिस्म आग का और नीचे का आधा जिस्म बर्फ़ का हो जाता है। न आग बर्फ़ को पिघला सकती है न बर्फ़ आग को ठण्डा कर सकती है और यह हालत ता क़यामत रहेगी।

अल्लाह तआला ने जब तमाम फ़रिश्तों को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सामने सज्दे का हुक्म दिया तब तमाम फ़रिश्ते सज्दे में गिर पड़े सिवाए इज़्राईल के, जिसकी वजह से वह इब्लीसे लईन बना। तमाम फ़रिश्ते एक हज़ार साल तक सज्दे में रहे और जब सर उठा कर देखा तो इज़्राईल का चेहरा नाफरमानी की वजह से मसख़ हो गया था। फिर तमाम फ़रिश्ते शुकराने का सज्दा करने लगे जो एक हज़ार साल का रहा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अर्श के नीचे एक फरिश्ता है। उसके सत्तर बाज़ू हैं। हर बाज़ू पर सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की सफ होती है। उनके दाहिने रुख़्सार पर सूरः फातिहा और बाएं बाज़ू पर कलिमा शहादत लिखते होते हैं। हर फ़रिश्ते के सामने सत्तर हज़ार फरिश्तों की सफें होती हैं जो सूरः फातिहा पढ़ते रहते हैं जब वह "इय्याका नअ्बुदु" कहते हैं और सज्दे में गिरते हैं तब अल्लाह तआला फरमाता है अपने–अपने सर उठाओ। मैं तुम से बहुत खुश हूं। मांगो क्या मांगते हो। फ़रिश्ते सर उठा कर कहते हैं "ऐ हमारे रब! उम्मते मुहम्मदिया में जो कोई सूरः फातिहा पढ़े तू उस से राज़ी हो जा।" अल्लाह तआला फरमाता है मैं उन से भी राज़ी हूं।

हज़रत अब्दुल्लाह से रिवायत है कि दोज़ख़ में उन्नीस मुवक्किल

फ़रिश्ते हैं। यह हाथ और पांव से काम लेते हैं। हर फ़रिश्ता दस हज़ार काफ़िरों को अपने हाथ में, दस हज़ार काफ़िरों को अपने पांव में जकड़ कर जहन्नम में डाल देता है।

फ़रिश्तों में बाज़ फ़रिश्ते इंसानों की हिफ़ाज़त पर मामूर हैं। उनका काम है इंसान को किसी भी क़िस्म के सदमे से बचाना लेकिन बाज़ औक़ात अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म होता है कि फ़ुलां–फ़ुलां बन्दे की हिफ़ाज़त न की जाए इसलिए वह हादिसात से महफ़ूज़ नहीं रहते। क्योंकि किसी क़िस्म का सदमा मोमिन के लिए गुनाहों का कफ़्फ़ारा होता है। इसी तरह फ़रिश्ते और दो क़िस्म के होते हैं। एक वह जो अल्लाह तआला की जानिब से मोमिन पर रहमत नाज़िल करते हैं। दूसरे वह जो अल्लाह तआला की जानिब से अज़ाब नाज़िल करते हैं। फिर और इसी तरह दो क़िस्म के फ़रिश्ते होते हैं एक वह जो इबादत पर मअ़मूर होते हैं उन्हें मुक़र्रेबीन कहते हैं। दूसरे वह जो दुनिया का निज़ाम चलाते हैं, उन्हें मुदब्बिरात कहते हैं।

इंसान की मौत के वक़्त तीन क़िस्म के फ़रिश्ते आते हैं। एक नेक इंसान की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए और गुनगहारों को डराने वाले, दूसरे रूह निकालने वाले और तीसरे उनके मुआविन।

फ़रिश्तों में जब एक फ़रिश्ता तस्बीह पढ़ता है तो एक फ़रिश्ता पैदा होता है। यूं तो फ़रिश्तों की तादाद का इल्म अल्लाह तआला के सिवा किसी को नहीं, मगर चन्द फ़रिश्ते जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद और हदीस में मिलता है वह यह हैं :

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम :

अल्लाह तबारक व तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को बेहद ख़ूबसूरत बनाया है उनके चौदह हज़ार बाज़ू हैं जिन में रंग बिरंग सब्ज़ ताऊसी पर हैं। वह रोज़ाना दरियाए नूर में ग़ोता लगाते हैं और अपने पर झटकते हैं तो हर क़तरे से एक नूर का फरिश्ता पैदा होता है। हज़रत जिब्रील का ख़ास काम पैग़म्बरों तक अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचाना है।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर चौबीस हज़ार मरतबा नाज़िल हुए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर सात मरतबा, हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम पर चार मरतबा, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर पचास मरतबा, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर बयालीस,

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर दस, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम पर तीन और हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम पर चार मरतबा नाज़िल हुए।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें असली हालत में देख कर शुरू में बेहोश हो गये थे। इसलिए आदमी की शक्ल में नाज़िल होने लगे।

हज़रत जिब्रील ने एक मरतबा अपनी खूबसूरती को देख कर अल्लाह तआला से अर्ज किया ऐ रब तआला तूने ने मुझ जैसी सूरत किसी और की भी बनाई है? जवाब मिला, नहीं, तब जिब्रील ने शुकराने के तौर पर दो रकअत नफ्ल नमाज़ अदा की। हर रकअत में एक हजार साल खड़े रहे। जब नमाज़ से फारिग़ हुए अल्लाह तआला खुश हो कर फ़रमाया ऐ जिब्रील तुम ने इबादत का हक अदा कर दिया मगर आख़िरी ज़माने में मेरे महबूब की उम्मत निहायत नातवा होगी और थोड़ी देर में थक जाएगी और भूल चूक हो जाएगी गुनाह के मुर्तकिब होगी। मुझे अपनी इज़्ज़त की कसम मैं उन नमाज़ियों को पसन्द करूंगा, नमाज़ कूबूल करूंगा और उन्हें इनाम दूंगा।

हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम :

हज़रत मीकाईल गुनहगारों के लिए बहुत रोते हैं। यह मख़्लूक को रिज़्क पहुंचाने और बारिश बरसाने पर मअमूर हैं।

हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम :

अल्लाह तआला ने उन्हें सबसे पहले पैदा किया। गैर मामूली ताकत अता की। उनके मुंह में सत्तर हज़ार मुंह हैं। वह दुनिया के एक सिरे पर अपने मुंह में सूर लिए एक पैर पर अल्लाह तआला के मुतज़िर खड़े हैं कि बहुक्मे खुदावन्दी वह सूर फूकेंगे तो तमाम मख़्लूक फना हो जाएगी। फिर अल्लाह तआला के हुक्म से दूसरा सूर फूंकने पर तमाम मख़्लूक ज़िन्दा हो जाएगी फिर हश्र का मैदान होगा।

हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम :

यह असल में मौत के फरिश्ते हैं। जो तमाम मख़्लूक की रूह कब्ज़ करने पर मामूर हैं। अल्लाह तआला ने हज़रत आदम का पुतला बनाने के लिए ज़मीन से मिट्टी लाने के लिए हज़रत जिब्रील को भेजा मगर ज़मीन ने अपनी मिट्टी देने से इंकार कर दिया। कहा कि जब इंसान ज़मीन पर बसेगा तो आपस में फसाद बरपा करेगा। खूरेज़ी करेगा इसलिए मैं मिट्टी

नहीं दूंगी। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम को भेजा। ज़मीन ने भी इंकार कर दिया। अल्लाह तआला ने फिर हज़रत इस्राफील को भेजा वह भी ख़ाली हाथ लौटे। आख़िर अल्लाह तआला ने हज़रत इज़्राईल को भेजा। उन से भी ज़मीन ने इंकार कर दिया। हज़रत इज़्राईल ने ज़बरदस्ती ज़मीन से मिट्टी छीन कर अल्लाह तआला को पेश की। तब अल्लाह तआला ने जिस तरह हज़रत इज़्राईल ने ज़मीन से मिट्टी छीन कर ली उसी तरह इंसान की रूह निकालने का काम भी उन्हीं को सौंपा। हज़रत इज़्राईल ने अर्ज़ किया कि ऐ बारी तआला जब मैं इंसान की रूह निकालूंगा तब लोग मुझे बुरा भला कहेंगे। अल्लाह तआला ने कहा फ़िक्र मत करो उसके लिए मैं कोई भी बहाना बताऊंगा। इस तरह हज़रत इज़्राईल को मुक़र्रर किया।

मुंकर नकीर :

यह दो फ़रिश्ते क़ब्र में अल्लाह तआला के हुक्म से मुर्दों से सवाल करते हैं। वह सवाल करते हैं कि **"मन रब्बुका"** (तेरा रब कौन है?) दूसरा सवाल करते हैं कि **"मन दीनुका"** (तीसरा दीन क्या है) और तीसरा सवाल होता है **"मा कुन्ता तकूलु फी हाज़र्रजुल।"** (हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में तुम क्या जानते हो?)

अगर मुर्दे ने तमाम सवालों के सही जवाबात दे दिए तो उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं और उसके लिए जन्नत की खिड़की खोल दी जाती है। जिस से जन्नत की ठण्डी फ़रहत बख़्श हवा आती है। अगर मुर्दे ने जवाबात सही नहीं दिए तो उस पर आग के गुर्ज़ बरसाए जाते हैं और मुर्दा सत्तर हाथ ज़मीन में धंस जाता है। उसके अलावा बड़े–बड़े सांप उस पर मुसल्लत कर दिए जाते हैं।

किरामन कातेबीन :

उन्हें अल्लाह ने इंसान के अच्छे बुरे आमाल लिखने पर मुक़र्रर किया है एक फ़रिश्ता दांए कन्धे पर है जो नेक आमाल लिखता है और बाएं कन्धे का फ़रिश्ता बुरे आमाल लिखता है।

सलसलाइल :

इस फ़रिश्ते के तीन बाज़ू हैं एक मश्रिक़ में दूसरा मग़रिब में और तीसरा बाज़ू नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़–ए–अक़्दस के क़रीब है। जब कोई बन्द–ए–मोमिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम पर दुरूद भेजता है तो यह फ़रिश्ता उस बन्दे का और बन्दे का बाप का नाम लेकर कि फ़लां बिन फ़लां ने आप पर दुरूद व सलाम भेजा है। आप भी उसका जवाब मआ वालिद के देते हैं और फरमाते हैं इस दुरूद को सोने के तश्त में नूर की रोशनाई नूर के काग़ज़ में लिख कर क़्यामत में उस काग़ज़ को मीज़ान में रखा जाए ताकि उसकी नेकियों का पलड़ा भारी हो जाए।

रिज़वान : जन्नत के दारोग़ा का नाम है।

मालिक : दोज़ख़ के दारोग़ा का नाम है।

सातों आसमान के फ़रिश्तों के नाम और काम

पहले आसमान के फ़रिश्ते :

पहले आसमान के फ़रिश्ते का नाम इस्माईल है। इस फ़रिश्ते के मातहत बारह हज़ार फ़रिश्ते हैं जो हर वक़्त हालते क़्याम में मशग़ूले इबादत हैं।

दूसरे आसमान के फ़रिश्ते :

इस फरिश्ते का नाम इस्राफील है इसके मातहत तीन लाख फरिश्ते हैं और हर फ़रिश्ते के मातहत तीन लाख फरिश्ते हैं जो हालते रुकूअ़ में इबादत में मशग़ूल हैं।

तीसरे आसामन के फ़रिश्ते :

इस फ़रिश्ते का नाम सरहाईल हैं। इस फरिश्ते के मातहत चार लाख फरिश्ते हैं और हर फरिश्ते के मातहत चार लाख फरिश्ते हैं जो हमा वक़्त हालते सुजूद में मशग़ूल हैं।

चौथे आसमान के फ़रिश्ते :

इस फ़रिश्ते का नाम मोमनाईल है। उसके मातहत चार लाख फरिश्ते हैं और हर फ़रिश्ते के मातहत चार लाख फरिश्ते हैं। जो हमा वक़्त कअ़्दे में मशग़ूले इबादत है।

पाँचवें आसमान के फ़रिश्ते :

इस फ़रिश्ते का नाम सक़्ताईल है। इस फ़रिश्ते के मातहत पांच लाख फ़रिश्ते हैं और हर फ़रिश्ते के मातहत पांच लाख फरिश्ते हैं जो हमा वक़्त तस्बीह व तहलील में मशग़ूले इबादत हैं।

छठे आसमान के फ़रिश्ते :

इस फ़रिश्ते का नाम रूआईल है। इसके मातहत छेः लाख फरिश्ते हैं और हर फ़रिश्ते के मातहत छेः लाख फ़रिश्ते हैं जो हमा वक़्त मस्रूफ़े इबादत हैं।

सातवें आसमान के फ़रिश्ते :

इस फ़रिश्ते का नाम रूहाईल है। इसके मातहत सात लाख फरिश्ते हें और हर फ़रिश्ते के मातहत सात लाख फ़रिश्ते हैं जो हर वक़्त हम्द व सना पढ़ते रहते हैं।

जिन्नात

अल्लाह तबारक व तआला ने जिन्नात को आग से पैदा किया। जिन्नात हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से साठ हज़ार साल क़बल पैदा हुए। और उन्हें ज़मीन पर बसाया गया। सात हज़ार साल तक ज़मीन पर आबाद रहे। फिर उनमें तफ़रक़ा पैदा हो गया और आपस में लड़ाई भिड़ाई और क़त्ल व ग़ारतगरी शुरू हो गई। उस वक़्त एक जिन्न जिसका नाम इज़्राईल था। निहायत इबादत गुज़ार था। अल्लाह तआला ने उसकी इबादत व रियाज़त से ख़ुश हो कर उसे फ़रिश्तों का सरदार बनाया। जो बाद में इब्लीसे लईन बना। अल्लाह तआला ने उसे हुक्म दिया कि फ़रिश्तों की एक जमाअत लेकर तमाम जिन्नात को ज़मीन से निकाल कर जज़ीरों और पहाड़ों की तरफ़ भगा दो। ग़रज़ कि इज़्राईल ने वैसा ही किया और तमाम जिन्नात को मार कर वीरानों में भगा दिया।

जिन्नात की तीन क़िस्में हैं। एक वह जिनके पर होते हैं और वह हवा में उड़ते हैं। दूसरे वह जो सांपों की शक्ल में रहते हैं। तीसरे वह जो इंसानों की तरह रहते हैं। उनमें मर्द भी होते हैं औरतें भी होती हैं। वह मरते भी हैं। उनके बच्चे भी पैदा होते हैं।

एक मरतबा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तायफ़ से आ रहे थे। एक जगह नख़्ला के मक़ाम पर कुरआन पाक की तिलावत फरमा रहे थे कि वहां जिन्नात की एक जमाअत का गुज़र हुआ। उन्होंने तिलावत की आवाज़ सुनी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कलिम–ए–तैयबा पढ़ कर मुशर्रफ़े इस्लाम हुए और ज़ादे राह मांगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए हड्डियों का तोशा गोबर चारा मुक़र्रर किया। फरमाया कि हड्डी को हाथ लगाते ही उस पर गोश्त

चढ़ जाएगा और गोबर को हाथ लगाते ही उस दाने पाएंगे।

हज़रत उमर फारूके आज़म ने फरमाया कि एक मरतबा हम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर थे। एक बूढ़ा शख़्स हाथ में लकड़ी लिए हुए आया। उसने सलाम किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलाम का जवाब दिया और फरमाया कि यह जिन्न की आवाज़ है। फिर पूछा आप कौन हैं? उसने कहा मैं हामा बिन अलीम हूं। हज़रत नूह से लेकर हर नबी से मुलाक़ात करता रहा हूं और अब आपकी बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ हूं।

जिन्नात नेक भी होते हैं और बद भी। नेक जिन्नात पाक जगह पर होते हैं। आमिल लोग वज़ीफा के ज़रिए उन्हें अपने कब्ज़े में करते हैं। जिसे मुवक्किल कहते हैं। बद जिन्नात नजासत वाली और गन्दगी जगह पर रहते हैं। जो आम लोगों पर हावी होते हैं और तक्लीफ पहुंचाते हैं।

शयातीन

शैतान असल में जिन्नात की औलाद है। जिसका नाम अज़ाज़ील था। उसकी रियाज़त, इबादत की वजह से अल्लाह तआला ने खुश हो कर उसे फ़रिश्तों का सरदार बनाया था लेकिन जब उसने आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करने से इंकार कर दिया तो इस को नाफरमानी की सज़ा यह मिली कि गले में लानत का तौक़ डाल कर, इब्लीसे लईन नाम देकर उसे दुनिया में नजिस जगह पर फेंका गया। जब उसे ज़मीन पर फेंका गया तब उस ने कसम खाई कि मैं भी आदम की औलाद को गुमराह करूंगा और गुनाहों की तरफ़ राग़िब करूंगा और जहन्नम का मुस्तहिक़ बनाऊंगा अल्लाह तआला ने फरमाया मैं भी इंसान के साथ एक फरिश्ता पैदा करूंगा जो इंसानों को बुराइयों से रोकेगा।

अज़ाज़ील (शैतान) चालीस साल तक जन्नत का खज़ानची रहा। अस्सी (८०) हज़ार साल तक फ़रिश्तों के साथ रहा। चौदह हज़ार साल तक खान–ए–काबा का तवाफ़ करता रहा।

हज़रत अब्बास से रिवायत है कि पहले शयातीन आसमानों में दाख़िल हुए थे और वहां की ख़बरें ला कर काहिनों को देते थे। जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो शयातीन को सिर्फ़ तीन आसमानों तक रसाई

हासिल हुई। जब हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादते मुबारक हुई तो पूरे सातों आसमान तक रोक लगा दी गई।

रिवायत है कि अज़ाज़ील को पहले आसमान पर आबिद, दूसरे पर राके, तीसरे पर साजिद, चौथे पर ख़ाशे, पांचवें आसमान पर सांत, छठे आसमान पर मुत्तहिद और सातवें आसमान पर ज़ाहिद के नाम से पुकारा जाता था। मगर अफ़सोस सिर्फ़ एक सज्दे की नाफ़रमानी की वजह से तमाम ख़िताबात छीन लिए गये और शैताने लईन का ख़िताब हासिल किया।

शैतान की मन्जूर की गई ख़्वाहिशें

रांद–ए–दरगाह होने के बाद अल्लाह तआला से शयातीन की ४ ख़्वाहिशें मन्जूर फ़रमाई।

१. मुझे उस वक़्त तक मौत न दे जब लोग क़ब्रों से न उठें।

२. हर इंसान को गुमराह करूंगा।

३. मेरी औलाद बहुत ज़्यादा हो।

४. मैं जिस शक्ल में चाहूं, जिस हुलिया में चाहूं तब्दील हो सकूं चौथी ख़्वाहिश के साथ अल्लाह तआला ने एक शर्त उस पर भी आइद की कि तू मेरे हबीबे ख़ास सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रूप हरगिज़ हरगिज़ अख़्तियार न करेगा। मेरे ख़ास बन्दे मेरे दोस्त, वली अल्लाह पर क़ाबू न पा सकेगा।

शैतान के मशहूर कारनामे

(१) हज़रत आदम और हज़रत हव्वा को बहका कर गन्दुम खिलाया और उन्हें जन्नत से निकलवाया।

(२) क़ाबील के हाथों हाबील का क़त्ल करवाया।

(३) दुनिया में बुत परस्ती, आतिश परस्ती जारी करवाई।

(४) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटों के हाथों छोटे भाई हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुएं में डलवाया।

(५) हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को मरज़ के वक़्त उनकी बीवी रहीमा के मालेकिन से बाल कटवाए और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को

उन्हें मारने की क़सम खिलवाई।

(६) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के फ़िरऔन को ख़ुदाई दावा करवाया।

(७) हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के वक़्त सामरी जादूगर से बछड़े के ज़रिए गौ परस्ती करवाई।

(८) शद्दाद को ख़ुदाई दावा करवाया। उस से जन्नत बनवाई।

(९) क़ारून को दौलत की लालच में फंसा कर ख़ैरात ज़कात से रुकवाया।

(१०) हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को अंगूठी का चमका देकर फ़ित्ने में फंसाया।

(११) हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम को औरत के मुआमले में बेगुनाह क़त्ल करवाया।

(१२) हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को मरयम के साथ ज़ना का इल्ज़ाम लगवा कर आरे से कटवाया।

(१३) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ारे कुरैश को भड़का कर क़त्ल की साज़िश रची मगर नाकाम हुआ।

(१४) ख़ुलफ़ाए राशिदीन को सियासत का जाल फैला कर क़त्ल करवाया।

(१५) अह्ले बैत को यज़ीद की बैअ़त न लेने की वजह से शहीद करवाया।

(१६) कई मुत्तक़ी और परहेज़गारों को मामूली लग़्ज़िश के ज़रिए उनकी विलायत ख़त्म करवाई। दीने इस्लाम में फ़िर्क़े पैदा किए। दुनिया में कई हुकूमतों को आपस में लड़वा कर खाना जंगी कराई। बाप, बेटों, मां, बच्चों में, मियां बीवी में और भाई भाई में झगड़ा करवा कर उन्हें इलाहिदा करवाया। ख़ानदान को तबाह व बरबाद करने में अहम रोल अदा किया और कर रहा है।

औरतों को ज़ेब व ज़ीनत के लिए बाज़ार का रुख़ बता कर औरत की हया को ख़त्म करवा रहा है। औरतें उसके फ़रेब में आकर अपनी इस्मत व आबरू कौड़ियों के मोल बेच रही हैं। औरत मर्द को ख़लत मलत कर रहा है।

शैतान की पैदाइश :

तक़रीबन एक लाख २५ हज़ार साल क़ब्ल जिन्नात को पैदा किया गया। यह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पहले दुनिया में आबाद थे। दुनिया में सबसे पहले अबुल–जिन्न तारा नोश जिन्न पैदा हुए। वह २६ हज़ार साल हुकूमत करते रहे और जब उनकी औलाद ने शरीअ़त से सरकशी की तो वह फना हो गये। उसके बाद दूसरे दौर में चलपास जिन्न पैदा हुए। वह भी २६ हज़ार साल दुनिया में रहे। शरीअ़त को भुला देने पर वह भी फना हो गये। तीसरी बार हामूस जिन्न आए और सरकशी करने लगे तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि ज़मीन पर मलाइका की फौज ले जाओ और उन्हें क़त्ल कर दो। हुक्मे इलाही से फ़रिश्तों ने जिन्नों को क़त्ल करना शुरू कर दिया। कुछ जिन्न जज़ीरों में जा कर छुप गये कुछ जिन्न चीन में जाकर बस गये। उनमें एक छोटी उम्र का बच्चा जिसकी उम्र तक़रीबन २८२ साल थी उसका नाम अज़ाज़ील था। वालिद का नाम चलीप और मां का नाम सबलीस था। जिसका चेहरा मादह भेड़िया जैसा था। उसे अल्लाह के हुक्म से फरिश्ते आसमान पर ले गये। वहां उसकी परवरिश हुई। उसने अपनी इबादत की वजह से शोहरत हासिल कर ली और फ़रिश्तों का उस्ताद बन गया। और दीन का दर्स देता रहा। उसने तमाम आसमानों की सैर की। जन्नत व दोज़ख़ का नज़ारा भी किया एक दिन आसमान की सैर करता हुआ अर्शे आज़म पर पहुंचा और वहां लौहे महफ़ूज़ पर **अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम**। लिखा देखा तो अल्लाह तआला से पूछा : "ऐ रब्बुल–आलमीन यह शैतानिर्रजीम कौन है? जिस से पनाह मांगनी चाहिए?" इरशाद हुआ "हमारी मख़्लूक़ में जो अनवा व अक़्साम की नेमतों से सरफराज़ होगा लेकिन हमारी नाफरमानी की वजह से मरदूद होगा।" फिर अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह! मुझे इस मरदूद को दिखा" इरशाद हुआ जल्द ही तू उसे देखेगा और फिर वह जब भी सज्दे से सर उठाता उसे सज्दे की जगह **"लअ़्नल्लाहु अला इबलीस"** लिखा नज़र आता था और जब वह कलिमा पढ़ता उसकी ज़बान पर यही कलिमा आता था। आगे चल कर यही जिन्न शैताने लईन बना।

याजूज माजूज

याजूज माजूज हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे याफ़ित की औलाद हैं। पहले यह ज़मीन पर फ़साद बरपा करते थे। खेतों का सफ़ाया करते थे। इंसानों, चरिन्दों और परिन्दों, यहां तक कि वह सांप बिच्छू तक खा जाते थे। हज़रत ज़ुल-करनैन और खिज़्र अलैहिस्सलाम का जब उस इलाके से गुज़र हुआ तो लोगों ने आपसे शिकायत की कि फ़ुलां-फ़ुलां मकाम से क़ौम आती है दिन को उन पर ज़ुल्म करके रात में चली जाती है। हज़रत ज़ुलकरनैन ने याजूज माजूज की बस्ती के अतराफ़ एक आहिनी दीवार तामीर की, जिसकी बुलन्दी दो सौ गज़ और चौड़ाई पचास गज़ है। और वहां उन्हें कैद कर दिया।

हदीस शरीफ़ में मरवी है कि याजूज माजूज रोज़ाना रात में उस दीवार को चाट-चाट कर गिराने की कोशिश करते हैं। सुबह तक आधी दीवार गिर जाती है मगर फिर वह यह कह कर चले जाते हैं कि अब यह आधी दीवार कल गिराएंगे लेकिन दूसरे दिन वह दीवार दोबारा मुकम्मल पाते हैं। लेकिन करीबे क़यामत जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल होगा उस वक्त उनमें एक लड़का होगा वह कहेगा इन्शाअल्लाह अब आधी दीवार कल गिराएंगे। उस लड़के के इन्शाअल्लाह कहने से वह दीवार वैसी ही आधी गिरी हुई होगी। फिर वह उस दीवार को पूरी तोड़ कर कैद से दोबारा आज़ाद हो जाएंगे। क़त्ल व ग़ारतगारी का बाज़ार गरम करके दुनिया के कोने-कोने में पहुंच जाएंगे। सिर्फ़ मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में नहीं पहुंच सकेंगे। लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से फ़रियाद करेंगे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उनकी हलाकत की दुआ फ़रमाएंगे। अल्लाह तआला उनकी दुआ कुबूल फ़रमा कर एक किस्म का कीड़ा भेजेगा जो उनके नथुनों से दिमाग में जाकर उन्हें हलाक कर देगा। दीवार का नाम सद्दे सिकन्दरी है जो बहरे कुल्ज़ुम के मशरिकी साहिली इलाका ऐशियाए कोचक में वाके है।

हारूत व मारूत

तफ़्सीरे अज़ीज़ी में रिवायत है कि हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम के दौर में इंसान बेहद बेअमल हो गये थे। तो फ़रिश्तों ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि ऐ मौलाए काइनात हम ने आदम अलैहिस्सलाम का पुतला बनाने से पहले तुझ से कहा था कि इंसान ख़िलाफ़त के क़ाबिल नहीं। यह क़त्ल व ग़ारत गरी में मुब्तला रहेगा। अब उन्हें माज़ूल किया जाए। रब तआला ने इरशाद फ़रमाया :- "ऐ फ़रिश्तो! मैंने इंसान के अन्दर गुस्सा और शहवत का माद्दा डाला। जिसकी वजह से वह गुनाह के मुर्तकिब होते हैं। अगर तुम्हें भी वह चीज दी जाए तो तुम भी उसी तरह गुनाहों में मुब्तला होंगे। फ़रिश्तों ने कहा :- "ऐ मौला! अगर हम में वह चीज़ होगी तो हम गुनाह के पास नहीं नहीं भटकेंगे। चाहे कितना भी गुस्सा आए या शहवत ग़ालिब आए। अल्लाह तआला ने फरमाया :- अच्छा तो दो फ़रिश्ते ऐसे हाज़िर करो जो मुत्तक़ी और परहेज़गार हों। उन में गुस्सा और शहवत डाल कर उनका इम्तिहान लेना चाहता हूं।

चुनांचे दो फ़रिश्ते हारूत व मारूत को अल्लाह तआला के दरबार में पेश किया गया। अल्लाह तआला ने दोनों फ़रिश्तों में दोनों चीज़ें डाल दीं और शहर बाबुल में फ़रिश्तों को डाल दिया और हुक्म दिया कि तुम शहर क़ाज़ी बन कर इंसाफ़ का काम करो और एक इस्मे आज़म भी दिया कि जब चाहें उसके ज़रिए आसमान पर आ सकते हो।

ग़रज़ यह कि एक माह तक दोनों फ़रिश्ते निहायत ख़ुश उस्लूबी से अपने काम अन्जाम दिए। इत्तिफ़ाक़न एक हसीन व जमील औरत जिसका नाम ज़ोहरा था, अपने शौहर के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर करने आई। इधर हारूत और मारूत उस पर फ़िदा हो गये और उस से बदफ़ेअ़ली का इज़्हार किया। औरत ने कहा तुम्हारा और हमारा दीन अलग है। अगर तुम मेरे दीन को क़ुबूल करके मेरे बुत को सज्दा करो और मेरे शौहर को क़त्ल करो तब मैं तुम से राज़ी हूंगी। लिहाज़ा दोनों ने उस की ख़्वाहिश पर उसकी शर्तें मन्ज़ूर कर लीं। फिर उस औरत ने दोनों को शराब पिलाई। बुतों को सज्दा

कराया और शौहर को मरवाया. इस से पहले शराब के नशे में उस ने दोनों से इस्मे आज़म सीख लिया।

जब दोनों फ़रिश्तों को होश आया तो अपनी ग़लती पर बेहद शर्मिन्दा हुए। उधर औरत इस्मे आज़म के ज़रिए आसमान पर पहुंच गई। अल्लाह तआला ने उसे ज़ोहरा सितारा में मुन्तक़िल कर दिया।

दोनों फ़रिश्ते अपने गुनाहों से नादिम हो कर हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे और अल्लाह तआला से मुआफ़ी के तलबगार हुए। अल्लाह तआला ने हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम से कहा उन से कहो अब वह गुनाह के मुरतकिब हो चुके हैं और सज़ा के भी मुस्तहिक़ हो गये हैं। उन से कहो कि दुनियावी अज़ाब क़ुबूल करें या आख़िरत की। तब दोनों ने कहा। ऐ रब्बे ग़फ़ूर हमारे दुनियावी अज़ाब आर्ज़ी होंगे और आख़िरत के अज़ाब अबदी होंगे। दुनिया को एक दिन फना होना है जबकि आख़िरत का मुआमला हमेशा–हमेशा के लिए होगा इसलिए हमें दुनियावी अज़ाब दिया जाए।

चुनांचे अल्लाह तआला ने दूसरे फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि उन को ज़ंजीरों में जकड़ कर बाबुल के अन्धे कुंए में उलटा लटका दो और नीचे से आग भड़काओ और ऊपर से कोड़े बरसाओ।

ग़रज़ कि आज तक दोनों फ़रिश्ते हारूत व मारूत बाबुल के कुएं में उलटे लटके हुए हैं। नीचे से आग दमक रही है और ऊपर से फ़रिश्ते कोड़े बरसा रहे हैं। उनकी ज़बानें बाहर निकली हुई हैं। यह सिलसिला क़यामत तक चलता रहेगा।

अल्लाह तआला हम सबको गुनाहों से और ऐसे अज़ाब से महफ़ूज़ रखे। (आमीन)

दूसरा बाब

कअ्बतुल्लाह – बैतुल–हराम

कअबा के लफ़्ज़ी माना "ऊंचा उठा हुआ" के है। कअबतुल्लाह की बुनियाद तीन मरतबा हुई। पहली मरतबा मलाइका ने, दूसरी मरतबा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने और तीसरी मरतबा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने। कअबा की इमारत की मरम्मत का काम कई मरतबा हुआ। क़ौमे अलक्मा, कबील–ए–जुरहुम, कुसय बिन किलाब, कबील–ए–क़ुरैश, हज्जाज बिन यूसुफ़, सुल्तान अहमद शाह वालिए कुस्तुनतुनिया ने मरम्मत की।

जब ख़ान–ए–काबा की बुनियाद पहली मरतबा डाली गई तो उसके लिए पांच पहाड़ों के पत्थर का इस्तेमाल हुआ। (१) कोहे लुबनान (२) कोहे तूर (३) कोहे ज़ैता (४) कोहे जूदी (५) कोहे हिरा।

बैतुल्लाह के अतराफ़ के घेरे को हरम कहा जाता है। जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से निकाले गये और कअबा के क़रीब ज़मीन पर आए तो आप को नफ़्से शैतान का ख़ौफ़ हुआ। तब अल्लाह तआला ने आपकी हिफ़ाज़त की ख़ातिर चारों तरफ़ फ़रिश्तों को भेजा। तमाम फ़रिश्ते ख़ान–ए–कअबा के अतराफ़ में घेरा डाले हुए थे उतना हिस्सा हरम शरीफ़ कहा जाने लगा।

दूसरी रिवायत में हज़र–ए–असवद जब जन्नत से उतारा गया और उसको ख़ान–ए–कअबा में नसब किया गया तो उसकी नूर की किरनें जहां तक पहुंची उन हुदूद को हरम शरीफ़ मुक़र्रर किया गया। दौरे जाहिलीयत में ख़ान–ए–कअबा का दरवाज़ा हफ़्ता में सिर्फ़ दो मरतबा यानी दो शंबा और पंज शंबा को खोला जाता था। लोग बरहना हो कर कअबे का तवाफ़ किया करते थे।

ख़ान–ए–कअबा दुनिया के बीचों बीच है। तमाम दुनिया के मुसलमान उसी तरफ़ अपना रुख़ करके नमाज़ पढ़ते हैं।

५७१ ई० में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से

पचपन दिन कब्ल यमन का बादशाह अबरहा खान–ए–कअबा को ढाने के लिए हाथियों की एक बड़ी फौज लेकर मक्का मुकर्रमा पर हमला आवर हुआ। लेकिन अल्लाह तआला ने अपने घर की हिफ़ाज़त के लिए एक किस्म का परिन्दा अबाबील को नाज़िल किया। जिनके मुंह में छोटी–छोटी ककरियां थीं जो देखने में तो छोटी ककरियां थीं मगर उनका वज़न मनों जैसा था, वह ककरिया हाथियों पर बरसाने लगीं जिसकी वजह से हाथियों की फौज में भगदड़ मच गई और अबरहा की फौज कुदरती तौर पर पस्पा हो कर भाग खड़ी हुई। इस तरह अल्लाह तबारक व तआला ने खुद अपने घर की हिफाज़त फरमाई। जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद के सूरः अलम तरा कैफा में मौजूद है।

६२३ ई० २ हिज० को बैतुल–मक्दिस के बजाए खाना–ए–काबा को किबला करार दिया। चूंकि यहूदी बैतुल–मक्दिस की तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ते इसलिए वह अक्सर मुसलमानों पर लअन तअन करते कि मुसलमान हमारी नक्ल करके बैतुल–मक्दिस की तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ते हैं। इसलिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख्वाहिश थी कि मुसलमानों का किबला बैतुल–मुकद्दस की बजाए खान–ए–कअबा हो। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख्वाहिश पूरी कर दी जुहर की नमाज़ के वक़्त दो शंबा के दिन तहवीले किबला का हुक्म हुआ। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ ही में अपना रुख खान–ए–कअबा की जानिब फरमाया। इसलिए इस मस्जिद को क़िब्लतैन यानी दो किबला वाली मस्जिद कहा जाता है। दुनिया के तमाम मुसलमान उसी को किबला मान कर उसकी तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ते हैं।

बैते सनम

खान–ए–कअबा में सबसे पहले उमर बिन रबीअ शाह हिजाज़ ने बुत नसब किया था। रफ़्ता–रफ़्ता हर दौर में बादशाहों ने बुत रखना शुरू किए। होते–होते बुतों की तादाद ३६० हो गई। खान–ए–कअबा में तीन कवी हैकल बुत लात, मनात हुबुल, उज़्ज़ह नसब थे। उसके अलावा और दो बुत थे। एक मर्द जिसका नाम साफ़ था और एक औरत जिसका नाम

नाइला था दोनों ने ख़ान–ए–कअबा में ज़िना किया। तब वह वहीं पर बुत बन गये। अहले कुरैश ने दोनों बुतों को ख़ान–ए–कअबा से निकाल कर बाहर दरवाज़े पर लटका रखा ताकि लोग इबरत हासिल करें।

बुतों का सफाया :

६२८ ई० और ८ हिजरी में जब हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बेग़ैर जंग व जिदाल के मक्का शरीफ़ फतह किया तो उस वक़्त सबसे पहले ख़ान–ए–कअबा को बुतों से पाक करने का काम शुरू किया। जो बुत ऊंचाई पर थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे अपने नवासे अली बिन हज़रत अल–आस व सैयदा ज़ैनब बिन्ते रसूल को कन्धे पर बिठा कर बुतों को गिराया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक छड़ी की नोक से गिराते जाते थे और कुरआन पाक की तिलावत फरमाते जाते थे कि हक़ आ गया, बातिल चला गया। बातिल मिट गया जो मिटने की चीज़ थी। इन बुतों में हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल के मुजस्समे भी थे।

ख़ान–ए–कअबा में पहली नमाज़ :

जब ख़ान–ए–कअबा बुतों से पाक हो गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसामा बिन ज़ैद, हज़रत बिलाल, हज़रत उस्मान बिन तलहा को लेकर ख़ान–ए–कअबा के तमाम गोशों में नअ्र–ए–तक्बीर बुलन्द किया और दो रकअत नफ़्ल शुक्राने की नमाज़ अदा की। फिर बाहर तशरीफ़ लाए और उस्मान बिन तलहा को कअबा शरीफ़ की कुंजी अता फरमाई।

मक्का मुकर्रमा पर मुसलमानों का तसल्लुत :

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का पुरअमन तरीक़े पर मुकम्मल तसल्लुत हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान किया कि आज से कोई भी बरहना हो कर ख़ान–ए–कअबा का तवाफ़ नहीं करेगा। किसी काफिर और मुश्रिक को मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं होगी। किसी परिन्दे और जानवर का शिकार करना हराम होगा। कोई दरख़्त काटा न जाएगा। कोई किसी को नाहक़ न सताए। किसी क़िस्म का जंग व जिदाल न हो। ख़ान–ए–कअबा में सबसे पहले हज़रत बिलाल हबशी ने ख़ान–ए–कअबा पर चढ़ कर पहली अज़ान दी।

हुदूदे हरम शरीफ़ की ख़ुसूसियत

ग़िलाफ़े काबा :

सबसे पहले ख़ान–ए–कअबा पर शाहे यमन मुल्क तबअ् हमीरी ने ग़िलाफ़ चढ़ाया। उसके बाद कई बादशाहों ने मुख़्तलिफ़ रंगों के ग़िलाफ़ चढ़ाए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यमनी कपड़े का ग़िलाफ़ चढ़ाया था। ख़ुलफ़ाए राशिदा ने भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तक़्लीद की। उसके बाद ख़लीफ़ा मेहदी अब्बासी जब हज के लिए आए तो उन्होंने तमाम ग़िलाफ़ उतार कर सिर्फ़ एक सियाह रंग का ग़िलाफ़ चढ़ाया और आज तक यही दस्तूर चला आ रहा है।

२०६ हिज० में मिस्र और यमन के हुक्मरानों ने मुश्तरेका तौर पर ख़िदमत अपने ज़िम्मे ली। लेकिन जब मिस्र पर तुर्कों का क़ब्ज़ा हुआ तो सलतनते उस्मानिया ने अन्दरूने कअबा और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुजर–ए–मुबारक में रौज़–ए–अक़्दस के ग़िलाफ़ की ज़िम्मेदारी ली और बैरूनी कअबा का ग़िलाफ़ मिस्र के ज़िम्मे आज तक चला आ रहा है। जो सियाह मख़्मली पर सोने के तारों से कुरआनी आयतों से मुरस्सा होता है। यह लिखने का सबसे पहले कलाम ७६१ हिज० में मिस्र के सुल्तान हसन बिन सबाह ने शुरू किया। जो आज तक जारी है। हर साल आठ ज़िल–हिज्जा को पुराना ग़िलाफ़ उतार कर नया चढ़ाया जाता है।

हतीम :

रुक्न शामी और रुक्न इराक़ी के दर्मियान मदीना मुनव्वरा की सिम्त में क़ौस की शक्ल में कअबा को छूकर संगे मरमर की चार फिट दीवार घिरी हुई है। दूर से देखने पर यूं महसूस होता है कि कअबा की मेहराब मदीना मुनव्वरा की जानिब झुकी हुई है। हदीस शरीफ़ में है कि हतीम में नमाज़ पढ़ना कअबा के अन्दर नमाज़ पढ़ने के बराबर है।

हजर–ए–अस्वद :

यह एक सियाह पत्थर है। जिसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपने साथ जन्नत से लाए थे। हजर–ए–अस्वद जब जन्नत से लाया गया उस वक़्त दूध से ज़्यादा सफ़ेद और मुनव्वर था। लेकिन गुनहगारों के चूमने से अब

वह सियाह हो गया है। हजर-ए-अस्वद ख़ान-ए-कअबा के कोने में चार फुट की ऊंचाई पर नसब है। जो चांदी के हल्के में मज़्बूत रखा गया है।

मीज़ाबे रहमत :

ख़ान-ए-कअबा की छत पर हतीम के एहाते में एक सोने का परनाला है। जो कोई इस परनाले के नीचे दुआ करे वह ज़रूर कुबूल होती है।

मुल्तज़िम :

हजरे अस्वद और कअबा के दरवाज़े के दर्मियान जो हिस्सा है उसे मुल्तज़िम कहते हैं। मुल्तज़िम के मानी लिपटना के है। यहा भी दुआएं कुबूल होती हैं।

मुस्तजाब :

रुक्ने यमानी और रुक्ने अस्वद के दर्मियान जुनूबी दीवार को मुस्तजाब कहते हैं। यहां पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बन्दे की दुआ पर आमीन कहते हैं।

मक़ामे इब्राहीम :

अल्लाह तबारक व तआला के हुक्म से हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने ख़ान-ए-कअबा की मरम्मत का काम शुरू किया। उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम एक पत्थर पर खड़े हो कर ईंटें लगा रहे थे और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम नीचे से गारह और पत्थर दे रहे थे। लिहाज़ा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जिस पत्थर पर खड़े थे वह पत्थर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जिधर चाहते मुड़ जाता था उस पत्थर पर आपके क़दमों के निशान आज तक ज्यूं के त्यूं हैं।

सऊदी हुकूमत ने एक जंगले में इसे महफ़ूज़ कर दिया है। तवाफ़े कअबा के बाद मक़ामे इब्राहीम की सीध में ज़ाइरीन नमाज़ अदा करते हैं। यह मक़ाम भी दुआओं के मक़्बूलियत का मक़ाम है।

चाहे ज़मज़म :

चाह का मतलब है कुवां (चश्मा). ज़म ज़म का मतलब है रुक-रुक। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल को तने तन्हा अरब के रेगिस्तान में अकेले छोड़ गये और हजरत हाजरा पानी की तलाश में सफ़ा से मरवा पहाड़ों तक दौड़ लगा रही थीं कि अचानक हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की एड़ी रगड़ने से वहां पानी का चश्मा फूट पड़ा और फैलने लगा। हज़रत हाजरा ने पानी समेटना शुरू किया और

कहा ज़म ज़म। यानी रुक–रुक। पानी रुक गया और इसी लिए यह मुतबर्रक पानी ज़म ज़म कहलाया। हज़ारों साल से आज तक ज़म ज़म का चश्मा जारी है। तमाम हुज्जाजे किराम बतौर तबर्रुक यह पानी साथ ले जाते हैं।

सफ़ा व मरवा :

सफ़ा और मरवा, हरम शरीफ़ के हद में दो पहाड़ियां हैं जो हज़रत हाजरा की तारीख़ी निशानी हैं। हज़रत हाजरा की ममता की मिसाल है अल्लाह तआला को हज़रत हाजरा का सात मरतबा सफ़ा और मरवा पहाड़ों तक दौड़ लगाने की अदा इतनी भाई कि हर हाजी और उमरा करने वालों पर फ़र्ज़ कर दिया।

सऊदी हुकूमत ने सफ़ा व मरवा में लाइटिंग और इयर कन्डीशन का इंतिज़ाम किया है। हुज्जाजे किराम की तादाद को देखते हुए ऊपर भी पुल की तरह रास्ता बनाया गया है। मर्दों के लिए दर्मियान में नीले रंग की ट्यूब लगाई गई है जहां मर्दों को दौड़ने की रफ़्तार तेज़ करना पड़ती है।

हरम शरीफ़ की चन्द झलकियां

हरम शरीफ़ में तीस हज़ार पंखे हैं। बीस हज़ार फानूस हैं। उन फानूसों में चालीस हज़ार बलब हैं। हर मनार पर सुर्ख़ लालटेन हैं। हर लालटेन में पांच हज़ार वाल्ट के छः छः बलब लगे हैं। जिस से ख़ास क़िस्म की रौशनी निकलती रहती है। जिस का मक़्सद है कि दूर दराज़ से आने वाले ज़ाइरीन को हरम शरीफ़ की निशानदेही हो। हरम शरीफ़ में तीन हज़ार इलेक्ट्रॉनिक घड़ियां लगी हैं जो दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में कम्प्यूटर के ज़रिए चलती हैं।

सफ़ा और मरवा में इयर कन्डीशन के ज़रिए चालीस यूनिट के बलब लगाए गये हैं। हुज्जाजे किराम की आसानियों के लिए उस पर और मज़ीद पुल बनाए गये हैं। ज़म ज़म को ठण्डा रखने के लिए दस लीटर मकअब फ़ी घन्टा पानी पहुंचाया जाता है। हरम शरीफ़ में छेः हज़ार वाटर कूलर है जिस में चालीस लीटर पानी हमा वक़्त भरा रहता है।

यहां पर एक ही क़िस्म के पचास दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े पर बाब लिखा हुआ है। ज़ाइरीन की आसानी और निशानदेही के लिए मैन गेट पर ट्यूब लगे हैं। जो ज़ाइरीन को दूर से ही पहचानने में मदद देते हैं। अनपढ़ भी रंगीन ट्यूब के ज़रिए अपने मक़ामी गेट के पास आसानी से पहुंच सकते हैं। हर मेन गेट पर बाब का नाम लिखा है जो 'ख़ुलफ़ा' सहाबा और बादशाहों के नाम से जाना जाता है। उन नामों की मदद से ज़ाइरीन को आने जाने में मदद मिलती है।

हरम शरीफ़ की देख रेख के लिए हुज्जाजे किराम की ख़िदमत के लिए और सफ़ाई व सुथराई के लिए पचास हज़ार ख़ादिम मुक़र्रर हैं। ज़िल–हिज्जा और रमज़ान शरीफ़ में दूर दराज़ से ख़ुद्दाम बुलाए जाते हैं। जो हमा वक़्त वहां मौजूद रहते हैं। हज के दौरान मुख़्तलिफ़ ममालिक के मख़्सूस अस्पताल होते हैं। जिस से हर मुल्क की इलाक़ाई ज़बान में बात करने में आसानी होती है।

हरम शरीफ़ में फिलहाल तीस लाख हुज्जाजे किराम एक वक़्त में नमाज़ अदा कर सकते हैं। ज़ाइरीन की तादाद को देखते हुए उसकी तौसीअ़ की जा रही है। हरम शरीफ़ में काफिर और मुश्रिक का दाख़िला मम्नूअ़ है। तमाम मुसलमान मर्द औरत बूढ़े, बच्चे सब दाख़िल हो सकते हैं।

दुनिया के बुत कदों में पहला वह घर ख़ुदा का
हम उसके पास्बां हैं वह पास्बां हमारा

मस्जिदे नबवी

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

६२२ ई० में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ त्रिपन साल की थी तब आपको अल्लाह तआला की जानिब से मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत करने का हुक्म हुआ और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़लीफ़–ए–अव्वल अमीरुल–मुमिनीन यारे ग़ार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के हम्राह हिजरत फरमाई।

जब आप मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो मदीना मुनव्वरा जिसका पहला नाम यस्रिब था। जहां की आबो हवा निहायत ख़राब थी जब आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम वहां पहुंचे तो मदीना में कोई जगह ऐसी न रही थी जहां मुसलमान बाजमाअत नमाज़ अदा कर सकें। इसलिए मस्जिद तामीर करना ज़रूरी था। जहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़याम फरमाया था वहां बनू नज्जार का खुजूर का बाग़ था। जो दो यतीम बच्चों की मिल्कियत था। उन बच्चों की किफालत उनका चचा करता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को क़ीमत अदा करके ख़रीदने के लिए कहा। मगर उन्होंने क़ीमत लेने से इंकार कर दिया मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ीमत अदा करवा कर मस्जिद नबवी की बुनियाद डाली। यह इस्लाम में सबसे पहली मस्जिद बनाई गई, जिसकी लम्बाई साठ गज़ और चौड़ाई चौव्वन गज़ थी। उसका दरवाज़ा शुमाल की तरफ़ रखा गया था। उस वक़्त मुसलमानों का क़िबला बैतुल–मक़्दिस था। बाद में तहवीले क़िबला हुआ और ख़ान–ए–कअबा क़िबला क़रार पाया।

मस्जिद के किनारे एक चबूतरा था। उस पर खुजूर के पत्तों से छत बनाई गई थी। जिसका नाम सुफ़्फ़ा था। जो सहाबा किराम इस्लाम की ख़ातिर अपना घर बार छोड़ कर इस्लामी तालीम हासिल करते थे उन्हें अस्हाबे सुफ़्फ़ा कहा जाता है।

मस्जिदे नबवी के मुत्तसिल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए हुजरे भी बनवाए थे। उस वक़्त तो हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा का मक्का मुकर्रमा में ही इंतिक़ाल हो चुका था। सिर्फ़ हज़रत सौदा और हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा ही आपके निकाह में थीं। इसलिए उस वक़्त दो ही हुजरे बनाए गये थे। फिर जैसे–जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात आती गईं वैसे–वैसे हुजरे बनवाते गये। यह हुजरे सादा क़िस्म के पक्की ईंटों और खुजूर के पत्तों की छत और दरवाज़ों पर टाट के पर्दे लटकाए जाते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो दरवाज़ों का इज़ाफ़ा में फरमाया। जिस में एक दरवाज़ा मस्जिदे नबवी में खुलता था जिसका नाम बाबे रहमत था। दूसरा दरवाज़ा अज़्वाजे मुतह्हरात और सहाबा किराम के लिए मख़्सूस था।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी हयाते तैयबा में दो मरतबा मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ फ़रमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए लकड़ी का एक मिंबर बनाया गया था, जो एक ख़ास क़िस्म के दरख़्त अशल की लकड़ी का बना हुआ था, जो मदीना मुनव्वरा में सिर्फ़ ग़ाबा नामी जंगल में पाई जाती है, मिंबर का तूल दो गज़ और अरज़ एक गज़ था। मिंबर की तीन सीढ़ियां थीं। हर सीढ़ी की ऊंचाई एक बालिश्त थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीसरी सीढ़ी पर जल्वा अफरोज़ होते थे। दूसरी सीढ़ी पर क़दम मुबारक रखते थे।

सबसे पहले मिंबर शरीफ़ पर हज़रत उस्मान ग़नी ने ग़िलाफ़ चढ़ाया। हज़रत अमीर मुआविया ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मिंबर शरीफ़ को मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम में मुन्तक़िल करना चाहा। जब मिंबर शरीफ़ को उस जगह से हिलाना चाहा तो अचानक पूरे मदीने में तारीकी छा गई। आफताब को गहन लग गया। तब हज़रत अमीर मुआविया अपने इस फ़ेअ़ल पर नादिम हुए। और मिंबर के मज़ीद छेः दर्जे बढ़ाए ताकि तमाम हाज़िरीन ख़तीब को देख सकें।

मस्जिदे नबवी के अन्दर का हिस्सा जहां ताजदारे आलम आराम फरमा हैं उसी मक़ाम पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलू मुबारक में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, ख़लीफ़–ए–दोम हज़रत उमर फारुक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों सहाबा किराम आराम फरमा रहे हैं। उस मक़ाम को मक़्सूरा कहा जाता है। उसी से मुत्तसिल एक जन्नत की क्यारी है। जहाँ सफेद मख़्मली क़ालीन बिछा है। बाक़ी तमाम मस्जिद में सुर्ख़ रंग के क़ालीन बिछे हैं।

रिवायत है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पुतले के लिए मुख़्तलिफ़ मक़ामात से मिट्टी जमा करने का हुक्म दिया और हज़रत इज़्राईल मिट्टी लेने लगे तो अल्लाह तआला ने पहले ही वहां जन्नत का एक टुक्ड़ा रखवा दिया। इसीलिए उसे जन्नत का टुक्ड़ा कहा जाता है।

मक़्सूरह शरीफ़ के बारे में रिवायत है कि उस टुक्ड़े में नफ़्ल नमाज़ पढ़ने से लाखों नमाज़ का सवाब मिलता है। क़रीब क़्यामत वह टुक्ड़ा उठा लिया जाएगा। मक़्सूरह के अन्दर रौज़–ए–मुबारक के ऐन सामने दीवार पर कबूतर के अन्डे के बराबर एक हीरा है जो सुनहरी जाली से घिरा है

जिसकी क़ीमत अन्दाज़न ५ लाख डालर है। इस हीरे को उस्मानिया में अहमद ख़ान ने ११०० हिज० में हुजरं-ए-मुबारक में नसब कराया था। इसके अलावा वहां और एक सुनहरी तख़्ती थी जिस पर हीरों के बारीक बारीक टुकड़ों से निहायत उम्दा ख़त में **"ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।"** लिखा हुआ है। उसे सुल्तान महमूद शाह की बेटी ने १२१० हिज० में नज़्र किया था। इसके अलावा एक और बड़ा हीरा है जिस पर हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा का नाम लिखा हुआ है।

मश्रिक़ की जानिब मोतियों और मरजान से मुरस्सा शमअ़दान है जिसे अब्दुल-मजीद वालिए मिस्र १२४७ हिज० में नज़्र किया था। उसके अलावा और भी बहुत सारे ज़र व जवाहिर अम्र और सलातीन ने नज़्र किए। १३०० हिज० तक तमाम अशिया मौजूद थीं। १३२१ हिज० में जब नज्दियों वहाबियों का क़ब्ज़ा हुआ। उन्होंने ५० हज़ार रियाल में फरोख़्त कर दिया। आज जिस की क़ीमत करोड़ों रियाल है। मक़्सूरह (हुजरा शरीफ) को साल में तीन मरतबा धोया जाता है। ६ रबीउल-अव्वल को, यकुम रजब को, और तीसरी बार १८ ज़िल-हिज्जा को। उस वक़्त ज़ाइरीन का बहुत हुजूम होता है और वह उस धोवन का पानी तबर्रुक के तौर पर ले जाते हैं।

(माख़ूज़ अल-मरकूम १३३४ हिज०)

गुंबदे ख़िज़रा

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़-ए-मुबारका पर सबसे पहले मन्सूर क़लाउद्दीन सालेही वालिए शाम ने ६७८ हिज० में गुंबद तामीर कराया। उसके बाद कई सलातीन अपने-अपने दौरे हुकूमत में गुंबद को जदीद तरीक़ से तामीर कराते रहे। उस वक्त गुंबद का रंग सफेद था। और उसे अल-क़ुब्बतुल-बैज़ा के नाम से जाना जाता था। १२५५ हिज० में सुल्तान महमूद ने उसकी तामीर का शर्फ़ हासिल किया और गुंबद को सब्ज़ रंग दिया। आज तक यही सब्ज़ रंग क़ायम है। जिसे गुंबदे ख़िज़रा (सब्ज़) के नाम से जाना जाता है।

मक़्सूरह से लग कर चारों तरफ एक एहाता है। उस अहाते में हुज़ूर पाक

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यारत के लिए ख़्वातीन के लिए फज्र की नमाज़ के फौरन बाद दो घन्टे के लिए और ज़ुहर बाद खोल दिया जाता है। बाक़ी तमाम दिन मर्दों के लिए खुला रहता है।

मस्जिदे अक़्सा (बैतुल–मक़्दिस)

बैतुल–मक़्दिस दुनिया की पहली मस्जिद है जिसे मुसलमान क़िबल–ए–अव्वल मानते हैं। चूंकि मुसलमान पहले बैतुल–मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ा करते थे। यहूदियों की लअ़्न तअ़्न की वजह से अल्लाह तआला ने ज़ुहर की नमाज़ ही में रुख़ बदलने का हुक्म दिया क्योंकि यह हुज़ूर की ख़्वाहिश थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रुख़ फेरते ही तमाम सहाबा किराम ने भी अपना रुख़ फेर दिया।

उसके अलावा शबे मेअ़्राज को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां क़्याम फरमाया था। वहां एक सख़रा नामी चबूतरा है जिस पर हज़रत जिब्रील ने खड़े हो कर अज़ान दी थी और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम अंबियाए किराम की इमामत की थी। तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे मुक़्तदी बन कर खड़े रहे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब पैग़म्बरों में आख़िरी नबी आए मगर इमामत में तमाम अंबिया से आगे रहे इसीलिए आपको "अव्वल व आख़िर" कहा जाता है। इस वाक़या का ज़िक्र क़ुरआने पाक के १५वीं सिपारे में आया है।

हज़रत मूसा को यहीं पर अल्लाह तआला की तजल्ली नज़र आई। यहां हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई और यहां हैकल सुलेमानी है, हज़रत सुलेमान के हुक्म से जिन्नात ने मस्जिद तामीर किया और यहीं पर हज़रत सुलेमान् अलैहिस्सलाम अपने असा को टेक लगाए हुए थे कि आपकी रूह क़ब्ज़ हुई। इसलिए दुनिया की बड़ी–बड़ी क़ौमें उस पर अपना तसल्लुत क़ायम करना चाहती हैं। जिस में खुसूसी तौर पर मुसलमान, ईसाई, यहूदी और नसरानी हक़ जताने के लिए आए दिन आपस में जंग पर आमादा हैं। रह–रह कर एक दूसरे पर हमला आवर होते रहते हैं।

तीसरा बाब

कुतुबे समावी

अल्लाह तबारक व तआला ने अपने कलाम की तक़रीबन चार किताबें मुख़्तलिफ़ पैग़म्बरों पर नाज़िल फ़रमाई हैं।

१. क़ुरआन मजीद, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई।

२. ज़बूर, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर।

३. तौरेत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर।

४. इंजील (बाइबल) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर।

इसके अलावा छोटी–छोटी किताबें जिन्हें सहीफ़े कहा जाता है जो बाज़ मख़्सूस पैग़म्बरों पर नाज़िल हुईं।

१. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर दस सहीफ़े नाज़िल हुए।

२. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम पर पचास सहीफ़े नाज़िल हुए।

३. हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम पर तीस सहीफ़े नाज़िल हुए।

४. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर दस सहीफ़े नाज़िल हुए।

चार मुक़द्दस किताबें

ज़बूर :

१८ रमज़ान को हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। जिसमें १५० सूरतें थीं। उस में ज़्यादा तर अल्लाह तआला की हिक्मत और वअ़्ज़ से मुतअल्लिक़ अहकाम थे। ज़बूर में सबसे बड़ी सूरत क़ुरआन मजीद के चौथाई हिस्से के बराबर थी। और सबसे छोटी सूरः नस्र के बराबर थी। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़बूर की तिलावत सत्तर ज़बानों में करते थे। सुरेली आवाज़ में जब तिलावत करते तो आपके गर्द चरिन्द परिन्द सब जमा हो जाते।

तौरेत :

छेः रमज़ान को तौरेत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। जिस में एक हज़ार सूरतें थीं। हर सूरत में एक हज़ार आयतें थीं। तौरेत बेरी की लकड़ी के तख़्ते पर लिखी हुई थी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर जब तौरेत नाज़िल हुई तो आपने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया ऐ बारी

तआला इस किताब को कौन पढ़ेगा। इरशाद हुआ ऐ मूसा! अपने महबूब पर मैं जो किताब नाज़िल करूंगा तो उसके बच्चे बच्चे मुहाफ़िज़ होंगे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब तौरेत लेकर कोहे तूर से १० दिन बाद लौटे तो देखा बनी इस्राईल गाय की पूजा में मशगूल हो गये हैं तब आपने तैश में आकर तख़्ती को ज़मीन पर पटख़ दिया जिस से उसके सात टुक्ड़े हुए। छेः टुक्ड़े ग़ायब हुए एक रह गया। तौरेत में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुलिया मुबारक भी दर्ज था।

इंजील :

इंजील १३ रमज़ान को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। चूंकि इंजील इबरानी ज़बान में नाज़िल हुई थी, इसलिए उसे कोई नहीं पढ़ सकता था। इंजील के मुतअल्लिक़ ज़्यादा मालूमात हासिल न हो सकीं।

कुरआने करीम :

कुरआन मजीद हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो पैग़म्बरे आख़िरुज़्ज़मां हैं, आख़िरी कलामुल्लाह (कुरआन मजीद) नाज़िल हुआ। कुरआन मजीद मुकम्मल तौर पर लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर नाज़िल किया गया था। फिर हस्बे ज़रूरत थोड़ा–थोड़ा नाज़िल होता रहा। २७वीं शब रमज़ानुल–मुबारक में २३ साल में मुकम्मल हुआ।

कुरआन मजीद की पहली आयत **इक़रा बिस्मे रब्बिकल्लज़ी**। (सूरः अलक़ ३०वां पारह) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ग़ारे हिरा में ४० साल की उम्र में वही के ज़रिए नाज़िल हुई।

कुरआन मजीद में कुल ३० जुज़ (पारे) हैं। कुरआन मजीद में ११४ सूरतें हैं, ७ मंज़िलें है और ५५८ रुकूअ़ हैं।

कुरआन मजीद में ८६४३० कलिमात हैं। ३०४७४० हर्फ़ हैं। ८६५८६ ज़ेर हैं, ५३०४३२ ज़बर हैं, ८८०० पेश हैं और २५६८१ नुक़्ते हैं।

कुरआन के पहले कातिब ख़ालिद बिन सईद थे और आख़िरी कातिब उबैद बिन कअ़ब थे। उस में ८६ मक्की और २८ मदनी सूरतें हैं।

मक्का में सबसे पहली नाज़िल होने वाली सूरः इक़रा है। आख़िरी सूरत अल–अंकबूत है। मदीना मुनव्वरा में सबसे पहले नाज़िल होने वाली सूरत **वैलुल–लिल–मुतफ़्फ़ेफ़ीन** और आख़िरी सूरत बराअ नाज़िल हुई।

कुरआन मजीद में हज्जाज बिन यूसुफ़ के दौरे ख़िलाफ़त में ख़लील बिन अहमद ने एराब लगाए। कुरआन पाक को सबसे पहले हुज़ूर पाक

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तरतीब दिया। फिर हज़रत उस्मान ग़नी (ख़लीफ़–ए–सुव्वम) ने तमाम सहाबा किराम और ताबईन के पास दोबारा फिर से जमा करके किताबी शक्ल में तरतीब दिया।

पहले आयतें चमड़े टुकड़ों पर, दरख़्तों के पत्तों पर और पत्थरों पर कुन्दा लिखी जाती थीं।

अमीरुल–मुमिनीन हज़रत उस्मान ने जब किताबी शक्ल में तरतीब देना चाहा उस वक़्त आपको शुबह हुआ कि शायद सूरः तौबा और सूरः इन्आम एक ही है या दोनों इलाहिदा हैं? इसलिए आपने सूरः तौबा के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं रखा बल्कि सूरः इन्आम के बीच में बिस्मिल्लाह रखा। जमा कुरआन की वजह से आपका लक़ब जामेउल–कुरआन हुआ।

हज़रत उस्मान ग़नी या बाज़ फ़ुक़्हा का क़ौल है कि हज़रत उमर फारूक़े आज़म तरावीह में कुरआन पाक की जितनी तिलावत करते थे उसे रुकूअ् कहा जाता है। इसलिए कुरआन शरीफ़ के हाशिए में जगह–जगह हज़रत उस्मान या हज़रत उमर फारूक़ के नाम की मुनासिबत से अ लिखा हुआ होता है।

कुरआन पाक के चार हिस्से ख़िलाफ़ते अब्बासिया के दौर में किए गए। रबअ (पाव) निस्फ़ (आधा) सलासा (पौन)।

कुरआन में जितनी आयतें हैं उतने ही जन्नत के दरवाज़े हैं। कुरआन मजीद का निस्फ़ सूरः कहफ़ में **वलयतलत्तफ़** के फ़ पर ख़त्म होता है।

कुरआन में हन्फी मस्लक के चौदह और शाफ़ई मसलक के पन्द्रह सज्दे हैं। सत्तरहवें पारे के आख़िर में हाशिए में मसलके शाफ़ई इज़ाफी सज्दा लिखा है। सज्दा तिलावत पढ़ने वालों और सुनने वालों दोनों को वाजिब होता है। कुरआन पाक में सात मंज़िलें हैं।

पहली मंज़िल सूरः इंफ़ाल के **"द"** पर ख़त्म होती है। दूसरी मंज़िल सूरः माइदा से आयत सूरः तौबा की **"त"** पर ख़त्म होती है। तीसरी मंज़िल सूरः रअद में **अलखा** के **"अलिफ़"** पर ख़त्म होती है। चौथी मंज़िल सूरः हज्ज की आयत **"जअलना"** के **"अलिफ़"** पर। पांचवीं मंज़िल सूरः अहज़ाब में मुमिनाह की **"ह"** पर। छठी मंज़िल सूरः फतह की आयत **ज़न सू** के **"व"** पर और सातवीं मंज़िल कुरआन पाक के ख़त्म पर ख़त्म होती है।

कुरआन पाक में पांच सूरतों के शुरू में **अल्हम्दु लिल्लाह** है। (१) सूरः फातिहा (२) सूरः इन्आम (३) सूरः कहफ़ (४) सूरः सबा (५) सूरः फातिर।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि अर्श के ख़ास ख़ज़ाने से मुझे चार सूरतें अता हुई।

(१) सूरः फातिहा (२) आयतुल–कुर्सी (३) सूरः बक़र की आख़िरी आयतें (४) सूरः कौसर।

कुरआन में सूरः बरात के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं है।

कुरआन मजीद के सूरः इन्आम के बीच में बिस्मिल्लाह है।

कुरआन मजीद के तीसरे पारे में आयत नम्बर २५ में "मिनश्शैतानिर्रजीम" है।

कुरआन मजीद में सबसे बड़ी सूरत सूरः बक़रा है : और सब से छोटी सूरः कौसर है।

कुरआन मजीद में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सात नाम से मुख़ातब किया गया है।

(१) मुहम्मद (२) अहमद (३) ताहा (४) यासीन (५) मुज़म्मिल (६) मुदस्सिर (७) अब्दुल्लाह।

कुरआन मजीद में सबसे अव्वल सूरः फातिहा है और आख़िर में सूरः नास।

कुरआन मजीद में २६ जगहों पर पैग़म्बरों का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में १५० जगह ख़ैरात का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में ८ जगह शहादत (गवाही) का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में १२ मक़ामात पर ग़ज़वात का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में ७०० जगह नमाज़ का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में ११ जगह या ऐयुहन्नबीयु से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़ातब किया गया है।

कुरआन मजीद में दो औरतों की गवाही का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में सिर्फ़ एक औरत हज़रत मरयम का नाम आया है।

कुरआन मजीद में सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का ज़िक्र है।

कुरआन मजीद में सबसे ज़्यादा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र आया है।

कुरआन मजीद में सहाबा किराम में सिर्फ़ ज़ैद बिन हारसा का नाम आया है।

कुरआन मजीद में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम २५ जगह आया है।

कुरआन मजीद में इस्मे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चार जगह और इस्म अहमद एक जगह आया है।

बाज़ सूरतों के ख़्वास :

सूरः बक़रा में तहवीले क़िबला (क़िबला बदलने) का हुक्म हुआ।

सूरः बक़रा की दो आख़िरी आयतें हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बिला वास्ता शबे मेअ़राज़ में अता हुईं।

सूरः बक़रह को उम्मतैन भी कहते हैं यानी दो उम्मतों वाली यानी एक में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ़सत से पहले का ज़िक्र है और दूसरी में बेअ़सत के बाद का ज़िक्र है।

सूरः कौसर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादे के विसाल के मौक़ा पर हुज़ूर की तसल्ली के तौर पर नाज़िल हुई।

सूरः नूर में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा पर झूटी तोहमत लगाने वालों को दूर्रे मारने का हुक्म हुआ।

सूरः वल्लैन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की शान में नाज़िल हुई।

सूरः बक़रह आयत तत्हीरा हज़रत इमाम हुसैन की शान में नाज़िल हुई।

सूरः बराअत में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा की पाक दामनी का ज़िक्र है।

सूरः मुजादला में अल्लाह तआला का नाम आया है।

सूरः तौबा में जंगे हुनैन का ज़िक्र है।

सूरः असरा में वाक़या मेअ़राज का ज़िक्र है।

सूरः फतह में फतहे मुबीन की ख़ुशख़बरी दी गई थी।

सूरः इंफाल में ग़ज़्व–ए–बद्र का ज़िक्र है।

सूरः निसा में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रहमतुल–लिल–आलमीन का लक़ब अता हुआ।

सूरः कहफ़ में अस्हाबे कहफ़ का ज़िक्र आया है।

सूरः नजम सुन कर बहुत से काफिर मुसलमान हुए।

सूरः फ़लक़ और सूरः नास को मिला कर मऊज़तैन कहते हैं।

सूरः बनी इस्राईल में मस्जिदे अक़्सा का ज़िक्र आया है।

सूरः बक़रह में दो औरतों की गवाही का ज़िक्र है।

सूरः नजम हज़रत मूसा कलीमुल्लाह पर भी नाज़िल हुई थी।

बाज़ सूरतों के साथ फ़रिश्तों का नुज़ूल :

सूरः इंफ़ाल के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल हुए थे। सूरः यूनुस के साथ तीस हज़ार सूरः कहफ़ के साथ सत्तर हज़ार, आयतल—कुर्सी के साथ तीस हज़ार और सूरः बक़रः के साथ अस्सी हज़ार फरिश्ते नाज़िले हुए।

तौरेत में बाज़ सूरतों के नाम :

सूरः आले इमरान का नाम तौरेत में **तैयबा** था, सूरः कहफ़ का नाम अल—हाइला, सूरः यासीन का नाम अतइमा और सूरः क़मर का नाम अल—बैज़ा था।

सूरः बक़रह में **फ़सयफ़कहुम** की आयत पर हज़रत उस्मान ग़नी की शहादत के वक़्त ख़ून के छींटे गिरे थे। कुरआन शरीफ़ का वह नुस्ख़ा जो इंक़रह के म्यूज़ियम में महफ़ूज़ है।

सूरः फातिहा मुकम्मल सूरत है। इसे उम्मुल—कुरआन भी कहा जाता है।

सूरः इख़्लास को तौहीद भी कहा जाता है।

सूरः यासीन कुरआन पाक का दिल है।

सूरः अर्रहमान उरूसुल—कुरआन है।

आयतल—कुर्सी कुरआन पाक का हिसार है।

सूरः इख़्लास कुरआन पाक का कुफ़्ल है।

सूरः वज़्ज़ुहा कुरआन पाक का ताज है।

सूरः मुल्क कुरआन पाक का चिराग़ है।

सूरः बक़रह को सलामुल—कुरआन भी कहा जाता है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर **कुल हुवल्लाहु अहद**, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर **अल्लहुस्समद** लिखा है। हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर **लम यलिद वलम यूलद** लिखा है और हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर **वलम यकुन लहू कुफ़्वन अहद** लिखा है।

इसी तरह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की पेशानी पर **कुल हुवल्लाहु अहद** लिखा है, हज़रत उमर फारूक़ की पेशानी पर **अल्लाहुस्समद**, उस्मान ग़नी की पेशानी पर **लम यलिद वलम यूलद** लिखा है और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू की पेशानी पर **वलम यकुन लहू कुफ़्वन अहद** लिखा है।

अल्लाह तआला ने दुनिया बनाने से दो हज़ार साल क़ब्ल सूर: ताहा और सूर: यासीन की तिलावत फ़रमाई थी।

कुरआन मजीद में बाज़ पैग़म्बरों का ज़िक्र

पैग़म्बरों के इस्मे गिरामी	क़ुरआन में ज़िक्र	अल्क़ाब
हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम	५ बार	इमामुल–अंबिया
हज़रत आदम अलैहिस्सलाम	२५ बार	अबुल–बशर
हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम	७१ बार	अबुल–अंबिया ख़लीलुल्लाह
हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम	१२ बार	अबुल–अरब, ज़बीहुल्लाह
हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम	३३ बार	कलीमुल्लाह
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम	३६ बार	रूहुल्लाह
हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम	२५ बार	ख़लीफ़तुल्लाह
हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम	१६ बार	इस्राईल
हज़रत नूह अलैहिस्सलाम	४६ बार	जुन्नून
हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम	६ बार	
हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम	४ बार	
हज़रत हारून अलैहिस्सलाम	१६ बार	
हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम	६ बार	
हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम	७ बार	
हज़रत यूशअ् अलैहिस्सलाम	१० बार	
हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम	२ बार	
हज़रत हूद अलैहिस्सलाम	१७ बार	
हज़रत लूत अलैहिस्सलाम	२२ बार	
हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम	२७ बार	
हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम	१७ बार	
हज़रत इल्यास अलैहिस्सलाम	३ बार	
हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम	७ बार	
हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम	११ बार	
हज़रत ज़ुल्क़रनैन अलैहिस्सलाम	२ बार	

कुरआन मजीद में बाज़ फ़रिश्तों का ज़िक्र

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम : अल्लाह तआला का पैग़ाम पैग़म्बरों तक पहुंचाना।

हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम : बनी नौए इंसान के लिए रिज़्क और बारिश का इंतिज़ाम करना।

रअ़द : यह फ़रिश्ते तस्बीह और हम्दें इलाही में हमा वक़्त मशगूल रहते हैं।

मालिक : यह फ़रिश्ता दोज़ख़ का दारोग़ा है।

सजल : यह फरिश्ता आमाल नामों पर मामूर है।

क़ईदा : यह फरिश्ता बुराइयों को लिखने पर मअ़मूर है।

अर्रूह : तमाम फ़रिश्तों में अज़्रूए ख़िल्क़त, जिस्म में सबसे बड़ा है।

सकीना : यह फ़रिश्ता मोमिनों के क़ल्ब को तस्कीन देता है, जहां अल्लाह और उसके रसूल का ज़िक्र होता है वह अपनी रहमत से ढांप लेता है।

कुरआन मजीद में कुफ़्फ़ार के नाम

क़ारून : यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चचाज़ाद भाई था, ज़र अन्दोज़ी और बख़ीली में मशहूर था। दुनिया का सबसे बड़ा मालदार शख़्स था। जब उसने ज़कात देने से इंकार किया तो माल के साथ ज़मीन में धंसा दिया गया और क़्यामत तक धंसा रहेगा।

जालूत : इस शह ज़ोर, ज़ालिम और जाबिर बादशाह ने अपने ही ख़ानदान के नौजवानों को गुलाम बना के रखा था, बनी इस्राईल की जानिब से बादशाह बनाए जाने के बाद तालूत ने देखा कि उसका मुक़ाबला नामुम्किन है। तब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के हाथों क़त्ल हुआ।

अल्सी : बनी कनाना के क़बीले का शख़्स था, जो लोगों को लूटता था।

कुरआन मजीद में आने वाले अल्क़ाब

इस्राईल :

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब है। उनकी औलाद को बनी इस्राईल कह कर मुख़ातब किया गया।

मसीह : हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का लक़ब है। ईसा का मतलब है कि जिस मरीज़ पर हाथ फेरे वह तन्दुरुस्ती पाता है। ईसा अलैहिस्सलाम

के मानने वालों को ईसाई कहा जाता है।

ज़ुल–किफ़्ल :

बाज़ फ़ुक़्हा का क़ौल है हज़रत यूशअ् का लक़ब है। बाज़ का क़ौल है हज़रत लैस का और बाज़ का क़ौल है हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम का लक़ब है। ज़ुल–किफ़्ल का मतलब है दोबारा ज़िन्दा होना।

ज़ुल–क़रनैन :

उनका नाम इस्कन्दरीया या अब्दुल्लाह है, ज़ुल–क़रनैन का लक़ब इसलिए हुआ कि उनकी हुकूमत मश्रिक़ से मग़्रिब तक थी। इसके अलावा वह दो बड़े मुल्क रूम और फारस (ईरान) के बादशाह थे। उनके पास दो सींग थे जो टोपी में छुपाए रखते थे।

फ़िरऔन :

असल नाम मुस्अब बिन वलीद था। जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दौर का बादशाह था। उस दौर में मिस्र के बादशाहों का नाम फ़िरऔन हुआ करता था।

तबअ् :

असल नाम मुल्की करब था। उसके मोतक़िद बकसरत थे। यह शाहान का लक़ब है।

अबू लहब :

असल नाम अब्दुल–उज़्ज़ा था। जिसका मतलब है उज़्ज़ा (बुत) को ख़ुदा जानना, इसलिए उसका नाम लेना हराम है। इसलिए उसे अबू लहब कहा गया और वह हतमी भी है।

कुरआन मजीद में बाज़ परिन्दों का ज़िक्र

अस्सल्वा :

यह बटेर की तरह एक छोटा सा परिन्दा था, जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दौर में बनी इस्राईल के लिए चालीस साल के लिए आसमान से उतरता था।

अल–बऊस (मच्छर)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ मुक़ाबले के दौरान नमरूद की नाक के ज़रिए दिमाग़ में घुसा, जिसकी वजह से उसे अपने सर को पीटना पड़ता था, आख़िर पीट–पीट कर उसका मग़्ज़ नाक के ज़रिए बहने लगा

और इसी अज़ाब में जहन्नम रसीद हुआ।

अज़्ज़ुबाब :

(शहद की मक्खियां) जो दुरूद पढ़ कर शहद तैयार करती हैं जिसकी वजह से शहद में मिठास पैदा होती है।

अल–अंकबूत (मकड़ी) :

जिसने हुज़ूरे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा में हिजरत के वक़्त ग़ारे सौर में क़याम के दौरान ग़ार के मुंह पर जाला बुन डाला था।

अल–जिराद (टिड्डी) :

जिसकी एक रान च्यूंटी ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के तमाम लश्कर को खिलाई थी।

अल–हुद–हुद (एक परिन्दा) :

जिसने हज़रत सुलेमान को बिल्क़ीस की ख़बर पहुंचाई थी।

अल–गुराब (कव्वा)

जब आदम अलैहिस्सलाम के बेटे क़ाबील ने हाबील को मार डाला था, तब अल्लाह तआला के हुक्म से दो कव्वे वहां आए। एक ने दूसरे को ख़त्म किया और ज़मीन में गाड़ दिया। ठीक उसी तरह क़ाबील ने गढ़ा खोद कर हाबील को दफन कर दिया कव्वे को ग़ुराब कहते हैं।

अबाबील :

जिस वक़्त अबरहा कअ्बतुल्लाह को ढाने की ग़रज़ से हाथियों की फौज लेकर आया। उस वक़्त अल्लाह तआला की क़ुदरत से अबाबील परिन्दे अपने परों में कंकर लिए हाथियों पर बरसाने लगे। कंकर देखने में तो छोटे थे मगर उनका वज़न मनों का था जिसकी वजह से हाथियों में भगदड़ मच गई और वह भाग खड़े हुए।

क़ुरआने करीम में क़ौमों का ज़िक्र

क़ुरआने करीम में क़ौमे नूह, क़ौमे लूत, क़ौमे समूद, क़ौमे इब्राहीम, क़ौमे अस्हाबुर्रास, क़ौमे मदयन, क़ौमे अस्हाबुल–उख़्दूद का ज़िक्र है।

क़ुरआने करीम में जिन्नात में सिर्फ़ एक जिन्न का नाम आया है। अज़ाज़ील जो बाद में इब्लीस बन गया और शैतान लक़ब हुआ।

कुरआने करीम में चौदह असनाम के नाम

वद्द, सुवाअ्, यऊस, नस्र, लात, मनात, उज़्ज़ा, अर्रज्ज़, अल-हबल, बअ्ल, अत्तागूत, अर्रशाद।

कुरआन शरीफ़ में शहरों के नाम

मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा, बद्र, हुनैन, मिस्र, बाबुल, लीकर्रकीम, हर्द, हजर, अल-कुरा, अल-कहफ़, मुज़्दलिफ़ा, अस्सरीम, अल-जजरह, अत्तानिया।

कुरआन पाक में पहाड़ों के नाम

कोहे उहुद, मशअरुल-हराम, तूरे सीना, अहक़ाफ़, अल-जूदी अर्रक़ीम, क़, तवा, अल-अरम।

कुरआन मजीद में सय्यारो के नाम

शम्स, क़मर, तारिक़ शोअ्रा।

कुरआन पाक में आख़िरत के मक़ाम

अल-फ़िर्दौस : जन्नत में सबसे आला मक़ाम।

इल्लीयीन : आख़िरत में ऐसा मक़ाम जहां सालेहीन की रूहें जमा होती हैं।

अल-कौसर : जन्नत की बेहतरीन नहर।

सल-सबील : जन्नत का एक मक़ाम।

तस्नीम : जन्नत का मीठा चश्मा।

सिज्जीन : कुफ़्फ़ारों की रूहों का मक़ाम।

सऊद : जहन्नम के एक पहाड़ का नाम।

ग़ैई : जहन्नम की एक वादी।

मवीक़ : जहन्नम में पीप की नदी।

वैल : जहन्नम में ख़ून की एक नदी जिसमें कुफ़्फ़ार ग़ोता खाएंगे।

सईर : जहन्नम की वह नदी, जिसमें ख़ून, पीप और क़य बहती है।

फ़लक : जहन्नम का एक अन्धा कुवां जिसमें मूज़ी कीड़े मकोड़े हैं।

हमजून : जहन्नम में सियाह धुवां जो आंख और हलक़ में तेज़ जलन पैदा करता है।

कुरआन पाक में मस्जिदों के नाम

मस्जिदे अक़्सा, मस्जिदे नबवी, मस्जिदे क़ुबा, मस्जिदे ज़र्रा, मस्जिदुल–हराम।

कुरआन पाक के तराजिम

कुरआन पाक की बारह सौ से ज़्यादा तफ़्सीर लिखी जा चुकी हैं।

उर्दू ज़बान में तीन सौ से ज़्यादा तरजमे हुए हैं।

लातीनी ज़बान का सबसे पहला तरजमा १५४३ ई० में सुइटज़रलैंड में हुआ।

जर्मनी में सबसे पहले तरजमा प्रोटेस्टेन्ट ने किया।

डच ज़बान में १६४१ ई० हैम्बरंग में हुआ।

रूसी ज़बान में सबसे पहले १७७६ ई० में पैंट पेटरज़स ने किया।

फार्सी ज़बान में सबसे पहले तरजमा शैख़ सअ़दी रहमतुल्लाह अलैहि ने किया।

हिन्दी में तरजमा हिन्दुस्तान के एक राजा महरूक ने किया।

कुरआन मजीद का बंगलादेश में तरजमा १८१८ ई० में सिर्फ़ आख़िरी जुज़ (पारा) का तरजमा हुआ।

कुरआन पाक में सज्द–ए–तिलावत

कुरआन पाक में पहला सज्दा नवें पारे में है। दूसरा सज्दा तेरहवें पारे में। तीसरा सज्दा चौदहवें पारे में, चौथा सज्दा पन्द्रहवें पारे में पांचवां सज्दा सोलहवें पारे में, छठा सज्दा सत्तरहवें पारे में, नवां सज्दा इक्कीसवें पारे में, दसवां सज्दा तेईसवें पारे में, ग्यारहवां सज्दा चौबीसवें पारे में, बारहवां सज्दा सत्ताईसवें पारे में, तेरहवां और चौदहवां सज्दा आख़िरी पारे में है।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

चौथा बाब

अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

आपका नाम आदम इस मुनासिबत से हुआ कि जिस ज़मीन से आपका पुतला बनाने के लिए मिट्टी ली गई उसका रंग गन्दुमी था और इबरानी ज़बान में मिट्टी को आदम कहा जाता है।

आदम अलैहिस्सलाम का पुतला बनाने के लिए ज़मीन की चालीस जगहों से मिट्टी ली गई। अल्लाह तआला ने उस पुतले को जब इंसान बनाना चाहा तो फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया ऐ बारी तआला क्या हमने तेरी इबादत में कमी की है? और फिर आदमी दुनिया में फसाद बरपा करके दुनिया में गुनाह का मुर्तकिब होगा। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया तमु फ़िक्र न करो मैं उसके साथ दो फ़रिश्तों को मुसल्लत कर दूंगा जो उन्हें गुनाहों से रोकने की कोशिश करेंगे। फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि ज़मीन से मिट्टी ले आओ। लेकिन ज़मीन ने मिट्टी देने से इंकार दिया। तब अल्लाह तआला ने हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया। वह भी वापस लौट आए क्योंकि ज़मीन ने उन्हें भी मिट्टी देने से इंकार कर दिया। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम को भेजा वह भी मायूस लौटे फिर हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम को भी जब ज़मीन ने मिट्टी देने से इंकार कर दिया तो उन्होंने ज़बरदस्ती मिट्टी छीन ली और अल्लाह के दरबार में पेश किया अल्लाह तआला ने इज़्राईल अलैहिस्सलाम से कहा जिस तरह तुम ज़मीन से मिट्टी छीन कर लाए उसी तरह इंसान की रूह निकालने की ज़िम्मेदारी तुम्हारी है। हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ रब्बुल-इज़्ज़त! जब मैं इंसान की रूह कब्ज़ करूंगा। तब लोग मुझे बुरा भला कहेंगे अल्लाह तआला ने फरमाया मैं तुम पर आंच नहीं आने दूंगा।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुतला तैयार करने के लिए चालीस

दिन मिट्टी को गूंधा गया। चालीस दिन उस पर बारिश बरसाई गई, जिस में उन्तालीस दिन ग़म की और एक दिन ख़ुशी की बारिश थी। इसी लिए इंसान की ज़िन्दगी में ख़ुशी कम और रंज ज़्यादा होते हैं। जब पुतला तैयार हुआ तो फ़रिश्तों को हुक्म हुआ वह आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें। तब तमाम फ़रिश्ते सज्दे में गिर पड़े और सौ बरस तक सज्दे में रहे। लेकिन एक फ़रिश्ता अज़ाज़ील मुंह फेर कर खड़ा हो गया। तमाम फ़रिश्तों ने सर उठाया तो देखा अज़ाज़ील मुंह फेरे खड़ा है। तब फ़रिश्तों ने शुकराने के तौर पर दूसरा सौ साल तक सज्दा किया। फिर सर उठा कर देखा अज़ाज़ील शैतान मरदूद मक़्हूर हो चुका था। सूरत ख़िंज़ीर की जिस्म बन्दर की तरह सियाह हो चुका था। उसके गले में लानत का तौक़ डाल कर दुनिया में नजिस जगह पर फेंका गया। क़्यामत तक नजिस में रहेगा शैतान ने क़सम खाई कि मैं इंसान को बहका कर गुनाह का इर्तिकाब कराके जन्नत में जाने से रोकूंगा।

जब अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त ने आदम अलैहिस्सलाम के पुतले में रूह फूंकने का हुक्म दिया। तब बहुक्म अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील ने रूह डालने की कोशिश की। दोबारा कोशिश करने पर भी रूह दाख़िल न हुई, क्योंकि जिस्म में अन्धेरा था, तब अल्लाह तआला ने नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त में दाख़िल किया। तब उस नूर की वजह से रूह हज़रत आदम के जिस्म में ठहर गई।

हज़रत आदम की पुश्त में नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से तमाम फ़रिश्ते आपका तवाफ़ करते थे। हज़रत आदम से अल्लाह ने पूछा : या अल्लाह यह फरिश्ते मेरे पीछे क्यों घूमते हैं? जवाब आया : हमने तुम्हारी पुश्त में अपने हबीब का नूर दाख़िल किया है। इसलिए तमाम फ़रिश्ते उसकी ज़्यारत के लिए घूमते हैं। तब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह! क्या ही अच्छा होता कि वह नूर मेरी पुश्त की बजाए पेशानी में होता ताकि तमाम फ़रिश्ते मेरे सामने होते। तब अल्लाह तआला ने आपकी पेशानी में नूर मुन्तक़िल कर दिया। तब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फिर अर्ज़ की : ऐ बारी तआला! तमाम फ़रिश्ते तो उस नूर का दीदार करते हैं। लेकिन मैं दीदार से महरूम हूं काश कि मैं भी यह नूर देखता : इरशाद हुआ : ऐ आदम! तुम अपने दोनों अंगूठों को मिला कर देखो उसने मेरे हबीब का नूर नज़र आयेगा। तब

आपने अपने दोनों अंगूठों को मिलाकर देखा तो आपको वह नूर नज़र आया जब आप ने दोनों अंगूठों को चूमा और कहा : "तसद्दक़ा या रसूलुल्लाह" "क़ुरतुल-ऐने बेका या रसूलुल्लाह।" यही आदम की सुन्नत, अहले सुन्नत व जमाअत अदा करते हैं।

हज़रत आदम और हव्वा :

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जन्नत में अकेले रहने की वजह से दिल न लगा। तब अल्लाह तआला ने हज़रत हव्वा को आदम की पिसली से पैदा किया। अल्लाह ने दोनों को फल खाने का हुक्म दिया मगर गन्दुम खाने से मना फरमाया।

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने हज़रत हव्वा को छूना चाहा तो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि पहले उसका महर अदा करो। तब आपने पूछा कि उसका महर क्या है? कहा "मेरे महबूब पर दुरूद पढ़ो।" तब आपने दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हक़ महर अदा किया।

हज़रत आदम और हव्वा का ख़ुल्द से निकलना :

इब्लीसे लईन को जलन होने लगी कि आदम और हव्वा तो जन्नत में मज़े लूट रहे हैं और वह ज़मीन पर ठोकरें खाता फिर रहा है, तब उस ने एक चाल चली। उसने मोर को अपना राज़दार बना कर जन्नत में दाख़िल होने की कोशिश की। फिर सांप को बहला फुस्ला कर अपने जाल में फांसा, उसके मुंह में बैठ कर जन्नत में दाख़िल हो गया। वहां आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा को बहका कर गन्दुम खिलवाया, दोनों ने अल्लाह तआला की नाफरमानी की, जिस वक़्त हव्वा ने गन्दुम तोड़ा। उस वक़्त वहां से ख़ून के क़तरे टपके। उस वक़्त अल्लाह तआला ने कहा कि अब से हव्वा की तमाम बेटियों को हर माह नजिस ख़ून बहा करेगा। जिस वक़्त दोनों नाफरमानी कर बैठे उसी वक़्त उनके जिस्म से जन्ती लिबास उतर गया और वह दोनों ज़मीन पर भेज दिए गये। इधर शैतान ने अपना काम किया और फिर सांप में बैठ कर वापस जाते-जाते उसके मुंह में पेशाब कर दिया। जिसकी वजह से सांप में ज़हर पैदा हो गया और यही वजह है कि इंसान पहले सांप के मुंह को कुचलता है।

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सरान्दीप (श्रीलंका) में उतारा। हज़रत हव्वा को साहिल अरब के जद्दह में उतारा। मिस्र के क़रीब अबलख़ में शैतान को उतारा। सांप को अस्फ़हान के जंगल और मोर

को सीस्तान में उतारा गया।

एक रिवायत में है कि पहले सांप को चार हाथ पैर थे मगर अल्लाह तआला की नाराज़गी के सबब उसके हाथ पैर मसल कर उसे पेट के बल चलने और ख़ाक छानने पर मज्बूर किया गया।

जब आदम अलैहिस्सलाम ने दुनिया में आकर गन्दुम खाया और उंगली डाल कर क़य कर दी तो जिन कीड़ों ने वह क़य खाई वह ज़हरीले हो गये। दुनिया में आने पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इतना रोए कि उनके आंसू ज़मीन पर गिरे। उस ज़मीन पर लौंग और दार चीनी के दरख़्त उग आए। और हज़रत हव्वा के आंसू समुन्द्र में गिरने पर मरवारीद (मोती) बन गये। इसलिए औरतों को मोती हीरे पहनने की इजाज़त है।

हज़रत आदम जन्नत से अपने साथ एक लकड़ी का ताबूत (सन्दूक़) लाए थे, जिसमें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा और तमाम अंबियाए किराम की शबीह थी। उसके अलावा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पढ़ती हुई तस्वीरें थीं, जिसे बनी इस्राईल जंग के दौरान अपने सामने रखते थे और उसके वसीले से फतह की दुआ मांगते और फतहयाब होते थे। इस ताबूत को ताबूते सकीना कहते हैं।

जब आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा ज़मीन पर उतारे गये तो वह बरहना थे वह अपनी शर्मगाह को छुपाने के लिए पत्तों के लिए दरख़्तों के पास जाते वह दरख़्त उन से दूर भाग जाते थे आख़िर इंजीर और ऊद के दरख़्तों ने अपने पत्ते दे दिए। इसलिए अल्लाह तआला ने इंजीर को ऐसी लज़्ज़त दी कि सत्तर मरतबा चबाने पर नई लज़्ज़त पैदा होती है और ऊद को जलाने से ख़ुशबू आती है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से अपने साथ ताबूते सकीना, हजर-ए-अस्वद, तीन क़िस्म के बीज और कुछ सोना चांदी भी साथ लाए थे। हज़रत आदम वहां से आने के बाद गिरिया व ज़ारी में मशग़ूल हो कर उन चीज़ों को भूल गये। तब शैतान ने मौक़ा पाकर उन बीजों पर अपना हाथ फेरा। जिस पर हाथ लगा वह ज़हरीले और कड़वे हो गये और जो महफ़ूज़ रहे वह नफ़ा बख़्श रहे।

जब आदम अलैहिस्सलाम ज़मीन पर उतारे गये तब अल्लाह के हुक्म से जिब्रीले अमीन ने आवाज़ देकर तमाम जानवरों की अरवाह को जमा किया और आदम अलैहिस्सलाम को उनका ख़लीफ़ा मुक़र्रर करके इताअत

गुज़ारी और फरमांबरदारी का हुक्म दिया। आदम अलैहिस्सलाम ने जानवरों पर हाथ फेरा, जिन जानवरों पर हाथ लगा वह फरमांबरदार हो गये। मसलन गाय, बैल, ऊंट, घोड़ा और बकरी वग़ैरह और जिन जानवरों पर आप का हाथ न लग पाया वह जंगली वहशी हो कर रह गये। जैसे शेर, भेड़िया, चीता वग़ैरह। जब आप दोनों ज़मीन पर उतारे गये तब आपका रंग सियाह हो गया था। अल्लाह तआला ने आपको चांद की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं तारीख़ को रोज़ा रखने का हुक्म दिया। आपने रोज़ा रखा तब आपका असल रंग वापस आ गया। हज़रत मुहम्मद इस्हाक़ से रिवायत है कि हज़रत आदम और हज़रत हव्वा ने जन्नत में गन्दुम का दाना खाने से पहले हम बिस्तरी की और हमल ठहर गया था। ज़मीन पर आने के बाद दो जुड़वां बच्चे क़ाबील और एक लड़की अक़्लीमा पैदा हुए।

क़ाबील व हाबील :

जब दोबारा हमल ठहरा तो फिर दो बच्चे हाबील और लड़की लेवज़ह पैदा हुए। इस तरह इन्हें हर साल जुड़वां बच्चे पैदा होते गये। इस तरह उन्हें एक हज़ार बच्चे पैदा हुए। उन में सिर्फ़ हज़रत शीस अलैहिस्सलाम अकेले पैदा हुए जो आपके ख़ानदान में पैग़म्बर पैदा हुए।

अल्लाह तआला के हुक्म से आदम अलैहिस्सलाम ने क़ाबील का निकाह लेवज़ह से करना चाहा तो क़ाबील ने इंकार कर दिया और अक़्लीमा से निकाह करना चाहा क्योंकि लेवज़ह से ज़्यादा अक़्लीमा ख़ूबसूरत थी। लेकिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कहा कि यह दोनों जुड़वां बहन भाई हैं। इसलिए निकाह जाइज़ नहीं है। इसी वजह से क़ाबील हाबील का दुश्मन बन गया और उसका क़त्ल कर डाला उस वक़्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हज को गये हुए थे।

दुनिया में सबसे पहली मौत हाबील की हुई थी। इसलिए क़ाबील उसकी लाश को छुपाने के लिए चालीस दिन तक लेकर फिरता रहा। खुदा के हुक्म से वहां दो कव्वे आए एक ने दूसरे को मार डाला, और ज़मीन खोद कर दफ़न कर दिया। क़ाबील ने भी वैसा ही किया। उस वक़्त ज़मीन ने हाबील का तमाम ख़ून चूस लिया। जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हज से वापस लौटे और हाबील को ढूंढने निकले तो हाबील की क़ब्र से आवाज़ आई अब्बा जान मैं यहां हूं। तब आपने क़ब्र खोद कर देखा और अल्लाह तआला से आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! आइन्दा ज़मीन किसी का ख़ून

न चूसे ताकि क़ातिल का पता जल्द लग सके। क़ाबील और हाबील का यह वाक़्या जबले सौर के क़रीब घाटी में हुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उज़ैर से रिवायत है कि दुनिया में जितने क़त्ल हुए और होंगे उसका अज़ाब क़ाबील के सर होगा। क़ाबील को उसी के बेटे जो नाबीना था पत्थर मार–मार कर मार डाला। कहा जाता है कि उस दौर में जान का फ़िदया दुंबा की क़ुरबानी से दिया जाता था। जिसकी क़ुरबानी क़ुबूल होती, उस दुंबे को हवा उड़ा ले जाती इसीलिए हाबील का दुंबा हवा ले उड़ी और वही दुंबा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुरबानी के वक़्त हाज़िर किया गया।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ग्यारह दिन मरज़ुल–मौत में मुब्तला रहे और तक़रीबन एक हज़ार साल की उम्र में वफ़ात पाई। आपकी क़ब्र मस्जिदे ख़ीफ़ के क़रीब है। आपकी वफात पर मख़्लूक़ सात दिन रोती रही, सात दिन चांद और सूरज को गहन लगा रहा। उस वक़्त हज़रत हव्वा की उम्र नौ सौ निन्नानवे साल थी, उनकी क़ब्र जद्दह में है। हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की मुलाक़ात मैदाने अरफात में हुई।

हज़रत आदम के ख़ुल्द से निकलने के बाद दस सज़ाएं :

(१) जन्नती लिबास उतार लिया गया।

(२) आप पर जो एताब नाज़िल हुआ उसने आपको ख़ून के आंसू रुलाया।

(३) आदम को हव्वा की फ़ुर्क़त का सदमा।

(४) मौजूदा ज़िन्दगी के साथ जन्नत से अख़राज।

(५) औलादे आदम को तलाशे मआश के लिए सख़्त तकालीफ़।

(६) औलादे आदम को दुनिया में हौलनाकियों का सामना।

(७) औलादे आदम को सिराते मुस्तक़ीम से भटकाने के लिए शैतान को आज़ादी दी गई।

(८) औलादे आदम और शैतान में हमेशा अदावत रहेगी।

(९) औलादे आदम के साथ लफ़्ज़ आसी का इज़ाफ़ा किया।

(१०) सतरे औरत का इज़ाफ़ा।

हज़रत आदम और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम का मुबाहिसा:

हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि एक मरतबा हज़रत आदम और हज़रत मूसा में बहस शुरू हुई। हज़रत मूसा ने कहा "अल्लाह तआला ने

तुम्हें अपने हाथों से बनाया फिर भी तुमने नाफरमानी की।" हज़रत आदम ने कहा "आपको जो तौरेत मिली वह कब लिखी गई थी?" मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा : तख़्लीक़े काइनात से क़ब्ल यानी आपकी पैदाइश के चालीस साल क़ब्ल। तब आदम अलैहिस्सलाम ने कहा : तो क्या तौरेत में यह ज़िक्र नहीं है कि आदम अलैहिस्सलाम अपने रब की नाफरमानी करके गुमराह हुए? हज़रत मूसा ने कहा : हां तौरेत में उसका ज़िक्र है। तब आदम अलैहिस्सलाम ने कहा : जब यह बातें पहले से ही तय शुदह थीं तो आप मुझे क्यों मलामत करते हो?

हज़रत हव्वा

हज़रत हव्वा तमाम माओं की मां है। अल्लाह तआला ने जब आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत में दाख़िल फरमाया तो वहां हर क़िस्म का आराम था, खाने के लिए जन्नती मेवे, जन्नती लिबास, जन्नती महल मगर दिल लगी के लिए कोई हम जिन्स न था। अल्लाह तआला ने आप पर नींद का ग़लबा तारी कर दिया और उनकी बायीं पसली से हज़रत हव्वा को पैदा किया। नींद से बेदार हुए, एक नए इंसान को देखा तो पूछा तुम कौन? उन्होंने जवाब दिया मैं औरत हूं और आपकी तस्कीन के लिए पैदा की गई हूं। तब आप मानूस हुए और हव्वा के जानिब हाथ बढ़ाना चाहा तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा पहले उनका महर अदा करो। आपने पूछा वह क्या है तब कहा: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दस मरतबा दुरूद शरीफ़ भेजो। और यह महज़ अल्लाह तआला को अपने महबूब की अज़मत क़द्रे मंज़िलत बताना मक़्सूद था।

हज़रत हव्वा ने शैतान के बहकावे में आकर गन्दुम खा कर अल्लाह तआला की नाफरमानी की इसलिए जन्नत से आदम के साथ निकाल दी गई। आदम अलैहिस्सलाम को सरान्दीप और हव्वा को जद्दह में उतारा गया। तीन साल बाद दोनों की मुलाक़ात अरफात के मैदान में हुई।

ख़ुल्द से निकलने के बाद हज़रत हव्वा को १० सज़ाएं सुनाई गईं :

(१) तुम्हारी बेटियों को ता–उम्र मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।

(२) तुम और तुम्हारी बेटियां हर माह कुछ दिन हैज़े निफास (नापाकी) की हालत में इबादत से महरूम रहेंगी।

(३) वज़अ् हमल के वक़्त बार–बार जिस्मानी, रूहानी तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी।

(४) मर्द की हमेशा महकूम बन कर रहेंगी।

(५) मर्द को तलाक़ का अख़्तियार होगा ताकि वह औरत का महकूम बन कर न रहे।

(६) तलाक़ या बेवा होने पर एक मुद्दत (इद्दत के दिन) दुनिया की लज़्ज़त से महरूम रहेंगी।

(७) मीरास में मर्द के मुक़ाबले औरत का हिस्सा कम होगा।

(८) मर्द के मुक़ाबले में शहादत में कमज़ोर और पैग़म्बरी से महरूमी।

(९) नमाज़े जुमा, ईदैन और जिहाद में शरीक नहीं हो सकेंगी। जिसकी वजह से सवाब से महरूम रहेंगी।

(१०) मर्द के मुक़ाबले में ताक़त, इज़्ज़त व अज़मत कम रहेगी।

हज़रत शीस अलैहिस्सलाम

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बेटे थे। उनका एक बेटा था जिस का नाम महलाइल था। निहायत ख़ूबसूरत और अज़मत वाला था। उसके इंतिक़ाल के बाद लोग उनकी ज़्यारत को आने लगे और साथ बहुत सारे तोहफ़ा व तहाइफ़ भी लाने लगे। तब इब्लीसे लईन इंसान की शक्ल में आकर कहने लगा कि लोग इतनी दूर–दूर से आते और फिर मायूस हो कर लौट जाते हैं। क्यों न तुम्हारे वालिद की शक्ल की एक मूर्ति बनाई जाए ताकि लोग उस मूर्ति को नज़राने पेश करें तब महलाइल के बेटों ने उनकी मूर्ति बना कर नज़राने के तौर पर तोहफ़ा तहाइफ़ लेने शुरू कर दिए तब ही से मूर्ति पूजा का रिवाज शुरू हो गया।

हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम

हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम का असली नाम अख़्नूज था। आप महलाइल के ख़ानदान से थे। इद्रीस लक़ब इसलिए हुआ कि कुतबे इलाही का कसरत से दर्स दिया करते थे। आप पर तीस सहीफ़े नाज़िल हुए। सबसे पहले आप ही ने सहीफ़े का दर्स दिया। जब आप तिलावत करते तो दस कोस तक आपकी आवाज़ पहुंचती थी और तमाम चरिन्द परिन्द आपके पास जमा हो जाते थे।

हज़रत कअ़ब बिन अहबार रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक दिन आपने मलकुल–मौत, जो आपसे मुलाकात के लिए आए हुए थे। कहा : मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं तुम मेरी रूह कब्ज़ करके दिखाओ। मलकुल–मौत ने अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक रूह कब्ज़ करके फौरन लौटा दी और कहा : "जां कुनी की तल्ख़ी कैसी लगी?" तब आपने कहा : "जिस तरह जानवरों की खाल खींची जाती है।" फिर आपने कहा: "मुझे दोज़ख़ देखने का बहुत शौक़ है ताकि मैं दोज़ख़ के ख़ौफ़ से और ज़्यादा इबादत कर सकूं।" फिर हज़रत इज़्राईल ने अल्लाह तआला के हुक्म से सातों तबक़ दिखाए। फिर आपने कहा : "मैं मौत का मज़ा चख चुका, दोज़ख़ भी देख चुका, अब थोड़ी सी जन्नत की सैर करना चाहता हूं।" तब आप अल्लाह के हुक्म से बहिश्त में जाकर तख़्त पर बैठ गये, थोड़ी देर बाद हज़रत इज़्राईल ने आपको बाहर आने के लिए कहा आपने कहा : अल्लाह तबारक व तआला का क़ौल है हर ज़ी नफ़्स को मौत का मज़ा चखना होगा। मैं चख चुका हूं और यह भी क़ौल है सबको दोज़ख़ से गुज़रना होगा। तो मैं वहां से भी गुज़र चुका हूं फिर अल्लाह तआला का यह भी क़ौल है जो बहिश्त में जाएगा वह हमेशा–हमेशा के लिए वहां रहेगा। अब मुझे यहां से कोई नहीं निकाल सकता। तब बारी तआला से आवाज़ आई: ऐ इज़्राईल : इद्रीस को छोड़ दो उनकी तक़्दीर में यही लिखा है।

हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम आज भी जन्नत में ज़िन्दा हैं जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम है।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का असली नाम अब्दुल–ग़फ़्फ़ार या अब्दुल्लाह था। वालिद का नाम लमलिक और वालिदा का नाम सम्महा था। आपका लक़ब नूह इसलिए हुआ कि अपनी उम्मत के लिए गुनाहों की वजह से कसरत से रोते थे और नौहा में मशग़ूल रहते थे और इसलिए भी कि आपका बेटा मुनाफ़िक़ था। इसलिए भी रोते थे। बेटे का नाम कनआन और बीवी का नाम वालिआ था।

आप अपनी क़ौम को अपनी तरफ़ बुलाते तो वह भाग जाते या आपको इस क़द्र मारते कि आप बेहोश हो जाते तब आपको अल्लाह तआला का

हुक्म हुआ कि एक कश्ती बनाएं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने एक शाख़े बहिश्त से ला कर दी फिर वह चालीस बरस बाद ख़ूब बड़ा दरख़्त तैयार हुआ फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उस दरख़्त को काट कर आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूरे पाक तक एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बरों के नाम के तख़्ते तैयार किए। लेकिन फिर चार तख़्ते कम पड़ गये। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आप से कहा दरियाए नील में एक दरख़्त है उसकी शाख़ के चार तख़्ते बनाए जाएं। आपने औन बिन अनक को हुक्म दिया तब उस ने दरियाए नील से दरख़्त की शाख़ ला कर दी। हज़रत जिब्रील ने चार तख़्ते हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के नाम के बना कर उस में लगाए।

जिब्रीले अमीन ने अल्लाह के हुक्म से नूह को इत्तिला दी कि जब आपके तन्नूर से पानी उबलने लगे तो आप सबको लेकर कश्ती में सवार हो जाएं। उस कश्ती में तीन मंज़िलें थीं। नीचे की मंज़िल में परिन्दे दर्मियान में जानवर और ऊपर की मंज़िल में आपके चन्द साथी खुर्द नोश का सामान और ताबूते सकीना भी था। कश्ती में सबसे पहले तोता सवार हुआ बाद में दीगर परिन्दे अपने जोड़ों के साथ दाख़िल हुए। चौपायों में सबसे अख़ीर में गधा। चूंकि शैतान ने गधे के दोनों पैर पीछे से पकड़ रखे थे इसलिए उसका कश्ती में सवार होना मुश्किल हो गया था इसलिए आप ने कहा जल्दी करो अगर तुम्हारे साथ शैतान ही क्यों न हो। पस वह भी सवार हो गया।

कश्ती–ए–नूह तमाम रूए ज़मीन पर गश्त लगाते हुए मक़ामे करबला पर पहुंची तो रुक गई। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया "या अल्लाह! यह कौन सा मक़ाम है?" जवाब मिला : "यह वह मक़ाम है, जहां मेरे महबूब के अह्ले बैत की कश्ती गरदाबे ख़ून में ग़रक़ाब होगी और जामे शहादत नोश करेगी। कश्ती–ए–नूह चालीस दिन तक रूए ज़मीन का चक्कर लगाते हुए बैतुल्लाह का तवाफ़ करती रही। तूफ़ाने नूह के वक़्त दुनिया के बड़े–बड़े पहाड़ ग़रक़ाब हो गये। सिवाए कोहे जूदी के जो मूसल में है।

जब तूफ़ान रुक गया, पानी उतर गया तो आपने रूए ज़मीन की ख़बर

लाने के लिए कव्वे को भेजा। कव्वा मुरदार को देख कर उस पर टूट पड़ा। आपने उसे बद्दुआ दी कि उसकी गिज़ा मुरदार चीज़ ही होगी। फिर आपने कबूतर को भेजा। वह हरमे काबा में उतरा वहां से सुर्ख़ मिट्टी लाया। आप समझ गये कि ज़मीन ख़ुश्क हो चुकी है। आप जूदी पहाड़ से नीचे आए आप के साथ अस्सी लोग सवार थे। उन से कहा अगर किसी के पास कुछ दाने बचे हों तो ले आए पस जिसके पास जो अनाज था वह सब मिला कर पकाया। वह महुर्रम की दसवीं तारीख़ थी यानी आशूरा का दिन था। इसलिए उस दिन हलीम (खिचड़ा) पकाना सुन्नते नूह है।

तूफ़ाने नूह के बाद सबसे पहले उगने वाला दरख़्त ज़ैतून का था। आपकी उम्र एक हज़ार पचास साल थी। आपका मज़ार शहर बुक़ाअ् में है जिसे कुर्क नूह के नाम से याद किया जाता है।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम

आप शहरिस्तान में पैदा हुए। आपकी क़ौम शर्मनाक बुराईयों में मुब्तला हो गई थी। मर्द मर्द से जिन्सी लज़्ज़त अन्दोज़ी करके गुनाहे अज़ीम के मुर्तकिब हो रहे थे। आपने उन्हें इस शर्मनाक हरकत से बाज़ रहने के लिए डराया धमकाया मगर वह बद किरदार क़ौम न मानी। तब आपने अल्लाह तआला से बद्दुआ की। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि उस बस्ती को उलट दो। तब फ़रिश्तों ने उस बस्ती को उलट दिया कि दरख़्त के पत्तों तक को जुंबिश हुई न गहवारे में बच्चे की जुंबिश हुई। उसकी आवाज़ इतनी हैबतनाक थी कि आप बेहोश हो गये। होश में आने पर फरिश्तों ने तसल्ली दी। आपको अपनी क़ौम पर अफसोस रहा। सात सौ साल की उम्र में शहरिस्तान में दफन हुए।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

आप क़ौमे आद की तरफ़ हिदायत के लिए भेजे गये। आपकी क़ौम हिजाज़ व शाम के दर्मियान शहर अक़्लमाअ् में आबाद थी। आपकी क़ौम भी बुराईयों में मुब्तला थी। आपने उन्हें अज़ाबे इलाही से डराया। तब लोगों ने कहा : "आप सच्चे पैग़म्बर हैं तो कोई मोजेज़ा दिखाओ।" तब आपने पूछा : "कहो क्या मोजज़ा देखना चाहते हो?"

तब उनके सरदार ने कहा : "एक ऐसी ऊंटनी, जो किसी पेट में न रही हो न किसी नर से और न मादा से बल्कि ख़िलाफ़े आदत उस चट्टान से नमूदार हो और वह भी दस माह की हामिला हो। ख़ूब फरबा, हर ऐब से पाक हो, चट्टान से निकलते ही बच्चा दे। चुनांचे आपने अल्लाह तआला से दुआ की। थोड़ी ही देर में चट्टान शक़ हो गई और उस में से ऊंटनी ने नमूदार होते ही बच्चा दे दिया यह देख कर बाज़ काफिर मुसलमान हो गये और बाज़ नहीं। क़ौमे आद जिस बस्ती में रहती थी। वहां एक चश्मा था। आपने लोगों से कहा : "देखो यह ऊंटनी अल्लाह की तरफ़ से नेमत है।" इस चश्मे का पानी एक दिन यह बच्चा पियेगा और एक दिन तुम पानी पियोगे।

जिस दिन ऊंटनी पानी नहीं पीती उस दिन दूध ज़्यादा देती। बाज़ सरकश काफिरों ने ऊंटनी को क़त्ल करने का मन्सूबा बना कर उसकी कूचें काट डाली। वह चट्टान की तरफ़ भागी मगर उसे पकड़ कर काट डाला, बच्चा भाग कर चट्टान में ग़ायब हो गया।

कहा जाता है कि हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ऊंटनी पर सवार हो कर क़ब्र से निकलेंगे और उसी के साथ जन्नत में दाख़िल होंगे। ऊंटनी के क़त्ल के बाद उस बस्ती पर ऐसा अज़ाब नाज़िल हुआ कि अचानक एक ख़ौफ़नाक आवाज़ आई जिस से पूरी क़ौम लरज़ गई, औंधे मुंह गिर कर ख़त्म हो गई, आपकी उम्र दो सौ अस्सी साल थी। हज़रे मौत में इंतिक़ाल हुआ और वहीं आपका मज़ार है।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर आसमानी किताब ज़बूर नाज़िल हुई। आप हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे आपकी बीवी बतशा बिन्ते हिना से हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम पैदा हुए। आपकी तक़रीबन सौ बिवियां थीं। तालूत ने एलान किया था कि जो जालूत को ख़त्म करेगा उसके साथ अपनी बेटी की शादी कराऊंगा। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने फ़लास (गोफन) में पत्थर रख कर मारा वह जालूत की पेशानी के आर पार निकल गया। तब तालूत ने अपनी आधी सलतनत और अपनी बेटी के निकाह में दी तालूत की वफ़ात के बाद उनका तमाम मुल्क पर अख़्तियार हो गया।

आपका ख़ास मोजेज़ा लोहे को नर्म करना था। आपके लोहे को हाथ लगाते ही लोहा नर्म हो जाता था। आप परिन्दों की ज़बान जानते थे आपकी

आवाज़ इतनी सुरेली थी कि जब आप ज़बूर पढ़ते तो इंसान चरिन्द, परिन्द वज्द में आ जाते थे इसी लिए आपका लक़ब अल–हुसन दाऊदी मशहूर है।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम

हज़रत सुलेमान के वालिद दाऊद और मां का नाम लयान था। आप तेरह साल की उम्र में तख़्ते सलतनत पर जल्वा अफ़रोज़ हुए। तख़्ते सुलेमान पर छेः हज़ार कुर्सियां सोने चांदी की थीं। सोने की कुर्सियां अंबियाए किराम के लिए और चांदी की कुर्सियां उलमा के लिए थीं। उसके बाद अवामुन्नास और जिन्नात के लिए कुर्सियां थीं। परिन्दे आप पर साया किए रहते थे। जहां आपका हुक्म होता उन्हीं तख़्त के साथ ले जाते। आपका लश्कर सौ फरलांग तक फैला हुआ था, २५ हिस्से में इंसान, २५ में जिन्नात और देव, २५ में परिन्दे और २५ में कीड़े मकोड़े रहा करते थे।

आपकी एक हज़ार बीवियां थीं। एक मरतबा आपका गुज़र वादी–ए–नमल (च्यूंटी) में हुआ। आपने तीन सौ मील की दूरी से च्यूंटी की आवाज़ सुनी जो तमाम च्यूंटियों से कह रही थी : "फौरन अपने–अपने घरों में घुस जाओ। कहीं ऐसा न हो लश्करे सुलेमान हम सबको कुचल दे।" हज़रत सुलेमान ने च्यूंटी से पूछा : तुम्हारे मातहत कितनी च्यूंटियां हैं? जवाब मिलाः "ऐ सुलमान! तुम समझते हो तुम्हारे पास इतनी बड़ी हुकूमत है और तुम सब पर हुकूमत चलाते हो। मैं तो अदना सी च्यूंटी हूं। फिर भी मेरे पास चालीस हज़ार अफ़्सर है, हर अफ़्सर के मातहत चालीस–चालीस हज़ार सफ़ें हैं और हर सफ मश्रिक़ से मग़्रिब तक फैली है।" आपने सवाल किया एक च्यूंटी कितना बोझ उठा सकती है? च्यूंटी ने जवाब दिया : एक या दो दाने और यह भी इसलिए कि हम मुसाफिर हैं और उसी के मुताबिक़ हम अपनी ग़िज़ा जमा करते हैं। उसने कहा : मेरा नाम "मुन्ज़रह" है। यानी डराने वाली, चूंकि मैं अपने साथियों को दुनिया व आख़िरत से हमेशा डराती हूं। उसने पूछा : "आपकी सलतनत में सबसे अफ़ज़ल चीज़ कौन सी है?" हज़रत ने जवाब दियाः "मेरी अंगुश्तरी! क्योंकि वह जन्नती है।" यह अंगुश्तरी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से लाए थे। हज़रत ने उसी वादी नमल में अपने तमाम लश्कर के खाने का एहतमाम किया। कई हज़ार देगें क़िस्म–क़िस्म के खानों की पकाई गईं। लेकिन अभी पाव लश्कर भी खाना खा न पाया कि खाना ख़त्म हो गया। बहुत बड़ा लश्कर भूखा रह गया। तब च्यूंटी ने आपसे कहा, अगर इजाज़त हो तो मैं आपके लश्कर के

खाने का इंतिज़ाम करती हूं। आपने कहा : "ऐ च्यूंटी! जबकि मैं तमाम लश्कर का हाकिम हूं, मैं उनका पेट न भर सका तो भला तू एक अदना सी च्यूंटी किस तरह इतने बड़े लश्कर का इंतिज़ाम कर सकेगी?" च्यूंटी ने कहा : "ऐ सुलेमान! टिड्डी की एक ही टांग काफी है। और च्यूंटी ने टिड्डी की सिर्फ़ एक टांग पका कर तमाम लश्कर को खिलाया। आपने कहा : बेशक अल्लाह तआला बड़ा कारसाज़ व मुसब्बबुल–अस्बाब है। मेरी कोई हैसियत नहीं कि मैं लश्कर का खिला सकूं। आपने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और आगे बढ़ गये।

एक दिन आपने उल्लू से पूछा तू खेत की उगी हुई चीज़ें क्यों नहीं खाता? तो उस ने जवाब दिया : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम उसी की वजह से तो जन्नत से निकाले गये। फिर पूछा "पानी क्यों नहीं पीता?" जवाब दिया : क़ौमे नूह इसी पानी में तो ग़र्क़ हुई। आपने फिर पूछा: आबादी से दूर खण्डरात में क्यों रहते हो? जवाब दिया : खण्डरात ही तो अल्लाह की मीरास है। इंसान आबादी में ऊंचे–ऊंचे महल्लात में रहता है। लेकिन वह महल्लात ज़लज़ले के मामूली झटके से खण्डरात में तब्दील हो जाते हैं।

एक दिन आपने हुद–हुद परिन्दे को जिस का नाम अंबर था, मलिका सबा की ख़बर लाने, अपने नबी होने और ईमान लाने के लिए एक ख़त देकर भेजा। मलिका सबा (बिल्क़ीस) ने आपका मक्तूब पढ़ा और बतौरे इम्तिहान, बहुत से तोहफ़ा तहाइफ़ भेजे ताकि मालूम हो सके कि आप बादशाह हैं या नहीं। पांच सौ गुलाम और पांच सौ बांदियां, जवाहरात, सोने की ईंटें और जवाहरात से मुज़ैयन एक ताज देकर क़ासिद के हाथों रवाना किया। इधर हुद–हुद ने फौरन इत्तिला दे दी। जब बिल्क़ीस के क़ासिद के आने की ख़बर मिली तो आपने हुक्म दिया कि उसके आने के रास्ते को सोने चांदी की ईंटों से एहाता किया जाए और बहरो बर के जिन्नात को हाज़िर किया जाए। तमाम इंतिज़ाम आनन फानन हो गया। जब क़ासिद ने आपका यह जाह व जलाल और शान व शौकत देखी तो दंग रह गया। शर्मिंदा हो कर लौट गया। तमाम देखा हुआ मंज़र बिल्क़ीस को बता दिया। तब बिल्क़ीस ने ख़ुद मिलने का इरादा किया। आपको उसकी ख़बर मिली और यह भी ख़बर मिली कि बिल्क़ीस की पिंडलियों पर लम्बे–लम्बे बाल हैं तो आपने उसके लिए कांच का ऐसा रास्ता तैयार किया जिस पर चलने वालों को पानी का गुमान हो। जब बिल्क़ीस ने उस रास्ते पर चलते हुए

अपने पाएंचे उठाए तो वाक़ई लम्बे बाल नज़र आए। बिल्क़ीस आप पर ईमान ले आई।

आपका विसाल इस हाल में हुआ कि आप अपने असा से टेक लगाए इबादत में मश्गूल थे इस से क़ब्ल आपने जिन्नात को बैतुल–मक़्दिस की मरम्मत का काम सौंपा था। तमाम जिन्नात काम में मश्गूल हो गये चूंकि आपने अल्लाह तआला से दुआ मांगी थी कि मेरे विसाल की ख़बर जिन्नात पर ज़ाहिर न हो। जिन्नात जानते थे कि आप कई अरसे तक इबादत में मसरूफ़ रहते हैं। आपके विसाल के एक साल बाद उस असा को दीमक चाट गई और वह असा ज़मीन पर गिर पड़ा उसी के साथ आपका जिस्म भी गिर पड़ा तब जिन्नात को आपके विसाल की ख़बर हुई तो वह फ़ौरन अपना काम छोड़ कर भाग गये।

एक वक़्त आपकी अंगूठी गुम हो गई और वह किसी देव के हाथ लग गई। वह देव आपकी शक्ल अख़्तियार करके जादू से हुकूमत करने लगा। तमाम जादू टोने इंसान तक पहुंचाता रहा तब से इंसान एक दूसरे पर जादू टोना करने लगे। बाद में अंगूठी आपको समुन्द्र में मिली तब दोबारा आप हाकिम बने और जिन्नात, देव और कीड़े मकोड़ों पर हुकूमत करने लगे। यही वजह है कि सांप को हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की क़सम देने पर वह किसी को ज़रर नहीं पहुंचाता।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से २ हज़ार साल क़ब्ल विलादत हुई। आपके वालिद का नाम तारख़, वालिदा का नाम लेवसा और चचा का नाम आज़र था जो बुत तराश थे।

आपकी विलादत बाबुल शहर से मुत्तसिल क़स्बा कूसी में हुई। जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम के दौर के बादशाहों को फिरऔन कहा जाता था उसी तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दौर के बादशाहों को नमरूद कहा जाता था। जिस तरह फ़िरऔन को नुजूमियों ने इत्तिला दी थी कि एक बच्चा पैदा होगा जो दीन लेकर आएगा और कुफ़्र का ख़ात्मा करेगा इसी तरह नमरूद को भी नुजूमियों ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के आने की ख़बर दी। तब नमरूद ने तमाम हामेला औरतों पर पहरा बिठा दिया। चूंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद नमरूद के महल में पहरेदार थे। लेकिन आपकी वालिदा को शहवत का जज़्बा जागा वह सीधे नमरूद के महल में

पहुंच गईं और फिर कुदरते इलाही से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वालिदा को हज़रत का हमल ठहर गया। फिर हज़रत इब्राहीम की वालिदा जंगल में एक दरख़्त की खोह में रहने लगीं और वहीं हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई।

आप एक दिन में इतना बढ़ते जितना एक आम बच्चा एक साल में बढ़ता है। आपके चचा बुत तराश और वालिद बुत फरोश थे। आपके वालिद आपको भी बुतों को फरोख़्त करने भेजते। आप बुतों के गले में रस्सी बांध कर खींचते हुए ले जाते थे और यह आवाज़ लगाते जाते थे कि है कोई जो इस बुत को ख़रीदे जो चल फिर नहीं सकता और न बोल सकता है। एक दिन उनकी ईद के मौक़ा पर तमाम मर्द, बच्चे, बूढ़े और औरतें ईदगाह में इबादत के लिए गये हुए थे। आपने बुतख़ाने में जा कर किसी बुत के हाथ तोड़े किसी की नाक काटी किसी के पैर तोड़े। सबसे बड़े बुत के हाथ में कुल्हाड़ी थमा कर चले आए। जब तमाम लोग ईदगाह से लौटे तो बुतख़ाने की अबतर हालत देखी कि तमाम बुत औंधे गिरे पड़े थे। जब आप से पूछा गया तो आपने जवाब दिया उसी बुत से पूछो जिसके कन्धे पर कुल्हाड़ी है। शायद उसी ने इन बुतों की दुर्गत बनाई हो। भला वह बुत यह काम कैसे कर सकता है? जबकि यह तो अपनी जगह पर से हिल भी नहीं सकता। तब आपने कहा जो बुत ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते भला वह तुम्हारे काम कैसे कर सकते हैं और वह खुदा कैसे हो सकते हैं?

आपकी चार बीवियां हुईं। हज़रत हाजरा, हज़रत सारा, क़तूरा और हजून। आपके चार साहबज़ादे थे : हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जो हज़रत हाजरा से थे दूसरे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम जो हज़रत सारा से थे, मदयन और मदाइन।

जब आपने लोगों को बुतों की पूजा और दीगर बुराइयों से रोकना चाहा तो नमरूद जो ख़ुदाई दावा करता था। उसके मुशीर और वज़ीर हज़ीन के मशवरे पर हज़रत को आग में डाला गया। उस आग को सात दिन दहकाया जाता रहा। तमाम जंगलात की लकड़ियां उस में डाल दी गई थीं। जिसके शोअ़लों की बुलन्दी इतनी थी कि मुल्क शाम तक दिखाई दे रहा था। ऐसी दहकती आग में आपको डालना बहुत मुश्किल हो गया। तरकीबें सोचने लगे, शैतान ने मश्वरा दिया कि बड़ी सी गोफन बना कर

उस में इब्राहीम को बिठा कर आग में फेंको। तब वैसा किया गया मगर फिर गोफ़न न उठी क्योंकि अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्तों ने गोफ़न को पकड़ रखा था। तब शैतान ने मश्वरा दिया कि लोग एक दूसरे से ज़िना करें। लोगों ने वैसा किया और फ़रिश्ते वहां से हट गये। फिर गोफ़न से हज़रत को फेंका गया। अल्लाह तआला के हुक्म से जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बहिश्ती हुल्ला ला कर आपके जिस्म पर डाला। जिसकी वजह से आप पर आग का बिल्कुल असर नहीं हुआ। आप चालीस रोज़ उस आग में रहे उस आग को भड़काने के लिए गिरगिट फूंक मारता था। आपको चालीस दिन बाद आग से सही सलामत निकलता देख कर नमरूद ने हुक्म दिया कि आप पर पत्थरों की बारिश की जाए। मगर अल्लाह के हुक्म से वह पत्थर हवा ही में मुअल्लक़ रहे उस वक़्त नमरूद की बेटी अपने महल के झरोके से यह मोजेज़ा देख रही थी। वह आप पर ईमान लाई। आपने उस से निकाह किया जिसका नाम सारा था।

इधर नमरूद की नाक के ज़रिए एक मच्छर दिमाग़ में पहुंच कर उसका दिमाग़ चाटने लगा। जब नमरूद अपने सर पर मारता मच्छर ख़ामोश हो जाता। जैसे ही नमरूद हाथ रोकता मच्छर फिर काटना शुरू कर देता। आख़िर थक हार कर सर पीटने के लिए नौकर लगाया जो दिन रात उसका सर पीटता आख़िर उसका दिमाग़ पिघल कर नाक के ज़रिए बहने लगा और उसी से उसकी मौत हो गई।

आप सारा को लेकर फ़िलस्तीन की तरफ़ रवाना हुए। रास्ते में एक शहर पड़ा वहां का बादशाह हर ख़ूबसूरत औरत को अपनी हवस का निशाना बनाता था। आपको इस बात की ख़बर मिली। आपने हज़रत सारा को सन्दूक़ में छुपा कर ले जाना चाहा। मगर मुख़्बिरों ने बादशाह को ख़बर कर दी तब बादशाह के हुक्म से हज़रत सारा को महल में पहुंचाया गया। तब बादशाह ने उन से दस्त दराज़ी की कई मरतबा कोशिश की। मगर हर बार हाथ शल हो जाता था फिर उस ने मुआफ़ी मांगी और अपनी बेटी हज़रत हाजरा को आपके निकाह में दे दिया।

हज़रत हाजरा के बतन से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम छेः माह के हुए तब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि दीन की तबलीग़ करें। आप हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को बैतुल्लाह के क़रीब

जहां पानी का नाम व निशान न था, तने तन्हा छोड़ कर चले गये। हज़रत हाजरा बच्चे को ज़मीन पर लिटा कर पानी की तलाश में क़रीबी दो पहाड़ियों सफा और मरवा पर दौड़ लगाने लगीं। एक मोजेज़ा हुआ कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के एड़ी रगड़ने से वहां पानी का एक चश्मा उबल पड़ा। हज़रत हाजरा ने पानी को रोकते हुए कहा : ज़मज़म (रुक जा) पानी रुक गया। उसी जगह आबे ज़मज़म का कुवां है। जिसे दुनिया के तमाम हुज्जाजे किराम तबर्रुक के तौर पर ले जाते हैं।

हज़रत हाजरा की सफा व मरवा की दौड अल्लाह तआला को इतनी पसन्द आई कि हज के दौरान सफा मरवा पर दौड़ लगाना (सई करना) हर हाजी पर फर्ज़ किया जो हज का एक रुक्न है।

एक दिन आपने ख़्वाब में देखा कि पुकारने वाला पुकार रहा है और कह रहा है अल्लाह की राह में कुरबानी दो आपने सौ ऊंट कुरबान किए। दूसरे दिन भी यही बशारत हुई। तब आपने पांच सौ ऊंटों की कुरबानी दी। तीसरे दिन फिर बशारत हुई कि जान से अज़ीज़ चीज़ कुरबान करो। आपने सोचा कि जान से ज़्यादा अज़ीज़ तो मुझे मेरा बेटा इस्माईल है। तब आप हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह की राह में कुरबान करने चले। इधर शैतान ने हाजरा को बहकाया कि तुम्हें मालूम है कि हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्माईल को कहां ले गये हैं? आपने कहा शिकार करने तब उस ने कहा नहीं! वह अल्लाह तआला के हुक्म से उसे कुरबान करने गये हैं। तब आपने फरमाया कि अगर अल्लाह तआला का हुक्म है तो मेरे सौ बेटे उसके हुक्म पर कुरबान हैं। यह कह कर सात कंकरियां शैतान को मारी। फिर उसने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा : आप कैसे बाप हो? अपने बेटे को कुरबान कर रहे हो? क्या कोई बाप अपने लख़्ते जिगर की कुरबानी देता है? हज़रत इब्राहीम ने भी उसे सात कंकरियां मार कर भगा दिया। वह मल्ऊन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को बहकाने लगा। आपने भी अल्लाह के हुक्म की इताअत का जवाब दिया और आपने भी सात कंकरियां मार कर भगा दिया।

आपने अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को लिटा कर छुरी चलाई मगर अल्लाह के हुक्म से छुरी न चली। तब हज़रत ने पूछा : तू क्यों नहीं चलती? छुरी ने जवाब दिया मुझे अल्लाह का हुक्म नहीं है। आपने फरमाया : तू काटने के लिए बनाई गई है। छुरी ने जवाब

दिया : आग भी तो जलाने के लिए बनाई गई है फिर उस ने आप को क्यों नहीं जलाया। आपने गुस्से से छुरी समुन्द्र में फेंक दी वह मछली के कल्ले में जा लगी। रिवायत है कि जो दुंबा हाबील ने कुरबानी के लिए पेश किया था और उसे हवा उड़ा ले गई थी वही दुंबा अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल की जगह रखवा दिया और उसकी कुरबानी हो गई। वह दुंबा जन्नत में चार हज़ार साल तक परवरिश पाता रहा। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानी की याद ताज़ा रखने के लिए हर साल साहिबे निसाब (मालदार) पर कुरबानी फ़र्ज़ की गई। हर हाजी को तीन दिन जमरात (शैतान) को सात कंकरियां मारना फ़र्ज़ क़रार दिया गया।

अल्लाह तआला के हुक्म से आप और हज़रत इस्माईल ने मिल कर ख़ान–ए–काबा की नए सिरे से तामीर की। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम नीचे से गारह और मिट्टी देते और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ईंटें लगाते थे। जिस पत्थर पर आप खड़े हो कर काबा शरीफ़ के तामीर का काम कर रहे थे वह ज़रूरत के मुताबिक़ हस्बे मक़ाम ऊपर उठता जाता था। उस पत्थर पर आपके क़दमों के निशान आज भी मौजूद हैं। उसे मक़ामे इब्राहीम कहा जाता है। ज़ाइरीन के लिए ज़्यारतगाह बना हुआ है। जो एक सुनहरी जाली में ख़ान–ए–काबा के सामने बैतुल–हराम में हिफ़ाज़त से रखा हुआ है। जहां दो रकअत नफ़्ल नमाज़ पढ़ना अफ़्ज़ल तरीन है और दुआ की क़बूलियत का मक़ाम है। आपकी क़ब्रे अनवर बैतुल–मक़्दिस में है बाज़ का क़ौल है जबरून में है। आपकी उम्र एक सौ अस्सी साल थी।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की निन्नानवें (९९) साल की उम्र में पैदा हुए। चूंकि आपकी विलादत से क़ब्ल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाहु रब्बुल–इज़्ज़त से औलादे नरीना की दुआ की थी कि "ऐ अल्लाह! जिसका इबरानी ज़बान में यूं कहते थे **"इस्मा ऐल"** इस्मा का माना सुन और एल का माना अल्लाह। और जब आप पैदा हुए तो आपने बच्चे का नाम इस्माईल रखा।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के एड़ी रगड़ने से बैतुल्लाह के क़रीब आबे ज़म ज़म का चश्मा फूट पड़ा। आपकी कुरबानी की जगह पर अल्लाह तआला ने जन्नत से दुंबा भेजा था। जिसे हाबील इब्ने आदम के दुंबे की

कुरबानी के वक़्त हवा उड़ा ले गई थी। अल्लाह तआला को आपकी कुरबानी की अदा इस कद्र पसन्द आई कि उसने हर हाजी पर मिना के मकाम पर और हर साहिबे हैसियत पर कुरबानी फर्ज़ की। आप ने अपने वालिद के साथ ख़ान–ए–काबा की तामीरे नौ में साथ दिया आप मिट्टी और गारा देते जाते और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ईंटें लगाते जाते थे। आपने अपने भाई हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के साथ मिल कर दीने इब्राहीम की तबलीग़ की।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम

आपका असल नाम इस्राईल था जिसके मानी हैं "अब्दुल्लाह"। इबरानी में इसरा के मानी हैं अब्द और एल के मानी हैं अल्लाह। आपके वालिद हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, वालिदा हज़रत सारा और नाना हज़रत लूत अलैहिस्सलाम थे। आपने चार निकाह मामूं की चारों बेटियों से किया था। आपकी तंग दस्ती और उसरत की वजह से आपके नाना ने आपकी परवरिश की और अपनी बेटी लिया से आपका निकाह किया। लिया के इंतिकाल के बाद दूसरी बेटी फिर तीसरी और फिर चौथी भी आपके निकाह में आई, आपके बारह बेटे थे। रूबील, शमऊन, लावा, यहूदा, ज़बूलून, यशाजर, दान, तफ़्ताल, जाद, आशर, यूसुफ़ और बिनयामीन।

आपके बेटों ने हज़रत यूसुफ़ को कुएं में डाल कर वालिद को बताया कि हज़रत यूसुफ़ को भेड़िया खा गया। आप हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई में रो–रो कर नाबीना हो गये थे। जब आपके बेटों को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़िन्दा होने की ख़बर हुई तो यहूदा ने आपको यह खुशख़बरी सुनाई। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का पैरहन आपकी आंखों पर रखने से आपकी बीनाई वापस आ गई। आपने अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास मिस्र में चौबीस साल रह कर उन्हें यह वसीयत फ़रमाई कि मेरे विसाल पर मुझे मुल्क शाम में वालिद के क़रीब दफ़्नाना। आपकी उम्र एक सौ सैंतालीस साल हुई। आपका मज़ार जबरून में है।

हज़रत यूसूफ़ अलैहिस्सलाम

आपकी की वालिदा का नाम राहील था। जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मामू ज़ाद थीं। आपने ग्यारह साल की उम्र में ग्यारह सितारों और चांद

सूरज को ख़्वाब में सज्दा करते देखा। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को आप से बेहद मुहब्बत थी। आपके तमाम भाईयों ने आपस में मशवरा किया कि ऐसा किया जाए कि वालिद हम से भी वैसी ही मुहब्बत करें। शैतान भी उस मशवरे में शामिल था। उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़त्ल का मश्वरा दिया। भाईयों ने इस संगीन गुनाह से इंकार कर दिया और कहा कि क्यों न उन्हें अन्धे कुएं में (सूखा कुवां) डाल दिया जाए इत्तिफ़ाक़न कनआन से तीन मील दूर ऐसा कुवां मिल गया यह कुवां शद्दाद ने खोदा था जो सत्तर गज़ गहरा था। आपको जिस वक़्त कुएं में डाला गया उस वक़्त आपकी उम्र बारह साल थी। आप तीन दिन उस कुएं में रहे।

आपको कपड़े उतार कर कुएं में जब डाला गया तो हुक्मे इलाही से हज़रत जिब्रीलने आपको एक पत्थर पर बिठा दिया और जो क़मीस हज़रत इब्राहीम को नमरूद की आग में डालते वक़्त पहनाई गई थी वही क़मीस हज़रत जिब्रील ने आपको पहना दी। दरीं अस्ना वह जन्नत से हज़रत यूसुफ़ के लिए खाना और पानी लाते रहे। और हज़रत जिब्रील ने तमाम मूज़ी कीड़े मकोड़ों को हुक्म दिया कि यहां अल्लाह का नबी क़्याम पज़ीर है। लिहाज़ा कोई अपने बिल से बाहर न निकले। और बाहर जो मूज़ी हैं वह अपने–अपने बिलों में चले जाएं। तमाम कीड़े मकोड़े अपने–अपने बिलों में चले गये मगर सांप ने नाफरमानी की। तब हज़रत जिब्रील ने गरज कर उसे डांटा। उस आवाज़ से वह बहरा हो गया।

तीन दिन बाद एक क़ाफिले ने पानी की तलाश में कुएं में डोल डाला तब हज़रते जिब्रील ने आपको डोल में बिठा दिया। जब वह बाहर निकले तो आपका हुस्न व जमाल देख कर शशदर रह गये। और ले जाकर अज़ीज़े मिस्र के हाथों फरोख़्त कर दिया। जब आप जवान हुए तो अज़ीज़े मिस्र की बीवी ज़ुलेख़ा आप पर फरेफ़्ता हो गई ज़ुलेख़ा की सहेलियों ने एक गुलाम के इश्क़ के लिए उसे लअन तअन की। तब ज़ुलेख़ा ने उन तमाम सहेलियों को एक–एक नेबू देकर तेज़ चाकू से काटने का हुक्म दिया। जूंही वह नेबू काटने लगीं ज़ुलेख़ा ने हज़रत यूसुफ़ को सामने बुला कर उनका नक़ाब उलट दिया। जैसे ही सहेलियों ने उन्हें देखा इतनी बदहवास हुईं कि अपनी–अपनी उंगलियां काट लीं।

एक मरतबा ज़ुलेख़ा ने आपको अपने दाम में फांसने के लिए सात कमरे एक क़तार में बनवाए और हर कमरे को मुक़फ्फ़ल करके आपको एक

कमरे ले जा गई। और ग़लत काम के लिए आप पर हाथ डाला। तब ही आप वहां से भाग खड़े हुए। तमाम कुफ़्ल खुलते चले गये ज़ुलेख़ा ने पीछे से आपका दामन पकड़ा। मगर वह फट गया। अचानक अज़ीज़े मिस्र की आप दोनों पर नज़र पड़ी वह आग बगोला हो गया। ज़ुलेख़ा ने अपने बचाव के लिए हज़रत यूसुफ़ पर इल्ज़ाम लगा दिया। अज़ीज़े मिस्र ने आपसे बेगुनाही का सुबूत मांगा। वहां गहवारे में एक छेः माह का बच्चा था। कुदरते इलाही से उस बच्चे ने गवाही दी कि ऐ अज़ीज़े मिस्र उनकी बेगुनाही का सुबूत यह है कि हज़रत यूसुफ़ का दामन पीछे से फटा है। इसका यह मतलब है कि आप आगे थे और ज़ुलेख़ा ने पीछे से आपका दामन खींचा जो फट गया। अगर ज़ुलेख़ा आगे और यूसुफ़ पीछे दौड़ते तो ज़ुलेख़ा का दामन पीछे से फट जाता।

जब आप मिस्र के बादशाह बने तो उस ज़माने में कनआन में ज़बदरस्त कहत पड़ा। इधर मिस्र में आपने सस्ते दामों पर अनाज फरोख़्त करने का हुक्म दिया। तब आपके तमाम भाई भी अनाज ख़रीदने मिस्र आए। आपने उन्हें पहचाना। और उन्हें ज़्यादा अनाज देने का हुक्म दिया और कहा दूसरी मरतबा अपने छोटे भाई को भी ज़रूर लाना। क्योंकि वह आपका सगा भाई था जिसे वह घर छोड़ आए थे और उन्हें आपने अपना पैरहन दिया कि यह पैरहन अपने वालिद की आंखों पर लगाएं। यहूदा जब आपका पैरहन लेकर कनआन के क़रीब पहुंचा। तो हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने कहा कि मुझे मेरे यूसुफ़ के पैरहन की बू आ रही है और जब आपने पैरहन आंखों से लगाया तो फौरन आपकी बीनाई आ गई।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम अपने बेटों समेत आपके दरबार में पहुंचे आपको सबने झुकर कर सलाम किया। यही आपके ख़्वाब की ताबीर थी कि सात सितारे यानी आपके सात भाई और चांद सूरज यानी वालिदैन को सज्दा करते हुए ख़्वाब में देखा था।

आपके विसाल के बाद आपके मदफन के लिए मिसरियों में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ। इसलिए आपको दरियाए नील में दफन किया गया। तक़रीबन चार सौ बरस बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरियाए नील से आपका ताबूत निकाल कर आपके आबाई वतन मुल्के शाम के कनआन में दफन किया। विसाल के वक़्त आपकी उम्र दो सौ सत्तर (२७०) साल थी।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को बुत परस्ती से मना फरमाया था। दीगर अक़्वाम की तरह आपकी क़ौम भी न मानी। तब आपने क़ौम के लिए अल्लाह से बद्दुआ की कि इस नाफरमान क़ौम पर अज़ाब नाज़िल कर और आपने अज़ाब का इंतिज़ार किए बेग़ैर दूसरी जगह जाने के लिए कश्ती में सवार हो गये। जब कश्ती भंवर में फंस कर हचकोले खाने लगी तब एक शख़्स ने कहा हम से कोई है जो अपने आक़ा को छोड़ कर भाग आया है। आपने कहा मैं ही अपने आक़ा के हुक्म के ख़िलाफ़ भाग आया हूं। तो आपको मज्बूरन दरिया में डाल दिया गया। तब एक बड़ी मछली ने अल्लाह के हुक्म से आपको निगल लिया। अल्लाह ने मछली को हुक्म दिया कि ख़बरदार मेरे नबी को किसी क़िस्म का ज़रर न हो।

आप चालीस दिन मछली के पेट में रहे। उस दर्मियान मछली के पेट में आपने आयते करीमा का विर्द जारी रखा। चालीस दिन बाद अल्लाह के हुक्म से मछली ने आपको दरिया कि किनारे एक कद्दू की बेल के नीचे छोड़ दिया उस वक़्त फौरन उस में कद्दू लग गये। आपने कद्दू खाया और अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपनी क़ौम की तरफ़ लौट गये।

आपकी क़ौम पर अज़ाब नाज़िल नहीं हुआ क्योंकि आपके लौट आने के बाद वह आप पर ईमान ले आई थी। आपने एक सौ अस्सी (१८०) साल की उम्र में विसाल फरमाया।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बेटे थे। आपके नाना लूत अलैहिस्सलाम थे। और बीवी रहीमा थीं। अल्लाह तआला ने आपको बेहद माल व दौलत और कसरते औलाद से नवाज़ा था। हज़ारों बकरियां थीं तमाम क़िस्म का ऐश व आराम था। एक रोज़ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर फरमाया कि ऐ नबी! एक मुद्दत तक आपने ऐश व आराम में ज़िन्दगी गुज़ारी। अब हुक्मे इलाही है कि वह आपको रंज व मुसीबत में मुब्तला करे। आपने कहा कोई बात नहीं मैं मुसीबत में साबिर और साबित क़दम रहूंगा। एक दिन आप वअ़ज़ फरमा रहे थे कि एक शख़्स ने आकर ख़बर दी कि आपका घर जल कर

राख हो गया है। आपने **इन्ना लिल्लाह** पढ़ा। फिर एक दिन ख़बर आई कि तमाम मवेशी सैलाब में बह गये। फिर ख़बर आई आपके बच्चे मर गये। यह ख़बरें सुन कर आप **इन्ना लिल्लाह** पढ़ कर सज्दे में गिर गये। चन्द दिन बाद आप बीमार हो गये। सारे बदन पर आबुले पड़ कर उस में कीड़े पड़ गये और बदन से बदबू आने लगी। लोग आपको बस्ती से बाहर छोड़ गये। तमाम साथियों ने साथ छोड़ दिया मगर आपकी बीवी रहीमा ने साथ नहीं छोड़ा। वह आपके ज़ख़्मों को साफ करतीं। मेहनत मज़्दूरी करके शाम को खाना वग़ैरह लेकर पहुंचती। रहीमा के बाल बेहद लम्बे थे और उसी को पकड़ कर आप नमाज़ पढ़ा करते थे।

एक दिन शैतान इंसान के रूप में रहीमा बी के मालकिन के पास आया और उसे बहका दिया कि आज काम की मज़्दूरी रहीमा मांगे तो उसके ख़ूबसूरत बाल मांग लो। मालकिन के बहकाने में आकर बाल मांगे। मज्बूरन उन्हें अपने बाल देने पड़े। इधर शैतान ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को बहका दिया कि आपकी बीवी ने अपने मअ़्शूक़ को अपने ख़ूबसूरत बाल काट कर दे दिए जिसे पकड़ कर आप नमाज़ पढ़ा करते थे। तब आपने क़सम खाई कि जब मैं शिफ़ायाब हो जाऊंगा तो उसे सौ कोड़े मारूंगा।

जब अल्लाह तआला ने आपको साबिर पाया तो आपको शिफ़ा अता हुई। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आप को गुस्ले सेहत दिया। आप तन्दुरुस्त हो गये आपको दोबारा माल व दौलत बाल बच्चे मवेशी हासिल हो गये।

आपको याद आया कि शैतान के बहकावे में मैंने क़सम खाई थी कि रहीमा बी को सौ कोड़े मारूंगा। तब अल्लाह तआला ने आपसे फरमाया कि सौ तिनके की एक झाड़ू बना कर मारो, तुम्हारी क़सम पूरी हो जाएगी। उस वक़्त आपकी उम्र सत्तर साल (७०) थी। तिरानवें (९३) साल में आपका इंतिक़ाल हुआ।

हज़रत जुल–क़रनैन

हज़रत ज़ुल–क़रनैन को सिकन्दरे आज़म भी कहा जाता है। जिन्होंने काफ़ ता काफ़ यानी सूरज निकलने के मक़ाम से सूरज डूबने के मक़ाम तक सफर किया। आपके साथ सफर में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम भी चन्द दिन रहे। चूंकि आप रूम फारस जैसे बड़ी अज़ीम मुल्कों के बादशाह थे। इसलिए आपका लक़ब ज़ुल–क़रनैन हुआ।

बाज़ रिवायतों में आया है कि आपके सर पर दो सींग थे और आप उन सींगों को छुपाने के लिए ताज पहना करते थे। बाज़ रिवायतों में आया है कि आपने दो क़रन (सदी) का ज़माना देखा इसलिए आपको ज़ुल-क़रनैन कहा जाता है। बाज़ का क़ौल है कि आपको इल्मे ज़ाहिरी और बातिनी अता हुआ था। आप ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के चचा ज़ाद भाई थे। आपने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ तवाफ़े काबा भी किया था। आपने दुनिया के कोने में देखा कि एक फरिश्ता एक पांव पर खड़ा है। नज़रें आसमान पर लगी हैं और मुंह में एक नर सिंगा है जो हुक्मे इलाही से क़रीबे क़्यामत सूर फूंकेगा जिस से तमाम दुनिया फना हो जाएगी।

दौराने सफर आपको और ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को एक बस्ती नज़र आई। वहां के लोग बेहद लाग़र और मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तला थे। और मौत मौत की रट लगा रहे थे। आपने पूछा कि "यह क्या माजरा है? आप मौत क्यों मांग रहे हो?" लोगों ने कहा "यहां एक कुवां है। जिसका पानी पीने से इंसान कभी नहीं मरता। हमने वह पानी पिया है। हज़ारों साल हो गये हैं हमें मौत नहीं आती और हम इसी तरह पड़े हुए हैं" इसी तरह आपने दूसरी बस्ती देखी। उस बस्ती को दूसरी बस्ती की क़ौम आकर बरबाद करती। खेतों का सफाया करती। इंसानों का ख़ून पीती यहां तक कि ज़हरीले कीड़े मकोड़े तक खा जाती। आपसे लोगों ने शिकायत की। आपने देखा वह क़ौम याजूज माजूज की क़ौम है। जो रात में आकर फसाद बरपा करती हैं। तब आपने उस बस्ती के चारों तरफ़ सीसे की आहनी दीवार खड़ी कर दी। जिसे याजूज माजूज की क़ौम रोज़ाना रात में आकर अपनी ज़बान से चाट-चाट कर आधी गिरा देती है। आपकी उम्र एक हज़ार छेः सौ (१६००) साल थी।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम

आपका नाम बलयाबिन था और लक़ब अबुल-आस था। आप बनी इस्राईल से थे।

एक मरतबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को ख़ुतबा दे रहे थे एक शख़्स ने पूछा "सब से बड़ा आलिम कौन है?" आपने कहा : "मैं हूं" उसी वक़्त वही आई : "ऐ मूसा! बहरीन में मेरा एक बन्दा है। वह तुम से ज़्यादा इल्म रखता है।" आपने उस से मिलने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। तब

अल्लाह तआला ने फरमाया कि अपने साथ एक मछली ले जाओ और जहां मछली गायब हो जाए वहां मुलाक़ात होगी। और मूसा अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात वहीं हुई। आप जहां क़दम रखते वहीं सबज़ा उग जाता इसलिए आप का लक़ब खिज़्र हुआ।

हज़रत जरजीस अलैहिस्सलाम

आप फ़लस्तीन में सुकूनत पज़ीर थे। वहां का बादशाह बेहद ज़ालिम, जाबिर और बुतपरस्त था। वह खुद को माबूद बता कर लोगों से सज्दे करवाता। अगर कोई सज्दा न करता तो उसे आग में डाल देता। आपने उसे दीने हक़ की दावत दी और ज़ुल्म व बरबरीयत से रोकना चाहा। तो उसने आपको ही आग में डलवा दिया। आप उस में से ज़िन्दा सही सलामत निकल आए। फिर उसने गन्धक तेल में पिघला कर डाला और उस डेग में आपको डाल दिया। आपने वहां भी **ला इलाहा इल्लल्लाह** कलिमा पढ़ा और ज़िन्दा निकल आए। फिर आपके हाथ पैरों में मेख़ें ठोन्क कर चालीस मन का पत्थर पेट पर रख कर क़ैद ख़ाने में डाल दिया। अल्लाह तआला के हुक्म से फ़रिश्ते आकर आपको खाना खिलाते, पानी पिलाते फ़रिश्तों ने आपसे कहा कि अल्लाह तआला का हुक्म है कि आप बरसों इस क़ैद में रहोगे। तब तक सब्र करते रहो। अल्लाह तआला आपको शहादत का दरजा नसीब करेगा। दूसरे दिन बादशाह ने आपको आरे से काट कर दो टुकड़े कर दिए और शेर के सामने डाल दिया। शेर उन्हें देख कर आदाब करके चला गया।

फिर आपको जला कर उसकी राख समुन्द्र में फेंक दी। अल्लाह के हुक्म से समुन्द्र ने तमाम राख समेट कर ज़मीन पर डाल दी यह मोजिज़ा देख कर बहुत से काफिर मुसलमान हो गये। सात साल मुसीबत में गुज़ारने पर आपने अल्लाह से दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब मुझ से यह तक्लीफ बर्दाश्त नहीं होती। अपने वादे के मुताबिक़ मुझे शहादत नसीब कर। और काफ़िरों पर अज़ाब नाज़िल कर। एक बिजली कड़की और काफिरों पर गिरी। बहुत से काफिरों ने आपको तल्वार से शहीद कर दिया। आपको शहादत का दरजा नसीब हुआ कहा जाता है कि आप हज़ार मरतबा मर मर कर ज़िन्दा हुए।

हज़रत शमऊन अलैहिस्सलाम

आप बेहद हक़ परस्त थे। अपनी क़ौम को बुराइयों से रोकने पर वहां का बादशाह अमूज़िया आप का दुशमन हो गया। आपको क़त्ल करने के लिए आपकी बीवी को अपनी तरफ मिला लिया। आपकी ताक़त आज़माने के लिए पहले दिन रस्सी से बांधा आप ने वह तोड़ दी। दूसरे दिन ज़ंजीर से बांधा वह भी तोड़ दी। आपने अपनी बीवी से इस हरकत के मुतअल्लिक़ पूछा। उसने कहा मैं आपकी ताक़त आज़माना चाहती थी। आपने कहा मुझे किसी भी ज़ंज़ीर में बांधो मैं तोड़ दूंगा सिवाए अपने बालों के। चूंकि आपके बाल बेहद लम्बे थे। इसलिए बीवी ने आपके बालों से आपको चारपाई से बांध कर अमूज़िया को ख़बर कर दी।

पस वह मल्ऊन सिपाहियों के साथ आया और आपके कान, नाक, ज़बान और हाथ पैर काट कर शुतुरमुर्ग़ पर लदवा कर दरिया में डाल दिया। अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत जिब्रील ने हज़रत शमऊन अलैहिस्सलाम को हवा से उठा लिया। और तमाम कटे आज़ा को जिस्म पर लगा कर ज़िन्दा उठा दिया।

कहा उठो! अल्लाह तआला ने तुम्हें फ़िर कुव्वत बख़्शी है। अपनी कुव्वत से पूरी बस्ती को उलट दो।

तब हज़रत शमऊन अलैहिस्सलाम ने पूरी बस्ती उलट दी और गोशा नशीनी अख़्तियार की। आपकी उम्र और वफ़ात का कुछ पता नहीं मिलता।

हज़रत ज़करिया और यहिया अलैहिमुस्सलाम

हज़रत ज़करिया की उम्र एक सौ बीस (१२०) साल और आपकी बीवी की उम्र अट्ठानवें (९८) साल थी। जब आपको औलाद की बशारत मिली। तब आपने अल्लाह तआला से निशानी मांगी। आपको इल्हाम हुआ कि तीन दिन और तीन रातें आप किसी से बात न कर पाएंगे। और ऐसा ही हुआ। आप सिवाए अल्लाह तआला के ज़िक्र के किसी से बात न कर सके। तब आपको अल्लाह ने उन्हें हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम से नवाज़ा।

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम और हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम की शहादत का वाक़्या यह है कि आपके दौर में एक बादशाह था। उसकी दूसरी बीवी को अपने पहले शौहर से हसीन व जमील लड़की थीं। दूसरी

बीवी ने सोचा मैं तो बूढ़ी हो रही हूं मेरे बाद मेरा शौहर दूसरी शादी करेगा इसलिए किसी गैर औरत के बजाए मेरी बेटी से ही उसका निकाह पढ़वाया जाए। हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम उस ज़माने में फतवा दिया करते थे। सो बादशाह ने आपसे फतवा मांगा। आपने उस निकाह को हराम करार दिया। लड़की ख़ूबसूरत थी इसलिए वह ख़ुद भी निकाह करना चाहता था। मां ने बेटी को ख़ूब सजा संवार कर बादशाह के हुज़ूर में पेश कर दिया। बादशाह ने लड़की को छूना चाहा। तब बुढ़िया ने शर्त रखी कि हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम का सर क़लम करके लाए तब ही उसे छूए। तो बादशाह ने हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम के क़त्ल का हुक्म दिया। उसके दरबारी उलमा और वज़रा ने कहा कि हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम पैग़म्बर हैं। अगर उनका सर क़लम किया गया और ख़ून का एक क़तरा भी ज़मीन पर गिरा तो क़यामत तक ज़मीन पर घास भी नहीं उगेगी। तो बादशाह ने हुक्म दिया कि ख़ून को दरिया में बहा दिया जाए। लोगों ने कहा कि हज़रत यहिया के वालिद हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम भी पैग़म्बर हैं वह बद्दुआ देंगे। इसलिए बेहतर यह हो कि हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम को भी क़त्ल कर दिया जाए। लिहाज़ा बादशाह ने दोनों के क़त्ल का हुक्म दे दिया। यह ख़बर मिलते ही दोनों पैग़म्बर जंगल की तरफ़ चले गये और वहां एक दरख़्त के साए में मशग़ूले इबादत हो गये। सिपाहियों ने उन्हें तलाश कर लिया और हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम को पकड़ कर बादशाह के हुज़ूर पेश कर दिया। हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम भागने में कामयाब हो गये। काफी दूर निकल जाने के बाद थक हार कर आप एक दरख़्त तले बैठ गये। सिपाही उन्हें ढूँढते वहां पहुंचे। आपने सिपाहियों को देखा और दरख़्त की तरफ़ देखा। दरख़्त शक़ हो गया। आप उसमें रूपोश हो गये। मगर आपके पैरहन का कोना बाहर रह गया। तो शैतान ने इंसानी रूप में आकर रहनुमाई की और दरख़्त को खड़ा चीरने की तरकीब बताई। सिपाहियों ने दरख़्त को खड़ा चीर डाला। आपने उफ तक न की। सिपाहियों ने आपका सर क़लम करके तश्त में रख कर बादशाह के सामने पेश किया। उसी वक़्त अल्लाह तआला ने अज़ाब नाज़िल कर दिया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

हज़रत मूसा के दौर के फ़िरऔन का नाम वलीद बिन मुसअब था जो एक ग़रीब अत्तार का लड़का था। जब मिस्र के बादशाह का इंतिक़ाल हुआ तो वह खुद ही बादशाह बन बैठा जिसे फ़िरऔन कहा जाता है। जब वह बादशाह बना तब लोगों को हुक्म दिया कि मुझे सज्दा किया करो। एक रात फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा कि बैतुल–मक़्दिस की तरफ़ से एक आग आई और मिस्र को घेर लिया और तमाम फ़िरऔनियों को जला कर राख कर डाला। मगर इस्राईलियों को कोई गज़िन्द न पहुंची। फिर देखा एक अज़्दहा बनी इस्राईल के मुहल्ले से निकला और फ़िरऔन के तख़्त को उलट दिया। फ़िरऔन ने काहिनों को बुला कर उस ख़्वाब की ताबीर पूछी तो काहिनों ने बताया कि बनी इस्राईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरी हलाकत का सबब बनेगा। इधर फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल के घर जहां भी बच्चा पैदा हो उसे मार दिया जाए। इस तरह साल में हज़ारहा बच्चे मार दिए गये। तो तुम्हारी परिस्तश कौन करेगा? तब उसने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किए जाएं और एक साल छोड़ दिए जाएं। इत्तिफ़ाक़न जिस साल बच्चे छोड़ दिए गये उसी साल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए। लेकिन फिर भी आपकी वालिदा को ख़ौफ़ महसूस हुआ और अपनी बहन से ख़दशा ज़ाहिर किया। बहन ने मश्वरा दिया क्यों न हम बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरियाए नील में छोड़ दें अल्लाह तआला खुद उसकी हिफ़ाज़त करेगा।

अल्लाह तआला के हुक्म से जिब्रील अलैहिस्सलाम ने इंसानी शक्ल में आकर जन्नत से सन्दूक़ लाए और आपकी वालिदा के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। उन्होंने अल्लाह का नाम लेकर सन्दूक़ में बच्चा रखा और दरियाए नील में छोड़ दिया। फ़िरऔन और उसकी बीवी आसिया जो खुदा परस्त थीं महल के झरोके से उस सन्दूक़ को बहते हुए आता देख रही थीं। वह सन्दूक़ सोने चांदी और हीरे जवाहरात से मुज़ैयन था, महल के पास आकर रुक गया। फ़िरऔन ने सिपाहियों से सन्दूक़ मंगवाया। हज़रत आसिया ने कहा यह सन्दूक़ आपका और अन्दर जो भी होगा वह मेरा। फ़िरऔन राज़ी हो गया। जब सन्दूक़ खोल कर देखा गया तो उस में एक हसीन बच्चा था। फ़िरऔन ने उसे क़त्ल करना चाहा। मगर हज़रत आसिया ने बचा

लिया। उनकी मासूमियत देख कर फिरऔन ने भी इरादा तर्क कर दिया। इस तरह आप फिरऔन के घर में पलने बढ़ने लगे।

एक मरतबा अहदे तिफ़ली में आपने फिरऔन को तमांचा मारा जिस से फिरऔन को शक हुआ कि यही मेरा दुश्मन है। लेकिन हज़रत आसिया ने कहा बच्चा मासूम है। अभी उस में भले बुरे की तमीज़ कहाँ? फिरऔन ने आज़माइश के लिए एक तरफ़ दहकते सुर्ख़ अंगारे और एक तरफ़ लाल जवाहिर रखे। आप लाल व जवाहिर की तरफ़ जाने लगें। हज़रत जिब्रील ने हुक्मे इलाही से आपका रुख़ अंगारों की तरफ़ मोड़ दिया। आपने एक अंगारा मुंह में डाल दिया। उस वक़्त से आपकी ज़बान में लुकनत हो गई। उस वक़्त आपकी उम्र तीन साल थी।

आपका नाम मूसा, हज़रत आसिया ने रखा "मू" यानी पानी और "सा" यानी लकड़ी। चूंकि आप पानी में और सन्दूक़ में पाए गये इसलिए आपका नाम "मूसा" रखा। आप तक़रीबन तीस (३०) साल फिरऔन के घर परवरिश पाते रहे। आपकी बीवी सफूरा हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की बेटी थीं। जो असा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से लाए थे वह हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने आपको दिया था।

एक मरतबा आप अपनी बीवी को लिए अपनी वालिदा से मिलने निकले तो रास्ता भूल गये। दूर से आपको आग नज़र आई आप एक जगह बीवी को बैठा कर रौशनी की तरफ़ चले। क़रीब जा कर देखा तो एक सरसब्ज़ दरख़्त था वह आप जैसे–जैसे दरख़्त के क़रीब जाते दरख़्त दूर दूर होता जाता। आप रुक जाते तो दरख़्त भी रुक जाता। फिर दरख़्त से आवाज़ आई : "ऐ मूसा! मैं सारे जहान का रब हूं। तुम बहुत पाकीज़ा मक़ाम पर आ गये हो अपने जूते उतार दो। और जो वही उतरे कान लगा कर सुनो। मैंने तुम्हें पसन्द किया। दौराने कलाम अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार ज़बान में कलाम किया। आपने अपने तमाम बदन के तमाम आज़ा से कलामे इलाही सुना। गोया तमाम जिस्म कान बन गया। जिस वक़्त अल्लाह तआला आप से कलाम कर रहा था उस वक़्त सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आपके साथ थे मगर किसी ने कुछ न सुना। और जिस पहाड़ पर अल्लाह तआला ने आपसे कलाम किया था उस पहाड़ का नाम कोहे तूर सीना है यानी तजल्ली का पहाड़।

आप ९ जिल–हिज्जा यौमे अरफ़ा को तजल्ली–ए–इलाही से मुशर्रफ़

हुए आपके असा का नाम "माशा" या "अलीक़" है। आपका यही असा क़रीबे क़यामत दाब्बतुल–अर्ज़ बन कर ज़ाहिर होगा। उस असा पर दो शाख़ें थीं जो तारीकी में शोअ्लों का काम देती थीं।

जिस वक़्त आपने कोहे तूर पर अल्लाह तआला की तजल्ली देखी आपने बेहोश हो गये। अल्लाह तआला ने सिर्फ़ छोटी उंगली के एक पोर के बराबर तजल्ली ज़ाहिर की थी।

एक वक़्त आप दरिया के किनारे ग़ुस्ल कर रहे थे और जिस पत्थर पर आपके कपड़े रखे थे वह पत्थर आपके कपड़े ले भागा। आप उसके पीछे दौड़े और उस पर अपना असा मारा। पत्थर पर आपके असा के निशान बन गये। आपने फिरऔन और पुजारियों को बुतपरस्ती से रोका। तो वह सब आपके दुश्मन हो गये और आप पर फौज कुशी की। आप भी बनी इस्राईल की फौज लेकर मुक़ाबले के लिए आए। अल्लाह के हुक्म से जिब्रील अलैहिस्सलाम ने एक घोड़ी आपको दी। जिस पर आप सवार हुए जब फिरऔन के घोड़े ने उस घोड़ी को देखा तो उसके पीछे दौड़ पड़ा। फिरऔन के लाख कोशिश के बावजूद घोड़ा नै माना और दरिया में कूद पड़ा। उसकी देखा देखी उसकी फौज भी कूद पड़ी। और दरिया में ग़र्क़ हो गई। अल्लाह तआला के हुक्म से दरिया में तुग़यानी आई। मौजों ने फिरऔन की लाश उछाल कर ज़मीन पर फेंक दी। तब लोगों को यक़ीन आया कि वह मर गया। तब ही से पानी मुर्दे को क़ुबूल नहीं करता। लाश फूल कर ऊपर आ जाती है।

इधर सामरी जादूगर ने देखा कि जहां हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की घोड़ी का सुम लगता है वहां ज़मीन पर सब्ज़ा उग जाता है तो उसने वहां की मिट्टी से गाय का पुतला बनाया। लोगों से उसकी पूजा करवाता था और सोने चांदी के नज़राने वसूल करता था। आपको सात रोज़े रखने का अल्लाह का हुक्म हुआ। और यह भी हुक्म हुआ कि बाद रोज़ों के तौरेत लेने कोहे तूर पर आएं। आपने रोज़े रखे। रोज़ों के बाद आपने सोचा सात दिन के रोज़ों की वजह से मुंह में बदबू पैदा हुई है इसलिए आपने मिस्वाक किया फिर तौरेत लेने तूर पर पहुंचे। अल्लाह तआला ने फरमाया "ऐ मूसा! मुझे रोज़ादार के मुंह की बू मुश्क से ज़्यादा पसन्द है अब और सात रोज़े रखो और फिर तौरेत लेने आओ। फिर वैसे ही किया उस वक़्त तक लोग गाय पूजा में मश्ग़ूल हो गये। जब आपने देखा लोग गाय की पूजा कर रहे हैं

तो आपने तैश में आकर तौरेत की तख़्ती ज़मीन पर पटक दी। उस के सात टुक्ड़े हो गये जिन में से छेः टुक्ड़े ग़ायब हो गये सिर्फ़ एक टुकड़ा हाथ लगा।

एक मरतबा आप बहरे कुल्ज़ुम की तरफ़ जाने लगे तो रास्ता भूल गये एक बुज़ुर्ग ने कहा इस दरिया में हज़रत यूसुफ़ का ताबूत है उन्होंने वसीयत की थी कि जब मूसा इधर आएं तो मेरा ताबूत निकाल कर दफ़न कर देना। आप वहां से बैतुल–मक़्दिस पहुंचे वहां एक बादशाह अमालिक़ा नाम का था जो निहायत ज़ालिम व जाबिर था। आपको अल्लाह का हुक्म हुआ कि अमालिक़ा से जिहाद करो और फ़िरऔनियत को ख़त्म करो। आपन बनी इस्राईल को लेकर मुल्क फलस्तीन की तरफ़ निकले मगर बनी इस्राईल ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया कि अमालिक़ा बहुत ताक़तवर है और हम उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। तब आप उन्हें एक मैदान में छोड़ कर आगे बढ़ गये। इधर आप आगे बढ़ गये उधर बनी इस्राईल को रास्ता न मिला और वह मैदाने तेया में क़ैद हो कर रह गये। इस दर्मियान चालीस दिन तक उन लोगों के लिए अल्लाह तआला की तरफ से दिन में एक सफ़ेद हल्का बादल साया किए रहता। और सूरज तुलूअ़ होने से क़ब्ल मन्ना व सल्वा यानी निहायत लज़ीज़ ग़िज़ा उतरती जो एक शहद की तरह मीठी और लज़ीज़ क़िस्म के कबाब और एक क़िस्म का बटेर परिन्दा उतरता जिसे वह लोग भून कर खाते। हालांकि रोज़ ताज़ा ग़िज़ा उतरती मगर फिर भी वह लोग ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करने लगे। जिस से ग़िज़ा में बदबू पैदा होने लगी। उन्होंने नाशुक्री और अल्लाह की नेमत की नाक़द्री की जिस की वजह से मन्न व सलवा उतरना बंद हो गया एक दिन बनी इस्राइल ने आपसे दरख़्वास्त की कि जिस तरह आप कोहे तूर पर जा कर अल्लाह तआला से हम कलाम होते हैं लेकिन हमें आवाज़ सुनाई नहीं देती। आपने अल्लाह तआला से दुआ की तो एक नूरानी सफेद रंग का सुतून नमूदार हुआ और आहिस्ता–आहिस्ता पूरे अहाते को घेर लिया। जो आपके साथ सत्तर बनी इस्राईल नीचे खड़े थे उन्होंने कहा यह आवाज़ सिर्फ़ आप ही सुन रहे हैं हमें कुछ सुनाई नहीं दे रहा। तब एक बिजली कोंदी और फिर सबने सुनाः "मैं अल्लाह हूं। मेरे सिवा कोई माबूद नहीं।" आपने कहा : "क्या अब तुम्हें अल्लाह तआला का कलाम सुनाई दिया?" वह बोले : "हमें क्या ख़बर कौन बोल रहा है।" अल्लाह तआला की शक्ल व सूरत दिखाओ। तब आसमान से सख़्त आवाज़ आई जिसकी हैबत से वह तमाम मर गये। एक

दिन और एक रात मुर्दे की हालत में रहे। हज़रत की दुआ से अल्लाह तआला ने सबको फिर ज़िन्दा कर दिया।

आप से तीन साल छोटे भाई हारून के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तब अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि हारून को एक बाग़ में ले जाओ। आपने बाग़ में ले जा कर एक तख़्ते मुकल्लफ़ पर बिठाया वहीं आपकी रूह क़ब्ज़ हो गई और ग़ायब हो गये जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को हरून के विसाल की ख़बर सुनाई। तो लोगों ने कहा तुम ही ने उसको मारा है। तब आपने अल्लाह तआला से दुआ की हज़रत हारून तख़्त समेत ज़िन्दा हो कर हाज़िर हुए और अपने मरने की तस्दीक़ की और दोबारा ग़ायब हो गये।

आपकी आस्तीन में एक रौशनी चमकती थी जिसे "यदे बैज़ा" कहते हैं।

आपके असा से तीन मोजिज़ात ज़ाहिर हुए।

पहली मरतबा : वादिए सीना में असा अता होने पर अल्लाह तआला ने आपसे पूछा : "तुम्हारे हाथ में क्या है?" तब आपने कहा : "मेरा असा है।" तब वह असा सांप बन गया।

दूसरी मरतबा : सामरी जादूगरी के नक़्ली सांपों को असा ने खा लिया।

तीसरी मरतबा : पत्थर पर असा मारने से चश्मा बह निकला। एक मरतबा आपने क़ौम को बद्दुआ दी और अपने असा को टीले पर मारा। जिस में से जुएं निकल कर तमाम काफिरों के कपड़ों, बर्तनों और खाने पीने की तमाम चीज़ों में फैल गईं फिर क़ौम ने आपके मुआफ़ी मांगने पर तममा जुएं ग़ायब हो गईं। फिर एक मरतबा आपके इशारे पर मेंढक ही मेंढक सब घरों में पैदा हो गये। तब भी क़ौम के मुआफ़ी मांगने पर तमाम मेंढक ग़ायब हो गये। आपकी असा दस गज़ लम्बी थी।

हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि एक मरतबा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की रूहों में बहस हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से कहा "अल्लाह तआला ने आपको अपने हाथों से बनाया फिर भी तुमने नाफरमानी की।" हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया। "तुम्हें जो तौरेत मिली थी वह कब लिखी गई?" हज़रत मूसा ने जवाब दिया "तख़्लीक़े काइनात से क़ब्ल और आपकी पैदाइश से चालीस साल क़ब्ल" तब हज़रत आदम

ईमान लाएंगे। हज़रत ने दुआ की। अल्लाह की तरफ़ से आवाज़ आई मैं नेमत उतारूंगा। मगर बनी इस्राईल ज़ख़ीरा अन्दोज़ी न करे। वरना अज़ाबे नार होगा। अल्लाह के हुक्म से ख़्वान उतरता जिसमें तली मछली उसके मुंह के तरफ़ रौग़न ज़ैतून और नमक, पांच रोटियां अनार और खुर्मे होते। यहूदियों ने कहा अब मछली को ज़िन्दा करके दिखाओ तब ईमान लाएंगे। आपने दुआ मांगी। अल्लाह के हुक्म से मछली ज़िन्दा हो कर फुदकने लगी और फिर मर गई। तब बहुत से लोग ईमान लाए। यह ख़्वाने नेमत चालीस दिन तक उतरता रहा।

फिर लोगों ने नाफरमानी शुरू कर दी। ज़ख़ीरा अन्दोज़ी शुरू की। तब अल्लाह के हुक्म से उन लोगों की सूरत मसख़ हो गई। चेहरे बन्दरों की तरह हो गये। आपने उन लोगों के लिए मौत की दुआ की। अल्लाह ने सबको जहन्नम रसीद किया।

इस दस्तर्ख़्वान से चार हज़ार लोग शिकम सैर होते थे आपके साथ दीन का काम करने वाले लोगों को हवारी कहते हैं। आप पर सबसे पहले ईमान लाने वाले का नाम हसीब नज्जार था। और जिस बादशाह ने आपके क़त्ल का हुक्म दिया उसका नाम दाऊद था। सबसे पहले आपने मिट्टी से चमगादड़ बनाई। उस पर फूंक मारी वह ज़िन्दा हो गई चौबीस घन्टे ज़िन्दा रहने के बाद मर गई।

आपने चार अश्ख़ास को ज़िन्दा किया। पहला आज़र नामी शख़्स जो आपका मुख़्लिस था उसके मरने के तीन दिन बाद आप उसकी क़ब्र पर गये, दुआ की वह ज़िन्दा हो गया।

दूसरे एक जनाज़ा सामने से गुज़र रहा था। उसके लिए दुआ की वह ज़िन्दा हुई। वह लड़की थी। ऐसी ही एक लड़की जो शाम को मरी सुबह ज़िन्दा हो गई। साम बिन नूह जिनको वफ़ात पाए हज़ारों साल गुज़र चुके थे। लोगों की ख़्वाहिश पर आपने उन्हें अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा कर दिखाया।

आप शबे क़द्र को आसमान पर उठाए गये। उस वक़्त आपकी उम्र 33 साल थी। आप दमिश्क़ में जामे मस्जिद की मश्रिक़ी सिम्त सफेद मीनारे पर उतरेंगे। उस वक़्त फज्र की नमाज़ की इक़ामत हो चुकी होगी। दो सब्ज़ कपड़े लपेटे हुए, सर झुकाए बालों से मोती झड़ रहे होंगे। क़रीबे क़्यामत तश्रीफ़ लाएंगे। उस वक़्त काना दज्जाल जो आंख से काना होगा

और मुसलमानों की गारत गीरी करता होगा आप उसको तलाश करके जो शहर लुद नाम का होगा उसको उस शहर के दरवाज़े पर क़त्ल करके मुसलमान को उसका ख़ून नेज़े पर दिखाएंगे।

आप अल्लाह तआला से दुआ करके याजूज माजूज जो उस वक़्त अपनी दीवार को तोड़ कर मुसलमानों का क़त्ले आम करेंगे। अल्लाह नग़फ़ नामी कीड़े भेजेगा जो याजूज माजूज के नथुनों में घुस कर उन्हें हलाक करेगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि आप नाज़िल हो कर चालीस साल ज़िन्दा रहेंगे। उस वक़्त इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम होंगे। दोनों मिल कर काना दज्जाल की फौज का मुक़ाबला करेंगे। और फिर इस्लामी राज होगा इस दर्मियान आपका निकाह भी होगा और औलाद भी होगी। आपका इंतिक़ाल मदीना मुनव्वरा में होगा। आप हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मज़ारे मुबारक में हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के क़रीब दफन होंगे। हुज़ूरे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़—ए—मुबारक में एक तीसरी क़ब्र ख़ाली तैयार है। जहां आप दफन होंगे आपके विसाल के बाद आपके दीन के दो फ़िर्क़े हो गये एक कैथोलिक और दूसरा प्रोटेस्टेंट। जिसमें एक फ़िरक़ा का दावा है कि आप चौथे आसमान पर उठा लिए गये और क़रीबे क़्यामत नाज़िल होंगे। दूसरे फ़िर्क़े का दावा है कि आपको सूली पर चढ़ाया गया है।

हज़रत मरयम नस्र शहर में सुकूनत पज़ीर थीं इसलिए आपके मानने वालों को नसारा या ईसाई कहा जाता है।

एक रोज़ हज़रत ईसा ने लोगों से कहा कि अल्लाह तआला ने तौरेत में हफ़्ते का दिन मुबारक क़रार दिया था। अब उसको मन्सूख़ किया है और इतवार को मुबारक क़रार दिया है बनी इस्राईल यह बात सुन कर दिल में कीना लाए और कहने लगे कई पैग़म्बर हज़रत मूसा के बाद आए किसी ने भी शरीअते मूसा को मन्सूख़ न किया और यह बेपिदर लड़का हमारी शरीअत को मन्सूख़ करता है इसे मार डालना चाहिए।

आपने एक औरत के सवाल के जवाब में बताया कि तौरेत में भी यह ख़ुशख़बरी है कि अहमद नाम का एक रसूल आएगा। क़ुरआन उनके ज़रिए नाज़िल होगा। उनकी उम्मत में हाफ़िज़े क़ुरआन होंगे। दूसरे पैग़म्बरों की उम्मत क़ुरआन हिफ़्ज़ नहीं कर सकेगी। तौरेत और इंजील को भी हिफ़्ज़

नहीं करेंगे उनकी शरीअत ता क़्यामत क़ायम रहेगी यह सुन कर सब यहूदियों ने मश्वरा किया कि ईसा को मार दिया जाए वरना हमारा दीने मूसा मिट जाएगा। तब ईसा अलैहिस्सलाम अपने हवारियों के साथ ऐनुस्सुलूक नामी मकान में चले गये। वहां से आपको अल्लाह तआला ने चौथे आसमान पर उठा लिया आपको तलाश करते यहूदियों का सरदार शुयूअ् नामी अन्दर गया उसकी शक्ल हज़रत ईसा की तरह हो गई। लोगों ने शुयूअ् को ईसा जान कर पकड़ लिया।

क़रीबे क़्यामत दज्जाल लोगों को गुमराह करेगा। उस वक़्त इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु अन्हु मोमिनों के साथ मदीना में रहेंगे। हज़रत ईसा भी आसमान से नाज़िल हो कर तमाम काफिरों को मश्रिक़ से मग़रिब तक दज्जाल समेत मार डालेंगे। जो शख़्स दीने मुहम्मदी कुबूल करेगा उसको रखेंगे। इसलिए सब दीने मुहम्मदी में दाख़िल होंगे एक काफिर भी जहां में नहीं रहेगा। चालीस बरस उनकी हुकूमत रहेगी और जब इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु अन्हु इंतिक़ाल फरमाएंगे तो उन्हें रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुजरे के पास दफन करेंगे।

हज़रत मरयम

हज़रत मरयम की वालिदा माजिदा का नाम हन्ना था और वालिद इमरान अलैहिस्सलाम थे। जब हन्ना की काफी उम्र हो गई और उन्हें कोई औलाद नहीं हुई तो उन्होंने अल्लाह तआला से मिन्नत मानी कि अगर उन्हें कोई औलाद हुई तो उसे बैतुल–मक़्दिस की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दूंगी। जब वह हामिला हुईं तो उनके शौहर इमरान का इंतिक़ाल हो गया। तब हज़रत मरयम की परवरिश की ज़िम्मेदारी उनके नाना हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने ली। हज़रत मरयम एक दिन में इतना बढ़ती जितना एक आम बच्चा एक साल में बढ़ता है।

जब आप जवान हुईं तो अल्लाह की कुदरत से हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने बैतुल–मक़्दिस में एक हुजरा बनाया ताकि आप वहां रह कर इबादत करें और बैतुल–मक़्दिस की ख़िदमत भी करें। जिस हुजरे में आप रहतीं तो वहां अल्लाह की कुदरत से फल और मेवे के ख़्वान नाज़िल होते थे।

एक दिन अल्लाह तआला के हुक्म से जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आपके मुंह में फूंक मारी जिस की वजह से आप हामिला हो गईं। जब वक़्ते विलादत आया तो आप दूर जंगल में एक दरख़्त के नीचे बैठ गईं। वहीं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत हुई हूरों ने आकर बच्चे को गुस्ल दिया। बहिश्ती हुल्ला पहनाया। जब आप बच्चे को लेकर मस्जिद में आईं तो लोगों ने पूछा: "यह बच्चा कहां से लाई?" आपने इशारे से जवाब दिया: "खुद इस बच्चे से पूछो।" लोगों ने कहा : "यह एक दिन का बच्चा क्या जवाब देगा" तब अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम गोया हुए कि मैं अल्लाह का नबी हूं मैं एक खुदा को मानने का पैग़ाम लाया हूं। मुझे अल्लाह तआला ने आप लोगों की हिदायत के लिए भेजा गया है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि औरतों में सिवाए दो औरतों के कोई फ़ाज़िल नहीं एक मरयम और दूसरी फ़िरऔन की बीवी हज़रत आसिया। यह दोनों मुक़द्दस ख़्वातीन जन्नत में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आएंगी। आपकी वफ़ात का वाक़या यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपनी वालिदा मरयम के हमराह बैतुल–मुक़द्दस से शाम को जा रहे थे राह में बीमार हो गईं चूंकि वह सिवाए बेख़ गयाह (हरी घास की जड़) के सिवा कुछ इस्तेमाल नहीं करती थीं। आप बेख़ ग्याह ढूंढने निकले और इधर हज़रत मरयम इंतिक़ाल फरमा गईं। हूरों ने गुस्ल दिया और वहीं दफना दिया। हज़रत ईसा ने लौट कर अपनी मां को न पाया। दो दफा पुकारा तीसरी दफा पुकारने पर हज़रत मरयम ने जवाब दिया कि "ऐ बेटे तुम्हारी पहली पुकार पर मैं फ़िरदौसे आला पर और दूसरी पुकार पर सिदरतुल–मुन्तहा पर थी। आपने मां से पूछा : "क्या हाल है?" उन्होंने जवाब दिया : "ऐ बेटा! जिस को अल्लाह तआला फ़िर्दौसे आला नसीब करे और वह मुराद को पहुंचे उस से बेहतर और क्या चीज़ है।" हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बैतुल–मक़्दिस की तरफ़ लौट गये।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

पाँचवां बाब

नूरे मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह तबारक व तआला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से दो हज़ार साल क़ब्ल और दुनिया बनाने से एक साल क़ब्ल नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्बीह करता रहा। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुतला बनाया और फरिश्ते से कहा कि इसमें रूह फूंके। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने जब उस पुतले में रूह डाली तो वह रूह वापस लौट आई। जिब्रील ने दोबारा उसमें रूह डाली लेकिन फिर रूह वापस लौट आई क्योंकि अन्दर अन्धेरा महसूस हुआ और रूह को उसमें घुटन महसूस हुई। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि पुतले की पुश्त में नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाख़िल की जाए। और जब यह नूर दाख़िल किया गया तो जिस्म नूर से मामूर हो गया। तब रूह जिस्म में ठहर गई। वही नूर पुश्त दर पुश्त अंबियाए किराम के दर्मियान मुन्तक़िल होता हुआ हज़रत अब्दुल्लाह तक पहुंचा और फिर अब्दुल्लाह की पेशानी से हज़रत आमिना के शिकम में पहुंचा और बारह रबीउल–अव्वल बरोज़ दोशंबा सुबह सादिक़ के वक़्त इस दुनिया में जल्वा अफरोज़ हुआ। आपकी विलादत बासआदत के वक़्त रात दिन में झगड़ा शुरू हो गया कि रात चाहती थी कि विलादत रात को और दिन चाहता था विलादत दिन को हो। तो अल्लाह तआला ने दिन और रात के दर्मियान सुबह सादिक़ के वक़्त आपको दुनिया में भेजा।

जब आदम की पुश्ते मुबारक में नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाख़िल किया गया तो तमाम फ़रिश्ते हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पीछे–पीछे ताज़ीमन घूमने लगे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ बारी तआला यह तमाम फ़रिश्ते मेरे पीछे क्यों घूमते हैं? तब इरशादे बारी हुआ तुम्हारी पुश्त में नूरे मुहम्मदी रखा हुआ है इसलिए यह फ़रिश्ते ताज़ीमन घूमते हैं। आपने अर्ज़ किया ऐ बारी तआला! क्या ही अच्छा होता कि वह नूर मेरी पुश्त की बजाए मेरी पेशानी में होता ताकि यह

तमाम फ़रिश्ते मेरे सामने घूमते। आपकी दर्ख़्वास्त कुबूल हुई और वह नूर आपकी पुश्त से पेशानी में मुन्तक़िल हो गया। तब आपने अर्ज़ किया या अल्लाह! मैं उस नूर की ज़्यारत करना चाहता हूं। हुक्म हुआ अपने दोनों हाथ के नाखुन मिला कर देखो उसमें मेरे महबूब का नूरे मुहम्मदी नज़र आएगा। आपने बहुक्मे इलाही दोनों नाख़ुनों को मिला कर देखा। जब आपको वह नूर नज़र आया तो आपने फ़ौरन दोनों अंगूठों को चूम लिया और कहा **"तसद्दक़ा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुर्रतुल–ऐने बिका या रसूलुल्लाह।"** इसलिए अह्ले सुन्नत का तरीक़ा रहा कि जब भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्मे मुबारक लिया जाता है वह दोनों अंगूठों को चूम कर आंखों से लगाते हैं।

हज़रत मुहम्मद मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से क़ब्ल के मोजिज़ात (इरहास)

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया में तशरीफ़ लाने से एक हज़ार साल क़ब्ल तायफ़ का बादशाह मुल्के तबअ् मदीना मुनव्वरा पर जिस का पुराना नाम यसरिब था, चढ़ाई करने निकला। उसे रास्ते में एक यहूदी राहिब मिला। उसने बताया कि वह यसरिब पर हमला न करे क्योंकि यसरिब शहर में नबी आख़िरुज़्ज़मां जिनका इस्मे मुबारक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होगा मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा में हिजरत फ़रमा कर यही सुकूनत पज़ीर होगा और यहीं पर आपका रौज़–ए–मुबारक होगा। तब मुल्के तबअ् ने अपना इरादा तर्क करके उस मक़ाम का जहां रौज़–ए–मुबारक है तवाफ़ किया और मदीना मुनव्वरा में आलीशान महल्लात तामीर किए और अपने नायब को मुक़र्रर करके एक लिफ़ाफ़ा बन्द करके सन्दूक़ में रख कर मुक़फ़्फ़ल किया और अपने अह्ले ख़ाना को दे कर वसीयत की कि यह सन्दूक़ नस्ल दर नस्ल होता हुआ पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मा तक पहुंचे। यही सन्दूक़ हज़रत अय्यूब अन्सारी रज़ि अल्लाहु अन्हु तक पहुंचा जिनके मकान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा में सबसे पहले क़याम फ़रमाया था। उस लिफ़ाफ़े में मुल्के तबअ् ने अपने इस्लाम कुबूल करने, अपनी बख़्शिश की और जन्नत में साथ रहने की गुज़ारिश की।

मोजिज़ा : हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया में तशरीफ़ आवरी से पचपन दिन क़ब्ल यमन का बादशाह अबरहा ख़ान–ए–काबा को ढाने की ग़रज़ से फ़ील (हाथियों) की फ़ौज के साथ आया। लेकिन अल्लाह तआला को कैसे गवारा होता कि उसका घर बरबाद हो उसने अपनी क़ुदरत से एक क़िस्म के परिन्दे अबाबील नाज़िल किए। जिनके मुंह में छोटी–छोटी कंकरियां थीं। मगर उनका वज़न मनों था उन्होंने यह कंकरियां हाथियों पर बरसाना शुरू कीं। जिस से हाथियों में भगदड़ मच गई वह एक दूसरे को रौंदते हुए पीछे भाग खड़े हुए। इस वाक़या का ज़िक्र सूर: फ़ील में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत के वक़्त कई मोजिज़ात हुए हैं जिसे "इरहास" कहा जाता है। जैसे चौपायों को कुव्वते गोयाई अता हुई ख़ुसूसन क़ुरैश के जानवरों ने एक दूसरे को मुबारकबाद दी। मश्रिक़ वाले जानवरों ने मग़्रिब के और मग़्रिब वाले जानवरों ने मश्रिक़ के जानवरों को ख़ुशख़बरी का पैग़ाम पहुंचाया। फ़ारस (ईरान) में मजूसियों का हज़ार साल से जलता आतिश कदह बुझ गया। किसरा महल के चौदह कंगूरे गिर गये। हमदान और रक़्म के दर्मियान का बहर अचाक ख़ुश्क हो गया। ख़ान–ए–काबा में रखे तीन सौ साठ बुत मुंह के बल गिर पड़े और शैतान का मुंह काला हो गया। आपके जिस्म से रौशनी निकल कर बसरा के महल तक पहुंची।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुनिया में तशरीफ़ आवरी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुनिया में तशरीफ़ लाए उस वक़्त के तअल्लुक़ आपकी वालिदा मोहतरमा हज़रत आमिना फ़रमाती हैं कि जिस वक़्त मेरा नूरे नज़र पैदा हुआ मुझे दर्द का बिल्कुल एहसास नहीं हुआ। जिस तरह आम औरतों को होता है। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए अचानक मकान में रौशनी फैल गई और चार ख़्वातीन आईं उन्होंने अपना नाम हव्वा, मरयम, सारा और आसिया बताया उन्होंने ख़ुद बच्चे को नहलाया। हुल्ला बहिश्ती पहनाया। आपके दादा अब्दुल–मुत्तलिब को पोते की विलादत की ख़बर हुई तो उस वक़्त आप काबा का तवाफ़ कर

रहे थे। वह ख़ुदा का शुक्र अदा करके घर आए। पोते को गोद में लेकर "मुहम्मद" नाम रखा। अरब में यह नया नाम था। अल्लाह तआला ने अर्श पर आपका नाम "अहमद" रखा। आपकी विलादत से आठ माह कब्ल आपके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल हो चुका था।

वालिद का इंतिक़ाल :

आपके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह को आपके दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम की तरफ़ भेजा। लौटते वक़्त उनको बुख़ार का आरेज़ा लाहिक़ हुआ। आप अपने ननिहाल बनू अदी बिन नज्जार के यहां दारे नाबेआ में क़याम पज़ीर हुए और वहीं पर आपका इंतिक़ाल हुआ। उस वक़्त आपकी उम्र पचीस २५ साल थी। जब आपका इंतिक़ाल हुआ फरिश्ते ग़मगीन हो कर बारगाहे इलाही में अर्ज़ करने लगे: "या इलाही तेरा नबी दुनिया में आने से क़ब्ल ही यतीम हो गया।" अल्लाह ने फरमाया: "मैं ख़ुद उसका हामी व मुहाफ़िज़ हूं।"

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत मक्का मुकर्रमा के मुहल्ला अज्क़ाक़ में दारे यूसुफ़ में हुई। हज़रत अब्दुल्लाह के तरके में एक लौंडी उम्मे ऐमन कुछ ऊंट और कुछ बकरियां जो हज़रत अब्दुल्लाह को अपनी ननिहाल से वरसे में मिली थीं वह आपको तरके में मिलें।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत की ख़बर सुन कर आपके हक़ीक़ी चचा अबू लहब ने अपनी दो उंगलियों के इशारे से अपनी लौंडी सुवैबा को आज़ाद किया। जिसकी बिना पर क़ब्र में दो उंगलियों से हर दोशंबा को अबू लहब को दूध पिलाया जाता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सिलसिल–ए–नसब :

नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से नस्ल दर नस्ल हज़रत इब्राहीम से होता हुआ अब्द मनाफ़ तक पहुंचा। अब्दे मनाफ़ के दो जुड़वां लड़के हुए थे, जिन्हें तल्वार से जुदा किया गया। उस वक़्त फ़रिश्तों ने कहा अब इनके ख़ानदान में हमेशा तल्वारें चलती रहेंगी। अब्दे मनाफ़ ने एक बेटे का उमैया और दूसरे का नाम अमर (हाशिम) रखा।

सिलसिल–ए–बनू हाशमी

हाशिम के बेटे अब्दुल–मुत्तलिब
अब्दुल–मुत्तलिब के बेटे अब्दुल्लाह
अब्दुल्लाह के बेटे हज़रत मुहम्मद
हज़रत मुहम्मद की बेटी फातिमतुज़्ज़हरा

फातिमा के बेटे इमाम हसन इमाम हुसैन
हज़रत हुसैन के बेटे ज़ैनुल–आबेदीन
हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन से आपका
सिलसिल–ए–नसब क़्यामत तक सादात
के नाम से चलता रहेगा

सिलसिल–ए–बनू उमैया

बनू उमैया का बेटा अबू सुफियान
अबू सुफियान का बेटा अमीर मुआविया
अमीर मुआविया का बेटा यज़ीद पलीद
यहां बनू उमैया का सिलसिल–ए–
खानदान क़तअ हो गया

दोनों ख़ानदान में मअ्रका आराई :

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ	अबू सुफ़ियान
हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के साथ	अमीर मुआविया
हज़रत इमाम हुसैन के साथ	यज़ीद पलीद

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिलसिल–ए–नसब के अस्माए गिरामी

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद अब्दुल्लाह बिन अब्दुल–मुत्तलिब, वालिदा माजिदा हज़रत आमिना बिन्ते वहब बिन अमर (हाशिम), दादा अब्दुल–मुत्तलिब बिन हाशिम, दादी फातिमा बिन्ते अमर (हाशिम), नाना वहब बिन अब्दुल–मनाफ़, नानी बर्रह बिन्ते अब्दुल–उज़्ज़ा।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घराना :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पर दादा अमर (हाशिम) बड़ी शान व शौकत के मालिक थे। निहायत बहादुर, दिलेर, सख़ी और मेहमान नवाज़ थे। आप मुल्क शाम से बासी रोटियां मंगवा कर उसका चूरा करके गोश्त के शोर्बे में भिगो कर सुरीद बना कर हाजियों को खिलाते थे इसलिए आपका लक़ब हाशिम यानी रोटियों का चूरा करने वाला हुआ। आपकी शादी मदीने में ख़ज़रज क़बीले के मुअज़्ज़ज़ ख़ानदान की लड़की सलमा से हुई। जिन से अब्दुल–मुत्तलिब पैदा हुए। आपने आठ साल तक अपनी ननिहाल में परवरिश पाई। फिर दादा के घर मक्का आ गये। आपके

बारह लड़के थे। सबसे बड़े अब्दुल्लाह थे। अब्दुल-मुत्तलिब ने मिन्नत मानी थी कि अगर मेरी हयात में बारह बेटे सलामत और जवान रहे तो एक बेटे की कुरबानी दूंगा। जब बेटे जवान हुए तो कुरबानी का कुरआ हज़रत अब्दुल्लाह के नाम निकला उनके बदले आपने सौ ऊंट कुरबान किए। दोबारा कुरआ फाल हज़रत अब्दुल्लाह ही के नाम निकला आप ने फिर सौ ऊंट कुरबान किए। इस तरह आपने दस मरतबा सौ सौ ऊंट कुरबान किए। तब आपकी कुरबानी कुबूल हुई।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मरतबा फरमाया कि मैं दो ज़बीहा का बेटा हूं एक हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और दूसरे हज़रत अब्दुल्लाह का।

कबील-ए-कुरैश :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ानदान में एक हस्ती थी। जिनका नाम फहर बिन मालिक था। जिनका लक़ब कुरैश था।

कुरैश एक ऐसी मछली का नाम है जो समुन्द्र की छोटी-छोटी मछलियों को खा जाती है और तमाम जानवरों पर ग़ालिब आती है। फहर बिन मालिक भी अपनी बहादुरी और शुजाअत की वजह से तमाम अरब में मशहूर थे इसलिए आपका लक़ब कुरैश मशहूर हुआ।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बचपन :

आपकी विलादत के बाद सात दिन हज़रत आमिना ने दूध पिलाया। फिर सात दिन सुवैबा ने, जो अबू लहब की बांदी थी, दूध पिलाया उसके बाद दाई हलीमा को दूध पिलाने की सआदत नसीब हुई। दो साल आपने दाई हलीमा की आग़ोशे रहमत में परवरिश पाई। और उन्हीं का दूध पिया। दो साल बाद जब दाई हलीमा आपको लेकर मक्का आईं, तो वहां वबाई बीमारी फैली देख कर वापस आपको लेकर लौट गई।

शक्के सद्र :

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र चार साल थी तो आप अपने रज़ाई भाई ज़मीरा के साथ बकरियां चराने गये थे। वहां ज़मीरा ने देखा कि तीन सफेद पोश हस्तियां आईं। उन्होंने आपको ज़मीन पर लिटाया आपका सीना चाक किया। उसमें से कुछ निकाला। उसकी जगह दूसरी चीज़ रख कर सीन-ए-मुबारक को सी कर ग़ायब हो गये।

आपके रज़ाई भाई दौड़े हुए गये और मां को सारा माजरा सुनाया। दाई

हलीमा के शौहर ने कहा उस बच्चे को फौरन उसके घर छोड़ आओ। शायद उस पर जिन्न भूत का साया हो गया हो। दाई हलीमा आपको लेकर हज़रत आमिना के पास आईं और तमाम वाक़या कह सुनाया। हज़रत आमिना ने कहा मेरे नूरे नज़र को किसी क़िस्म का असर हो नहीं सकता फिर आपने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैदाइश के वाक़ेआत बतलाए और मुत्मइन कर दिया।

वालिदा माजिदा का इंतिक़ाल :

आप जब आठ साल के हुए तब हज़रत आमिना आपको लेकर अपनी कनीज़ उम्मे ऐमन के हमराह अपने मैके के रिश्तेदारों से मिलने मदीने की क़रीबी बस्ती गईं। और अपने शौहर के क़ब्र की ज़्यारत भी की। वापसी में रास्ते में अबवा के मक़ाम पर आपका इंतिक़ाल हुआ। आपका मदफन वहीं है। उम्मे ऐमन ने आकर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दादा अब्दुल–मुत्तलिब के हवाले कर दिया।

मुल्के शाम का पहला तिजारती सफर :

आप बारह साल के हुए तो दादा का इंतिक़ाल हो गया। आपकी ज़िम्मेदारी चचा अबू तालिब पर आई। बारह साल की उम्र में आपने चचा अबू तालिब और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ पहला तिजारती सफर किया।

बुहैरा राहिब के निशानदेही :

इस सफर के दौरान बसरा के मक़ाम पर बुहैरा नामी राहिब से मुलाक़ात हुई। जो उस ज़माने में तौरेत और इंजील, ज़बूर का बड़ा आलिम माना जाता था। उस ने अबू तालिब से कहा "मैं आपके भतीजे में वह तमाम औसाफ़ देख रहा हूं जिसका ज़िक्र तौरेत और इंजील में है। आप फौरन यहां से उन्हें ले जाओ। अगर यहूदियों को पता चलेगा तो वह ज़रर पहुंचाएंगे।" हज़रत अबू तालिब वहीं से लौट गये।

मुल्के शाम का सफर :

आपकी उम्र पचीस साल हुई तो आपकी अमानतदारी और शराफत का शोहरा दूर–दूर तक फैल चुका था। उस वक़्त मक्का शरीफ में हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा निहायत मालदार बेवह ख़ातून थीं। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दयानतदारी का चरचा सुना तो आपको अपनी तिजारत की गरज़ से मुल्के शाम भेजने की ख्वाहिश ज़ाहिर की वह आपने मन्ज़ूर कर ली।

हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा ने आपको बहुत सा माल दे कर अपने गुलाम मैसरा के साथ रवाना किया। सफर के दौरान आप आराम की गरज़ से एक दरख़्त के नीचे लेट गये। एक राहिब सतूरा ने आपको देखा और मैसरा से पूछा कि यह शख़्स कौन है? मैसरह ने आपकी तारीफ़ की। मैसरा ने कहा मैं देख रहा हूं कि उस दरख़्त के नीचे सिवाए पैग़म्बर के कोई नहीं लेट सकता और उन पर अब्र भी साया किए हुए हैं वह तमाम निशानियां जो मैंने तौरेत में पढ़ी हैं वह यही है। काश मैं उनके ऐलाने नुबुव्वत के वक़्त तक ज़िन्दा रहूं और उनकी मदद कर सकूं। जब वह अपनी नुबुव्वत का ऐलान करें तो तुम उनकी मदद करना और साथ भी न छोड़ना।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निकाह :

जब आप तमाम माल फरोख़्त करके काफी नफा कमा कर लाए तब मैसरह ने हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा को राहिब की बातें बताइं। आपकी ईमानदारी और अब्र का साया करना भी बताया। हज़रत ख़दीजा ने आपको निकाह का पैग़ाम भेजा। आपने अपने चचा हज़रत अबू तालिब की रज़ामन्दी से निकाह फरमाया। हज़रत ख़दीजा निहायत नेक नफीस और पाक दामन थीं। निकाह के वक़्त आपकी उम्र चालीस साल और हुज़ूरे अकरम की उम्र पचीस साल थी।

हज़रत ख़दीजा का पहला निकाह अबू हाला बिन ज़राह तमीमी से हुआ था। जिन से दो लड़के हिन्द बिन अबू हाला और हाला बिन अबू हाला हुए। अबू हाला के इंतिक़ाल के बाद आपका दूसरा निकाह अतीक़ बिन आबिद मख़्दूमी से हुआ। उन से दो बच्चे, एक लड़का अब्दुल्लाह और लड़की हिन्दा हुई। उनका भी इंतिक़ाल हो गया। मक्का के बड़े–बड़े सरदार आप से निकाह के ख़्वाहिशमन्द थे। लेकिन आपने किसी को क़ुबूल नहीं किया लेकिन हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास खुद निकाह का पैग़ाम भेजा। हज़रत अबू तालिब ने निकाह पढ़ाया। अपनी जानिब से बीस ऊंट महर (चार सौ मिस्क़ाल) मुक़र्रर किया।

उसके बाद हज़रत ख़दीजा के चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफल ने भी ख़ुतबा दिया। हज़रत ख़दीजा को उम्मुल–मुमिनीन का शर्फ़ हासिल हुआ। सिवाए एक फ़रज़न्द हज़रत इब्राहीम के तमाम औलाद हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा के बतन से हुईं।

हजर–ए–अस्वद का मस्अला (उम्र शरीफ़ ३५ साल) :

जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उम्र पचीस साल थी तब मक्का मुकर्रमा में इतनी बारिश हुई कि सैलाब आ गया। चूंकि ख़ान–ए–काबा मक्का शहर के नशीब में है इसलिए सैलाब के बहाव ने काबा की दीवार हिला कर रख दी जिस से हजर–ए–अस्वद काबा से दूर जा गिरा। जब बारिश थम गई और सैलाब ख़त्म हुआ तो लोगों ने बहस शुरू कर दी। होते–होते ख़ून ख़राबे तक बात पहुंच गई। हर क़बीले का सरदार चाहता था कि हजर–ए–अस्वद को उठा कर उसकी जगह पर नसब करने का हक़ हमें मिले। चन्द मुअज़्ज़ज़ लोगों ने आपस में सुलह मश्वरा करके तय किया कि कल हरम शरीफ़ में जो शख़्स सबसे पहले दाख़िल होगा और वह जो भी मश्वरा देगा उस पर अमल किया जाएगा। दूसरे दिन लोगों ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा तो बेसाख़्ता पुकार उठे लो वह अमीन आ गया, अब हमें इंसाफ मिलेगा। आपने तज्वीज़ रखी कि एक चादर लाओ। उस पर हजर–ए–अस्वद रख कर तमाम क़बीले का एक–एक सरदार चादर को पकड़े और हजर–ए–अस्वद को उसकी जगह पर नसब करे। इस तरह आपकी तज्वीज़ से बड़ा ख़तरा टल गया।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुन्नियत :

आपकी उम्र की छब्बीसवें साल ५९५ ई० में हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा के बतन से हज़रत क़ासिम की विलादत हुई। मगर कम सिनी ही में इंतिक़ाल हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हीं के नाम पर अपनी कुन्नियत अबुल–क़ासिम अख़्तियार फरमाई।

आपकी उम्र के अट्ठाईसवें साल हज़रत सैयदा ज़ीनबे बिन्ते रसूल की विलादत हुई। उम्र के तीसवें साल तैयब (ताहिर) की विलादत हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ३३वें साल में हज़रत इब्राहीम की विलादत हुई। उम्र के चौंतीसवें साल हज़रत उम्मे कुल्सूम और पैंतीस साल की उम्र में हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा की विलादत हुई।

बशारते नुबुव्वत (उम्र ४० साल) ६०६ ई० में पहली वही :

जब आपकी मुक़द्दस ज़िन्दगी का चालीसवां साल शुरू हुआ तो आपकी ज़ाते अक़्दस में नया इंक़लाब पैदा हो गया। आप ख़ल्वत पसन्द हो गये। मक्का से तीन मील दूर ग़ारे हिरा पहाड़ पर ग़ौर व फ़िक्र में मशग़ूल हो जाते। कई दिनों का खाना पानी अपने साथ ले जाते और कभी कभार

हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा भी खाना पानी ले जाती थीं।

नौ (९) रबीउल–अव्वल बरोज़ दोशंबा को अचानक हज़रत जिब्रीले अमीन वारिद हुए और आपसे कहा पढ़ो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "मैं पढ़ने वाला नहीं हूं।" जिब्रीले अमीन ने आपसे दोबारा कहा और अपने सीने से लगा लिया और कहा **"इक़रा बिस्मे रब्बिकल्लज़ी ख़लक़"** जो सूरः अलक़ में नाज़िल हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर तशरीफ लाए और हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा से कहा "मुझे कम्बल ओढ़ाओ। मेरी जान का ख़तरा है।" तब हज़रत ख़दीजा ने फरमाया "हरगिज़ नहीं। अल्लाह की क़सम आपको कभी कोई रुस्वा नहीं करेगा क्योंकि आप इंसाफ़ पसन्द और दयानतदार हैं।"

वरक़ा बिन नौफल की पेशीनगोई :

इसके बाद हज़रत ख़दीजा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफल के पास ले गईं। वरक़ा ख़ुद बुतपरस्ती से बेज़ार थे। उन्होंने तौरेत और इंजील का मुताला किया हुआ था और अरबी में उसका तरजमा भी किया था। हज़रत ख़दीजा ने तमाम वाक़या गोश गुज़ार किया। वरक़ा ने कहा यह तो वही फ़रिश्ता है, जिसे अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास भेजा था और हज़रत मरयम के मुंह में फूंक मारी थी। मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी क़ौम मक्का से बाहर निकालेगी। यह सुन कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क्या मुझे मक्का वाले मक्के से निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा "हां! जो भी आपकी तरह पैग़म्बर आए लोग उनके दुश्मन हो गये।"

दूसरी वही :

तक़रीबन तीन माह तक कोई वही नाज़िल नहीं हुई। एक रोज़ आप घर से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आवाज़ आई "या मुहम्मद" (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपने नज़र उठा कर देखा वही फरिश्ता (हज़रत जिब्रील) है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फौरन घर गये। वहां पर सूरः मुदस्सिर दूसरी वही नाज़िल हुई। अल्लाह तआला का फरमान उतरा "ऐ कम्बल ओढ़ने वाले! उठो लोगों को डर सुनाओ दीने इस्लाम की दावत दो अपने रब की बड़ाई बयान करो कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो।" इस फरमान के नाज़िल होते ही आप तबलीग़े इस्लाम के लिए कमरबस्ता

हो गये। उस वक़्त हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और ज़ैद बिन हारसा मुशर्रफ़ बइस्लाम हुए।

तबलीगे़ इस्लाम का पहला दौर (उम्र शरीफ़ ४२ साल ६१२ ई०) :

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन साल खुफ़िया तौर पर, निहायत राज़दारी से इस्लाम की तबलीग़ की। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा और ज़ैद बिन हारसा की कोशिशों से दीगर अश्ख़ास दाइरा इस्लाम में दाख़िल हुए। जिनमें ख़ास तौर पर हज़रत उस्मान ग़नी, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत सअद बिन वक़ास, हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह वग़ैरह थे ख़्वातीन में हज़रत फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब, हज़रत उमर फारूक़ की बहन फ़ातिमा और बहनोई, हुज़ूर पाक की हक़ीक़ी चची हज़रत उम्मे फ़ज़्ल हज़रत अब्बास की बहन और अस्मा बिन्ते अबू बकर वग़ैरह मुसलमान हुए। उन्हें साबेक़ीन अव्वलीन कहा जाता है।

तबलीगे़ इस्लाम का दूसरा दौर :

तीन साल ख़ुफ़िया तौर पर इस्लाम की तबलीग़ करते रहे और इस अरसे में मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत बन गई उसके बाद अल्लाह तआला ने सूरः शुअ़रा के ज़रिए दूसरी वही नाज़िल की। उस में हुक्म हुआ। ऐ महबूब! अपने क़रीबी ख़ानदान वालों को खुदा से डराइए। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोहे सफा की चोटी पर चढ़ कर "या मअ़शरे क़ुरैश" कह कर पुकारा आपकी आवाज़ दूर–दूर तक पहुंच गई और तमाम क़ुरैश जमा हो गये।

उस वक़्त क़ुरैश में रिवाज था कि अगर किसी क़बीले को जमा करना होता तो वह अपने कपड़े उतार कर हवा में लहरा कर लोगों को आगाह करता था। मगर हमारे आक़ाए नामदार ने ऐसा नहीं किया। सिर्फ़ एक आवाज़ लगाई और जूक़ दर जूक़ दौड़े चले आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से फरमाया कि "अगर मैं कहूं कि इस पहाड़ के पीछे दुश्मनों का लश्कर है और हमला करने वाला है तो क्या तुम मुझ पर यक़ीन कर लोगे?"

सबने एक ज़बान हो कर कहा "बेशक! हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पूरा भरोसा है। क्योंकि हमने आपको अमीन पाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तो सुनो मैं कहता हूं। तुम अज़ाबे

इलाही से डरो अगर तुम अल्लाह तआला पर ईमान न लाओगे तो अज़ाबे इलाही नाज़िल होगा। यह सुनकर तमाम कुरैश जिनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चाचा अबू लहब भी था, सख़्त नाराज़ हो कर भला बुरा कहता हुआ चला गया उसके पीछे तमाम कुफ़्फ़ार चले गये।

तबलीगे़ इस्लाम का तीसरा दौर :

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऐलाने नुबुव्वत के बाद ६१४ ई० और ४३ साल की उम्र शरीफ़ में और एक आयत नाज़िल हुई कि **"फ़स्दअ् बेमा तूमरहू"** यानी अब आपको जो हुक्म दिया गया उसे पूरा कीजिए। चुनांचे अब आपने खुल्लम खुल्ला दीने इस्लाम की तबलीग शुरू की। जिस की वजह से अहले मक्का आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जान के दुशमन हो गये और आप पर तरह–तरह के ज़ुल्म ढाने लगे।

एक मरतबा आप हरमे काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक काफ़िर उक़्बा बिन अबी मुईस ने गले में फन्दा डाल कर इस क़द्र खींचा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दम घुटने लगा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु दौड़ते हुए आए और आपको छुड़ाया। इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हरम शरीफ़ में इबादत में मश्ग़ूल थे कि अबू जहल ने आपके जिस्मे अतहर पर ऊंट की ओझड़ी डाल दी। हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हु जो अभी कमिसन थीं। दौड़ी आईं और ओझड़ी को निकाल फेंका इसी तरह मुसलमान होने वालों पर भी कई मज़ालिम ढाए गये जिन में ख़ास तौर पर हज़रत अरक़म बिन अरक़म, हज़रत खुबाब, हज़रत बिलाल, हज़रत आमिर बिन फहीरा, वग़ैरह इसी तरह सहाबियात में खुसूसन हज़रत सुमैया, हज़रत लुबनिया जो हज़रत उम्र की बांदी थीं। हज़रत ज़नीरह, हज़रत उम्मे अबीस। हज़रत सुमैया को अबू जहल ने ऐसा नेज़ा मारा कि आप शहीद हो गईं।

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र चव्वालीस साल हुई और मुसलमानों पर कुफ़्फ़ारों का ज़ुल्म बेइंतिहा बढ़ गया तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को हबशा की तरफ़ हिजरत करने का ,हुक्म दिया। जिनमें सबसे पहला जोड़ा हज़रत उस्मान और आपकी ज़ौजा रुक़ैया बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम था जो अल्लाह की राह में निकल पड़ा। उनके वाद और ग्यारह मर्द और चार ख़्वातीन ने हिजरत की सआदत हासिल की जिन में हज़रत अब्बास थे। जो

आपके हक़ीक़ी चचा और रज़ाई भाई भी थे।

कुरैश का वफ़्द दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में

मुसलमानों की बढ़ती तादाद देख कर तमाम कुफ़्फ़ारे कुरैश ग़ुस्से में आ गये लेकिन उन में चन्द सुलह पसन्द भी थे। उन्होंने सोचा कि बात चीत के ज़रिए मुआमला तय किया जाए। चुनांचे उतबा बिन रबीआ को मुशीर बना कर भेजा गया। उस ने दरबारे रिसालत में पहुंच कर दरयाफ़्त किया कि आख़िर आपका मक़्सद क्या है? क्या आपको सरदारी चाहिए या फिर दौलत, इज़्ज़त या किसी बड़े घराने में शादी के ख़्वाहिश मन्द हैं? उतबा की तक़रीर सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरआन की चन्द आयतें पढ़ कर सुनाई जिसे सुन कर उतबा बेहद मुतअस्सिर हुआ और कहा बस अब उस से आगे सुनने की मुझ में ताब नहीं। उतबा वापस हुआ। मगर उसकी दुनिया ही बदल चुकी थी? उसने आकर लोगों से कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कहता है और जो कलाम पेश करता है वह न तो कोई जादूई कलाम है और न शाइरी। तुम उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो। लेकिन कुफ़्फ़ारे कुरैश पर कोई असर ही नहीं हुआ।

अह्ले कुरैश का दूसरा वफ़्द अबू तालिब के पास :

कुफ़्फ़ारे कुरैश के और कुछ समझदार और सुलह पसन्द लोग थे। आपस में मश्वरा करके बड़े–बड़े रूउसा, उमरा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अबू तालिब के पास आए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिकायत की कि आपका भतीजा हमारे माबूद की तौहीन करता है और बुतपरस्ती से रोकता है। उसे आप समझाएं या आप हमारे दर्मियान में न आएं ताकि दोनों तरफ़ में से किसी एक तरफ़ फ़ैसला हो जाए। चुनांचे अबू तालिब ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को समझाया। "मेरे प्यारे भतीजे! अपने बूढ़े चचा पर रहम कर। तमाम अह्ले कुरैश मेरा एहतराम करते हैं। मगर अब उनके तेवर बदल गये हैं वह तुम पर तल्वार भी उठा सकते हैं। मेरी मानो तो कुछ दिन के लिए दावते इस्लाम को मौकूफ़ रखो।" हज़रत अबू तालिब बातिनी तौर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे इसलिए उन्होंने नर्मी से समझाया। मगर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा "चचा जान! अल्लाह की क़सम! अगर कुरैश मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चांद भी रख दें तो भी मैं इस फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा या

तो ख़ुदा इस काम को ख़ुद पूरा करेगा या मैं ख़ुद दीन की ख़ातिर अपनी जान दे दूंगा।" यह अल्फ़ाज़ सुन कर अबू तालिब बेहद मुतअस्सिर हुए और कहा जाने अम! मैं तुम्हारे साथ हूं जब तक मैं ज़िन्दा हूं तुम्हें कोई भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता।

शुअ़्बे बनी हाशिम में महसूर :

उमर शरीफ़ के ४७ वें साल ६१५ ई० में कुफ़्फ़ारे मक्का ने देखा कि मुसलमानों की तादाद बढ़ती ही जा रही है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कुछ असर नहीं हो रहा है उन लोगों ने मिल कर तय किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके ख़ानदान का बाईकाट किया जाए और उन्हें किसी तारीक जगह पर महसूर किया जाए और उनका दाना पानी बन्द कर दिया जाए और मुआहेदा लिखा। चुनांचे तीन साल तक शुअ़्बे अबू तालिब में आपको और आपके साथियों को अबू तालिब के साथ महसूर किया गया। मुआहेदा यह लिखा गया कि (१) कोई बनू हाशिम के यहां शादी न करे। (२) उन लोगों से किसी क़िस्म का लेन देन न करे। (३) किसी क़िस्म का मेल जोल न रखे। कोई खाने पीने की अशिया न ले जाए। इस मुआहदे पर तमाम सरदाराने कुरैश ने दस्तख़त करके काबा के अन्दर आवेज़ां कर दिया।

अबू तालिब मज्बूरन भतीजे की ख़ातिर तमाम ख़ानदान के साथ तीन साल शुअ़्बे (घाई) में महसूर रहे। तीन साल बाद अबू तालिब ने लोगों से कहा मेरा भतीजा कह रहा है उस मुआहेदे को दीमक चाट गई। जब देखा गया तो पूरे मुआहेदे को दीमक चाट गई थी सिर्फ़ अल्लाह तआला का नाम छोड़ दिया था। तीन साल बाद आप निकले।

शक़्क़ुल–क़मर का वाक़या :

जब आपकी उम्र अड़तालीस साल हुई ६१६ ई० में तब अबू जहल और कुफ़्फ़ारों ने कहा अगर तुम सच्चे नबी हो तो चांद के दो टुकड़े करके दिखाओ। तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चांद की तरफ़ उंगली का इशारा किया। फ़ौरन चांद के दो टुकड़े हो गये। कहा जाता है कि चांद के दो टुकड़े होते हुए हिन्दुस्तान के हिन्दू बादशाह ने भी देखा। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाया और बहुत से तोहफ़ा तहाइफ़ भी आपकी ख़िदमत में भेजे।

तायफ का सफर ६१८ ई० उमर शरीफ ५० साल :

जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का वालों से मायूसी हुई तो आपने आस पास की बस्तियों का रुख़ किया। और तायफ़ का सफर शुरू किया। इस सफर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ आपके गुलाम ज़ैद बिन हारसा भी थे। चूंकि तायफ़ में बड़े–बड़े रुउसा उमरा थे इसलिए वहां भी हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बदसुलूकी की। आप पर पत्थर बरसाए गये। शरीर बच्चों को आपके पीछे लगवाया गया। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिस्मे अतहर लहूलहान हो गया। ज़ैद बिन हारसा ने कहा आप उनके लिए बद्दुआ करें। आपने कहा मैं दुनिया में रहमत बन कर आया हूं न कि ज़हमत। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने थक कर क़रीब के बाग़ में पनाह ली। यह बाग़ मक्का के मशहूर काफिर उतबा बिन रबीअ़ का था। आपकी हालत देख कर उसे रहम आ गया उसने आपको बाग़ में ठहरने की इजाज़त दी और अपने गुलाम के हाथों अंगूर का ख़ोशा भेजवाया। आपने बिस्मिल्लाह पढ़ कर अंगूर मुंह में डाला तो गुलाम ने हैरत से कहा यहां तो कोई ऐसा कलिमा नहीं पढ़ता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नू पूछा तुम कहां के हो? कहा मैं नैनवा का रहने वाला हूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा वह शहर तो हज़रत यूनुस का शहर है और हज़रत यूनुस के हालात बताए। वह ग़ुलाम फौरन कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।

जिन्नों का मुसलमान होना :

तायफ़ से लौटते वक़्त आप मक़ामे नख़्ला में तशरीफ ले गये। वहां आप तहज्जुद की नमाज़ में कुरआने पाक की तिलावत फरमा रहे थे कि जिन्नों की एक जमाअत वहां से गुज़र रही थी। कुरआन पाक की तिलावत सुन कर रुक गई और तिलावत सुन कर ईमान ले आए सूरः जिन्न में इसी वाक़या का ज़िक्र है।

आमुल–हुज़्न (ग़म का साल) ६१९ ई० उम्र शरीफ़ ५१ साल :

शुअ़्बे अबू तालिब से बाहर आने के आठ माह बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब को मामूली आरेज़ा से इंतिक़ाल हो गया। आख़िरी वक़्त में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चचा से कहा अब तो आप कलिमा पढ़ लीजिए। मैं अल्लाह से आपकी बख़्शिश की

सिफारिश करूंगा। उस वक़्त वहां अबू जहल भी मौजूद था उसने कहा भाई जान क्या आप अपने दीन से फिर जाओगे? अबू तालिब ने कहा नहीं मैं अब्दुल–मुत्तलिब के दीन पर कायम हूं और आपकी रूह परवाज़ कर गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेहद रंज हुआ क्योंकि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने बेटों की तरह पाला था यहां तक कि तीन साल तक घाई में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ महसूर रहे। अभी चचा अबू तालिब के इंतिक़ाल को तीन ही दिन हुए थे आपके क़ल्बे मुबारक पर ज़ख़्म ताज़ा था कि आपकी ज़ौजा मुतह्हरा उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा भी रिहलत फरमा गईं। चूंकि उन दो हस्तियों का आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ा सहारा था। हर मुसीबत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया था। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस साल को आमुल–हुज़्न यानी ग़म का साल क़रार दिया।

वाक़्या मेअ्राज ६२० ई० उम्र शरीफ़ ५२ साल :

२७ रजबुल–मुरज्जब दोशंबा की शब आप अपनी चचाज़ाद बहन उम्मे हानी के मकान पर इस्तेराहत फरमा रहे थे कि अचानक जिब्रीले अमीन हाज़िरे ख़िदमत हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तल्वों का बोसा लेकर फरमाया "या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने आपको सलाम कहलवाया है और और अर्श पर याद फरमाया है और आपकी सवारी के लिए बुराक़ भेजा है। फिर आप बुराक़ पर सवार हो कर बैतुल–हराम पहुंचे। वहां से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल–मक़्दिस) में पहुंचे। वहां जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मक़ामे सख़रा के चबूतरे पर खड़े हो कर अज़ान दी और तमाम अंबियाए किराम तक़रीबन (एक लाख चौबीस हज़ार) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़्तदी बन कर आपकी इमामत में नमाज़ अदा की फिर नबीए करीम अल्लाह के दीदारे शौक़ में निकल पड़े।

पहले आसमान पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई दूसरे आसमान पर हज़रत इब्राहीम से मुलाक़ात हुई, ग़रज़ सभी आसमानों पर मुख़्तलिफ़ अंबिया से मुलाक़ातें होती रहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सातवें आसमान पर पहुंचे तो नअ्लैन उतारने लगे तो आवाज़ आई "आओ ऐ मेरे हबीब बेझिझक नअ्लैन पहने चले आओ।" फिर मुहिब्ब व हबीब में राज़ व नियाज़ की बातें हुईं। नूर से नूर का मिलन हुआ। हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिन और रात के लिए पचास वक़्त की नमाज़ का तोहफ़ा मिला। लौटते वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई उन्होंने पूछा "क्या तोहफ़ा मिला?" आपने बतलाया तो हज़रत मूसा ने कहा आपकी उम्मत कमज़ोर और नातवां है। इतने वक़्त की नमाज़ कैसे अदा करेगी? आप जाएं और कम कराएं। आप आए फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने तख़्फ़ीफ़ के लिए कहा। इस तरह आप नौ मरतबा दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुए। आख़िर कार पांच वक़्त की नमाज़ मुक़र्रर हुई। जब आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेअ्‌राज पर पहुंचे। सातों जन्नत, आठों दोज़ख़ का नज़्ज़ारा किया। लोगों को मुख़्तलिफ़ गुनाहों की सज़ा काटते देखा जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहिश्त के दरवाज़े पर पहुंचे तो देखा कि हूर की आंखों से ख़ून के आंसू बह रहे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबब पूछा। उसने बताया कि जब अल्लाह तआला दुनिया बनाते वक़्त उसका नक़्शा तैयार कर रहा था उसमें करबला का मक़ाम और उस मक़ाम पर होने वाले वाक़ेआत लौहे महफ़ूज़ में लिख रहा था कि किस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासों को जंग करके शहीद कर दिया जाएगा। तीन दिन के भूखे प्यासों पर कैसे-कैसे ज़ुल्म व सितम तोड़े जाएंगे। इस वजह से मेरे आंसू जारी हो गये। अब करोड़ों साल रोते गुज़र गये आंसू तो ख़त्म हो गये और अब उसकी जगह ख़ून बह रहा है जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतना लम्बा सफर तय करके लौटे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर गर्म था और दरवाज़े की ज़ंजीर भी हिल रही थी।

वाक़्या-ए- हिजरत १ हिजरी :

६२१ ई० से ६२२ ई० यानी दो साल में बहुत से क़ाफिले मक्का से मदीना मुनव्वरा हिजरत कर चुके थे। जब अह्ले मक्का ने देखा कि दूर दराज़ के इलाक़ों में इस्लाम तेज़ी से फैल रहा है इसलिए अह्ले मक्का आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जान के दुश्मन हो गये उन्हें ख़तरा हो गया कि कहीं हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मदीना जाकर वहां से फ़ौज लाकर मक्का पर हमला न कर दें। इसलिए मक्का के दारुन्नदवा में एक कॉंफ्रेंस बुलाई गई। जिसमें मक्का के बड़े-बड़े उमरा, रुउसा, दानिशवर लोग जिनमें अबू सुफ़ियान, अबू जहल, उतबा बिन मुतइम, अबुल-जज़ी, उमैया बिन ख़लफ़ वग़ैरह शामिल थे। उसमें शैतान भी

इंसानी रूप में शामिल हुआ। सबने अपनी–अपनी राय पेश की आख़िर में शैतान ने सलाह दी कि हर क़बीले की यह तजवीज़ पसन्द आई और उसके मुताबिक़ तमाम क़बीले के एक–एक बहादुर शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मकान का मुहासरा किया। चूंकि अल्लाह तआला ने वही के ज़रिए इस वाक़या की इत्तिला पहले दे दी थी, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का से मदीना हिजरत का हुक्म दिया। इसलिए आपने अपनी जगह पर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू को लिटा दिया और लोगों की अमानत आपके ज़िम्मे देकर वहां से निकल पड़े। उस वक़्त तमाम कुफ़्फ़ार पर नींद का ऐसा ग़लबा हुआ कि वह वहीं सो गये। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां से निकल कर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के मकान पर तशरीफ़ ले गये। इधर वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके इंतिज़ार में कई रातों से जग रहे थे आहट पाते ही दरवाज़ा खोल दिया। चूंकि हुज़ूर पाक ने आप से पहले ही कह रखा था कि हमें हिजरत करना होगी। इसलिए आप तब ही से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिज़ार कर रहे थे। आख़िर वह वक़्त आ गया और बेइज़्निल्लाह मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा का सफर शुरू किया।

६२२ ई० यकुम रबीउल–अव्वल बरोज़ जुमेरात सफर का आग़ाज़ किया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अव्वल ही से दो ऊंटनियां तैयार रखी थी। उधर जब शैतान ने देखा कि तमाम मुहासिरीन ख़्वाबे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं तो उस ने सबके मुंह पर ख़ाक डाल कर जगाया और बताया कि हुज़ूरे पाक जा चुके हैं और उनकी जगह हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू सोए हैं। आपसे हुज़ूर पाक के मुतअल्लिक़ पूछा तो हज़रत अली ने ला इल्मी ज़ाहिर की। काफिर आपको बुरा भला कहते चले गये और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के घर पहुंच कर तलाश किया। वहां न मिलने पर तेज़ घोड़ सवार सुराक़ा को तआक़ुब के लिए रवाना किया। जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने देखा कि दुश्मन क़रीब आ गये हैं तो घबरा कर कहा "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुश्मन हमारे क़रीब आ गये है।" आपने फरमाया "घबराओ मत! अल्लाह तआला हमारे साथ है। जब सुराक़ा का घोड़ा क़रीब आ गया तो उसके घोड़े ने ठोकर खाई और गिर पड़ा। दोबारा सवार हो कर चलने की कोशिश की। घोड़े के पैर ज़मीन धंस गये। सुराक़ा घबरा कर पुकार उठा।

अल-अमान! अल-अमान। तब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जा तुझे मुआफ़ किया। मगर ऐ सुराक़ा उस वक़्त तेरा क्या होगा जब मुल्क फ़ारस के बादशाह किसरा के कंगन तुझे पहनाए जाएंगे।

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीन गोई सच साबित हुई। हज़रत उमर फ़ारूके आज़म के दौर में फ़ारस फ़तह हुआ तो हज़रत उमर फ़ारूक़ ने उस वक़्त उन्हें कंगन दिए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थोड़ी दूर निकले तो मक़ामे हरूज़ह पर आकर रुक गये और हसरत से काबा की तरफ़ देख कर कहा। "ऐ शहर मक्का! तू तमाम दुनिया में मुझे सबसे अज़ीज़ है। अगर मेरी क़ौम मुझे यहां से निकलने पर मज्बूर न करती तो मैं सिवाए तेरे कहीं सुकूनत पज़ीर न होता।" ग़रज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जबले सौर के क़रीब पहुंचे और ग़ार में तश्रीफ़ ले गये। जिसका रास्ता निहायत ख़तरनाक था। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु आपको अपने कन्धे पर बिठा कर चल पड़े। उनके पैरों में छाले पड़ गये। वह आपके क़दमे मुबारक चूम रहे थे। मुहब्बत का आलम था कि ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे थे कि हुज़ूर मेरे कन्धों पर सवार हैं।

जब आप लोग ग़ार में पहुंचे तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपना पैरहन फाड़-फाड़ कर ग़ार के तमाम सूराख़ बन्द कर दिए और एक सूराख़ को अपनी एड़ी लगाई। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके ज़ानवए मुबारक पर सरे मुबारक रख कर लेट गये। इधर ग़ार के मुंह पर मकड़ी ने जाला बुन दिया। दरख़्त भी उग आया। कबूतर का जोड़ा भी आ गया। कबूतर के बच्चे भी अन्डे से निकल आए। दुश्मन आकर लौट गये। ग़रज़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जिस सूराख़ को एड़ी से बन्द किया था वहां एक सांप ने एडी को काट लिया। दर्द की वजह से कुछ कह न सके। क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके ज़ानों पर आराम फरमा रहे थे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आंख खोल कर पूछा। "क्या बात है?" हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने एड़ी हटा ली वहां से एक सांप पछाड़े खाता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों में गिर पड़ा। ख़ुदा की क़ुदरत से उसे क़ुव्वते गोयाई अता हुई उस ने कहा कि पांच सौ साल क़ब्ल मैं एक दरख़्त पर बैठा था। वहां हज़रत ईसा वअ्ज़ फरमा रहे थे और इंजील का

दर्स दे रहे थे कि आख़िरी दौर में पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां पैदा हुए होंगे और आपकी तारीफ़ बयान फ़रमा रहे थे। मैंने उसी वक़्त अल्लाह तआला से दुआ की कि मुझे आपका दीदार नसीब करे। अल्लाह तआला ने मेरी दुआ कुबूल की और मैं तब से इस ग़ार में आपके इंतिज़ार में था। जब आपके दीदार का वक़्त आया तो आपे यारे ग़ार ने मेरा रास्ता रोक दिया इसलिए मजबूरन काटना पड़ा। मुझे मुआफ़ कर दें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआफ़ कर दिया। उधर उसने अपनी जान आप पर निसार कर दी। दोनों तीन दिन उस ग़ार में रहे। उस दर्मियान हज़रत अबू बकर का गुलाम आमिर बिन फहीरा दिन भर की ख़बरें पहुंचाता और हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बकर सिद्दीक़ अपने दोपट्टे को फाड़ कर कमर से बांध कर रोटी पानी लातीं इसलिए उन्हें दो पट्टे वाली का ख़िताब अता हुआ।

सफ़रे हिजरत :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा से २७ सफर बरोज़ इतवार यकुम हिजरी १३ सितम्बर ६२२ ई० को निकले तो तीन दिन ग़ारे सौर में क़्याम फरमा कर यकुम रबीउल–अव्वल को मदीना के लिए रवाना हुए। ८ रबीउल–अव्वल बरोज़े जुमेरात मक़ामे कुबा पर पहुंचे।

मदीना मुनव्वरा में आमदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

मदीना मुनव्वरा से तीन मील के फासिले पर, आज जहां मस्जिदे कुबा है, वहां कुल्सूम बिन हदम के मकान पर तशरीफ़ फरमा हुए। वहां तमाम अहले ख़ानदान ने फ़ख़्र महसूस किया वहां बहुत से अंसार आप की मुलाक़ात को आए। वहां आपने इस्लाम की पहली मस्जिद, मस्जिदे कुबा की बुनियाद डाली जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद भी हाथ बटाते थे। यही वह मस्जिद है जिसकी बुनियाद तक़्वा और परहेज़गारी पर रखी गई। उसके बाद १६ रबीउल–अव्वल को मदीना मुनव्वरा में बनू सालिम मुहल्ले में मस्जिदे जुमा की बुनियाद डाली गई और सबसे अव्वल नमाज़े जुमा के मौक़ा पर खुतबा दिया। फिर बस्ती में दाख़िल हुए। मदीना में सबकी ख़्वाहिश थी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके वहां तशरीफ़ फरमाए। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। "मेरी नाक़ा (ऊंटनी) जहां बैठेगी मैं वहां क़्याम करूंगा। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी जिसका नाम क़स्वा था उसकी महार छोड़ दी गई। वह ऊंटनी हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के मकान के

सामने रुक कर बैठ गई हज़रत अबू अय्यूब बेहद खुश हुए कि उन्हें मेहमान नवाज़ी का शर्फ़ हासिल हुआ। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां सात माह क़याम किया।

अह्ले खानदान मदीना में :

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने गुलाम ज़ैद बिन हारसा और हज़रत अबू राफ़ेआ को अपने अह्लो अयाल को लाने मक्का मुकर्रमा भेजा उनके साथ हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियां हज़रत फ़ातिमा और हज़रत कुल्सूम और हज़रत रुकैया और उनके शौहर हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हुम जो पहले हबशा हिजरत करके दोबारा मक्का लौट आए थे, वह भी आ गये। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चौथी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हु को उनके शौहर ने रोक रखा था, इसलिए वह आ न सकीं। उनके अलावा आपकी ज़ौजा हज़रत सौदा रज़ि अल्लाहु अन्हा उम्मे ऐमन रज़ि अल्लाहु अन्हा भी आ गये। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू भी सबकी अमानतें लौटा कर तीसरे दिन मदीना पहुंच गये।

मस्जिदे नबवी की बुनियाद ६२३ ई० उम्र शरीफ़ ५३ :

मदीना मुनव्वरा में कोई ऐसी जगह न थी। जहां मुसलमान बाजमाअत नमाज़ अदा कर सकें। इसलिए मस्जिद के लिए ज़मीन की जरूरत थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़यामगाह के क़रीब बनू नज्जार का एक बाग़ था। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी कीमत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से लेकर ज़मीन ख़रीदी। जो दो यतीम बच्चों की थी। जिसकी किफ़ालत उनका चचा कर रहा था उसने कीमत लेने से इंकार किया मगर चूंकि वह ज़मीन यतीम बच्चों की थी इसलिए कीमत देकर अपने दस्ते मुबारक से मस्जिद की बुनियाद रख कर काम शुरू किया।

अस्हाबे सुफ़्फ़ा :

मस्जिद के करीब एक ही चबूतरा था। उस पर खुजूर के पत्ते की छत बनाई। और उस चबूतरे का नाम सुफ़्फ़ा रखा गया। जो सहाब–ए–किराम अपना घर बार छोड़ कर मक्का से मदीना आए थे वह उस चबूतरे पर क़याम करते और उसके अलावा दीन की बातें सीखी और सिखाई जाती थीं। उसी मस्जिदे नबवी के मुत्तसिल अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए इलाहिदा–इलाहिदा हुजरे बनाये गये थे।

अज़ान की इब्तिदा :

जब मस्जिद बन कर तैयार हो गई तो जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए लोगों को इकट्ठा करने के लिए सहाबा किराम ने अलाहिदा–अलाहिदा अपनी–अपनी तज्वीज़ें पेश कीं। हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने एक साथ ख़्वाब में सुनी हुई अज़ान का ज़िक्र किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हु को वही अज़ान देने का हुक्म दिया। वहीं से अज़ान की इब्तिदा हुई।

पहला इस्लामी सरिया :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अमीर हम्ज़ा को इस्लामी परचम देकर अबू जहल पर गश्त लगाने भेजा। मुजाहिदीने इस्लाम की यह पहली मुहिम थी। उसी साल ज़कात को फ़र्ज़ क़रार दिया गया। ज़ुहर, अस्र और इशा की रकअतों में इज़ाफ़ा हुआ मगर सफर में सिर्फ़ दो ही रकअत रखी गई जिसे क़स्र नमाज़ कहा जाता है।

तहवीले क़िबला २ हिज० शाबान ६२४ ई० :

चूंकि यहूदियों का क़िब्ला बैतुल–मुक़द्दस था और मुसलमान भी उधर ही रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे, जिसकी वजह से यहूदी मुसलमानों को तअ्ना देते कि मुसलमान हमारी नक़ल करते हैं इसलिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश थी कि काश मुसलमानों का क़िब्ला काबतुल्लाह होता। आख़िर अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश के मुताबिक़ १५ रमज़ानुल–मुबारक बरोज़ दोशंबा नमाज़े ज़ुहर के दौरान तहवीले क़िब्ला का हुक्म दिया। नमाज़ की ही हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना रुख़ काबतुल्लाह की तरफ़ फेर दिया। इसलिए उस मस्जिद को मस्जिदे क़िब्लतैन यानी दो क़िब्ला वाली मस्जिद के नाम से जाना जाता है।

इसी साल दस ज़िल–हिज्जा को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईदुज़्ज़ुहा की नमाज़ अदा की और दो दुंबे ज़बह किए, उसी साल सदक़ा और फितरा अदा करने का हुक्म हुआ। रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए।

लड़ाईयों का सिलसिला २ हिजरी :

अब तक आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह पाक की तरफ़ से यह हुक्म था कि दलाइल और मवाइज़े हसना के ज़रिए

लोगों को दावते इस्लाम दो और उसके अलावा सब्र की भी तल्कीन की गई थी, इसलिए काफिर मुसलमानों पर तरह–तरह के मज़ालिम ढाते ... लेकिन मुसलमानों ने बदला लेने के लिए कभी हथियार नहीं उठाए और हिजरत के बाद तो सारा अरब उन मुट्ठी भर मुसलमानों का दुश्मन ... गया। खुदावन्दे कुद्दूस ने मुसलमानों को जंग करने वालों से लड़ने ... इजाज़त दे दी। चुनाचे १२ सफर २ हि० तारीख़े इस्लाम में यादगार ... है। जब कुफ़्फ़ारों के ख़िलाफ़ मुसलमानों की जंग की इजाज़त मिली ... वाक़या हिजरत से क़ब्ल तमाम मदीने वालों ने अब्दुल्लाह बिन उबय को अपना हाकिम बनाया था। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाने में अब्दुल्लाह बिन उबय ग़म व गुस्से से भड़क उठा और मुसलमानों के ख़िलाफ़ तरह–तरह की साज़िशें करता रहा। इसी दौरान मुसलमानों और कुफ़्फ़ारों में छोटी–छोटी लड़ाइयां शुरू हो गईं, जिनमें बाज़ लड़ाई में खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले जाते। जिनको ग़ज़वात कहा जाता है और जिस लड़ाई में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ न ले जाते बल्कि किसी सहाबी को अमीरे लश्कर मुक़र्रर करके रवाना करते उसे सरिया कहा जाता है। इसी साल २ हिजरी में तक़रीबन सात सरिया हुए।

एक सरिया में अब्दुल्लाह बिन जहश को अमीरे लश्कर बना कर रवाना किया तो उन्होंने उस सरिया में कुफ़्फ़ार के मुअज़्ज़ज़ ख़ानदान के लोगों को क़त्ल कर दिया। जिसकी वजह से कुफ़्फ़ार के बच्चे–बच्चे की ज़बान पर था कि ख़ून का बदला ख़ून से लेकर रहेंगे। चुनांचे उसका नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के दर्मियान एक घमसान की लड़ाई जंगे बदर हुई।

जंगे बदर (यौमुल–फ़ुरक़ान) २ हिज० ६२४ ई० मार्च :

बदर मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन अस्सी (८०) मील के फासिले पर एक गांव का नाम है जहां ज़मान–ए–जाहिलीयत में सालाना मेला लगता था। यहां एक कुवां भी था। उसी मक़ाम पर जंगे बदर का अज़ीम मअ़रका हुआ जिसमें मुसलमानों को अज़ीमुश्शान फतह हुई। उस जंग में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ३१३ मुजाहिदीने इस्लाम थे और कुफ़्फ़ार की तादाद हज़ार थी। यह जंग २ हिजरी १७ रमज़ानुल–मुबारक बरोज़ जुमा ६२४ ई० को हुई उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र ...

शरीफ़ ५५ साल थी। उस जंग में फ़रिश्तों का भी नुज़ूल हुआ। इस्लामी लश्कर की मदद के लिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुसूसी दुआएं कीं। उस जंग में अबू सुफ़ियान बच निकला, मगर सबसे बड़ा दुश्मने दीन अबू जहल था। वह दो लड़के मुअव्वज़ और मआज़ के हाथों जहन्नम रसीद हुआ। उमैया बिन ख़लफ़ को हज़रत बिलाल ने क़त्ल करके जहन्नम रसीद किया।

उस जंग में कुफ़्फ़ार के सत्तर आदमी क़त्ल हुए और सत्तर आदमी गिरफ़्तार हुए। बाक़ी अपना सामान छोड़ कर फरार हो गये। कुफ़्फ़ारे मक्का को ज़बरदस्त शिकस्त हुई उनके बड़े–बड़े नामवर कुफ़्फ़ार सरदार एक–एक करके मौत के घाट उतारे गये। उनमें उतबा, शैबा, अबू जहल, उमैया बिन ख़लफ़, उतबा बिन अबी मुईत, नज़्र बिन हारिस वग़ैरह क़ुरैश के नामवर सरदार बहादुर पहलवान जहन्नम रसीद हुए।

उस ग़ज़्वे में कुल १४ मुसलमान शहादत से सरफराज़ हुए। उन हज़रात में १३ शुहदा को मैदाने बद्र में दफन किया गया। मगर हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जंग से वापसी पर मक़ामे सुफरा पर वफ़ात पाई। इसलिए उनकी क़ब्र सुफ़रा में है। चूंकि कुफ़्फ़ार की तादाद ज़्यादा होने की वजह से हर एक को इलाहिदा दफन करना मुश्किल हुआ इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बड़े गढ़े में तमाम को दफन करने का हुक्म दिया उमैया बिन ख़लफ़ की लाश फूल गई थी जिसकी वजह से उसके आज़ा अलग–अलग होने लगे थे। इसलिए उसको वहीं मिट्टी में दबा दिया गया।

असीराने जंग के साथ सुलूक :

कुफ़्फ़ारे मक्का जब क़ैद हो कर मदीना आए तो अह्ले मदीना उन्हें देखने के लिए जमा हो गये। उन क़ैदियों में जो मालदार थे उन से फ़िदिया लेकर छोड़ दिया गया। जो फिदिया नहीं दे सकते थे उन्हें भी छोड़ दिया गया। जो लोग लिखना पढ़ना जानते थे उन पर यह फ़िदिया लगाया गया कि वह अन्सार के दस–दस लड़कों को लिखना पढ़ना सिखा दें।

उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हा का हार :

जंगे बदर के क़ैदियों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद अबुल–आस भी थे (हज़रत ज़ैनब बिन्ते रसूल के शौहर) एलाने नुबुव्वत के

वक़्त हज़रत ज़ैनब ईमान ला चुकी थीं। मगर अबुल–आस काफ़िर ही रहे उस वक़्त वह क़ैदी बन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में हाज़िर थे। उनके फ़िदिया के लिए हज़रत ज़ैनब ने एक हार भेजा, जिसे हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा ने हज़रत ज़ैनब को जहेज़ में दिया था। जब आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस पर नज़र पड़ी आपको हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा की याद आई। आपके क़ल्बे मुबारक पर ऐसा असर हुआ कि आंसू निकल पड़े। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम से फरमाया कि अगर आप सबकी मर्ज़ी हो तो यह हार ज़ैनब को लौटा दूं। तमाम सहाब–ए–किराम ने सरे तस्लीम ख़म किया और वह हार हज़रत ज़ैनब को मक्का मुकर्रमा में लौटा दिया गया। बाद में हज़रत अबुल–आस भी ईमान लाए और हज़रत ज़ैनब को साथ लेकर मदीना मुनव्वरा आ कर दीन की ख़िदमत में मश्ग़ूल हो गये।

अबू लहब की इबरतनाक मौत :

चूंकि अबू लहब उस जंग में शरीक नहीं हुआ था इसलिए जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश शिकस्त खा कर मक्का आए तो लोगों को जंगे बदर के हालात सुनाए। हालात सुन कर उस पर रंज व ग़म की बिजली गिर पड़ी। वह चेचक जैसी बीमारी में मुब्तला हो गया। अरब के लोग चेचक जैसी बीमारी से बहुत डरते थे और उस मरज़ में मरने वाले वालों को मन्हूस समझा जाता था। इसलिए उसकी लाश तीन दिन तक सड़ती रही। आख़िर उसके बेटों ने लाश को लकड़ी से धकेलते हुए एक गढ़े में फेंक दी और ऊपर से मिट्टी डाल दी।

हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा का निकाह :

इसी साल नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा का अक़्द हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू (अबू तालिब के बेटे) से हुआ।

२ हिजरी के अहम वाक़ेआत :

इस साल रोज़ा और ज़कात मुसलमानों पर फ़र्ज़ हुए, इसी साल आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईदगाह में ईदुल–फ़ित्र की नमाज़ बाजमाअत अदा की, सदक़ा और फितरा का हुक्म नाज़िल हुआ, इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने १० ज़िल–हिज्जा को बक़रईद की नमाज़ अदा की और दो मेंढे ज़बह किए, उस साल छोटे–छोटे

सरिया हुए। सिवाए जंगे बदर के जिसे बदरे कुबरा कहा जाता है, इस साल आपकी साहबज़ादी हज़रत रुक़ैया का इंतिक़ाल हुआ, इसी साल हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा का अक़्द हुआ, कुफ़्फ़ार के बड़े—बड़े नामवर सरदाराने क़ुरैश ग़ज़्व—ए—बद्र में क़त्ल हुए, अबू लहब मूज़ी मरज़ में मुब्तला हो कर मरा।

वाक़या जंगे उहद :

३ हिज० ६२५ ई० ७ शौवाल ३ हिज० उम्र शरीफ़ ५६ साल ६२५ ई० मार्च में इस साल का सबसे बड़ा वाक़या जंगे उहद है। उहद एक पहाड़ है जो मदीना मुनव्वरा से तीन मील के फ़ासिले पर है हक़ व बातिल का मअ़रका इसी पहाड़ की वादी में हुआ।

चूंकि जंगे बदर में सत्तर कुफ़्फ़ार क़त्ल हुए थे और सत्तर कुफ़्फ़ार गिरफ़्तार हुए थे। जो क़त्ल हुए थे उनमें अक्सर कुफ़्फ़ारे कुरैश के सरदार, उमरा, और रुउसा थे। इस बिना पर बच्चा—बच्चा जोशे इंतिक़ाम और आतिशे ग़ैज़ व ग़ज़ब में तन्नूर बन कर मुसलमानों से ख़ून का बदला ख़ून के लिए बेक़रार था। उसके अलावा मर्दों के साथ—साथ औरतें भी जोशे इंतिक़ाम में मुसलमानों से बदला लेना चाहती थीं। जिन में खुसूसन हिन्दा, जिसके बाप को हज़रत हम्ज़ा ने क़त्ल किया था, इसलिए वह हज़रत हम्ज़ा से इंतिक़ाम लेना चाहती थी। आख़िर कार कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का लश्कर मक्का से रवाना हुआ। अबू सुफ़ियान उस लश्कर का सिपेहसालार था। नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु ने आपको इत्तिला दी। यह ख़बर मिलते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम अन्सार व मुहाजिरीन को जमा फरमा कर मश्वरा किया कि मदीना शहर में रह कर मुक़ाबला किया जाए या शहर से बाहर। बाज़ लोगों ने शहर के अन्दर रह कर मुक़ाबला का मश्वरा दिया और बाज़ ने मैदान में। आख़िर इत्तिफ़ाक़ राय से शहर से मैदान में मुक़ाबला पर मुत्तफ़िक़ हो गये। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्सार के क़बीला औस का झण्डा हज़रत उसैर रज़ि अल्लाहु अन्हु (असीर बिन अंबरीज़) को क़बीला ख़ज़रज का झण्डा हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि अल्लाहु अन्हु और मुहाजेरीन का झण्डा हज़रत अली को इनायत फरमाया और एक हज़ार फौज लेकर मदीना से बाहर निकले तो देखा एक छोटा सा लश्कर आ रहा है। आपने पूछा तो पता चला कि मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन उबय का लश्कर मुसलमानों की मदद के लिए आ रहा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस लश्कर से कहा वापस लौट जाओ। हम मुश्रिकों के मुक़ाबले में मुश्रिकों की मदद नहीं लेंगे।

इस्लामी लश्कर में कुल सात सौ सहाबा किराम थे जिन में एक सौ ज़िरह पोश जवां थे। और कुफ़्फ़ार के लश्कर में दो सौ घोड़े तीन हज़ार ऊंट और पन्द्रह औरतें तीन हज़ार का लश्कर मुक़ाबले के लिए आया था। मुश्रेकीन १२ शौवाल को मदीना के क़रीब पहुंच कर उहद की वादी में अपना पड़ाव डाल चुके थे। मगर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम १४ शौव्वाल ३ हिज० को बाद नमाज़ जुमा मदीना से रवाना हुए और १५ शौवाल को उहद के मक़ाम पर पहुंचे। हज़रत बिलाल को अज़ान देने का हुक्म दिया। फिर नमाज़े फज्र के बाद मोर्चा बन्दी शुरू की उहद के एक दुर्रे पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैरा हो पचास तीर अन्दाज़ का दस्ता अक़ब के दुर्रे पर तैनात फरमा कर हुक्म दिया कि चाहें हम ग़ालिब आएं या मग़लूब हों तब तक दुर्रे से न हटना जब तक मैं हुक्म न दूं।

७ शौवाल को जंग का आग़ाज़ हुआ। लश्करे कुफ़्फ़ार की औरतें दफ़ बजा बजा कर मक़्तूलीन के इंतिक़ाम के अश्आर गाती हुई मैदान में आईं। जिनमें सबसे अव्वल अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दा उसके पीछे दीगर औरतें थीं। जंग का आग़ाज़ हुआ तो सबसे पहले अबू आमिर ने तीर फेंका। हज़रत हन्ज़ला रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने बाप के मुक़ाबले के लिए आगे बढ़े। उस जंग में मुसलमानों ने निहायत बहादुरी और जांबाज़ी से कुफ़्फ़ार का डट कर मुक़ाबला किया। मुश्रेकीन के पांव उखड़ गये और वह भागने पर मज्बूर हो गये। कुफ़्फ़ार के लश्कर में भगदड़ मच गई। जो औरतें अश्आर पढ़ रही थीं मैदान छोड़ कर भाग गईं यह मन्ज़र देख कर वह पचास तीर अन्दाज़ जो दुर्रे की हिफ़ाज़त के लिए मुक़र्रर थे, उन्होंने फतह की ख़ुशी में और माले ग़नीमत लूटने की लालच में वहां से उतर आए और वह माले ग़नीमत लूटने में इतने मशग़ूल हो गये। हज़रत अब्दुल्लाह ने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन वह माले गनीमत लूटने में इतने मशग़ूल थे कि उन्हें न तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहत याद रही और न उस तरफ़ से कुफ़्फ़ार के हमले का डर रहा। इधर ख़ालिद बिन वलीद ने फौरन पीछे से हमला कर दिया। इस अचानक हमले से मुसलमान अपने हवास को खो बैठे और भगदड़ में बाज़ मुसलमान शहीद हो गये। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत मुस्अब बिन उमैर जिन की शक्ल थोड़ी हुज़ूर से

मिलती थी, शहीद हो गये। मुसलमानों में अफ़वाह फैल गई कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद हो गये (नऊज़ुबिल्लाह) इसलिए बाज़ मुसलमान मायूस हो कर अब हुज़ूर ही न रहे तो लड़ कर क्या फाइदा तो वह भी दीवाना वार लड़ कर शहीद हो गये। इस तरह मुसलमानों को आरज़ी शिकस्त का मुंह देखना पड़ा।

बाज़ सहाब-ए-किराम हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त के लिए उनके गर्द जमा थे इतने में अचानक अब्दुल्लाह बिन क़मीया ने आपके चेहर-ए-मुबारक पर तल्वार का वार किया। उसके ख़ुद की दो कड़ियां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दन्दाने मुबारक में घुस गईं। जिस से दो दांत शहीद हो गये। आपके मुंह से ख़ून जारी हुआ इतने में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और ख़ून अपने हाथों में ले लिया। ख़ून को ज़मीन पर गिरने न दिया। उस वक़्त अगर ख़ून का एक क़तरा भी ज़मीन पर गिरता तो क़्यामत तक ज़मीन पर कभी सब्ज़ा न उगता।

इधर फातिमतुज़्ज़हरा दौड़ी आईं अपना दोपट्टा फांड़ कर जलाया और राख हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़ख़्म पर लगाई। दूसरी जानिब उबय बिन हलफ ने पीछे से वार करना चाहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे ऐसा नेज़ा मारा कि वह चिल्लाता हुआ भागा कि मुहम्मद ने मुझे क़त्ल कर दिया। लोगों ने कहा तुम ज़िन्दा हो। तो उस मल्ऊन ने कहा "हज़रत मुहम्मद ने मुझ से एक दिन कहा था कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। तो ऐ लोगों इस ज़ख़्म से मुझे इतनी तक्लीफ़ हो रही है अगर वह मुझे क़त्ल करते तो क्या होता।"

हज़रत हम्ज़ा की शहादत :

इस जंग में हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ीक़ी चचा थे शहीद हो गये। चूंकि जंगे बदर में अबू सुफ़ियान के मारे जाने पर उसकी बीवी हिन्दा ने बदला लेने की क़सम खाई थी। जब हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए तो हिन्दा ने अपनी क़सम पूरी करने के लिए आपका कलीजा निकाल कर चबा डाला। आपको इस जंग में इतने ज़ख़्म लगे कि आपको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सैयदुश्शुहदा का लक़ब दिया। इस ग़ज़वे में हज़रत हम्ज़ा की नमाज़े जनाज़ा सत्तर (७०) मरतबा पढ़ी गई। चूंकि उस जंग में ७० सहाब-ए-किराम शहीद हुए। इसलिए हर शहीद की नमाज़े

जनाज़ा के साथ आपकी भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। हिन्दा ने आप रज़ि अल्लाहु अन्हु के कान, नाक वग़ैरह काट कर चेहर-ए-मुबारक इतना बिगाड़ दिया था कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आंखों में आंसू आ गये। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी (जो हज़रत अमीर हम्ज़ा की बहन थी) ने लाश देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की हुज़ूर पाक ने मना फरमाया। आपकी एक बेटी अमामा को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे गोद में उठा कर प्यार किया। इस जंग के सत्तर शुहदाए किराम की क़ब्रें जब छेः साल बाद खोली गईं तो उनके बदन से ताज़ा ख़ून बह निकला।

३ हिज० के अहम वाक़ेआत :

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की विलादत हुई आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़ की बेवह साहबज़ादी हज़रत हफ़्सा से निकाह किया। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी उम्मे कुल्सूम से निकाह किया। मुसलमानों को मुश्रिक औरतों से मुमानेअत की गई। उन से निकाह हराम क़रार दिया गया। विरासत का क़ानून नाफ़िज़ हुआ। जंगे उहद में मुसलमानों को आर्ज़ी शिकस्त हुई, जंगे उहद में हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत हुई।

४ हिज० छोटी-छोटी लड़ाईयाँ ६२६ ई० :

हिजरत के चौथे साल मुसलमानों और काफिरों में कई छोटी-छोटी झड़पें हुईं। जंगे बदर की फतहे मुबीन से मुसलमानों का रुअब पूरे अरबिस्तान में बैठ गया था मगर जंगे उहद के बाद कुफ़्फ़ार के हौसले बढ़ गये और दोबारा मुसलमानों के मिटाने की ठान ली इसलिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मज्बूरन अपने दिफ़ा के लिए लड़ाई लड़नी पड़ी।

यकुम मुहर्रम ४ हिजरी को मदीना मुनव्वरह में ख़बर पहुंची कि तलहा बिन ख़ुवैलिद और सलमा बिन ख़ुवैलिद दोनों भाई फौज जमा करके मदीना पर चढ़ाई करने वाले हैं। आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस लश्कर के मुक़ाबले के लिए डेढ़ सौ मुजाहिदीन को रवाना किया लेकिन कुफ़्फ़ार को पता चला कि मुसलमानों से मुक़ाबला करना आसान नहीं। इसलिए वह मैदान छोड़ कर भाग गये इस तरह का वाक़या

सरीया अब्दुल्लाह बिन अनस में पेश आया। इस सरीया में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हबीब रज़ि अल्लाहु अन्हु को सालार बना कर रवाना किया। यह मामूली झड़प थी फिर भी उस में हज़रत हबीब रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए। सरवरे कौनेन ने एलान किया कि है कोई जो हज़रत हबीब की लाश ले आए? चार सहाबा किराम लाश लाने तैयार हुए और जब वह लाश लेकर आ रहे थे तो रास्ते में काफिरों ने उन्हें घेर लिया। सहाबा लाश को ज़मीन पर रख कर मुक़ाबला करने लगे। ख़ुदा की क़ुदरत ने ज़मीन फट गई और लाश को निगल गई। कुफ़्फ़ार मायूस हो कर वापस लौट गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको बलीगुल–अर्ज़ का लक़ब अता किया।

५ हिजरी के अहम वाक़ेआत :

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की विलादत हुई हज़रत ज़ैनब ज़ौजा मुतह्हरा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ। ज़ना बिल–जब्र वाले को संगसार करने का हुक्म हुआ, हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की वालिदा फातिमा बिन्ते असद का इंतिक़ाल हुआ, इसी साल शराब हराम क़रार दी गई, उम्मुल–मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निकाह हुआ।

६ हिजरी ६२८ ई० के वाक़ेआत :

जंगे उहद में मुसलमानों को आर्ज़ी शिकस्त हुई। जिसमें मुसलमानों का जानी व माली नुक़्सान होने की वजह से कुफ़्फ़ारे कुरैश के हौसले बुलन्द हो गये। तमाम क़बाइल मुत्तहिद हो कर मदीना पर चढ़ाई में मसरूफ़ हो गये। इस साल बहुत सी छोटी मोटी झड़पें हुईं जिन में से चन्द ग़ज़वात का ज़िक्र किया जा रहा है।

ग़ज़्व–ए–ज़ातुर्रिक़ा :

यह ग़ज़वा है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर मिली कि बाज़ क़बाइल मदीना मुनव्वरा पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं। इस से क़ब्ल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चार सौ सहाबा को लेकर दस मुहर्रम ५ हिजरी को मदीने से रवाना हो कर मक़ामे ज़ातुर्रफ़ा तक ही पहुंचे थे कि कुफ़्फ़ार का लश्कर भाग निकला। इस सफर में मुसलमानों की हालत बेहद अबतर थी। तंगदस्ती की वजह से अलग–अलग सवारी ख़रीद न सके। बारी–बारी से घोड़ों पर सवारी कर रहे थे। पहाड़ी और पत्थरेली

ज़मीन होने की वजह से उनके पैर ज़ख़्मी हो गये थे लेकिन फिर भी मुजाहिदीन ने हिम्मत नहीं हारी और कपड़े फाड़–फाड़ कर पैरों में लपेटते हुए मुक़ाबले के लिए आगे बढ़े थे इसलिए इस ग़ज़वा का नाम ज़ातुर्रिक़ा यानी पैवन्द वाला ग़ज़वा हो गया।

ग़ज़्व–ए–दौमतुल–जुन्द :

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली कि दौमतुल–जुन्द जो मदीना और दमिश्क़ के दर्मियान एक क़िला है। जिस में कुफ़्फ़ार मदीना पर हमला करने की ग़रज़ से फौज जमा कर रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार का लश्कर लेकर मुक़ाबले के लिए रवाना हुए। मुश्रेकीन ने जब इतने बड़े लश्कर को आते देखा तो अपना माल व अस्बाब मवेशी वग़ैरह छोड़ कर भाग खड़े हुए। मुसलमानों ने तमाम माले ग़नीमत जमा किया। दो तीन दिन वहां क़्याम किया और वहां से वापस लौट आए।

ग़ज़्व–ए–मरीसअ् (ग़ज़्व–ए–बनी अल–मुस्तलक़) :

मदीना से आठ मील दूर यहां के क़बीले का सरदार हारिस बिन ज़र्रार था। उसने मदीना पर चढ़ाई के ग़रज़ से फौज जमा कर रखी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली आप २ शाबान को लश्कर लेकर रवाना हुए। इस सफर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्वाजे मुतह्हरात हज़रत आइशा सिद्दीक़ा और उम्मे सलमा भी साथ थीं। लेकिन मुसलमानों का लश्कर देख कर हारिस बिन ज़र्रार भाग निकला उसके साथ फौज भी भाग निकली। फिर भी सात सौ कुफ़्फ़ार गिरफ़्तार हुए। दो हज़ार ऊंट, पांच हज़ार बकरियां माले ग़नीमत हासिल हुआ। क़ैदियों में हारिस की बेटी जुवैरिया भी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से निकाह करके हरम पाक में दाख़िल कर लिया। उसके ईमान लाने और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह की ख़ुशी में उसके ख़ानदान के मुजाहिदीन ग़ुलामों और लौंडियों को आज़ाद कर दिया। हज़रत जुवैरिया का असली नाम बर्रह था।

वाक़–ए–उफ़क :

ग़ज़्व–ए–मरीसअ् से जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस लौट रहे थे तो एक मंज़िल पर पड़ाव किया। हज़रत आइशा एक ऊंट की बन्द हौदज में सवार थीं। आप लश्कर की रवानगी से कुछ अव्वल

रफ़ा हाजत के लिए बाहर तशरीफ़ ले गईं। जब वापस लौटीं तो गले का हार टूट कर कहीं गिर गया। आप दोबारा हार तलाश करने बाहर चली गईं। इधर लश्कर रवाना हो गया।

आप घबरा गईं अन्धेरे में चलना दुश्वार और ख़तरनाक भी था। इसलिए वह वहीं लेट गईं कि जब अगले पड़ाव पर मुझे न पाएंगे तो ख़ुद मेरी तलाश में यहां आएंगे। एक सहाबी हज़रत सफ़्वान बिन मुअ़्तल जो हमेशा लश्कर के पीछे रहा करते थे। लश्कर का भूल चूक का और गिरा पड़ा सामान उठाते चले थे। जब वह वहां पहुंचे तो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा को देख कर उन्हें मुर्दा समझ कर **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।** पढ़ा उनकी आवाज़ सुन कर हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा जाग गईं। हज़रत सफ़्वान ने फौरन उन्हें अपने ऊंट पर बिठा कर और उसकी महार थामे पैदल चलने लगे और फिर अगली मंज़िल पर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंच गये।

इधर मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय को इस वाक़या की ख़बर हुई तो उसको हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाने का ज़रिया हाथ आया। उस ने तमाम मदीने में तोहमत को बढ़ा चढ़ा कर उछाला। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस शर अंगेज़ तोहमत से बेहद रंज पहुंचा। उधर हज़रत आइशा मदीना पहुंचते ही सख़्त बीमार हो गईं। इसलिए आपको इस तोहमत की ख़बर न थी। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी पाकदामनी पर पूरा भरोसा था। मगर अपनी ज़ौजा होने की वजह से अपने तरफ़ से पाक दामनी का ऐलान करना मुनासिब न समझा और वही–ए–इलाही का इंतिज़ार करने लगे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु से गुफ़्तगू फरमाई। तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह मुनाफ़िक़ झूठी तोहमत लगा रहे हैं। अल्लाह तआला को यह गवारा नहीं कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अतहर पर मक्खी बैठे जबकि मक्खी नजासत पर बैठती है तो भला जो औरत ऐसी बुराई की मुर्तकिब हो तो खुदाए तआला कैसे बर्दाश्त करेगा कि वह आपकी ज़ौजियत में रहे। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मरतबा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नअ्लैन मुबारक में नजासत

लग गई थी तो अल्लाह तआला ने वही के ज़रिया आपको ख़बर कर दी थी कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नअ्लैन उतार दें। अगर, खुदा नख़्वास्ता हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा ऐसी होतीं तो ज़रूर अल्लाह तआला आप पर वही के ज़रिया फरमाता कि आप उनको अपनी ज़ौजियत से निकाल दें। जब हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा को इस झूठी तोहमत की ख़बर हुई तो रंज व ग़म से और भी निढाल हो गईं। आख़िर एक दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए और फरमाया ऐ आइशा तुम्हारे बारे में ऐसी–ऐसी ख़बरें उड़ाई जा रही हैं। अगर तुम पाक दामन हो और यह ख़बर झूठी हो तो अन्क़रीब ख़ुदावन्दे करीम वही के ज़रिया एलान फरमाएगा वरना तुम तौबा इस्तिग़फ़ार कर लो क्योंकि जब कोई बन्दा मोमिन तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देता है। यह सुन कर हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के आंसू निकल पड़े फिर थोड़ी देर बाद आपने अपने वालिद, वालिदा की तरफ़ हसरत भरी नज़र से देखा। उन्होंने भी मज्बूरी ज़ाहिर की कि नागहां हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही नाज़िल हुई। आप पर नुज़ूले वही के वक़्त की बेचैनी शुरू हो गई बावजूद शदीद सर्दी के पसीने के क़तरात मोतियों की तरह आपके बदने अतहर से टपकने लगे। जब वही का नुज़ूल बन्द हुआ तो हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुस्कुराते हुए फरमाया ऐ आइशा अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम्हारी बराअत व पाकदामनी का ऐलान कर दिया। फिर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरआन की सूरः नूर की आयत तिलावत फरमाई। इस आयत के नाज़िल होने के बाद मुनाफ़िक़ों का मुंह काला और ज़बान पर ताले पड़ गये। उम्मुल–मुमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा की पाक दामनी का आफताब पूरी आब व ताब के साथ इस तरह चमक उठा कि ता क़यामत मुसलमानों के दिलों में नूरे ईमान से उजाला हो गया।

जंगे ख़न्दक़ (जंगे अहज़ाब) :

५ हिजरी की तमाम लड़ाइयों में जंगे ख़न्दक़ सबसे अहम है। दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए यह ख़न्दक़ खोदी गई थी इसलिए उसे जंगे ख़न्दक़ कहा जाता है। और तमाम काफिरों ने मुत्तहिद हो कर इस्लाम के ख़िलाफ़ जंग की थी इसलिए उसे जंगे अहज़ाब (मुत्तहिदा) कहते हैं।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर पहुंची की तमाम क़बीले के कुफ़्फ़ार मुत्तहिद हो कर एक साथ हमला करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा किराम को मश्वरा के लिए एक जगह जमा किया और दुश्मनों से मुक़ाबला करने की तरकीब बताई। किसी ने मश्वरा दिया कि मदीने से बाहर निकल कर हमला किया जाए। हज़रत सलमान फार्सी ने मशवरा दिया कि मदीने के अन्दर रह कर मुक़ाबला किया जाए। क्योंकि शहर की तीन तरफ गलियां हैं सिर्फ़ एक तरफ़ से ही ख़तरा है। तो वहां ख़न्दक़ खोदी जाए। आपको यह तज्वीद बहुत पसन्द आई। ग़रज़ कि आप ८ ज़ी क़अ्दा ५ हिज० में तीन हज़ार सहाब–ए–किराम के साथ ख़न्दक़ खोदने में मस्रूफ़ हो गये।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से हद बन्दी करके दस–दस सहाबा किराम को दस–दस गज़ ज़मीन तक़्सीम फ़रमाई। एक जगह खोदते–खोदते एक चट्टान इतनी मज़्बूत थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बज़ाते खुद फावड़ा तीन बार मारा। हर ज़र्ब पर उस में से रौशनी निकलती थी जिसमें क़ैसर व किसरा, शाम, ईरान और यमन के शहर देखे इस मअ्रके में मुसलमानों की तंगदस्ती का यह आलम था कि भूख से निढाल हो गये। मगर जोशे ईमान से काम में मस्रूफ़ रहे। जब हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु को यह भूख देखी न गई तो उन्होंने घर जा कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत का इंतिज़ाम किया और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कान में कहा कि हुज़ूर मैंने आपके खाने का इंतिज़ाम किया है। आप चन्द सहाबा को लेकर आए। मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम सहाब–ए–किराम से कहा चलो आज जाबिर के घर सब की दावत है। आप तमाम सहाब–ए–किराम को साथ लेकर आए। घर जाकर गूंधे हुए आटे में अपना लुआब डाला और खाने में बरकत की दुआ की फिर क्या था तमाम सहाब–ए–किराम ने पेट भर कर खाना खाया। इधर सुफ़ियान ने फौज लेकर शहर का मुहासरा किया। एक काफिर जासूसी करते हुए जिस ख़ेमे में ख़्वातीन और बच्चे थे पहुंच गया।

हज़रत सफ़ीया रज़ि अल्लाहु अन्हा की शुजाअत :

जब एक काफिर जासूसी करते हुए मस्तूरात के ख़ेमे की तरफ़ बढ़ा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी हज़रत सफीया बिन्ते

अब्दुल–मुत्तलिब ने देख लिया और ख़ेमा का एक खूंटा उखाड़ कर पीछे से उसके सर पर वार किया जिस से वह जासूस वहीं ढेर हो गया। आपने उसका सर काट कर दुश्मन की फौज की तरफ फेंक दिया। जिस से दुश्मनों ने समझा कि इस ख़ेमा में भी फौज है लिहाज़ा इस डर से उधर का रुख़ नहीं किया। उधर अबू सुफ़ियान की फौज मुहासरे से तंग आ गई थी खाने पीने की भी क़िल्लत हो गई थी इसलिए मजबूरन अबू सुफ़ियान को मुहासरा उठाना पड़ा और आख़िर कार यह जंग बेग़ैर फ़ैसले से ख़त्म हो गई।

६ हिजरी बैअ़ते उक़्बा ऊला ६२८ ई० मार्च :

ज़ी क़अ़्दा ६ हिज० मार्च ६२८ ई० में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चौदह सौ सहाबा किराम के साथ उमरा का एहराम बांध कर मक्का मुकर्रमा के लिए रवाना हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहले ही शुबह था कि कुफ़्फ़ार उमरा अदा नहीं करने देंगे। इसलिए आपने एक शख़्स को मक्का के हालात जानने के लिए भेजा वह शख़्स अस्फ़ान के क़रीब पहुंचा। उसे ख़बर मिली कि कुफ़्फ़ार ने तमाम क़बाईल को जमा कर रखा है। ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और तमाम साथियों को उमरा से रोका जा सके और उसके लिए ख़ालिद बिन वलीद और अबू जहल का बेटा इकरमा आपको रास्ते में रोके वह दो सौ सवार लेकर निकला। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़रा परे हट कर सफर शुरू किया और मक़ामे हुदैबिया पर पड़ाव डाला। चूंकि वहां पानी की क़िल्लत थी एक कुवां था वह भी ख़ुश्क। सहाबा प्यास से बेहाल हो रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक प्याले में अपना दस्ते मुबारक डाला। आपकी मुक़द्दस उंगलियों से पानी का चशमा जारी हो गया। तब तमाम सहाबा किराम ने सैराब हो कर पानी पिया।

बैअ़ते रिज़वान :

मक़ामे हुदैबिया में पहुंच कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चला कि कुफ़्फ़ारे मक्का का लश्कर आ रहा है। जबकि एहराम की हालत में जू भी मारना हराम है। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मसालेहत के लिए हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु को मक्का भेजा। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने सबके लिए उमरे की इजाज़त मांगी। उन्होंने कहा हम सिर्फ़ आपको उमरा की इजाज़त देंगे

मगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हरगिज़ इजाज़त नहीं देंगे। हज़रत उस्मान ग़नी ने कहा मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेग़ैर उमरा नहीं करूंगा इस बहस व मुबाहसे में तीन दिन बीत गये। तीसरे दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़ामे हुदैबिया में एक दरख़्त के नीचे पहुंचे ही थे कि वहां ख़बर मिली कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु क़त्ल कर दिए गये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी वक़्त दरख़्त के नीचे फरमाया ख़ून का बदला ख़ून हम पर फर्ज़ है। तुम सब मेरे हाथ पर बैअत करो कि आख़िरी दम तक मेरे वफ़ादार होगे और कभी साथ नहीं छोड़ोगे। तमाम सहाबा किराम ने जोश व ख़रोश से आपके हाथ पर बैअत की। आपने अपना दूसरा हाथ रख कर कहा यह हज़रत उस्मान का हाथ है।

सुलहे हुदैबिया :

सुलहे हुदैबिया का तज़्किरा कुरआन मजीद में सूरः फतह में है उसमें फतहे मुबीन की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है। बैअ़ते रिज़वान हो जाने के बाद पता चला कि हज़रत उस्मान ग़नी के क़त्ल की ख़बर झूठी थी और फिर वह बख़ैर व आफ़ियत मक्का से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैशे मक्का को पैग़ाम भेजा कि हम जंग की ग़रज़ से नहीं आए। अगर उन्होंने हम से जंग की तो ख़ुदा की क़सम मैं उस वक़्त क लड़ूंगा। जब तक मेरी जान में जान है।

बुदैल बिन वरक़ा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पैग़ाम पहुंचा कर सुलह करने पर आमादा किया। सुहैल बिन अमर और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह नामा लिखना तय हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली को दस्तावेज़ लिखने को कहा और कहा लिखो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम सुहैल ने कहा मैं अर्रहमान को नहीं मानता आप बिस्मुक अल्लाहम्मा लिखो जो हमारा तुम्हारा पुराना दस्तूर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा अच्छा बिस्मुक अल्ला–हुम्मा फिर मुआहेदा लिखा गया।

मुआहेदे की शराइत :

(१) मुसलमान इस साल बेग़ैर उमरा अदा किए वापस लौट जाएं।

(२) आइन्दा साल उमरा के लिए आएं तो सिर्फ़ तीन दिन मक्का में रहेंगे।

(३) तल्वार के सिवा कोई हथियार साथ न लाएं।

(४) मक्का में जो मुक़ीम हैं उसे साथ नहीं ले जाओगे।

(५) अगर कोई मदीना चला जाए तो उसे वापस मक्का भेज दिया

(६) क़बाइले अरब को अख़्तियार हो कि फ़रीक़ैन में जिसके साथ चाहे दोस्ती कर सकता है। उसके बाद आपने वहीं पर क़ुरबानियां दी और सर पर बाल तराशे और एहराम खोल दिया और मदीना वापस लौट आए। कि तमाम अस्हाब इस मुआहेदे से और एहराम खोलने से नाराज़ नज़र रहे थे। मगर जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन सब बातों करते देखा तो तमाम सहाबा किराम ने उस पर बख़ुशी अमल किया।

मक्का मुकर्रमा के मज़्लूमीन :

सुलहे हुदैबिया में मुआहेदा लिखा जा चुका था मगर अब उस पर किसी के दस्तख़त नहीं हुए थे कि इतने में सुहैल अमर के बेटे हज़रत अबू जन्दल मुसलमानों के दर्मियान आ गये। सुहैल अमर ने कहा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मुआहेदे पर दस्तख़त होने से क़ब्ल मेरी पहली शर्त यह है कि अबू जन्दल को वापस लौटा दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अभी तक मुआहेदे पर किसी के दस्तख़त नहीं हुए। दस्तख़त हो जाने के बाद उस पर अमल होगा। सुहैल बिन अमर ने कहा फिर हमारा मुआहदा यहीं ख़त्म होता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा ऐ सुहैल मेरी तरफ़ से इजाज़त है। बेशक तमु अबू जन्दल को ले जा सकते हो मगर अबू जन्दल ने आपसे दर्ख़्वास्त की कि मुझे दोबारा मुश्रिकों की तरफ़ मत लौटाइए। इस बहस व मुबाहसे में हज़रत उमर फारूक़ ने अर्ज़ किया कि क्या आप अल्लाह के रसूल नहीं हैं? आपने कहा: "बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं।" फिर कहा क्या हम हक़ पर नहीं हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "बेशक हम हक़ पर हैं।" फिर अर्ज़ किया "क्या आपने हम से वादा नहीं किया था कि अन्क़रीब हम बैतुल्लाह में आकर तवाफ़ करेंगे?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया "बेशक! मैं अब भी कहता हूं कि हम इसी साल बैतुल्लाह में शान व शौकत के साथ दाख़िल होंगे।" जब मुआहेदे पर दस्तख़त हो गये तो मजबूरन अबू जन्दल को मुश्रेकीन के हवाले करना पड़ा।

जब मुश्रेकीन के मज़ालिम मुसलमानों पर ज़्यादा होने लगे तो लोग छुप–पुछ कर मदीना आने लगे और जब हुज़ूर ने मुआहेदा के मुताबिक़

उन्हें पनाह देने से इंकार कर दिया तो यह सब साहिल समुन्द्र के किनारे मक़ामे ऐस में जमा हो गये और कुफ़्फ़ार के तिजारती क़ाफ़िलों को लूटने लगे। आख़िर अबू सुफ़ियान ने मदीना मुनव्वरा पहुंच कर मुआहिदे को तोड़ दिया इस तरह अब लोग बेख़ौफ व ख़तर मदीना आने जाने लगे।

सलातीन के नाम मक्तूबात :

सुलहे हुदैबिया की रू से जंग व जिदाल का ख़तरा टल गया था और हर तरफ़ सुकून और इत्मीनान की फ़िज़ा पैदा हो गई थी इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरादा फरमाया कि इस्लाम का पैगाम तमाम दुनिया में पहुंचाया जाए। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रूम के बादशाह हेरक़्ल क़ैसरे रूम को बज़रिया दहिया कल्बी रज़ि अल्लाहु अन्हु खुस्रू परवेज़ शाह ईरान को बज़रिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुज़ाफ़ा, अज़ीज़े मिस्र को बज़रिया हज़रत मकूक़स, नज्जाशी बादशाह हबश को बज़रिया हज़रत उमर बिन उमैया, हारिस ग़स्सानी बादशाह ग़स्साल को बज़रिया हज़रत शुजाअ् बिन वहब, हूज़ा बादशाहे यमन को बज़रिया हज़रत सलीत बिन अमर उनमें चन्द बादशाहों ने इस्लाम कुबूल किया। बाज़ ने एहतराम तो किया मगर ईमान नहीं लाए। बाज़ बादशाह ने न ईमान लाए और बेअदबी का भी मुज़ाहेरा किया। जो बादशाह ईमान ला कर मुसलमान हो कर हाज़िरे ख़िदमत हुए उन में हारिस बिन कुलाल (२) नईम बिन कुलाल (३) नौमान हाकिमे हम्दान (४) ज़रआ बादशाहे यमन (५) फरवह बिन अमर सलतनते रूम का गवर्नर (६) बअज़ान जो इमरान किसरा की तरफ़ यमन का सूबेदार था, अपने दो बेटों के साथ मुसलमान हुआ था।

(१) शाह नज्जाशी (असमहा) बादशाह हबश जिसके बारे में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ का कहना है वह ईमान ला चुका था और उसकी वफ़ात की ख़बर सुन कर हुज़ूरे पाक ने मदीने में ग़ायबाना तौर पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

(२) अज़ीज़े मिस्र इस्कन्दरीया का बादशाह मकूक़श निहायत एहतराम के साथ मिला और फरमाने नबवी भी अदब व एहतराम से सुना मगर मुसलमान नहीं हुआ। फिर चन्द तोहफ़े, जिनमें दो लौंडियां, एक मारिया जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हरम शरीफ़ में दाख़िल हुईं। जिनके वतन से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादे इब्राहीम पैदा हुए, जो कम्सिन में ही इंतिक़ाल कर गये। दूसरी सीरीन, जिन को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हस्सान बिन साबित के निकाह में दिया।

जिन से हज़रत अब्दुल्लाह पैदा हुए। इसके अलावा एक सफ़ेद गधा जिसका नाम याफ़ूर था एक ख़च्चर, जिसका नाम दुलदुल था। एक हज़ार मिस्क़ाल सोना, एक ग़ुलाम कुछ शहद और कपड़े भेजे।

(३) बादशाहे यमामा के पास हज़रत सलीत पहुंचे उसने क़ासिद का एहतराम तो किया मगर इस्लाम क़ुबूल नहीं किया और ख़त का जवाब इस तरह दिया कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी हुकूमत में से कुछ दूं तो क्या आप मेरी पैरवी करोगे? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़त पढ़ कर फरमाया इस्लाम मुल्क गीरी की हवस से नहीं आया।

ख़ुस्रू परवेज़ के दरबार में :

शहनशाहे फारस (ईरान) ख़ुस्रू परवेज़ के दरबार में जब नाम–ए–मुबारक पहुंचा तो उसके गुस्से का पारा इस क़द्र बढ़ गया कि उस ने कहा इस ख़त में मेरे नाम से पहले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम क्यों लिखा है? यह कह कर उस ने फरमान फाड़ डाला हुज़ूरे सरवरे कौनेन को ख़बर मिली आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उसने मेरे ख़त के टुक्ड़े किए। ख़ुदा उसकी सलतनत के टुक्ड़े कर देगा। चुनांचे वह पेशीन गोई सच साबित हुई। ख़ुस्रू परवेज़ को उसी के बेटे ने क़त्ल कर दिया और उसकी सलतनत के टुक्ड़े–टुक्ड़े हो गये। ख़लीफ़–ए–दोम हज़रत उमर के दौरे ख़िलाफ़त में ईरान का वजूद मिट गया।

हारिस ग़स्सानी :

जब हारिस के पास आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामा मुबारक पहुंचा तो वह ख़त पढ़ कर बरहम हो गया और मदीना पर हमला की ग़रज़ से फौज को तैयारी का हुक्म दिया जिसकी बिना पर ग़ज़्वा तबूक के वाक़ेआत पेश आए।

६ हिजरी के सराया व ग़ज़्वात :

६ हिज० मुहर्रम मई ६२७ ई० सरीया क़रीज़ा समामा जुलाई में ग़ज़्वए लहमियान, रबीउल–अव्वल, अगस्त ग़ज़्व–ए–ज़ी क़ुरद। रबीउल–अव्वल, अगस्त में ग़मर मरज़दक़। जमादिल–अव्वल, सितम्बर में सरीया ऐस, जिसमें सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद ज़ैनब बिन्ते रसूल के शौहर गिरफ़्तार हुए फिर मुसलमान हुए। जिमादिल–आख़िर, अक्तूबर में सरीया तरक़ बह। रजब, नवम्बर में, सरीया वादी अल–क़ुरा शाबान, दिसम्बर में, उम्मे फ़िरक़ा। शव्वाल, फरवरी में सरीया अब्दुल्लाह

बिन रवाहा। ज़िल–क़अ़दा, मार्च, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा अदा करने रवाना हुए। ज़िल–हिज्जा, अप्रैल में नज्जाशी ने इस्लाम कुबूल किया। खुश्क साली की वजह से आक़ाए नामदार ने नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा की और मूसलाधार बारिश हुई।

ग़ज़्व–ए–ख़ैबर मुहर्रम ७ हिज० मई ६२८ ई० :

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली कि ख़ैबर के यहूदी कबीला ग़तफ़ान को लेकर मदीने पर हमला करने वाले हैं। तो उनको रोकने के लिए सोला सौ सहाबी को लेकर ख़ैबर रवाना हुए। मदीने में हज़रत सबाअ़ बिन अरफ़ता रज़ि अल्लाहु अन्हु को अफ़्सर मुक़र्रर करके तीन अलम तैयार करके एक अलम हज़रत हबाब बिन मुंज़िर रज़ि अल्लाहु अन्हु को दिया। एक अलम हज़रत सअद बिन उबादा को अलमबरदार बना कर ख़ास अलमे नबवी हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के दस्ते मुबारक में इनायत फरमाया। और अज्वाज़े मुतह्हरात में उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा को साथ लिया। रात के वक़्त हुदूदे ख़ैबर में पहुंचे। नमाज़े फज्र के बाद शहर में दाख़िल हुए तो सहाब–ए–किराम ज़ोर –ज़ोर से नार–ए–तकबीर बुलन्द करने लगे। सवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अपने ऊपर नर्मी बरतो तुम किसी बहरे को नहीं पुकार रहे हो। उधर यहूदियों ने औरतों और बच्चों को एक महफ़ूज़ क़िला में पहुंचा दिया और फौजों को नताह और क़मूस जमा किया। राशन का ज़ख़ीरा क़िला नाअम में महफ़ूज़ कर दिया। क़िला ख़ैबर असल में आठ क़िलों का मज्मूआ था। (१) कैतबा (२) नाइम (३) शक़ (४) क़मूस (५) नतात (६) सअब बे दतेग़ (८) साला उन में सबसे मज़्बूत क़िला क़मूस था। उस क़िला का रईस यहूदी मरहब था। जो अरब की एक हज़ार फौज के बराबर था। यहूदियों के पास बीस हज़ार फौज थी, जो मुख़्तलिफ़ क़िलों में मोर्चा बन्दी किए हुए थे।

सबसे पहले क़िला नाइम पर मअ़रका आराई हुई। जब वह क़िला फतह हुआ तो यके बाद दीगरे छेः क़िले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु और दीगर सहाबा किराम ने फतह किए, आख़िरी एक क़िला मकूस जो सबसे मज़बूत था, और उसका रईस मरहब था वह क़िला फतह न हो सका। उस दौरान हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु आशोबे चश्म की वजह से मअ़रका में हाज़िर न हो सके।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कल सुबह मैं जिसे अलम दूंगा उसी के हाथ क़िला फतह होगा। चुनांचे तमाम सहाबा किराम उसी इंतिज़ार में थे कि आप किसे सौंपते हैं। तीसरे रोज़ सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू कहां हैं? सहाबा ने कहा वह आंखों की तक्लीफ़ की वजह से न आ सके। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली को बुला कर उनकी आंखों को अपना लुआब लगाया जिसकी वजह से आपकी आंखें अच्छी हो गईं। अलम हज़रत अली को सौंप कर रवाना किया। चूंकि उक्त क़िला का दरवाज़ा बहुत मज़्बूत था। आपने उसे अपनी ताक़त से तोड़ दिया और मरहब से मुक़ाबला करके उसे शिकस्त देकर सातवां क़िला भी फतह कर लिया। इसी लिए आपको फातेहे ख़ैबर का लक़ब अता हुआ।

७ हिज० ज़ी क़अ्दा – मार्च ६२६ ई०

उमरतुल–क़ज़ा :

चूंकि सुलहे हुदैबिया के तहत कि आइन्दा साल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा अदा कर सकते हैं। इस रू से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान किया कि जो उमरा अदा करना चाहते हैं वह मेरे साथ चलें और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो हज़ार सहाबा किराम उमरा की ग़रज़ से निकल पड़े। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अह्ले मक्का पर भरोसा नहीं था इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुकम्मल जंगी तैयारी के साथ रवाना हुए। सौ ऊंट कुरबानी के लिए भी साथ लिए। जब कुफ़्फ़ारे मक्का को ख़बर मिली कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फौजी साज़ो सामान के साथ मक्का तशरीफ़ ला रहे तो घबरा गये और सूरते हाल जानने के लिए चन्द आदमियों को भेजा। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़ामे हज में पहुंचे तो तमाम हथियारों को एक जगह जमा करके रखा और इन्हें बिन सअद की हिफ़ाज़त के लिए चन्द सहाबा को मातहती में [illegible] किया जब कुफ़्फ़ार को इत्मीनान हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बग़ैर हथियार के तशरीफ़ ला रहे हैं तो उन्हें इत्मीनान हुआ [illegible] आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हरमे काबा में दाख़िल हुए तो [illegible] कुफ़्फ़ार मारे जलन के उस रूह परवर मंज़र की ताब न ला सके और पहाड़ों में जा छुपे और बाज़ कुफ़्फ़ार एक दूसरे को देख कर [illegible]

भला मुहम्मद और उनके साथ भूख और प्यास की वजह से कमज़ोरी की हालत में तवाफ़ कर सकेंगे? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे हराम में पहुंच कर एहराम को अपने शाने पर डाल कर पहले तीन फेरों में शानों को हिला-हिला कर और अकड़ते हुए तवाफ़ किया जिसे अरबी में रमल यानी अकड़ कर चलना कहा जाता है। यह सुन्नत आज तक जारी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन दिन क़याम फरमा कर वापस मदीना मुनव्वरा लौटे। दौराने सफर हज़रत मैमूना रज़ि अल्लाहु अन्हा से निकाह हुआ। उस मक़ाम का नाम सरफ़ है चालीस साल बाद हज़रत मैमूना का उसी सरफ के मक़ाम पर इंतिक़ाल हुआ और आपका उसी मक़ाम पर मदफन है।

सरीया मौता जमादिल-ऊला ८ हिज० ६२९ ई० :

"मौता" मुल्क शाम में एक मक़ाम का नाम है। यहां कुफ़्र व इस्लाम का अज़ीमुश्शान मअ्रका हुआ जिसमें एक लाख लश्करे कुफ़्फ़ार से सिर्फ़ तीन हज़ार मुसलमानों ने अपनी जान की बाज़ी लगा कर मुसलमानों को फतह दिलाई जो तारीख़ में यादगार साबित हुई।

इस जंग का सबब यह हुआ कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बसरा के बादशाह क़ैसरे रूम के नाम एक ख़त हज़रत हारिस बिन उमैर के हाथ रवाना किया लेकिन रास्ते में बिल्क़ार का बादशाह शरजील बिन उमर ने निहायत बेदर्दी से क़त्ल कर दिया। जब बारगाहे रिसालत में यह ख़बर पहुंची तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निहायत सदमा पहुंचा और फिर आपने तीन हज़ार मुसलमानों का लश्कर तैयार करके हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि अल्लाहु अन्हु को फौज का सिपेहसालार मुक़र्रर करके फरमाया अगर ज़ैद बिन हारसा शहीद हो जाए तो हज़रत जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु को सिपेहसालार मुक़र्रर करना अगर वह भी शहीद हो जाए तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि अल्लाहु अन्हु को अलम बरदार बनाना। जब इस्लामी लश्कर मौता की सरज़मीन में दाख़िल हुआ तो देखा क़ैसरे रूम पहले ही वहां एक लाख फौज के साथ ख़ेमाज़न था। मुसलमानों के अमीरे लश्कर हज़रत ज़ैद बिन हारसा ने लश्करे कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दावत दी तो उधर से तीरों की बारिश शुरू हो गई और जब आपकी शहादत का वक़्त क़रीब आया तो फौरन हज़रत जाफर ने अलम संभाल लिया। हज़रत ज़ैद बिन हारसा की शहादत के बाद हज़रत

जाफर ने नेज़ा संभाला मगर उन पर भी एक साथ तल्वारें चलीं और आपके दोनों बाज़ू कट गये और आपने भी जामे शहादत नोश फरमाया। आपके बारे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत जाफर को दोनों हाथों के बदले दो बाज़ू अता फरमाए जिससे उड़–उड़ कर वह जन्नत में जहां चाहें चले जाएं। इसलिए आपका लक़ब जाफरे तैयार यानी उड़ने वाला पड़ गया। जब हज़रत जाफर भी शहीद हो गये तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा आगे बढ़ कर अलम हाथ में ले कर मुक़ाबले के लिए तैयार हुए, मगर वह भी शहीद हो गये तो मुसलमानों ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को सिपेहसालार मुक़र्रर किया आपने मैदान में जाते ही दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। उस जंग में आपकी नौ तल्वारें टूटी। आपने आख़िर तक लश्करे कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करते हुए मुसलमानों को फतह दिलाई। आपको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सैफुल्लाह यानी अल्लाह की तल्वार का ख़िताब अता फरमाया।

इस जंग में मुसलमानों के सिर्फ़ बारह सहाबा किराम शहीद हुए उस जंग की एक ख़ास बात यह भी है कि इस जंग का हाल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा में बैठे देखा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निगाह से तमाम हिजाबात इस तरह उठ गये कि आप अपने क़रीब बैठे हुए सहाबा को वहां का आंखों देखा हाल सुना रहे थे। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आंख से आंसू जारी थे।

फतहे मक्का के लिए रवानगी :

४ रमज़ानुल–मुबारक ८ हिज. के दिन हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैयबा का निहायत अज़ीमुश्शान कारनामा अंजाम पज़ीर हुआ। इस तारीख़ी कारनामे से आठ साल क़ब्ल निहायत ग़मज़दा हो कर अपने यारे ग़ार को रात की तारीकी में लेकर हिजरत फरमाई थी। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का से निकलते वक़्त ख़ुदा के मुक़द्दस घर खाना काबा पर एक हसरत भरी नज़र डाल कर फरमाया था। ऐ मक्का तू मेरी निगाह में तमाम दुनिया के शहरों से ज़्यादा अज़ीज़ है अगर मेरी क़ौम मुझे न निकालती तो मैं तुझे हरगिज़ न छोड़ता और आठ साल बाद आपने एक फातेहे आज़म की हैसियत से निहायत शान व शौकत के साथ उसी शहरे मक्का में नुज़ूले इज्लाल फरमाया और हरम शरीफ़ में दाख़िल हो कर अपने सज्दों से ख़ुदा के घर की अज़मत बख़्शी।

चूंकि सुलहे हुदैबिया के मुआहेदे के ख़िलाफ़ वर्ज़ी करके कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस्लाम को जंग की दावत दी थी। इसलिए हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़्व–ए–मक्का के लिए एक लाख जांनिसारों के साथ रवाना हुए। कुरैश ने मुआहेदे को तोड़ कर बनी ख़ुज़ाआ के तीस आदमियों को कृत्ल कर डाला जिसकी बिना पर बनी ख़ुज़ाआ उनके दुश्मन और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोस्त बन गये। और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक पर इस्लाम कुबूल किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैशे मक्का के पास क़ासिद भेजा कि बनी ख़ुज़ाआ के मक़्तूल का ख़ून बहा दिया जाए और ऐलान कर दिया जाए कि मुआहेदा टूट गया। कुरैश ने मक़्तूलों के ख़ून बहा देने से तो इंकार कर दिया अल्बत्ता मुआहेदा तोड़ने का एलान अबू सुफ़ियान ने कर दिया। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़्व–ए–मक्का के लिए एक लाख का जर्रार लश्कर ४ रमज़ान को मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा रवाना हुए। मक्का से एक मील पर मराज़े तहरान में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लश्कर का पड़ाव डाला और हुक्म दिया कि दस–दस हज़ार मुजाहिदीन चूल्हे जलाएं। कुरैशे मक्का को ख़बर मिल चुकी थी कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ीम फौज लेकर मक्का पर चढ़ाई के लिए निकले हैं। तो उन्होंने जासूसी के लिए अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को भेजा। उन्होंने दूर से उन चूल्हों का मंज़र देखा तो हर तरफ़ आग ही आग नज़र आई। यह देख कर उन्हें शक हुआ कि इस्लाम का लश्कर नहीं हो सकता। इसी अस्ना में उनकी मुलाक़ात हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से हुई। उन्होंने लश्कर के बारे में दरयाफ़्त किया तो हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा वाक़ई यह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लश्कर है। अबू सुफ़ियान को यक़ीन हो गया कि अब इस्लाम कुबूल करने के सिवा चारा नहीं तो वह हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु को सिफ़ारशी बना कर दरबारे रिसालत मआब में हाज़िर हो कर मुशर्रफ़े इस्लाम हुए।

इस्लामी लश्कर का जाह व जलाल :

जब मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर मक्का की तरफ़ बढ़ा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि अबू सुफ़ियान को ऊंचे टीले पर खड़ा करके इस्लामी लश्कर का

मंज़र ख़ुद उनकी आंखों से दिखाएं। हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अबू सुफ़ियान को इस्लामी लश्कर का मंज़र दिखाया तो उन्होंने कहा कि आज तक मैंने इतना बड़ा लश्कर नहीं देखा और न ही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कि वह किस शान से आ रहे हैं। इसके में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम परचमे इस्लाम अपने दस्ते मुबारक में लिए साथ पैग़म्बराना जाह व जलाल के साथ नमूदार हुए फिर फ़ातेहाना शान व शौकत के साथा मक्का मुकर्रमा की हुदूद में दाख़िल हुए और हुक्म दिया मेरा अलम मक़ामे हजून में गाड़ा जाए और हज़रत अब्बास रज़ि अल्लहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह फ़ौजों के साथ बालाई हिस्से की तरफ़ से मक्का में दाख़िल हों। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी ऊंटनी क़ुसवा पर सवार थे साथ में आपके नवासे अली बिन अल–आस भी थे।

ऐलाने नुबुव्वत :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी नाक़ा क़ुसवा पर सवार अपने नवासे हज़रत सैयदना अली बिन अबुल–आस जो आपकी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब के बेटे थे अपने साथ अपनी ऊंटनी पर सवार करके मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए। २० रमज़ानुल–मुबारक ८/११ जनवरी ६३० ई० में पुर अमन तरीक़े से दाख़िल होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू सुफ़ियान ही के ज़रिए एलान कराया कि जो शख़्स मस्जिदे हराम या अपने घर में चाहे वह अबू सुफ़ियान के घर में हो हथियार डाल दे उसे अमान दी जाएगी। फिर आप ख़ान–ए–काबा के अन्दर दाख़िल हुए आपने दस्ते मुबारक से तमाम बुतों को गिराया जो बुत दीवार में नसब थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने नवासे हज़रत अली बिन अबुल–आस को अपने कांधे पर सवार करके उनके हाथों तमाम बुतों को गिराया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन बुतों को ठोकर मारते जाते थे और कहते जाते थे कि **जा–अल–हक़ व ज़हक़ल–बातिल इन्नल–बातिला कान ज़हूक़ा।** हक़ आ गया और बातिल चला गया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ऊंटनी पर बैठ कर ही तवाफ़ फ़रमाया तक्मीले तवाफ़ के बाद हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुला कर उन से ख़ान–ए–काबा की कुंजियां लेकर दरवाज़ा खोला गया अन्दर दाख़िल हुए तो देखा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तस्वीरें थीं उनके हाथ में फालनामे के तीर थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम तस्वीरें मिटा दीं।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्दर दाख़िल हुए और ख़ान–ए–काबा के अन्दर तमाम गोशों में तक्बीर पढ़ी फिर दो रकअत नमाज़ अदा की फिर बाहर तशरीफ़ लाए। कुरैश मस्जिदे हराम में सफें बांधे खड़े थे। उन्हें इंतिज़ार था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या करेंगे? आपने उन से मुख़ातब हो कर फरमाया। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपना वादा पूरा कर दिखाया फिर आपने फ़रमाया ऐ कुरैशियों तुम्हारा क्या ख़्याल है मैं तुम्हारे साथ क्या सुलूक करने वाला हूं? इस सवाल पर सबके चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं और ख़ौफ व दहशत से घबराहट तारी हो गई। आपने फरमाया आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कोई सरज़िश नहीं जाओ तुम में आज़ाद हो। यह खुशख़बरी सुन कर तमाम अह्ले कुरैश ने एक साथ नारा बुलन्द किया। **ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह**। इस नारे से हरमे काबा के तमाम दर व दीवार पर अनवारे इलाही की बारिश होने लगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाहे ज़मज़म पर तशरीफ़ ले गये वहां आपने ज़मज़म नोश फरमाया फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से हज़रत बिलाल ने काबतुल्लाह की छत पर चढ़ कर अज़ान दी। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान बिन तलहा से बैतुल्लाह की कुंजियां लेकर अन्दर जा कर दो रकअत नमाज़ अदा की फिर तवाफ़े काबा फरमाया।

इस फतहे मुबीन के मौक़े पर सूरः नस्र **(इज़ा जा नसरुल्लाहि)** नाज़िल हुई। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस्मान बिन तलहा को काबतुल्लाह की चाबियां देकर फरमाया यह कुंजियां अब हमेशा तुम्हारे क़ब्ज़े में रहेंगी। उसके बाद आपने अपनी चचाज़ाद बहन उम्मे हानी बिन्ते अबू तालिब के मकान में आराम फरमाया। आपनें दूसरे दिन भी खुतबा दिया जिस में किसी जानदार का ख़ून बहाना जानवरों को मारना, शिकार करना दरख़्त काटना किसी क़िस्म की जंग व जिदाल करना हराम क़रार दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक़रीबन सत्तरह, अट्ठारह दिन मक्का मुकर्रमा में क़याम फरमाया। इस दौरान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक पर बैअत के लिए लोग जूक़ दर जूक़ आने लगे और हल्क़ा बगोश इस्लाम होने लगे उनमें ख़ुसूसन वह नामवर हस्तियां थीं जिन्होंने इस्लाम कुबूल करने से पहले इस्लाम को ईज़ा पहुंचाने में अहम रोल अदा किया था जिन में हज़रत कअब बिन ज़ुबैर। हिन्दा बिन्ते उतबा

जो अबू सुफ़ियान की बीवी थी जिसने हज़रत हम्ज़ा का कलेजा निकाल कर चबाया था और उनके नाक कान काट कर आंखें निकाल कर धागे में पिरो कर अपने गले में हार बना कर पहना था। वह वहशी जिस ने हिन्द के इशारे से जंगे उहद में हज़रत हम्ज़ा को शहीद किया था। इस्लाम कुबूल करने के बाद उन्होंने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के दौरे ख़िलाफ़त में मुस्लमतुल–कज़्ज़ाब जिसने नुबुव्वत का दावा किया था उसे क़त्ल किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नवाही इलाक़ों में सराया के ज़रिये तमाम बुतों का सफाया करवाया।

जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फत्हे मक्का की तक्मील कर चुके हालांकि यही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़ामे पैदाइश और वतन है तो अंसार ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपने अपनी सरज़मीन अपना शहर फतह किया तो आप क्या यहीं क़्याम फरमाएंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ख़ुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी मौत है अब मेरी ज़िन्दगी व मौत तुम्हारे साथ है।

जब अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह और मुसलमानों को फतह अता फरमा दी। तो अह्ले मक्का पर वाजिब हो गया कि अब इस्लाम के सिवा कोई चारा नहीं। इसलिए वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ बैअ़त लेने जमा हो गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कोहे सफ़ा पर बैठ कर लोगों से बैअ़त लेनी शुरू की और नीचे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब लोगों से अह्द व पैमान ले रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुनादी कराई कि जो शख़्स अल्लाह और रसूल और आख़िरत पर यक़ीन रखता हो वह अपने घर में कोई बुत न रखे और सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करे।

सराया और वफ़ूद :

फतहे मक्का के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 25 रमज़ानुल–मुबारक ८ हिज० में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की सरकरदगी में उज़्ज़ा बुत के इंहिदाम के लिए सरीया रवाना किया। उज़्ज़ा नख़्ला में बहुत बड़ा बुत था जिसकी बनी कनाना के लोग पूजा करते थे। जो एक नंगी काली परागन्दा सर चेहरे वाली औरत की शक्ल में था आपने उसके दो टुकड़े कर दिए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सअद

बिन ज़ैद शिबली को बीस सवार देकर मुनात की जानिब रवाना किया। जहां–जहां औस व ख़ज़रज का बुत था जब हज़रत ने उसे ढाना चाहा तो उसमें से एक औरत इसी तरह बरहना परागन्दा सर निकली और अपना सीना पीट–पीट कर चिल्लाने लगी आपने उसी औरत के और उस बुत के दो–दो टुकड़े कर दिए इस तरह यके बाद दीगरे तमाम क़बाइली इलाक़ों में मुख़्तलिफ़ सराया के ज़रिया तमाम अरबिस्तान में बुतों का सफ़ाया हो गया। फतहे मक्का के बाद अब किसी में इतनी सकत न थी कि मुसलमानों का मुक़ाबला करे।

ग़ज़्व–ए–हुनैन :

इसके बावजूद चन्द अड़ियल क़बाइल को अपनी ख़ुदी और इज़्ज़ते नफ़्स के ख़िलाफ़ यह बात नागवार गुज़री, इसलिए उन्होंने मालिक बिन औफ़ नसरी के पास जमा हो कर तय किया कि सब मिल कर मुसलमानों पर अचानक हमला करें। इस फ़ैसले पर अमल करने के लिए उन्होंने जंगी तैयारी शुरू कर दी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी तैयारी शुरू की। उधर दुश्मन की फौज आगे बढ़ी और औतास में अपना पड़ाव डाला उधर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी छेः शव्वाल को उनकी सरकूबी के लिए बारह हज़ार फौज लेकर मक्का से हुनैन की तरफ़ रवाना हुए। दस शव्वाल को हुनैन पहुंचे लेकिन दुश्मन की फौज ने अचानक तीरों की बारिश कर दी। इस अचानक हमले से मुसलमान संभल न सके और उनमें भगदड़ मच गई। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पुकारा! लोगो! मेरी तरफ़ आओ मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद हूं उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ चन्द मुहाजेरीन और अह्ले ख़ानदान के लोग थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास जिनकी आवाज़ बुलन्द थी हुक्म दिया कि तमाम सहाबा को पुकारें तब आपने सहाबा को आवाज़ दी तमाम सहाबा एक जगह जमा हो गये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुट्ठी भर मिट्टी दुश्मन की जानिब फेंकी जिस से तमाम लश्करे कुफ़्फ़ार की आंख में मिट्टी चली गई और उन्हें कुछ दिखाई न दिया तब मुसलमान ने उन पर हमला करके उन्हें शिकस्त दी।

ग़ज़्व–ए–तायफ़ :

जंगे हुनैन से वापस मदीना आते ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तायफ़ के लिए हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को एक हज़ार लश्कर के साथ रवाना किया फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद भी तायफ़ का सफर शुरू किया। और तायफ़ पहुंच कर क़िला तायफ़ का मुहासरा किया दौराने मुहासरा दोनों जानिब से तीरों की बारिश होने लगी जब काफी दिन हो गये जिसमें मुसलमान भी शहीद होते रहे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि अंगूर के दरख़्त काट कर जलाए जाएं। तब महसूर लोगों ने कहा कि आप अल्लाह के और क़राबतदारों के वास्ते दरख़्त न काटें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुनादी कराई कि जो गुलाम क़िला से निकल कर हमारे पास आए उसे आज़ाद कर दिया जाएगा इस एलान से बहुत से गुलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह में आए जब मुहासरा तूल पड़ने लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुहासरा उठा लिया यह जंग बग़ैर फ़ैसले के ख़त्म हो गई।

ग़ज़्व–ए–तबूक :

रबीउल–अव्वल ६ हिज० में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की मातहती में एक सौ पचास मुजाहिदीन को क़बील–ए–तय के बुत ख़ानों को नीस्त व नाबूद करने के लिए रवाना किया हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने वहां के तमाम बुत ख़ानों को तोड़ कर माले ग़नीमत लेकर चन्द क़ैदियों को जिन में हातिम ताई की बेटी थी थी उन सबको मदीना मुनव्वरा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में हाज़िर किया। हातिम ताई की बेटी ने कहा मेरा बाप निहायत सख़ी था। मैं ज़ईफ़ा हूं मेरा एक भाई अदी बिन हातिम भी मुल्क शाम चला गया और मैं अकेली हूं। आप मेहरबानी फरमा कर मुझे छोड़ दीजिए। खुदा आप पर एहसान करेगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे छोड़ दिया और सफर के लिए एक ऊंट और रक़म भी देकर रुख़्सत किया। बाद में दोनों बहन भाई ने इस्लाम क़ुबूल किया।

६ हिज० में मदीना मुनव्वरा में सख़्त क़हत पड़ा। ऐसे में क़ैसर हेरक़्ल ने मदीना पर चढ़ाई की ग़रज़ कि मुल्के शाम में फौज इकट्ठा करनी शुरू की। इसलिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना दिफ़ा करना ज़रूरी था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को सूरतेहाल

से आगाह करके चन्दा जमा करना शुरू किया। तमाम सहाब-ए-किराम ने दिल खोल कर चन्दा अदा किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से पूछा कि आप लोगों ने अपने लिए क्या छोड़ा तमाम सहाबा ने अपना-अपना माल घर के लिए छोड़ा हुआ बताया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु से पूछा तो आपने कहा या रसूलुल्लाह मैं अपने घर का तमाम असासा ले आया और घर के लिए अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया। हेरक्ल को उसकी ख़बर हुई तो उसे अपनी शिकस्त का यक़ीन हो गया। इसलिए उसने बेग़ैर चूं चरा के जिज़्या देना कुबूल किया। जंगे तबूक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आख़िरी जंग थी।

जंगे तबूक से वापसी के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ६ हिज० ज़िल-क़अ्दा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को तीन सौ मुसलमानों के क़ाफ़िले का अमीर बना कर हज के लिए रवाना किया। और हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु को नक़ीबे इस्लाम बना कर अपनी तरफ़ से कुरबानी के लिए बीस ऊंट भी रवाना किए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने हरमे काबा मिना, अरफ़ात में ख़ुत्बा दिया और हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने सूरः बराअत की आयतें पढ़ कर सुनाई और ऐलान किया कि अब कोई मुश्रिक ख़ाना काबा में दाख़िल न होगा। कोई बरहना तवाफ़ नहीं करेगा। इस दौरान बहुत से काफिर मुसलमान हुए। अब हर तरफ़ अमन व अमान था लोग जूक़ दर जूक़ वफूद की सूरत में आने लगे और इस्लाम के हल्क़े में दाख़िल होने लगे। इस दर्मियान हबशा के बादशाह अस्महा का इंतिक़ाल हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसकी ख़बर हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में उसकी ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। इस दौरान तमाम अतराफ़ व अक्नाफ़ में तबलीग़े इस्लाम के लिए मुजाहिदीन को मुक़र्रर फ़रमाया और जिज़या वसूल किया जाने लगा।

हुज्जतुल-वेदाअ् १० हिज० २५ ज़िल-क़अ्दा :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे बड़ा अहम वाक़या हुज्जतुल-वेदाअ है यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैयबा का सबसे पहला और आख़िरी हज था १० हिज० ज़िल-क़अ्दा आख़िरी जुमेरात को आप गुस्ल फरमा कर मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए साथ में तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात भी थीं। मदीना से छेः मील दूर

ज़ुल–हलीफ़ा पहुंच कर रात भर क़्याम फरमाया। फिर वहां गुस्ल करके एहराम बांध कर दो रकअत नमाज़ अदा फरमाई और अपनी ऊंटनी कुसवा पर सवार हो कर बुलन्द आवाज़ से लब्बैक कहते हुए चले। उस वक़्त आपके साथ तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार मुसलमान थे। चार ज़िल–हिज्जा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए। और चाश्त के वक़्त मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए जब ख़ान–ए–काबा पर नज़र पड़ी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई। फिर हजरे अस्वद को बोसा दिया। फिर तवाफ़ के सात फेरे किए फिर सफ़ा व मरवा की सई फरमाई। फिर जुमा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिना पहुंचे वहां ज़ुहर, अस्र, मग़्रिब और इशा पढ़ कर आराम फरमाया। और फज्र पढ़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरफ़ात पहुंचे। वहां पहुंच कर आप ख़ेमा में आए और वहां ख़ुतबा दिया और उसमें आपने अहकामे इस्लाम की बहुत सारी बातें बता कर जाहिलीयत के तमाम रस्मों को मिटाते हुए और ख़ानदानी तफ़ाख़ुर, रंग, नस्ल और ऊंच नीच का ख़ात्मा करके मसावात का अलम बुलन्द फरमाते हुए फरमाया, दौरे जाहिलीयत के तमाम दस्तूर मेरे क़दमों तले पामाल हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुसलमान भाई का ख़ून हराम क़रार दिया और लोगों से पूछा तुम से ख़ुदा के यहां मेरी निस्बत पूछा जाए तो क्या जवाब दोगे। तमाम सामईन ने एक ज़बान हो कर कहा कि आपने ख़ुदा का पैग़ाम हम तक पहुंचा दिया और रिसालत का हक़ अदा कर दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आसमान की तरफ़ उंगली उठा कर तीन बार फरमाया ऐ अल्लाह तू गवाह रहना। ऐन उसी ख़ुतबे के वक़्त आप पर अल–यौमा अक्मलतु लकुम दीनुकुम। की आयत नाज़िल हुई यानी मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम्हारे दीन इस्लाम को पसन्द किया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिना में भी ख़ुतबा दिया। आपने मिना में सौ ऊंटों की कुरबानी फरमाई। कुरबानी के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सर के बाल उतरवाए कुछ हिस्सा अबू तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु अन्सारी को और बाक़ी मूए मुबारक मुसलमानों में तक़्सीम करने का हुक्म फरमाया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का तशरीफ़ लाए और तवाफ़े ज़्यारत फरमाया। तवाफ़े वेदाअ़ के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंसार

व मुहाजिरीन के साथ मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हो गये। रास्ते में मक़ामे ग़दीर ग़म में एक ख़ुतबा दिया और फरमाया मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं। एक अल्लाह तआला की किताब और दूसरी चीज़ मेरे अह्ले बैत। और यह भी फरमाया कि जिसका मैं मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु उसके मौला जो अली से मुहब्बत रखे ऐ ख़ुदा वन्दा तू भी उस से मुहब्बत रख। और जो अली से अदावत रखे। तू भी उस से अदावत रख इस तरह का ख़ुतबा अदा फरमाकर कि मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हुए। रास्ते में जुल–हलीफ़ा में रात बसर करके सुबह मदीना मुनव्वरा पहुंचे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैयबा का यह पहला और आख़िर जुमा था आपने सिर्फ़ एक हज्जे बैतुल्लाह का शर्फ़ हासिल किया था।

सरीया उसामा २६ सफर ११ हिज० :

सरीया मौता के दौरान हज़रत ज़ैद बिन हारसा वग़ैरह सहाब–ए–किराम शहीद हुए थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी की जवाबी कार्रवाई के लिए उसामा बिन ज़ैद को अमीरे लश्कर बना कर मौता पर फौजकुशी का हुक्म दिया। हज़रत उसामा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रुख़्सत हो कर १२ रबीउल–अव्वल ११ हिज० को कूच करने वाले थे कि ख़बर मिली कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नेज़अ् की हालत में हैं। तो आप रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु अबू उबैदा बिन जर्राह वग़ैरह भी लश्कर छोड़ कर आ गये। देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सकरात की हालत में हैं। उसी दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुनिया से पर्दा फरमाया। लेकिन जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ मसनदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफरोज़ हुए तो आपने बावजूद लोगों की मुख़ालिफ़त के हज़रत उसामा को रबीउल–अव्वल के आख़िर में रवाना किया हज़रत उसामा लश्करे इस्लाम की फतहयाबी के बाद बहुत सारा माले ग़नीमत लेकर चालीस दिन बाद मदीना मुनव्वरा वापस आए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अलालत (बरोज़ पीर १२ रबीउल–अव्वल ११ हिज० ७ जून ६३२ ई०) :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरदारे दो आलम ख़ातमुन्नबीयीन का दुनिया के लिए रहमत बन कर तशरीफ़ लाना इसलिए था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम और

दीने इस्लाम के अहकाम उसके बन्दों तक पहुंचाएं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर आए और उन्होंने अपने-अपने दौर में अज़ीमुश्शान कारनामे अंजाम दिए। ताहम इन तमाम पैग़म्बरों के तबलीग़ी कारनामों को जमा किया जाए तो वह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबलीग़ी शाहकारों में ऐसे नज़र आएंगे जैसे "आफताबे आलम के मुक़ाबले में चिराग़" एक बहरे बेकरां के मुक़ाबले में एक क़तरा। और सहरा के मुक़ाबले में ज़र्रह। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबलीग़ ने आलम में एक इंक़लाब बरपा कर दिया और दीने हनीफ़ को मुकम्मल तौर पर क़्यामत तक महफूज़ कर दिया। जब दीने इस्लाम मुकम्मल हो चुका तो अल्लाह तआला के वादे का हुक्म आ गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत पहले ही अपने वेसाल की ख़बर का इल्म था। मुख़्तलिफ़ मवाक़े पर लोगों को ख़बर भी दे दी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी वेसाल का क़ब्ल अज़ वक़्त इल्म हो गया था और क्यों न होता अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **मा काना वमा यकूनू** का इल्म अता फरमाया। यानी जो कुछ हो चुका जो हो रहा है जो होने वाला है तमाम इल्म से आपको दुनिया से पर्दा फरमाने से क़ब्ल ही आगाह कर दिया गया था।

२२ सफर ११ हिज० को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जन्नतुल-बक़ीअ़ में आधी रात के वक़्त तशरीफ़ ले गये। वहां से तशरीफ़ लाए तो मिज़ाजे अक़्दस नासाज़ हो गयां २१ शंबा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अलालत बढ़ गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश पर तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात की इजाज़त से आपने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के हुजरे में क़्याम फरमाया। जब तक ताक़त रही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में जाकर नमाज़ पढ़ाते जब कमज़ोरी बढ़ गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुसल्ले पर इमामत करें। चुनांचे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने सतरह नमाज़ें पढ़ाईं। एक दिन ज़ुहर की नमाज़ के वक़्त इफ़ाक़ा हुआ तो हुक्म दिया कि सात पानी की मशकें मेरे ऊपर डाली जाएं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुस्ल फरमा चुके तो हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अली का बाज़ू थाम कर मस्जिदे

नबवी में तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ा रहे थे आहट पाकर पीछे हटने लगे। मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशारे से रोका और उनके पहलू में बैठ कर नमाज़ पढ़ाई। घर तशरीफ़ ला कर हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा से फरमाया घर में सात दीनार हैं वह लाओ ताकि उन दीनार को ख़ुदा की राह में ख़र्च करूं। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के ज़रिए तमाम दीनार तक़्सीम करा दिए गये। घर में तरेका में कुछ न छोड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरज़ में कमी व बेशी होती रही थी दोशंबा को वेसाल के दिन तबीअत ज़रा संभली हुजरा जो मस्जिद से मुत्तसिल था आपने पर्दा उठा कर देखा तो लोग फज्र की नमाज़ अदा कर रहे थे देख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कुराए। लोगों ने समझा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में आना चाहते हैं मारे ख़ुशी के लोग बेक़ाबू हो गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें रोका और पर्दा गिरा दिया। यह सब का आख़िरी जमाले नुबुव्वत का दीदार था।

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु का बयान है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहरा ऐसा मालूम होता था गोया कुरआने करीम का वर्क़ हो। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बार–बार लम्बी ग़शी के दौरे पड़ने लगे। हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा की ज़बान से शिद्दते ग़म से अल्फ़ाज़ निकल पड़े : हाए मेरे अब्बा जान की बेचैनी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़बाने मुबारक से फरमाया। ऐ बेटी तुम्हारा बाप आज के बाद कभी बेचैन न होगा।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। पैग़म्बरों को अख़्तियार दिया जाता है कि वह विसाल कुबूल करें या हयात हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं मैंने जब ही समझ लिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरत क़बूल कर ली।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दुनिया से तशरीफ़ ले जाना :

वेसाल से थोड़ी देर पहले हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के भाई अब्दुर्रहमान रज़ि अल्लाहु अन्हु ताज़ा मिस्वाक हाथ में लिए आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी जानिब नज़र भर कर देखा। हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने समझा मिस्वाक की ख़्वाहिश है।

उन्होंने फ़ौरन मिस्वाक लेकर अपने दांतों से नर्म की और आपके दस्ते मुबारक से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दांतों में फेरा।

सेह पहर का वक़्त था। सीन–ए–मुबारक में सांस की घड़ घड़ाहट होने लगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लब हाए मुबारक हिलने लगे। लोगों ने कान लगा कर यह अल्फ़ाज़ सुनी। **अस्सलातु वमा ख़लकत ऐमानुकुम।** यानी नमाज़, गुलाम और लौंडियों का ख़्याल रखो।

इस मरज़े वेसाल में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा को बुला कर चुपके से कान में कुछ कहा तो वह रो पड़ीं फिर बुलाया और फिर कान में कहा तो वह हंस पड़ीं। जब अज़्वाजे मुतह्हरात ने हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा से पूछा तो उन्होंने कहा जब अब्बा जान ने फरमाया कि मेरा इसी मरज़ में वेसाल होगा तो मैं रो पड़ी। दूसरी मरतबा कहा मेरे बाद घर वालों में सबसे पहले तुम ही आकर मिलोगी। यह सुन कर मैं हंस पड़ी। पास में पानी की लगन थी उसमें बार–बार दस्ते मुबारक डालते और अपने चेहर–ए–अनवर पर मलते कभी कलिमा पढ़ कर चादर अपने मुंह पर डालते कभी हटा देते।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के सीन–ए–मुबारक से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सरे अक़्दस लगा हुआ था इतने में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाथ उठा कर उंगली से इशारा करके तीन मरतबा फरमाया : **बल अर्रफ़ीक़ुल–आला।** (अब कोई नहीं वह बड़ा रफ़ीक़ है) नागहां दस्ते मुबारक लटक गये आंखें छत की तरफ़ देखते हुए रूहे मुक़द्दस आलमे बाला में परवाज़ कर गई। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

वेसाल का असर :

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वेसाल की ख़बर आनन फानन मदीना मुनव्वरा पहुंची। जिसने सुना वह सकते में आ गया। तमाम अह्ले बैत व सहाबा किराम शमए नुबुव्वत के परवाने जो हमा वक़्त जमाले रिसालत के दीदार से अपने जिस्म रूह को ठण्डक पहुंचाते आज वही सबका हामी मददगार उन से छूट गया था। तमाम सहाब–ए–किराम बदहवास हो चुके थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनस के दिल पर ऐसा असर हुआ कि हरकते क़ल्ब बन्द हो गई। इधर हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु तल्वार लिए फिर रहे थे कि अगर किसी ने कहा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वफ़ात पा गये तो मैं उसकी गर्दन

उड़ा दूंगा। उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु मसख़ के मक़ाम पर गये हुए थे। (मसख़ एक मक़ाम है जो मदीना से एक मील दूर है।) उनकी बीवी हज़रत हबीबा बिन्ते ख़ारजा वहां थीं और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु भी वहां गये हुए थे, चूंकि सुबह को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीअत में सुधार नज़र आ रहा था इसलिए ख़ुद हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें जाने की इजाज़त दी थी। जब आप तक ख़बर पहुंची फ़ौरन वहां से निकल कर हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के हुजरे में गये। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहर–ए–अनवर से चादर हटा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आंखों को बोसा दिया और कहा अल्लाह तआला आप पर दो मौतों को जमा नहीं सकता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ाहिरी मौत पाई। उसके बाद मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु बैठने के लिए कहा और लोगों से मुख़ातब हो कर ख़ुतबा दिया कि जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की परस्तिश करता था वह जान ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हो चुका और जो ख़ुदा की इबादत करता था वह जान ले कि अल्लाह तआला ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी। फिर आपने सूरः आले इमरान की एक आयत तिलावत फरमाई। जिसका ख़ुलासा यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो एक रसूल है उन से पहले बहुत से रसूल हो चुके अगर वह इंतिक़ाल कर जाए तो तुम उलटे फिर जाओगे। उसमें अल्लाह तआला का कुछ नुक़सान नहीं अल्लाह तआला शुक्र करने वालों को सवाब देगा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के इस ख़िताब से लोगों के ज़ेहनों से पर्दा उठा गया।

तज्हीज़ व तक्फ़ीन :

चूंकि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वसीयत की थी कि मेरी तज्हीज़ व तक्फ़ीन मेरे अह्ले बैत ही करेंगे। और अंबिया की क़ब्र वहीं होती है जहां उनकी रूह क़ब्ज़ होती है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तज्हीज़ व तक्फ़ीन अह्ले ख़ानदान ने अंजाम दी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुजर–ए–मुबारक में लेटाने का इंतिज़ाम किया हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत क़शम बिन अब्बास, हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उसामा बिन ज़ैद ने गुस्ल दिया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन मरतबा पाक व साफ़ पानी

से बेरी के पत्ते और काफ़ूर डाल कर सात मश्कीज़े से पानी दिया गया। बैयर के कुएं का पानी इस्तेमाल किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन कपड़ों का कफ़न पहनाया गया जिनमें दो सफ़ेद कपड़े और एक यमनी चादर थी।

नमाज़े जनाज़ा :

एक मरतबा लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया सबसे पहले नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ेगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बातिनी तौर पर तो सबसे पहले मेरा रब नमाज़े जनाज़ा पढ़ेगा। उसके बाद मेरे दोस्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम। फिर उनके बाद मीकाईल और उनके बाद हज़रत इज़्राईल फिर हज़रत इस्राफील उनके बाद दीगर फ़रिश्ते और ज़ाहिरी तौर पर सबसे पहले मेरे अह्ले बैत फिर सहाबा किराम।

जब जनाज़ा तैयार हुआ तो लोग नमाज़ के लिए टूट पड़े पहले अह्ले बैत फिर सहाबा किराम फिर बूढ़ों ने फिर औरतों ने फिर बच्चों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। जनाज़–ए–मुबारक हज़रत आइशा सिदीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के हुजर–ए–मुक़द्दस में रखा गया था। इसलिए थोड़े–थोड़े लोग अन्दर जा कर नमाज़ अदा करते कोई इमाम न था। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद मौत व हयात में सबके इमाम हैं।

क़ब्रे अनवर शरीफ़ :

हज़रत अबू तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने क़ब्र तैयार की फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अतहर को हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु और क़शम बिन अब्बास ने क़ब्रे अक़्दस में उतारा।

हज़रत क़शम बिन अब्बास आख़िरी सहाबी थे जिन्होंने आख़िरी बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहर–ए–अनवर का दीदार किया। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लब हाए मुबारक जुंबिश फरमा रहे थे आपने कान लगा कर सुना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रब्बे हबली उम्मती रब्बे हबली उम्मती कह रहे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अक़्दस के नीचे बहरीन की मख़्मली चादर थी जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फतहे ख़ैबर के वक़्त शक़रान ने दी थी। उनकी वसीयत पर कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उसे न कोई ओढ़े और न बिछाए। उसी पर आपको लिटाया गया। आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अनवर कच्ची ईंट से बनाई गई उसके बाद लहद पर मिट्टी डाल कर ढक दिया गया। और वहां सुर्ख संगरेज़े जमा दिए गये। क़ब्र शरीफ़ ज़मीन से एक बालिश्त ऊंची की गई थी हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हु ने क़ब्र अनवर पर मश्कीज़े से पानी का छिड़काव किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलू मुबारक में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु और उनके पहलू में हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु आराम फ़रमा रहे हैं तीसरी क़ब्र हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए तैयार है। जब आपका नुज़ूल होगा चालीस साल तक हुकूमत करके मदीना मुनव्वरा में इंतिक़ाल फ़रमाएंगे तब आप को वहां दफ़नाया जाएगा।

ख़साइल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

तमाम मुसलमानों का ईमान है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला ने अंबिया व मुरसलीन में बाज़ को बाज़ फ़ज़ीलत दी। हुज़ूरे अकरम सैयदुल—मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम अंबिया व मुरसलीन पर रिफ़अत फ़ौक़ियत और अज़्मत बख़्शी। कुरआने करीम में अल्लाह तआला ख़ुद यह इरशाद फ़रमाता है कि रसूलों में बाज़ को बाज़ पर फ़ौक़ियत बख़्शी। लेकिन हमारे आक़ा व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम अंबियाए किराम पर बुलन्द व अरफ़ा मक़ाम अता फ़रमाया हुज़ूर के चन्द ख़साइल यह है कुरआने करीम में इरशादे गिरामी है **वमा अरसलनाका इल्ला रहमतल—लिल—आलमीन।** ऐ महबूब हमने तुम्हें सारे जहां के लिए रहमत बना कर भेजा। जिसका मतलब है आप सिर्फ़ इंसानों के लिए नहीं बल्कि जिन्न, इंसान, फ़रिश्ते, तमाम हैवानात व जमादात, नबातात के लिए रहमत हैं। अल्लाह तबारक व तआला ने अपने कलाम पाक में वाज़ेह ऐलान कर दिया कि **अल—यौमा अक्मल्तु लकुम दीनुकुम।** यानी मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए मुकम्मल कर दिया। अब न कोई पैग़म्बर आएगा न कोई किताब नाज़िल होगी न कोई नया दीन होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आख़िरी पैग़म्बर हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आख़िरी किताब नाज़िल हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नुबुव्वत ख़त्म हो गई।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़बाने मुबारक से इरशाद फ़रमाया मुझे इख़्तिसारे कलाम बख़्शा गया यानी थोड़े लफ़्ज़ मगर मानी ज़्यादा। मेरी उम्मत मुख़्तसर की कि मेरी उम्मत को कम वक़्त के लिए रहना पड़ेगा। मेरी उम्मत की उमरें कम हैं कि दुनिया के मक्र व फ़्रेब से जल्द ख़ुलासी पाएं और गुनाह कम हों। मेरी उम्मत के नेक अमल कम

मगर अज्र ज़्यादा ज़मीन ता अर्श लाखों बरस की राह मेरे लिए ऐसी मुख़्तसर कर दी गई कि आनन फानन तमाम मक़ामात तफ़्सीलन मुलाहिज़ा फरमाना सब तीन साअत में हुआ। मुझ पर वह किताब नाज़िल की गई जिसमें गुज़िश्ता और आइन्दा चीज़ों का मुफ़स्सल रौशन बयान है।

मग़्रिब मश्रिक़ वसीअ़ दुनिया को मेरे सामने ऐसा मुख़्तसर करके पेश किया गया कि जो कुछ भी क़यामत तक होने वाला है उसे ऐसे देख रहा हूं जैसे अपनी हथेली पर देख रहा हूं। अगली उम्मतों पर जो आमाले शाक़ गुज़रते हैं मेरी उम्मत से उठा लिए गये। पचास के बजाए पांच वक़्त की नमाज़ कर दी गई। ज़कात में चौथे हिस्से के बजाए चालीसवां हिस्सा फर्ज़ कर दिया गया। बरोज़े हश्र तमाम उम्मतें एक वसीअ़ हम्वार मैदान में जमा होंगी। और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर तमाम अंबिया के पास तमाम उम्मतें अपनी–अपनी शफ़ाअत के लिए अर्ज़ करेंगी तमाम अंबियाए किराम फरमाएंगे आज नफ़्सा नफसी का आलम है। आख़िर कार सब जगह से मायूस हो कर मुसीबत के मारे सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर होंगे। और फिर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में सिफ़ारिश फरमा कर गुनहगारों को बख़्शवाएंगे। इस बात से साफ़ ज़ाहिर है कि अब जब कि हर जगह से साफ न का जवाब मिल जाएगा और सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही हैं जो सबकी सिफारिश फरमाएंगे उसमें अल्लाह तआला की मस्लहत है कि लोगों को बताना मक़्सूद होगा कि सिर्फ़ मेरा महबूब ही सबकी सिफ़ारिश करके सबको बख़्शवा सकता है सबको पता चले कि यह मंसबे रफीअ़ हुज़ूर ही की ख़ासियत है। उसके अलावा आपको जो मक़ाम रोज़े महशर अता होगा वह किसी नबी या रसूल को न होगा।

बरोज़े हश्र आप ही सबसे पहले क़ब्र से उठेंगे। आप ही सबसे पहले क़यामत का इफ़्तिताह फरमाएंगे। आप ही को सबसे पहले शफ़ाअत की इजाज़त मिलेगी। आपको एक झण्डा मरहमत होगा जिसको लेवाउल–हम्द कहते हैं उसी झण्डे तले आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आख़िर तक तमाम लोग होंगे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे आगे और तमाम मख़्लूक़ पीछे होगी। आप ही पुल सिरात पर से सबसे पहले अपनी उम्मत को लेकर गुज़रेंगे।

आप ही पेशवाए मुरसलीन ख़ातमुन्नबीयीन होंगे। तमाम अंबिया किसी एक क़ौम की तरफ़ से भेजे गये मगर आप तमाम मख़्लूक़ के लिए रसूल बना कर भेजे गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक़ामे महमूद

अता होगा कि तमाम मख़्लूक़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम्द व सताइश बयान करेंगे। आपके लिए सारी ज़मीन पाक कर दी गई। आपको जिस्म के साथ मेअ्राज हुई। अल्लाह तबारक व तआला ने मीसाक़ के दिन तमाम नबियों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने और मदद का वादा लिया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रहमतुल–लिल–आलमीन यानी तमाम जहां के लिए रहमत बना कर भेजा गया।

आपको हबीबुल्लाह का ख़िताब अता हुआ कि तमाम जहां अल्लाह की रज़ा चाहता है और अल्लाह तआला आपकी रज़ा का तालिब है। अल्लाह तबारक व तआला ने सबसे अव्वल हुज़ूर सरवरे आलम का नूर पैदा किया फ़िर इसी नूर से काइनात पैदा की। हुज़ूर न होते तो कुछ भी न होता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम मख़्लूक़ में खुद भी अफ़्ज़ल हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ानदान भी तमाम ख़ानदानों में अफ़्ज़ल है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बा सआदत के वक़्त बुत औंधे मुंह गिर पड़े और ऐसा नूर फैला कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा माजिदा ने मुल्के शाम के महल देखे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साया भी न था क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरापा नूर ही नूर थे और नूर का साया नहीं होता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर गर्मी में बादल साया करता दरख़्त का साया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ आ जाता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अतहर और आपके पसीने में मुश्क व ज़ाफ़रान से बढ़ कर खुशबू आती थी। जिस से रास्ते महक जाते थे। अल्लाह तआला ने आपको ज़मीन व आसमान (दोनों जहां) की कुंजियां अता की थीं। दुनिया व आख़िरत की हर नेमत आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के तुफ़ैल मिलती है और मिलती रहेगी। जहां अल्लाह तआला का ज़िक्र होता है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी ज़िक्र होता है। अल्लाह तआला के नाम के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी इस्मे गिरामी जोड़ा गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के महबूबे ख़ास हैं। तमाम मख़्लूक़ की ख़ूबियां आप ही की ज़ाते अक़्दस पर ख़त्म होती हैं। बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तोई क़िस्सा मुख़्तसर।

हुलिया मुबारक :

हज़रत इमाम हसन बिन अली ने अपने मामू हिन्द बिन अबी हाला से दरयाफ़्त फरमाया कि आप मेरे नाना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुलिया मुबारक बयान फरमाएं। उन्होंने फरमाया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चेहर–ए–अनवर चौदहवीं रात के चांद के मानिन्द रौशन और ऐसा चमकता था कि सूरज पर ग़ालिब आ जाता था। क़द म्याना और सरे मुबारक बड़ा था।

गैसू मुबारक (ज़ुल्फ़ मुअंबर) कानों तक दराज़ थे बल खाए हुए गोया **ला इलाहा इल्लल्लाह** नज़र आते। दाढ़ी अबरी हुई घनी थी। पेशानी चमकदार कुशादा थी, अबरू घनी, ख़मदार भरी हुई, भवें के दर्मियान एक रग थी जो गुस्से की हालत में उभर आती थी नैने चश्म हमेशा सुरमई नज़र आतीं। जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया।

पल्कें लम्बी–लम्बी और बड़ी–बड़ी आंखें थीं। आप बयक वक़्त चारों जानिब देखते थे। नाक बुलन्द ख़ूबसूरती की तरफ़ माइल थी। जिस पर नूर नुमायां था। रुख़्सार नर्म और हमवार थे। लब हाए मुबारक गुलाबी गुलाबी गुलाब की पंखुड़ियों की मानिन्द। दन्दाने मुबारक इतने चमकदार थे कि मुस्कुराने पर अन्धेरे में गिरी हुई सूई नज़र आए। गर्दन ऊंची ख़मदार सुराही की तरह। सद्र (सीना) फराख़ था सीने से नाफ तक बालों की लकीर थी एक तहरीर की तरह मालूम होती थी। गोश (कान) निहायत ख़ूबसूरत नींद की हालत में भी दूर की आवाज़ सुन लेते थे। ज़ुबान मुबारक निहायत पतली दर्मियानी लम्बी, लफ़्ज़ कुन की कुंजी, फसाहत व बलाग़त में बेमिसाल। दोश (कांधे) भरे हुए। कन्धे और सीने के दर्मियान उपरी हिस्से पर बाल थे। दस्ते मुबारक जिस में संग रेज़े भी कलिमा पढ़ते थे। पंजे दराज़ पीठ पर बाल और हथेलियां कुशादा। उंगलियां दराज़ जिसके एक इशारे पर चांद भी शक़ हो जाए। कफ़ेपा तल्वे गहरे थे। लुआबे दहन इतना शीरीं था कि एक क़तर भी अगर खारे पानी में डालें तो वह मीठा हो जाता था। ज़ख़्म पर लगाने से फौरन ज़ख़्म अच्छा हो जाता। पसीना इतना ख़ुशबूदार कि आला से आला इत्र हैच था। एक बार जो लगाए ताहयात उसके बदन में ख़ुशबू रहती थी। पुश्त पर मुहरे नुबुव्वत सब्त थी।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

छठा बाब

अज़्वाजे मुतह्हरात

(१) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हाः

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे पहली रफ़ीक़े हयात होने का शर्फ़ हासिल हुआ। यह ख़ानदाने क़ुरैश की निहायत बावक़ार ख़ातून थीं। वालिद का नाम ख़ुवैलिद था वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्ते ज़ाइदा था। उनकी शराफ़त और पाकदामनी की बिना पर अह्ले मक्का आपको ताहिरा के लक़ब से पुकारते। आपने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ व आदात से मुतअस्सिर हो कर निकाह का पैग़ाम भेजा। चुनांचे तमाम अह्ले क़ुरैश के मज्मा में आपका निकाह हुआ। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निहायत जांनिसार वफ़ा शिआर ज़ौजा थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी उन से बेपनाह मुहब्बत थी। जब तक ज़िन्दा रहीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूसरा निकाह नहीं किया।

औरतों में सबसे पहले आप ही ईमान लाईं और इस्लाम की ख़ातिर अपना ऐश व आराम जाह व जलाल क़ुरबान कर दिया। इब्तिदाए इस्लाम में जब कि हर तरफ़ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख़ालिफ़त का तूफ़ान उठा था उस वक़्त आप ही ने इस्तिक़लाल व इस्तिक़ामत के साथ मुक़ाबला किया। पहली वही के वक़्त भी आप ही ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी।

एक मरतबा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम दरबारे नुबुव्वत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके पास हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा बर्तन में खाना ले कर आ रही हैं। जब वह आपके पास आ जाएं तो उन से उनके रब का और मेरा सलाम कहना और उनको ख़ुशख़बरी सुना देना कि जन्नत में उनके लिए मोती का महल बना है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपकी वफ़ात के बाद और मुतअद्दिद निकाह किए लेकिन हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा की मुहब्बत आख़िरी उम्र तक दिल में क़ायम रही। आपकी वफ़ात के बाद जब भी हुज़ूर सरवरे

आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर कोई बकरी ज़बह हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजा की सहेलियों के यहां ज़रूर गोश्त भेजते। हिजरत से तीन बरस क़ब्ल पैंसठ ६५ बरस उम्र शरीफ़ में दस रमज़ानुल–मुबारक ६१९ ई० मक्का मुकर्रमा में इंतिक़ाल हुआ और वहीं के क़ब्रिस्तान (हुजून) जन्नतुल–मुअल्ला में खुद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्र में उतर कर अपने दस्ते मुबारक से दफ़न किया। चूंकि उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नहीं आया था। इसलिए आपकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी गई। हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा की वफ़ात के तीन दिन बाद आपके चचा अबू तालिब का भी इंतिक़ाल हुआ। इसलिए उस साल को आमुल–हुज़्न (ग़म का साल) कहा जाता है।

(२) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत सौदा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

उनको भी हमारे आक़ा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुक़द्दस बीवी होने का शर्फ़ हासिल हुआ। आपके वालिद का नाम "रफ़आ" और वालिदा का नाम शमूस बिन्ते अमर है। यह भी कुरैश ख़ानदान की नामवर और मुअज़्ज़ज़ ख़ातून थीं। यह पहले अपने चचा ज़ाद भाई मकरान बिन अमर से बयाही गई थी। इस्लाम की इब्तिदा में ही दोनों मियां बीवी मुसलमान हो चुके थे और कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म व सितम से तंग आकर हबशा को हिजरत कर चुके थे बाद में मदीना मुनव्वरा आ कर रहने लगे तो उनके शौहर का इंतिक़ाल हो गया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हज़रत ख़दीजतुल–कुबुरा रज़ि अल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल के बाद मग़मूम रहा करते थे। यह देख कर ख़ौला बिन्ते हकीम रज़ि अल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत सौदा से निकाह करने का मश्वरा दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ौला का मुख़्लिसाना मश्वरा क़ुबूल करके हज़रत सौदा रज़ि अल्लाहु अन्हा से निकाह फरमाया। २३ हिज० में आपका इंतिक़ाल हुआ मदीना मुनव्वरा जन्नतुल–बक़ीअ में मदफ़ून हैं।

(३) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

यह अमीरुल–मुमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु की साहबज़ादी हैं। आपकी वालिदा का नाम उम्मे रमान है। हिजरत से क़ब्ल माहे शव्वाल में आपका निकाह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुआ। लेकिन रुख़्सती हिजरत के बाद २ हिज० में मदीना

मुनव्वरा में हुई। यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेहद महबूबा और चहेती बीवी हैं। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उनके बारे में इरशाद है कि किसी बीवी के साथ लिहाफ़ में मेरे ऊपर वही नाज़िल नहीं हुई सिवाए हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के।

फ़िक़्ह व हदीस के उलूम में तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात में इतना ऊंचा दरजा है कि बड़े–बड़े जलीलुल–क़द्र सहाब–ए–किराम मसाइल पूछा करते थे इबादत व रियाज़त में भी आप बेमिसाल थीं। नफ़्ली रोज़े और सख़ावत के मुआमले में भी आप सबसे मुम्ताज़ थीं। ग़ज़व–ए–बनी मुतलक़ के मौक़ा पर वापसी में वाक़या उफ़ुक पेश आया। यानी आप पर झूठी तोहमत लगाई गई। हुज़ूर पाक को इस शर अंगेज़ तोहमत से सख़्त रंज पहुंचा गो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी पाक दामन बीवी पर पूरा भूरोसा था। मगर ख़ुद की बीवी होने की वजह से पाक दामनी एलान करना मुनासिब नहीं समझा और वही–ए–इलाही का इंतिज़ार करने लगे और फिर आप पर सूरः नूर की आयतें उतरीं, जिस में आपको उस तोहमत से बरी कर दिया गया। तब दुश्मनों के मुंह काले पड़ गये। उस वक़्त आपने भी निहायत सब्र व तहम्मुल का मुज़ाहरा किया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपको यक़ीन था कि उनके हक़ में बराअत की वही नाज़िल होगी और वैसा ही हुआ।

सतरह रमज़ानुल–मुबारक में ५७ हिज० या ५८ हिज० में इतिक़ाल हुआ। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल आप ही के हुजर–ए–मुबारक में हुआ और उसी जगह आपका रौज़ा मुबारक है ज़ाइरीन की बढ़ती हुई तादाद को देखते हुए। सऊदी हुकूमत ने मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ की ग़रज़ से तमाम हुजरों को मिला कर एक मस्जिदे नबवी की बुनियाद डाली। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत आइशा सिद्दीक़ा का निकाह से पहले की शबीह दिखाई गई थी कि यह आपकी ज़ौजा हैं। अल्लाह तआला ने उन्हीं के लिए सूरः बराअत नाज़िल फ़रमाई। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा का त्रिसठ साल की उम्र में विसाल हुआ।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमाए तो उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ अट्ठारह साल थी अड़तालीस साल आपने आलम बेयोगी में बसर किए। आप से दो हज़ार दो सौ दस हदीसें मरवी

है मदीना मुनव्वरा जन्नतुल–बक़ीअ़ में आपका मदफन है।

(४) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

हज़रत हफ़्सा के वालिद ख़लीफ़ा दोम उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु और वालिदा हज़रत ज़ैनब बिन्ते मतऊन हैं जो जलीलुल–क़द्र सहाबिया थीं। फ़क़ीहे इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर आपके हक़ीक़ी भाई थे। पहला निकाह हज़रत ख़नीस बिन ख़ुज़ाफ़ा से हुआ। अपने वालिदैन और शौहर के साथ मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुईं। लेकिन उनके शौहर जंगे बद्र में पा मर्दी से लड़ते हुए शहीद हो गये और आप बेवह हो गईं। अपनी लख़्ते जिगर हफ़्सा रज़ि अल्लाहु अन्हा को बेवह देख कर फारूके आज़म को उनके निकाहे सानी की फ़िक्र हुई। एक दिन फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से निकाह करने को कहा मगर सिद्दीक़े अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु ख़ामोश रहे। फिर हज़रत उस्मान ग़नी से भी ज़िक्र किया। लेकिन उन्होंने भी इंकार किया। हज़रत उमर फारूके आज़म ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हो कर तमाम माजरा बयान किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर हफ़्सा का निकाह ऐसे शख़्स से हो जो अबू बकर व उस्मान से बेहतर हो। यह गोया अपनी ज़ाते गिरामी की तरफ़ इशारा था। उमर फारूक़ की उस से बढ़ कर क्या खुश क़िस्मती हो सकती थी फौरन क़ुबूल कर लिया। और हज़रत हफ़्सा निकाह में आ गईं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपकी तालीम का ख़ास एहतमाम फरमाया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ हज़रत शिफ़ा बिन्ते अब्दुल्लाह ने आपको लिखना पढ़ना सिखाया। रसूले करीम ने क़ुरआने करीम के तमाम किताबत शुदह अज्ज़ा जमा करके हज़रत हफ़्सा के पास रखवाए थे। आप से साठ हदीसें मन्क़ूल हैं।

हज़रत हफ़्सा ने ४५ हिज. में मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई। उनके भाई अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु और भतीजों ने क़ब्र में उतारा।

(५) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

आप हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि अल्लाहु अन्हु की बेटी थीं। निहायत फ़ैयाज़, फ़राख़ दिल, फ़ुक़रा व मसाकीन की इम्दाद के लिए हर वक़्त कमर बस्ता रहतीं। भूखों को खाना खिलाती थीं, इन ही सिफ़ात की वजह से आपको उम्मुल मसाकीन का लक़ब मिला। आपके पहले शौहर अब्दुल्लाह बिन

जहश को जंगे उहद में शहीद होने से क़ब्ल उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि मैं इस जंग में शुजाअत से तेरी राह में लड़ते हुए शहीद हो जाऊं और मेरे मुक़ाबिल मेरी नाक, कान, काट डाले। ताकि जब मैं तुझ से मिलूं और तू मुझसे पूछे ऐ अब्दुल्लाह तेरे नाक कान क्यों काटे गये तो मैं अर्ज़ करूंगा तेरे और तेरे रसूल के लिए। ख़ुदा की बारगाह में उनकी दुआ क़बूल हुई और ग़ैबी इल्हाम ने खुशख़बरी दी और आप इस जोश ख़रोश से लड़े कि तल्वार के टुकड़े हो गये रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें एक खजूर की टहनी अता फरमाई। जिस से उन्होंने तल्वार का काम लिया और इस हालत में लड़ते–लड़ते शहीद हो गये। मुश्रकीन ने उनके नाक, कान काट कर धागे में पिरो कर गले में डाले इस तरह उनकी तमन्ना पूरी हुई। हज़रत अब्दुल्लाह की शहादत के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा से निकाह किया। उस वक़्त आपकी उम्र तक़रीबन तीस साल की थी।

सरवरे काइनात के अक़्द में आए हुए दो, तीन महीने ही गुज़रे थे कि आपका इंतिक़ाल हुआ। सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और अपने दस्ते मुबारक से जन्नतुल–बक़ीअ् में दफ़न फरमाया। हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा के बाद आपको यह शर्फ़ हासिल हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैयबा में वफ़ात पाई। दूसरी तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात का हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद विसाल हुआ।

(६) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

असली नाम हिन्द। कुन्नियत उम्मे सलमा वालिद का नाम हज़रत हुज़ैफ़ा और वालिदा का नाम आतिका था। उम्मे सलमा के वालिद निहायत दौलतमन्द और बेहद फ़ैयाज़ थे इन्हीं फ़ैयाज़ों की वजह से लोगों ने उन्हें ज़ादुर्राकिब लक़ब दे रखा था तमाम क़बाइल में इज़्ज़त की निगाह से देखे जाते थे उम्मे सलमा का पहला निकाह उनके चचाज़ाद भाई अबू सलमा बिन अब्दुल–असद से हुआ था। वह एक सालेह फ़ितरत थे। जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबलीग़े इस्लाम का आग़ाज़ किया तो आप अपने क़बीले की सख़्त मुख़ालिफ़त के बावजूद दौलते इस्लाम से बहरा याब हुए उन्हीं के साथ उम्मे सलमा भी मुशर्रफ़ बाइस्लाम हुईं दोनों मियां बीवी को साबिकून–अव्वलून शर्फ़ हासिल हुआ। दोनों मियां बीवी ने

हबशा हिजरत करने के बाद वापस मदीने की जानिब हिजरत करने का इरादा किया और जब यह दोनों मियां बीवी अपने बच्चे सलमा को लेकर निकले तो उम्मे सलमा के ख़ानदान वालों ने अबू सलमा से कहा तुम जा सकते लेकिन हमारी लड़की तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। यह कह कर उम्मे सलमा को ज़बरदस्ती अपने साथ ले गये मगर अबू सलमा के ख़ानदान वालों ने बच्चा छीन कर कहा कि अगर तुम उम्मे सलमा को उनके साथ नहीं भेजना चाहते तो हम भी अपने ख़ानदान के बच्चे को तुम्हारे पास नहीं रख सकते आख़िर अबू सलमा अपने बच्चे को छोड़ कर मदीना चले गये उम्मे सलमा बनू मुग़ीरा के पास सलमा (बच्चा) बनू अब्दुल–असद के पास तीनों अलाहिदा–अलाहिदा मक़ाम पर थे तीनों ही बाप, बेटा और बीवी दीने हक़ की ख़ातिर मुसीबतें झेल रहे थे हज़रत उम्मे सलमा शौहर और बच्चे की जुदाई के सदमा से रोज़ाना सुबह घर से निकल कर सारा दिन एक टीले पर बैठ कर गिरया व ज़ारी करती रहतीं। एक साल ऐसे ही गुज़र गया एक दिन बनू मुग़ीरह के एक साहिबे असर शख़्स ने उन्हें इस हाल में देखा तो रहम आ गया। उसने अपने क़बीला वालों से कहा यह लड़की हमारा ही ख़ून है आख़िर हम कब तक उसे शौहर और बच्चे से जुदा रखेंगे उसका लोगों के दिल पर असर हुआ और सबने उम्मे सलमा को मदीना जाने की इजाज़त दे दी और फिर क़बीला बनू असद ने भी बच्चे को मां के पास भेज दिया। फिर आप बच्चे को लेकर मदीना पहुंच गईं।

कुछ अरसा बाद हज़रत अबू सलमा ने जंगे उहद में निहायत दादे शुजाअत दी मगर उनका एक बाज़ू ज़हरीले तीर से ज़ख़्मी हो गया। इलाज से वक़्ती तौर पर सेहतयाब हुए लेकिन चन्द माह बाद उसी ज़ख़्म की वजह से आपका इंतिक़ाल हुआ।

जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू सलमा की वफ़ात पर उम्मे सलमा के पास गये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें तल्क़ीन की। ऐ उम्मे सलमा अबू सलमा के हक़ में दुआए मग़्फ़िरत मांगो खुदा तुम्हें अबू सलमा से बेहतर शौहर अता कर फरमाए। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा सोचा करतीं कि अबू सलमा से बेहतर कौन शौहर हो सकता है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपकी कसम्पुर्सी से मुतअस्सिर हुए और उन्होंने राहे हक़ में जो मुसीबतें उठाईं

थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसका बेहद पसन्द था। चुनांचे सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु के मारिफ़त से उम्मे सलमा को निकाह का पैग़ाम भेजा और उम्मे सलमा ने कुबूल कर लिया चार शव्वाल को रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आईं।

तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात में उम्मे सलमा वाक़–ए–करबला तक हयात थीं। आपको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने करबला की मिट्टी एक शीशी में दी जिसे आपके हुक्म से जिब्रील अलैहिस्सलाम ने करबला से मिट्टी ला कर दी थी कि जिस वक़्त यह मिट्टी लाल हो जाए समझो इमाम हुसैन शहीद हो गये। पस जिस वक़्त वह मिट्टी लाल हो गई आप समझ गईं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हो गये। हज़रत उम्मे सलमा अपने वालिद की तरह बेहद सख़ी थीं और दूसरों को भी सख़ावत की तल्क़ीन करतीं आपके दर से कोई साइल ख़ाली हाथ नहीं लौटता। अहादीस आपको कसरत से याद थीं। फ़ज़्ल व कमाल में हज़रत आइशा के बाद आप ही का दरजा माना जाता है। हज़रत उम्मे सलमा ने ६३ हिज० में ४८ साल की उम्र में इस दारेफानी से रिहलत फरमाई। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। जन्नतुल–बक़ीअ़ में मदफ़ून है।

(७) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा :

हज़रत ज़ैनब का नमा बर्रह था। सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका नाम बदल कर ज़ैनब रखा। कुन्नियत उम्मुल–हकम थी। वालिदा का नाम उमैया बिन्ते अब्दुल–मुत्तलिब था आप रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी ज़ाद बहन भी थी।

आपका पहला निकाह हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि अल्लाहु अन्हु से हुआ था। जब आपका निकाह हज़रत ज़ैद बिन हारसा से हो चुका तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अल्लाह तआला के तरफ़ से वही नाज़िल हुई कि हज़रत ज़ैनब आपके अज़्वाजे मुतह्हरात में शामिल होंगी अल्लाह तआला को यही मन्ज़ूर है। उसकी सूरत यह हुई कि हज़रत ज़ैद बिन हारसा और हज़रत ज़ैनब के दर्मियान मुवाफ़िक़त न हुई हज़रत ज़ैद बिन हारसा ने आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की कि ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा तेज़ बयानी अदमे इताअत और

अपने आपको बड़ी समझती हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों को समझाने की कोशिश की मगर आख़िर कार ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दी। और जब इद्दत गुज़र गई तो ख़ुद हज़रत ज़ैद बिन हारसा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ आपका पैग़ाम लेकर हज़रत ज़ैनब के पास और निहायत शर्म व अदब से उन्हें पैग़ाम सुनाया।

हज़रत ज़ैनब ने जवाब दिया मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं कह सकती जब तक अपने रब से मशवरा न कर लूं। यह कह कर वुज़ू किया और नमाज़ में दुआ की कि ऐ ख़ुदावन्द अगर तेरा महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ से निकाह करना चाहता है तो अगर मैं उनके क़ाबिल हूं तो मेरा निकाह उन से फरमा दे। इधर हुज़ूर पाक पर आयत उतरी "फिर ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई तो हम ने तुम्हारे निकाह में दे दी।" हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुश हो कर फरमाया कौन है जो हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हु को यह ख़ुशख़बरी सुनाए कि अल्लाह तआला ने उनका निकाह मेरे साथ कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ादिमा सलमा ने दौड़ कर उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाई। हज़रत ज़ैनब यह ख़ुशख़बरी सुन कर फौरन सज्दे में गिर गईं और जो ज़ेवरात पहने हुए थे सलमा को दे दिए। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद हज़रत ज़ैनब के घर गये। हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बिला ख़ुत्बा और बेग़ैर गवाह निकाह हो गया? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाया अल्लाह तआला ख़ुद निकाह करने वाला है और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम गवाह हैं।

हज़रत ज़ैनब तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात से फ़ख़रिया यह फरमाया करती तुम्हारा निकाह तो तुम्हारे वालिद ने किया मगर मेरा निकाह ख़ुद अल्लाह तआला ने सात आसमानों के ऊपर किया। आप स[illegible]ाहु अलैहि व सल्लम ने उस मौक़े पर एक शानदार वलीमा दिया [illegible]। [illegible]सी दूसरी ज़ौजा मुतह्हरा का न हुआ। हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा बड़ी फ़ज़ीलत की मालिक थीं। हुस्न व जमाल में सबसे मुम्ताज़ थीं उस पर तुर्र–ए–इम्तियाज़ यह कि आपकी फूफी ज़ाद बहन भी थीं। आप निहायत फ़ैयाज़ दिल थीं ख़ुद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपको

लम्बे हाथ वाली फ़रमाया करते। आप अपनी रोज़ी अपने दस्त व बाज़ू से पैदा करती थीं और फिर उसे राहे ख़ुदा में लुटा देती थीं। इसके अलावा आप बड़ी दीनदार, परहेज़गार थीं।

आपका विसाल २१ हिज० में ५३ साल की उम्र में हुआ हज़रत फ़ारूके आज़म ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। आप जन्नतुल–बक़ीअ् में मदफून हैं।

(८) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ि अल्लाहु अन्हा :

हज़रत जुवैरिया रज़ि अल्लाहु अन्हा का असली नाम बर्रह था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका नमा जुवैरिया रखा। बर्रह का मतलब है बदफ़ाल। आप ख़ानदाने बनी मुस्तलक़ की चश्म चिराग़ थीं। वालिद का नाम हारिस बिन ज़र्रार था। आपका पहला निकाह माफ़ेअ् बिन सफवान से हुआ था। आप ग़ज़व–ए–मरसीअ् में क़ैद हो कर माले ग़नीमत के तौर पर साबित बिन कैस के हिस्से में आई थीं। उन्होंने उसे आज़ाद करने के लिए चालीस दिरहम की मांग की। आपने बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं कलिमा शहादत पढ़ कर मुसलमान हुई हूं। हज़रत साबित ने ऐसी शर्त रखी जिसे मैं अदा नहीं कर सकती हुज़ूर मेरी एआनत फरमाए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं तुम्हें बेहतर रास्ता बताऊं। मैं तुम्हें माल अदा करके आज़ाद करके तुम से निकाह कर लूं। हज़रत जुवैरिया के लिए इससे बेहतर और क्या ख़ुशी हो सकती थी। आपने फौरन क़ुबूल कर लिया और फिर आप हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आई।

(९) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

आपका नाम रमला और कुन्नियत उम्मे हबीबा थी। वालिद अबू सुफ़ियान बिन हर्ब थे। वालिदा का नाम सफ़ीया बिन्ते अबिल–आस था जो हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की फूफी थीं। आप हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु की हमशीरा थीं। आपका पहला निकाह उबैदुल्लाह बिन जहश से हुआ था। इब्तिदा से ही दोनों मियाँ बीबी मुसलमान हो चुके थे। कुफ़्फ़ारे मक्का की ईज़ा रसानी की वजह से आपने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से मुल्क हबशा की तरफ़ हिजरत की। इसी ज़माने में आपको एक लड़की पैदा हुई जिनका नाम हबीबा रखा गया था इसी वजह से आपकी कुन्नियत उम्मे हबीबा मशहूर हो गई।

एक दिन आपने हबशा में ख़्वाब में अपने शौहर को बुरी शक्ल में देखा।

सुबह मालूम हुआ कि वह मुर्तद हो कर नसरानी हो गया। और कुफ्र की हालत में मौत आ गई। लेकिन आप इस्लाम पर कायम रहीं। एक दिन आपने ख़्वाब में देखा कि कोई आपको उम्मुल–मुमिनीन से ख़िताब कर रहा है। तब आपने उसकी ताबीर निकाली कि शहनशाहे कौनैन के साथ निकाह होगा और लोग उम्मुल–मुमिनीन के ख़िताब से पुकारेंगे। चुनांचे वैसा ही हुआ। जब इद्दत के दिन पूरे हुए तो हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपके पास निकाह का पैग़ाम भेजा और जब नज्जाशी हाकिमे हबशा ने जिस औरत के ज़रिया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पैगाम आपके पास भेजा तो आपने खुश हो कर पैगामबर को अपने दोनों हाथ के कंगन और पांव के कड़े नज़्र किए। जिल–हिज्जा ६ हिज० अप्रैल ६२८ हिज० में आपका निकाह हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खुद नज्जाशी ने करवाया और चार सौ दीनार अपनी तरफ़ से महर अदा किए। हाज़िरीने निकाह को खाना भी खिलाया। आपको इल्म व फ़ज़्ल में भी काफी दस्तर्स हासिल थी ६५ हदीसें आप से मन्कूल हैं।

आपका अख़्लाक़ी रुतबा बेहद बुलन्द था आपके वालिद अबू सुफियान बहालते कुफ़्र में आपके घर तशरीफ़ लाए। तो आपने उस बिस्तर को हटा दिया जिस पर हुज़ूर पाक के लिए बिछा हुआ था। अबू सुफ़ियान ने सबब पूछा आपने फरमाया यह ताहिर व पाक का बिस्तर है और तुम कुफ़्र और शिर्क की नजासत में आलूदा हो।

जब वक़्ते विसाल क़रीब आया तो आपने हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ि अल्लाहु अन्हा और उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा को अपने पास बुलाया और कहा हम एक शौहर की बीवियां हैं अगर मुझ से तुम्हारे मुतअल्लिक ज्यादती सरज़द हो गई हो तो मुआफ़ कर देना। दोनों ने कहा हमने मुआफ किया। अल्लाह तआला हमारी और तुम्हारी मग्फ़िरत फरमाए। यह सुन कर आप खुश हो गईं। आपने ४४ हि० में मदीना मुनव्वरा में इंतिक़ाल फरमाया जन्नतुल–बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं।

(१०) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत सफ़ीया बिन्ते हुयी बिन अख़्तब रज़ि अल्लाहु अन्हा :

हज़रत सफ़ीया बिन्ते हुयी रज़ि अल्लाहु अन्हा यहूदी नस्ल से थीं वालिदैन से ही आपको मन्सबे सआदत हासिल था। वालिद बनी नज़ीर के सरदार थे और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे और वालिदा

का नाम समवाल था जो बनी कुरैज़ा की बेटी थीं। आपका पहला निकाह सलाम बिन मुस्लिम से हुआ था जब सलाम ने आपको तलाक़ दी थी तो कना इब्ने अबी हक़ीक़ के निकाह में आईं जो ग़ज़्वा ख़ैबर में मारा गया था इस जंग में आपके भाई, वालिद और शौहर तीनों क़त्ल हो गये और ख़ुद भी गिरफ़्तार हुईं तो दहिया कलबी ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर एक कनीज़ की दर्ख़्वास्त पेश की। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : इनमें से जिसे चाहो इंतिख़ाब करो। उन्होंने हज़रत सफ़ीया को मुन्तख़ब किया। लेकिन उसी वक़्त एक सहाबी ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया वह हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह की सज़ा वार हैं। चुनांचे दहिया कलबी को दूसरी कनीज़ अता की गई। और हज़रत सफ़ीया को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज़ाद करके उन से निकाह कर लिया। एक दिन हज़रत सफीया अपने हुजरे में बैठीं थीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो आपने फौरन उठ खड़ी हुईं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बिस्तर पेश करके ख़ुद ज़मीन पर बैठ गईं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सफीया तुम्हारा बाप हमेशा अदावत रखता था तो आपने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह किसी को दूसरे के गुनाह में नहीं पकड़ा जाता। मतलब यह कि इसमें मेरा क्या कुसूर है। ख़ैबर से वापसी पर रुख़्सती हुई।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपसे फरमाया क्या तुम्हें मुझ से मुहब्बत व रग़बत है तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मैं काफिरा व मुश्रिका थी तब भी मैं आपकी तमन्ना किया करती थी। और अब जबकि अल्लाह तआला ने मुझे इस्लाम से मुशर्रफ़ फरमाया तो क्यों न आपसे मुहब्बत हो। उसकी वजह यह थी कि मुसलमान होने से क़ब्ल सफीया रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने ख़्वाब देखा था कि चांद उनकी गोद में गिर पड़ा। आप ने अपने शौहर कनाना से बयान किया तो उसने एक ज़ोर का तमांचा मारा कि आपकी आंख नीली पड़ गई जो आख़िर वक़्त तक क़ायम रही।

आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेहद मुहब्बत थी जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बीमार हुए तो निहायत हसरत से बोलीं काश मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जगह बीमार होती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह सच कह रही हैं इस में

कोई तसन्नुअ् नहीं है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आपसे बेहद मुहब्बत थी। एक सफर में तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात साथ थीं रास्ते में आपका ऊंट इत्तिफ़ाक़ से बीमार हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा से कहा तुम्हारे पास इतने सारे ऊंट हैं एक ऊंट सफीया को दे दो। हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने कहा मैं इस यहूदिया को अपना ऊंट नहीं दे सकती। तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो माह तक उनके पास नहीं गये। एक मरतबा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके मकान में तशरीफ़ ले गये तो आप रो रही थीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वजह पूछी तो कहने लगीं कि हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा कहती हैं कि वह मुझ से अफ़ज़ल हैं क्योंकि हम अज़्वाजे मुतह्हरात होने के साथ–साथ क़रीबी रिश्तेदार भी हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुमने यह क्यों न कहा कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम मेरे बाप और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मेरे चचा हैं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे शौहर हैं।

आप ने ५० हिज० में इंतिक़ाल फरमाया और जन्नतुल–बक़ीअ् में मदफून हैं।

(११) उम्मुल–मुमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि अल्लाहु अन्हा :

हज़रत मैमूना रज़ि अल्लाहु अन्हा क़बीला क़ुरैश की चश्म व चिराग़ थीं। आपका पहला नाम बर्रह था। हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका नाम बदल कर मैमूना रखा। आपके वालिद का नाम हारिस और वालिदा का नाम हिन्दा था।

आप पहले मस्ऊद बिन अमर सक़्फ़ी के निकाह में थीं। उन से तलाक़ लेने के बाद अबू अहम बिन अब्दुल–उज़्ज़ा से निकाह होने के बाद जब आप बेवह हुईं तो ज़ी क़अ्दा ७ हिज० ६२९ ई० में जब हुज़ूरे अकरम उमरतुल–क़ज़ा को मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले जा रहे थे तो सर्फ़ के मक़ाम पर आपसे निकाह हुआ। और रस्मे अरूसी भी इस मक़ाम पर हुई और वापसी पर उसी मक़ाम पर आपका इंतिक़ाल हुआ।

यानी उसी सर्फ़ मक़ाम पर आपका निकाह हुआ। उसी मक़ाम पर रुख़्सती हुई और उसी मक़ाम पर इंतिक़ाल हुआ और उसी मक़ाम पर मदफून हुईं। ५१ हिज० में इंतिक़ाल हुआ।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

सातवां बाब

औलादे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

तमाम मुअर्रेख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरज़न्द की तादाद तीन है। (१) हज़रत क़ासिम रज़ि अल्लाहु अन्हु। (२) हज़रत इब्राहीम रज़ि अल्लाहु अन्हु (३) हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु जिनका लक़ब तैयब व ताहिर है।

हज़रत क़ासिम रज़ि अल्लाहु अन्हु :

सबसे पहले फ़रज़न्द हैं जो हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा के बतने पाक से ऐलाने नुबुव्वत से क़ब्ल पैदा हुए। इन ही के नाम पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुन्नियत अबुल–क़ासिम है। बाज़ का क़ौल है कि दो बरस की उम्र में आपका इंतिक़ाल हुआ और बाज़ का क़ौल है कि उम्र सिर्फ़ सतरह (१७) माह थी।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु :

इन ही की लक़ब तैयब व ताहिर है। ऐलाने नुबुव्वत से क़ब्ल ख़दीजतुल–कुबरा के बतन से पैदा हुए मक्का में ही फौत हुए।

हज़रत इब्राहीम रज़ि अल्लाहु अन्हु :

यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादों में सबसे छोटे हैं। आप हज़रत मारिया क़ब्तीया रज़ि अल्लाहु अन्हा के बतन से पैदा हुए जिन्हें शाह मक़ूक़स ने बतौर तोहफ़ा के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बांदी बना कर भेजा था। उन्हीं के बतन से आप पैदा हुए। आपकी पैदाइश के वक़्त फौरन जिब्रील अलैहिस्सलाम नाज़िल हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को या अबा इब्राहीम कह कर पुकारा। इनके अक़ीक़े के लिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो मेंढ़े ज़बह किए, उनके सर के बालों के बराबर तौल कर चांदी ख़ैरात फरमाई और बालों को दफन फ़रमाया।

जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम रज़ि अल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन सूरज गहन आलूद हो गया। बाज़ लोगों ने गुमान

किया कि ग़ालिबन हज़रत इब्राहीम की वफ़ात की वजह से सूरज को गहन लगा। तब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस मौक़ा पर खुलासा दिया कि चांद और सूरज अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं किसी के मरने से उसका कोई तअल्लुक़ नहीं। लिहाज़ा जब भी चांद या सूरज गहन देखो दुआ मांगो। वफ़ात १२ ज़िल–हिज्जा ८ हिज० ६३० ई० को हुई।

(१) हज़रत ज़ैनब बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

हुज़ूरे अक़्दस की तमाम साहबज़ादियों में सबसे बड़ी थीं। ऐलाने नुबुव्वत से दस साल क़ब्ल जबकि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ तीस साल थी। ५६६ ई० हिजरत से क़ब्ल पैदाइश हुई। यह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गई थीं। आपकी शादी ख़ालाज़ाद भाई अबुल–अब्बास बिन रबीअ़ से हुई थी। हज़रत ज़ैनब तो मुसलमान थीं मगर जब अबुल–आ़स २ हिज० में रमज़ान मुबारक में जंगे बद्र के मौक़ा पर गिरफ़्तार हो कर आए उस वक़्त हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा मक्का मुकर्रमा में ही थीं। चुनांचे उन्होंने अबुल–आस को क़ैद से छुड़ाने की ग़रज़ से अपने वालिद मोहतरम के पास मदीना में वह हार भेजा जो हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा ने उनको जहेज़ में दिया था। हार देख कर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा की याद आई और आपके आंख में आंसू आ गये। सहाब–ए–किराम के इशारे पर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल–आस से वादा लेकर मक्का मुकर्रमा वापस भेज दिया कि मक्का पहुंचते ही हज़रत ज़ैनब को मदीना भेज देंगे। हज़रत अबुल–आस ने हस्बे वादा आपको अपने भाई कनाना के साथ मदीना भेज दिया। उस वक़्त आप हामिला थीं। जब कुफ़्फ़ारे मक्का को ख़बर हुई कि हज़रत ज़ैनब कनाना के साथ मक्का से मदीना के लिए रवाना हो गईं। तो कुछ लोग आपके तआक़ुब में आए और रास्ते में ही उन्हें रोक लिया। एक बदबख़्त ने आपको नेज़ह से डरा कर ऊंट से गिरा दिया जिसकी वजह से आप का हमल साक़ित हो गया। मगर कनाना ने डट कर मुक़ाबला करके उन्हें हिफ़ाज़त से मदीना मुनव्वरा पहुंचा दिया। हज़रत ज़ैनब ने हिजरत के दौरान दर्दनाक मुसीबतें उठाएं। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपके फ़ज़ाइल में फरमाया : मेरी बेटी ज़ैनब निहायत अफ़ज़ल है कि मेरी वजह से हिजरत में इतनी तक्लीफ़ बर्दाश्त करनी पड़ी। फिर हज़रत अबुल–आस भी ७ हिज० में मुसलमान

हो कर मदीना मुनव्वरह आए और फिर दोनों एक साथ रहने लगे।

हज़रत ज़ैनब को एक लड़का था जिसका नाम अली था। जिसे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़तहे मक्का के मौक़ा पर अपने बराबर वाली ऊंटनी पर सवार किया था। और काबतुल्लाह में अपने दोशे मुबारक पर खड़ा करके तमाम बुतों को गिरवाया। जंगे यरमूक में शहादत से सरफ़राज़ हुए। एक लड़की उमामा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेहद मुहब्बत करती थी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दोशे मुबारक पर बिठा कर मस्जिदे नबवी में ले जाते। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर क़ीमती चीज़ें अपनी नवासी उमामा को देते थे। १२ ज़िल–हिज्जा ८ हि० ६३० ई० को आपका इंतिक़ाल हुआ। हज़रत उम्मे अतीया ने ग़ुस्ल दिया और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जन्नतुल–बक़ीअ़ में अपने दस्ते मुबारक से क़ब्र में दफन किया।

(२) हज़रत रुक़ैया बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी साहबज़ादी हैं। बेअ़सते नबवी से क़ब्ल आपकी शादी हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा के बेटे उतबा के साथ हुई थी और साथ ही साथ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम की भी शादी हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा के दूसरे बेटे उतैबा के साथ हुई थी। जब अबू लहब के हक़ में सूरः **तब्बत यदा अबी लहब** नाज़िल हुई तो अबू लहब ने अपने दोनों बेटों को बुला कर कहा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटियों से इलाहिदगी अख़्तियार करो अगर तुमने उन्हें तलाक़ न दी तो तुम्हारे साथ मेरा उठना बैठना हराम है। दोनों बेटों ने हुक्म की तामील की और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दोनों साहबज़ादियों हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा को तलाक़ दे दी। और फिर हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा का निकाह उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ हुआ। और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा को लेकर हबशा की तरफ़ हिजरत कर गये। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हु पहला जोड़ा है जिन्होंने हिजरत की।

हबशा में ही हज़रत रुकैया रज़ि अल्लाहु अन्हा को एक लड़का पैदा हुआ। जिसका नाम अब्दुल्लाह रखा गया। इस नाम की निस्बत से हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह हो गई। यह छः साल के थे कि एक रोज़ बाहर बैठे खेल रहे थे कि एक मुर्ग ने उनके चेहरे पर चोंच मारी जिसकी वजह से वह बीमार हो गये और आख़िरकार इंतिकाल कर गये।

२ हिजरी में ग़ज़वा–ए–बद्र का वाक़या पेश आया और इधर हज़रत रुकैया रज़ि अल्लाहु अन्हा अलील हो गईं। उधर हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वे की तैयारी में मसरूफ़ हो गये। चुनांचे हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा–ए–बद्र के लिए रवाना हो गये। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु को हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा की तीमारदारी के लिए छोड़ गये। जब यह क़ाफ़िला फतह का जशन मनाते हुए आया उस वक़्त हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा को सुपुर्दे ख़ाक किया जा रहा था। हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा क़ब्र पर हाज़िर हो कर रोने लगीं ख़ुद हुज़ूर के क़ल्बे मुबारक पर गहरा सदमा था कि जवान बेटी अल्लाह तआला को प्यारी हो गई।

आप हसीन, ख़ूबरू, होने के साथ निहायत नेक सीरत थीं। उन्हें बड़ी–बड़ी तकालीफ़ उठानी पड़ीं लेकिन आप कभी हर्फ़े शिकायत ज़बान पर न लाईं। बाज़ नौजवान आपको ग़ौर से देखते तो आपको निहायत नागवार गुज़रता।

(३) हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा :

आप रज़ि अल्लाहु अन्हा हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीसरी साहबज़ादी थीं। आप पहले अबू लहब के बेटे उतैबा से ब्याही गई थीं। अबू लहब के हुक्म से उसके बेटे ने आपको तलाक़ दी थी और आप अपने वालिद माजिद के घर रहने लगीं। जब हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुआ तो हज़रत उस्मान ग़नी ने आपसे निकाह फरमाया।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियाँ हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के निकाह में आईं। इसलिए हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु का लक़ब ज़ुन्नूरैन हुआ। हज़रत उस्मान

ग़नी आपसे बेहद ख़ुश थे। आप निहायत ख़ूबसूरत थीं। सआदतमन्द, मुत्तक़ी, परहेज़गार, तिलावते कलाम पाक निहायत इंहिमाक से करतीं। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी आपको बेहद मुहब्बत थी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी आप से बेपनाह मुहब्बत करते थे। हज़रत उम्मे कुल्सूम हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन के निकाह में छः साल रहीं। मगर कोई औलाद नहीं हुई। शाबाने मुअज़्ज़म ९ हिज० में आपने दाइ–ए–अजल को लब्बैक कहा।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने दो जवान बेटियों की मौत का बेहद सदमा हुआ। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद क़ब्र में उतारा और बेटी की क़ब्र के पास बैठ कर आंखों में आंसू उमड आए और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहर–ए–मुबारक से हुज़्न व मलाल के आसार नुमायां हो रहे थे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाया अगर मेरी तीसरी बेटी होती तो वह भी मैं तुम्हारे निकाह में देता। एक रिवायत में है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर दस बेटियां भी होतीं तो मैं तुम्हारे निकाह में दे देता।

(४) हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

शहनशाहे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे छोटी लाडली बेटी थीं।

नबी की लाडली, बीवी अली की, मां शहीदों की
कि है जल्वा नुबुव्वत का, विलायत का, शहादत का

आपकी विलादत बासआदत बेअ़्सते नबवी से पांच साल क़ब्ल हुई। आपकी वालिदा माजिदा हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जब फातिमा मेरे शिकम में थीं तो बिल्कुल हल्की फुल्की लगती थीं। जब आपकी विलादत बासआदत का वक़्त आया तो चार ख़्वातीन कमरे में आईं जिससे घर रौशन हो गया। मैं हैरान हो गई और उन से पूछा आप कौन हैं तो एक ने कहा मैं तुम्हारी मां हव्वा हूं। दूसरी ने कहा मैं आसिया फ़िरऔन की बीवी हूं। तीसरी ने कहा मैं उम्मे कुल्सूम हज़रत मूसा की बहन हूं। चौथी ने कहा मैं मरयम वालिदा हज़रत ईसा हूं। हम आपकी मदद के लिए हाज़िर हुए हैं। आप ताहिरा मुतह्हरा पैदा हुईं। आपकी उम्र शरीफ़ जब पन्द्रह बरस की हुई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़

रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह की दर्ख़्वास्त पेश की। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं खुदा तआला के हुक्म का मुंतज़िर हूं। हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने भी यही दर्ख़्वास्त पेश की हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें भी यही जवाब दिया।

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु शेरे खुदा से अहबाब ने कहा कि तुम सरदारे दोजहां की बारगाह में हाज़िर हो कर हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुख़्तरे नेक अख़्तर से शादी की दर्ख़्वास्त पेश करो। हज़रत अली ने कहा मुझे शर्म आती है जबकि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फारूके आज़म की दर्ख़्वास्त मन्ज़ूर नहीं फरमाई। लोगों ने कहा तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीबी रिश्तेदार हो। हुज़ूर आपकी दर्ख़्वास्त ज़रूर मन्ज़ूर करेंगे। चुनांचे आपने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में पहुंच कर हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा का हाथ मांगा। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फौरन मन्ज़ूर कर लिया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी लाडली बेटी के पास गये फरमाया बेटी! इस मुआमले में तुम्हारी क्या राय है। हज़रत फातिमा रज़ि अल्लहु अन्हा शर्म व हया की वजह से ख़ामोश रहीं। यह एक तरह से रज़ामन्दी का इज़्हार था। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर आए। हज़रत अली से फरमाया तुम्हारे पास महर देने के लिए क्या है। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा मेरा हाल आप पर रौशन है। मेरे पास अल्लाह तआला के नाम के सिवा कुछ नहीं है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वह ज़िरह कहां है जो जंगे बद्र में तुम्हारे हाथ आई थी। अर्ज़ किया वह मौजूद है। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उसे बेच दो जो रक़म आए उसे महर में दे दो। फिर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अनस से इरशाद फरमाया अभी–अभी जिब्रीले अमीन अल्लाह तआला का पैग़ाम लाए कि फातिमा का निकाह अली से कर दो। लिहाज़ा अनस जाओ और तमाम सहाब–ए–किराम को बुला लाओ। जब तमाम सहाब–ए–किराम दरबारे आली में हाज़िर हुए। खुद सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकाह का खुत्बा पढ़ा चांदी के सौ मिस्क़ाल पर सैयदह फातिमतुज़्ज़हरा का निकाह हज़रत अली करमल्लाहु

वजहहू से फरमाया। फिर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुजूर लुटाए।

निकाह से फारिग़ हो कर हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर के अन्दर तशरीफ़ लाए और एक गलास पानी मांगा फातिमतुज़्ज़हरा ने पानी ला कर दिया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमें दुआ पढ़ कर फूंक मारी और हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा को क़रीब बुला कर आपके सीने मुबारक पर बाज़ू पर और पुश्त पर पानी फेरा इसी तरह हज़रत अली से भी पानी मांग कर उनके भी सीने पर दोनों बाज़ुवों और पीठ पर पानी फेरा।

हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सूरत, सीरत, गुफ़्तार, किरदार में पूरी तरह मुशाबेहत रखती थीं। हज़रत सैयदह फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा सरकारे दोआलम की लाडली बेटी थीं। उसका यह मतलब नहीं कि आराइश व आसाइश की हर चीज़ दिलाई जाती थी। एक मरतबा हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हा ने आपको एक तलाई हार लाकर दिया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ बेटी लोगों के इस कौल से मग़रूर न हो कि फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी है चेह जाएकि तुझ पर दुनियादारी का लिबास हो। आपने सुनते ही फौरन हार उतार कर फरोख़्त करके उस क़ीमत से एक गुलाम ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। यह ख़बर जब हुज़ूर को पहुंची तो आप बेहद खुश हुए।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी ख़ातूने जन्नत से बेहद मुहब्बत थी और क्यों न होती, हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिगर गोशा थीं। दूसरे यह कि आप में जुमला महासिन मौजूद थे। लोगों ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा आप को सबसे ज़्यादा कौन प्यारा है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा, फातिमा मेरी लख़्ते जिगर है जिसने उन्हें नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया। जब भी आप अपने वालिद के घर जातीं हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फौरन उठ कर खड़े हो जाते। इसी तरह जब सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके घर जाते, आप भी खड़ी हो जातीं और दस्ते मुबारक पकड़ कर अपनी

जगह बिठातीं। जब अबू जहल की बेटी मुसलमान हो कर मदीना आई तो हज़रत अली ने उसे निकाह का पैग़ाम भेजा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर पहुंची हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फौरन उठ खड़े हुए और ख़ुतबा इरशाद फरमाया। मैं हरगिज़ इजाज़त नहीं दूंगा जब तक कि वह मेरी बेटी को तलाक़ न दे। वह मेरे गोश्त का टुकड़ा है। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली पर फातिमतुज़्ज़हरा की हयाते तैयबा में दूसरा निकाह हराम फरमा दिया था। जबकि एक मर्द के लिए चार बीवियों को रखने की इजाज़त थी।

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी से रिवायत है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़यामत के रोज़ मुनादी होगी कि ऐ अह्ले महशर अपने–अपने सर झुका लो और आंखें बन्द कर लो यहां तक कि फातिमा बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पुल सिरात से गुज़र जाए।

हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा तमाम जन्नती औरतों की सरदार हैं। इसके बावजूद आपकी पूरी ज़िन्दगी उसरत व तंगदस्ती में गुज़री मगर कभी हर्फ़े शिकायत ज़बान पर न आया। सरदारे अंबिया, सरवरे कौन व मकां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलादे अम्जाद में सिर्फ़ एक बेटी फातिमतुज़्ज़हरा ख़ातूने जन्नत रज़ि अल्लाहु अन्हा तन्हा अकेली रह गईं। वालिदा माजिदा ने सन्ने सग़ीर में ही दाग़े मफ़ारिक़त दे दिया था। भाई भी बचपन में ही अल्लाह को प्यारे हो गये थे।

बहनें भी यके बाद दीगर जवानी के आलम में छूट गई थीं। सारे ख़ानदान में सिर्फ़ एक शफ़ीक़ बाप का साया था और जब वालिद माजिद के विसाल का वक़्त आया तो और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपने क़रीब बुला कर कान में कुछ कहा तो आप रोने लगीं। फिर दोबारा कान में कुछ कहा तो आप मुस्कुराने लगीं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने उसका सबब पूछा तो फरमाया कि पहली मरतबा मेरे कान में कहा कि मैं इस मरज़ में तुम से रुख़्सत हो जाऊंगा। तो मैं रोने लगी। दूसरी मरतबा कहा कि मेरे अह्ले बैत में तुम सबसे पहले मुझे मिलोगी, इसलिए मैं मुस्कुराई। जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ग़शी की हालत तारी हुई तो आप बेसाख़्ता कह उठी **व अकरबु अबाआ** यानी हाए मेरे बाप की बेचैनी जब हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने सुना तो फरमाया लैसा अला अबीका करबु बअ्दल—यौमा। यानी आज के बाद तुम्हारे बाप कभी बेचैन न होगा।

मदनी चांद के छुप जाने के बाद जब तक आप हयात रहीं कभी लबों पर मुस्कुराहट न आई। अक्सर क़ब्रे अनवर पर हाज़िर होतीं और वहां की ख़ाक उठा कर अपनी आंखों पर मलती। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल शरीफ़ के छेः माह बाद 3 रमज़ान मुबारक ११ हिज० ६३२ ई० में ख़ातूने जन्नत, दुनिया से तशरीफ़ ले गईं। विसाल के वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ २६ साल थी।

आपके विसाल से क़ब्ल मर्द हो या औरत उनके खुले जनाज़े ले जाए जाते थे। लेकिन सैयदा ख़ातूने जन्नत निहायत शर्मीली और हयादार ख़ातून थीं आपने अस्मा रज़ि अल्लाहु अन्हा बिन्ते उमैस से फरमाया कि खुले जनाज़ों में औरतों की बेपर्दगी होती है जिसे मैं पसन्द नहीं करती। हज़रत अस्मा ने कहा ऐ फातिमा जिगर गोश—ए—रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैंने हबश में एक तरीक़ा देखा अगर आप इजाज़त दें तो पेश करूं। फिर उन्होंने दरख़्त की चन्द शाख़ें मंगवाईं उस पर एक कपड़ा ताना जिस से पर्दे की सूरत पैदा हो गई। आप उस नमूना से बेहद खुश हुईं और फरमाया कि यह बेहतरीन तरीक़ा है इस से पर्दे का पूरा—पूरा एहतमाम होता है। चुनांचे हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा का जनाज़ा इसी मुताबिक़ उठाया गया। जन्नतुल—बक़ीअ् में मदफ़ून हैं।

जिसका आंचल न देखा मह व महर ने
इस रेदाए नुज़्हत पे लाखों सलाम

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलादे नरीना तो अह्दे तिफ़्ली में ही इंतिक़ाल कर चुकी थी। लिहाज़ा हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा के हिस्से में आया कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नस्ल पाक चली। आपके बतन पाक से छेः औलाद हुईं। (१) हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु। (२) हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु (३) हज़रत मुहसिन रज़ि अल्लाहु अन्हु। (४) हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा (५) हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा (६) हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा।

हज़रत मुहसिन और हज़रत रुक़ैया का इंतिक़ाल बचपन ही में हो चुका था।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा

हज़रत अबू तालिब :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग्यारह चचा थे जिन में चार चचाओं का ख़ास ज़िक्र मिलता है। अबू तालिब, अबू लहब, हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा के इंतिक़ाल के बाद हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अबू तालिब ने परवरिश की। आप अपने साथ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तिजारत की ग़रज़ से मुल्क शाम के सफर को जा रहे थे रास्ते में बुहैरा नामी राहिब से मुलाक़ात की। उसने आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़त्मे नुबुव्वत की निशानदेही की थी। आप कुफ़्फ़ारों की लाख मुख़ालिफ़त के बावजूद हमेशा हुज़ूर पाक की हिमायत करते। यहां तक आप हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तीन साल शुअ़्बे अबी तालिब घाटी में महसूर रहे।

आपने अपने भतीजे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा के साथ निकाह का ख़ुतबा ख़ुद पढ़ाया और महर की रक़म भी अपनी जानिब से अदा की।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपका बहुत बड़ा सहारा था। जिस साल आपका और ख़दीजतुल–कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुआ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेहद सदमा हुआ। इसलिए उस साल को आम हुज़्न (ग़म का साल) कहा जाता है।

अबू लहब :

उसका असल नाम अब्दुल–उज़्ज़ा था और कुन्नियत अबू लहब थी। इसलिए उसका ज़िक्र असली नाम के बजाए कुन्नियत के साथ कुरआन मजीद में सूरः तब्बत यदा अबी लहब में किया गया। चूंकि उसने और उसकी बीवी ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेहद ईज़ा

पहुंचाई। उसकी बीवी हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राह में कांटे बिछाने की ग़रज़ से सर पर कांटों का गट्ठा उठाती थी। इसलिए दोनों मियां, बीवी जहन्नमी हुए। सिर्फ़ हर हफ़्ता बरोज़ दोशंबा उसकी क़ब्र के अज़ाब में कमी की जाती है और शहादत की उंगली से उसे दूध पिलाया जाता है। क्योंकि उस ने अपने भतीजे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश की ख़ुशी में अपनी लौंडी सुवैबा की उंगली के इशारे से आज़ाद किया था। इसलिए उसे हर दोशंबा को दूध पिलाया जाता है।

हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल-मुत्तलिब रज़ि अल्लाहु अन्हु :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यूं तो ग्यारह चचा थे। जिन में से सिर्फ़ दो चचा ईमान लाए। हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु। हज़रत हम्ज़ा बेहद ताक़तवर थे। उन्हें हुज़ूर पाक का शेर (असदे रसूल) का ख़िताब मिला। ३ हिज० में जंगे उहद में शहीद हो कर सैयदुश्शोहदा के लक़ब से मशहूर हुए। मदीना मुनव्वरा से तीन मील के फ़ासिले पर उहद के मैदान में आपका मज़ार पुर अनवार ज़ियारत गाहे आलमे इस्लाम है।

जंगे बद्र में आपने अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दह के बाप को क़त्ल किया था जिसकी वजह से हिन्दा इंतिक़ाम की आग में जल रही थी। एक हबशी को तैयार किया और ग़ज़वा-ए-उहद में उसने मौक़ा पाते ही आप पर नेज़ह मारा और फिर आप पर तीरों की बरसात शुरू हो गई। चूंकि हिन्दा ने क़सम खाई थी कि अगर हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए तो उनका कलीजा चबाऊंगी और जब हज़रत हमज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए तो उसने आपका कलीजा चीर कर निकाला और चाटना चाहा मगर फ़ौरन ही क़य कर दी। क्योंकि उसका नापाक ख़ून और हज़रत हम्ज़ा का पाक ख़ून किस तरह मिल सकता था। इसके अलावा आपके नाक, काट, ज़बान काट कर आंखें निकाल कर उसका माला बना कर पहना आपकी बहन हज़रत सफ़ीया ने आपकी लाश देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो हुज़ूर ने कहा तुम उनकी लाश की बेहुर्मती नहीं देख सकोगी। मगर हज़रत सफ़ीया रज़ि अल्लाहु अन्हा ने दिलेरी से आपकी

लाश मुबारक को देखा और इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। पढ़ा। सत्तर मरतबा आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई गई। हर शहीद सहाबा के साथ आपकी भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई।

हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु :

हज़रत अब्बास के फ़ज़ाइल में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। आपके हज़ अब्दुल्लाह से बहुत सी हदीसें मरवी हैं। हुज़ूरे पाक ने आपके बारे में बहुत सी बशारतें दीं। ३२ हिज० अठासी बरस की उम्र में वफ़ात पाई और जन्नतुल–बक़ीअ् में मदफून हैं।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफ़ियां

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की छेः फूफ़ियां थीं। जिन में से सिर्फ़ हज़रत सफीया रज़ि अल्लाहु अन्हा ने इस्लाम क़ुबूल किया। यह ज़ुबैर बिनुल–अवाम रज़ि अल्लाहु अन्हु की वालिदा हैं। वह बहुत बहादुर और दिलेर ख़ातून थीं। ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ में उन्होंने एक मुसल्लह हमला आवर यहूदी को तन्हा एक चोब मार क़र ख़त्म किया और उसका सर काट कर दुशमन के ख़ेमे में फेंक दिया। जिस से कुफ़्फ़ार समझे फौज की तादाद बहुत है और वह घबरा गये।

इसी तरह जंगे उहद में जब मुसलमानों का लश्कर बिखर रहा था। आप अकेली कुफ़्फ़ार पर नेज़ा चलाती रहीं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी शुजाअत पर बड़ा तअज्जुब हुआ। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके फ़रज़न्द हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाया कि ज़रा अपनी वालिदा की बहादुरी और जांनिसारी तो देखो। तने तन्हा कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला कर रही हैं। २० हिज० में तिहत्तर बरस की उम्र में वफ़ात पाई। जन्नतुल–बक़ीअ् में मदफून हैं।

पंजतन पाक

पंजतन पाक से मुराद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम,

हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत अली कर्रमुल्लाहु वज्हहू रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु हैं।

(अह्ले बैत (अह्ले बैते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अह्ले बैत के मुतअल्लिक़ फरमाया कि मेरे क़राबतदार पर सदक़ा हराम है। क्योंकि वह सदक़ा, देने वालों का मैल है। उन पर आतिशे दोज़ख़ हराम है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे पहले अपनी अह्ले बैत की शफ़ाअत फरमाएंगे। अह्ले बैत की मुहब्बत फराइज़े दीन में शामिल है। जिस ने उन से मुहब्बत रखी गोया मुझ से मुहब्बत रखी और जिस ने उन से नफ़रत की गोया उस ने मुझ से नफरत की। जिसने उन्हें ख़ुश रखा उसने मुझे ख़ुश रखा जिसने उन्हें नाराज़ किया। उसने मुझे नाराज़ किया और जिस से मैं राज़ी उस से अल्लाह तआला राज़ी और जिसने मेरे अह्ले बैत से बुग्ज़ रखा वह मुनाफ़िक़ है।

अफ़राद अह्ले बैत :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्वाजे मुतह्हरात जो उम्मुल–मुमिनीन कहलाती हैं। उनके अलावा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चारों साहबज़ादियां, हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन, हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन वग़ैरह।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

आठवां बाब

हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बांदियाँ

हज़रत मारिया क़िब्तीया रज़ि अल्लाहु अन्हा :

उनको मिस्र सिकन्दरीया के बादशाह मकूक़श क़िब्ती ने बारगाहे नुबुव्वत में चन्द हदाया और तोहफ़े के साथ बतौर हिबा के नज़्र किया था। उनकी मां रूमी और बाप मिस्री था। इसलिए हसीन व जमील थीं। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रज़न्द हज़रत इब्राहीम रज़ि अल्लाहु अन्हु उनके बतन से पैदा हुए। कनीज़ होने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर्दे में रखते थे और उनके लिए मदीना मुनव्वरा के क़रीब मक़ामे आलिया में एक अलग मकान बनवा कर दिया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर उनके पास तशरीफ़ ले जाया करते थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के बाद हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने ज़िन्दगी भर उनके नान व नफ़्क़ा का इंतिज़ाम किया। १६ हिजरी में उनकी वफ़ात हुई। हज़रत फारूक़े आज़म ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल-बक़ीअ़ में दफन किया।

हज़रत रैहाना रज़ि अल्लाहु अन्हा :

यह यहूदी ख़ानदान बनू कुरैज़ा से थीं। एक ग़ज़वा में गिरफ़्तार होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में आईं थीं। कुछ दिन इस्लाम कुबूल नहीं किया। एक दिन अचानक एक सहाबी ने आकर उनके इस्लाम कुबूल होने की इत्तिला दी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहद ख़ुश हुए फरमाया अगर तुम चाहो तो तुम्हें आज़ाद करके निकाह कर लूं मगर उन्होंने गुज़ारिश की कि मुझे अपनी बांदी ही बना कर रखे। यही मेरे हक़ में बेहतर रहेगा। जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुज्जतुल-विदा से वापस आए तो १० हिज० में वफ़ात पाई। जन्नतुल-बक़ीअ़ में मदफून हैं।

हज़रत नफ़ीसा रज़ि अल्लाहु अन्हा :

यह पहले हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि अल्लाहु अन्हा की लौंडी थीं। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतौर हिया के नज़्र किया। आपके काशान–ए–नुबुव्वत में बांदी की हैसियत से रहने लगी थीं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुद्दाम

यूं तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तमाम सहाब–ए–किराम शमअ् नुबुव्वत के परवाने तन मन धन से हाज़िर रहते थे। जिनमें चन्द ख़ुश नसीब सहाबा किराम हैं जो मख़्सूस काम के लिए मुक़र्रर थे।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु :

यह सब से ज़्यादा मुमताज़ ख़ादिम थे। उन्होंने मुसलसल दस बरस तक सफ़र व हज़र में हमावक़्त ख़िदमत गुज़ारी का शर्फ़ हासिल किया है। हुज़ूर ने उनके माल और औलाद में कसरत की दुआ की तो तमाम बाग़बानों के बाग़ में साल में एक मरतबा फल आते मगर हज़रत अनस के बाग़ में दो बार फल आते। और औलाद में भी आपको एक सौ छेः औलाद हुई जिनमें सत्तर लड़के और बाक़ी लड़कियां थीं। आपसे दो हज़ार दो सौ छियासी हदीसें मरवी हैं। सौ साल की उम्र में ९१ हिज० या ९२ हिज० में बसरा में वफ़ात पाई और वहीं मदफ़ून हैं।

हज़रत रबीआ बिन कअ्ब रज़ि अल्लाहु अन्हु :

आप हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वुज़ू कराने की ख़िदमत अंजाम देते थे। हुज़ूर ने आपको जन्नत की बशारत दी थी। ६३ हिज० में वफ़ात पाई।

हज़रत ऐमन बिन्ते उम्मे ऐमन रज़ि अल्लाहु अन्हा :

आपके पास एक छोटी सी मुश्क रहा करती थी। जिस से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वुज़ू और इस्तिंजा कराते थे। जंगे हुनैन में शहीद हुए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु :

नअ्लैन पाक, वुज़ू का बर्तन, मसनद, मिस्वाक अपने पास रखते और हमेशा सफर व हज़र में ख़िदमत अंजाम देते थे। साठ बरस की उम्र में 33 हिज० में वफ़ात पाई।

हज़रत उक़्बा बिन आमिर दौराने सफर ऊंट की महार पकड़ते।

हज़रत बिलाल हबशी घरेलू काम सौदह सलफ़ लाते।

हज़रत सअद बिन मुआज़ पहरेदारी करते।

हज़रत मईक़त हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अंगूठी की हिफ़ाज़त करते।

हज़रत उक़्बा बिन आमिर जहनी रज़ि अल्लाहु अन्हु :

ख़च्चर की सवारी की लगाम थामे रहते। कुरआने मजीद और फराइज़ उलूम में माहिर, आला दरजा के फसीह, ख़तीब और शोअ्ला बयान शाइर थे। हज़रत अमीर मुआविया के दौर में मिस्र के गवर्नर थे। ५८ हिज० में मिस्र में वफ़ात पाई वहीं मदफून हैं।

हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि अल्लाहु अन्हु :

यह बहुत ही क़दीमुल–इस्लाम सहाबी थे। निहायत तारिकुद्दुनिया आबिद व ज़ाहिद दरबारे नुबुव्वत के ख़ास ख़ादिम इनके फ़ज़ाइल में भी हदीसें वारिद हैं। ३१ हिज० में वफ़ात हुई।

हज़रत मुहाजिर मौला उम्मे सलमा :

दिन रात हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत करते। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु को अता किगा। हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उन्हें आज़ाद कर दिया। फिर भी आपके दरबार में हाज़िर रहते।

हज़रत अबू समअ् :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ास ख़ादिम थे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें आज़ाद कर दिया था मगर फिर भी हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करते थे।

ग़ज़वात में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुहाफ़िज़ :

ग़ज़व–ए–उहद में हज़रत मुहम्मद बिन सलमा निगहेबान थे। ग़ज़व–ए–बद्र में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने की। ग़ज़व–ए–ख़न्दक़ के मौक़ा पर ज़ुबैर बिन अवाम निगहबान थे। ग़ज़व–ए–ख़ैबर के मौक़ा पर हज़रत अबू अय्यूब अंसारी थे। वादियुल–कुरा के मैदान में हज़रत बिलाल निगहबान थे।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़े दौर के मुफ़्तियान :

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु अन्हु।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कातेबीन :

कातेबीन की तादाद चालीस थी। जिनकी ज़िम्मे वहिये इलाही की किताबत करना, सलातीन उमरा को ख़ुतूत लिखना, सदक़ात व माल गुज़ारी के अहकाम लिखना वग़ैरह था। चन्द सहाब–ए–किराम के नाम यह हैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत सअद बिन वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत आमिर बिन फहीरा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अमर बिन आस रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि अल्लाहु अन्हु।

क़बाइली इलाक़े से माल गुज़ारी वसूल करने वाले सहाबा :

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अयास बिन क़ैस रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत वलीद बिन उक़्बा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत हारिस बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत मस्ऊद रजील रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत आमिर बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु,

आज़ाद करदह ग़ुलाम :

हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत सौबान बिन यज्दूमा रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत सालेह मुलक़्क़ब शक़रान रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उबैद बिन ग़फ़्फ़ार रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत मायूर क़िबती रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत असलम बिन उबैद रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ैद बिन बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत सलमान फ़ार्सी रज़ि अल्लाहु अन्हु,

अह्दे रिसालत मआब के मुअज़्ज़िन :

हज़रत बिलाल हबशी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूब, हज़रत सअद बिन आइज़, हज़रत मख़्दूरह बिन मुग़ीरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शुअ़रा

हज़रत कअ़ब बिन मालिक :

हज़रत कअ़ब बिन मालिक जंगे तबूक में शरीक न होने की वजह से मअ़तूब हुए। फिर जब उनकी तौबा क़ुबूल हुई तो हज़रत अली के दौरे ख़िलाफ़त में वफ़ात हुई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा :

उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब में चन्द हदीसें भी वारिद हैं। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें सैयदुश्शोरा का लक़ब अता फरमाया। जंगे मौता में शहादत पाई।

हज़रत हस्सान बिन साबित :

दरबारे रिसालत के ख़ास शुअ़रा में उनका शुमार होता था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके हक़ में दुआ फरमाई कि ऐ अल्लाह! जिब्रील अलैहिस्सलाम के जरिया उनकी मदद फरमा। जब तक यह कुफ़्फ़ार का जवाब अश्आर के ज़रिया देते उस वक़्त तक हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उनके साथ रहा करते थे। एक सौ बीस बरस की उम्र में वफ़ात पाई। उनके वालिद साबित, दादा मुंज़िर, परदादा हराम सब की उमरें एक सौ बीस बरस की थीं।

हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ासिद और सफ़ीर

हज़रत अमर बिन उमैया ज़मीरी, शाह नज्जाशी हबशा की तरफ़।

हज़रत वहिया बिन ख़लफ़ कल्बी हेरक़्ल क़ैसर रूम की तरफ़।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा, किसरा परवेज़ फ़ारस (ईरान) की तरफ़।

हज़रत हातिब बिन बल्तआ़ मक़ूक़श शाह मिस्र की तरफ़।

हज़रत शुजाअ़ बिन वहब शाम की तरफ़।

हज़रत मुहाजिरीन उमैया मख़्ज़ूमी शाह यमन हारिस बिन कुलाल इमीरी की तरफ़।

हज़रत जरीरी बिन अब्दुल्लाह शाह ज़वा कला तायफ़ की तरफ़।

हज़रत अलाउल–हज़रमी, वालि–ए–बहरैन मुंज़िर बिन हादी हाकिम की तरफ़।

हज़रत हारिस बिन उमैर, हाकिमे बसरा की तरफ़।

हज़रत उमर बिन आस जीफर बिन अल–मुज़ी हाकिमे अमान की तरफ़।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, क़ुरैशे मक्का की तरफ़।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वेसाल के वक़्त हुफ़्फ़ाज़े कुरआन :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत उबय बिन कअ़ब रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु अन्हु।

अशरह मुबश्शेरह :

वह दस सहाबा जिन्हें हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी हयात में ही जन्नत की बशारत दी थी।

(१) हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु (२) हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु (३) हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु (४)

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु (५) हज़रत तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु (६) हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु (७) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु अन्हु (८) हज़रत सअ़द बिन वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु (६) हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु (१०) हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि अल्लाहु अन्हु।

उनके अलवा उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु, हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु, शुहदाए बद्र, शुहदाए उहद और बैअ़ते रिज़वान के वक़्त आपके हाथों पर बैअ़त करने वालों को उन्हें भी जन्नती होने की बशारत मिली।

सहाब–ए–किराम : वह अफ़राद जिन्होंने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कलाम किया और ईमान की हालत में इंतिक़ाल फरमाया।

ताबईन : जिन्होंने सहाब–ए–किराम को देखा और ईमान की हालत इंतिक़ाल फरमाया।

तबअ़ ताबईन : जिन्होंने ताबईन को देखा और ईमान की हालत में इंतिक़ाल फरमाया।

असहाबे सुफ़्फ़ह :

वह अफ़राद जो इस्लाम क़ुबूल करके अपना घर बार छोड़ कर इस्लाम की ख़ातिर एक जगह जमा हो कर इस्लामी तालीम हासिल करते थे। उन्हें अह्ले सुफ़्फ़ह कहा जाता है। सुफ़्फ़ह का मतलब है चबूतरा। मस्जिदे नबवी से मुत्तसिल एक चबूतरा जहां पर अस्हाबे सुफ़्फ़ा तालीम हासिल करते थे। वह चबूतरा आज तक मस्जिदे नबवी में निशानी के तौर पर मौजूद है। जहां पर ज़ाइरीन उन जगह पर सवाब के लिए नमाज़, तिलावत वग़ैरह जैसी इबादत करते हैं।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

नवां बाब

हुज़ूर पाक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के तबर्रुकात

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा कर एक ऐसा इंक़लाब पैदा किया कि दुनिया की काया पलट गई। आपने फौजी, मआशी, समाजी, मज़हबी, सियासी ग़रज़ कि इंसानी ज़िन्दगी के हर शोअ़बे में इंक़लाब पैदा करके एक तारीख़ी कारनामा अंजाम दिया। दुनिया में जितने पैग़म्बर आए बड़े–बड़े अज़ीमुश्शान बादशाह हो गुज़रे मगर कोई सानी हुआ है और न होगा।

आप जंगी मुदब्बिर, कामयाब जरनील, अज़ीम फातहे आलम थे। चूंकि आप पर दुश्मनाने इस्लाम तरह–तरह के ज़ुल्म ढाते। यहां तक कि आप पर जो भी ईमान ले आता उसे भी तरह–तरह की अज़ीयतें देते। यहां तक कि लश्कर जमा करके मदीना पर चढ़ाई करने का भी मन्सूबा बनाते। लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से नाकाम होते थे और उन्हीं के मुक़ाबले की ग़रज़ से आपको इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए अस्लेहा की ज़रूरत पड़ती थीं।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरका

आलाते मुसल्लह :

आपको अक्सर जिहाद के वक़्त अस्लहे की ज़रूरत पेश आई इसलिए आपके पास चन्द अस्लहे थे।

तल्वारें :

आपके पास कुल दस तल्वारें थीं। (१) ज़ुलफ़िक़ार, उस तल्वार को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली मुर्तज़ा को तोहफ़े में दिया था। (२) मासूर, सबसे पहले यह तल्वार आपको तोहफ़े के तौर पर मिली थी। हिजरत के वक़्त भी आपके साथ थी। (३) मंबा, यह तल्वार मंबा

बिन अल–हिजा महमी की थी। जंगे बद्र में उसका बेटा आसी बिन मुंबा यह तलवार लिए हुए खड़ा था कि हज़रत अली ने आसी को क़त्ल करके आप की ख़िदमते अक़दस में पेश की आपने बखुशी कुबूल फरमाई। (४) अल–गसब। (५) अल–क़सीब (६) अर्रसूत (७) अल–फ़िज़्ज़ह (८) मुमासमा (९) क़लई (१०) सफ़ वग़ैरह थीं।

ज़ेरह : सात लोहे की थी जिसका नाम सअ़दब, फुज़्ज़ह, कैनुक़ाअ, ज़ातुल–फुज़ूल, ज़ातुल–हवाशी, रौहा, ना मालूम।

मग़्ज़ : यह टोपी या चादर के नीचे पहनी जाता था। यह ढांपने के लिए इस्तेमाल होता था, यह दो थे।

ढालें : कुल चार ढालें थीं। अज़लक़, फनक़, ज़ूफर, उक़ाब जिस पर उक़ाब की तस्वीर बनी थी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को माले ग़नीमत में मिली थी। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर मज़्बूती से अपना दस्ते मुबारक रखा वह तस्वीर ग़ायब हो गई।

कमानें सात थीं। और बरछियां छे थीं।

अलम (झण्डे) (निशान) कई थे एक सियाह जिसका नाम उक़ाब था। दूसरा सफेद था। एक ख़ेमा भी था वक़्ते ज़रूरत जिहाद के वक़्त जिस से पड़ाव डाला जाता था।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जानवर

घोड़े :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दस (१०) घोड़े थे। जिनकी ख़ासियत मुन्दरजा ज़ैल हैं :

(१) **घोड़े** : सकब रफ़्तार में पानी की बहावकी मानिन्द दौड़ते थे।

(२) **मुर तजर** : इसकी हिनहिनाहट बेहद सुरेली थी।

(३) **लज़ाज़** : उसे शाह इस्कन्दिया मक़ूक़श ने तोहफ़ा में दिया था।

(४) **लहीफ़** : यह निहायत फरबा मोटा और बड़ा था।

(५) **फ़ेरस** : इसे फरदन बिन अमर ने हदिया दिया था।

(६) **ज़रब** : कुव्वत में बेमिसाल था।

(७) **अफ़ीरह** : यह सफेद अरबी घोड़ा था।

(८) एक घोड़ा जो बहरिया के एक ताजिर ने ख़रीद कर हुज़ूर पाक

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिया दिया था।

(६) एक घोड़ा सफेद जो तमाम घोड़ों में सबक़त ले जाने वाला था।

ऊंटनी : क़सवा जिसे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने ख़ास हिजरत के लिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़रीदा था। उसी पर सवार हो कर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत फरमाई। और इसी पर बैठ कर हज्जतुल–विदाअ़ के मौक़ा पर अरफ़ात के मैदान में आख़िरी ख़ुतबा दिया था।

ख़च्चर :

फ़िज़्ज़ह : अक्सर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पर सवारी फरमाते।

दौमतुल–जन्दल : शाह मक़ूक़श ने तोहफ़ा भेजा था।

ईला : ईला इब्नुल–उला ने तोहफ़ा दिया और उसी की निस्बत नाम रखा गया।

दुलदुल : यह हज़रत मुआविया के ज़माने तक रहा। इतना बूढ़ा हो गया था कि उसके तमाम दांत गिर गये थे।

गधे : गधे दो थे। (१) अफीरह (२) याफ़ूर।

याफ़ूर फतहे ख़ैबर में माले ग़नीमत में मिला था। वह हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से गुफ़्तगू भी किया करता था। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम यज़ीद बताया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका नाम बदल कर यअ़फ़ूर रखा। उसने यह भी बताया कि मैं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के गधे की नसल से हूं और अब मैं आख़िर हूं और आप भी आख़िरी पैग़म्बर हैं। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़्यादा तर उसी पर सवारी फरमाते थे। इस गधे में यह भी ख़ासियत थी कि जब भी किसी को बुलाना मन्ज़ूर होता हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको इशारा फरमाते। वह उसके मकान पर जा कर ज़ोर–ज़ोर से दरवाज़ा पीटता मकान मालिक समझ जाता कि हुज़ूर ने बुलाया है। तब वह सहाबी फौरन हाज़िरे ख़िदमत हो जाते।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख़्तलिफ़ अशिया

एक अमामा सियाह रंग का जो १४ गज़ लम्बा था। एक सफ़ेद रंग की टोपी, दो सब्ज़ रंग की चादरें जिसका अर्ज़ चार गज़ और तूल दो गज़ था। तीन जुब्बे एक सब्ज़ और दूसरा अतलस का। दो मोज़े थे। दो नअ़लैन पाक तस्मे (फ़ीते वाले) थे। एक पलंग जिस पर चमड़े का बिस्तर था। जिसमें खुजूर की छाल भरी हुई थी। एक टाट का तकिया जिसमें खुजूर की छाल के रेशे भरे थे।

जुरूफ़ :

एक शीशे का प्याला, एक लकड़ी का प्याला, एक चमड़े का डोल, एक मश्क, एक पत्थर का तग़ारह, एक चमड़े की थैली जिसमें हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा आईना, कंघी, एक कैंची, मिस्वाक, सुर्मा दानी, रखा करते थे। एक नापने का पैमाना एक साअ़ दूसरा मुद।

दीगर तबर्रुकात :

मतरूका अशिया में बाज़ चीज़ें ऐसी थीं। जिन्हें आशिक़ाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

हुज्जतुल–विदाअ़ के मौक़ा पर आपने अपने सरे मुबारक के बाल मूंढे उस वक़्त तमाम सहाबा किराम ने उन्हें अपने पास तबर्रुक के तौर पर संभाल कर रखा था। लकड़ी का एक प्याला जिसे हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपने पास रखा था। एक कम्बल जिसे हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने अपने पास रखा था। अंगूठी जिसके ऊपर अल्लाह, बीच में मुहम्मद और नीचे रसूल कुन्दह था। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दावत नामों, खुतूत और अहकाम जारी करते वक़्त अपनी मुहर सब्त करते जो ख़ालिस चांदी की थी। ख़लीफ़–ए–सोम हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में आपके दस्ते मुबारक से अंगूठी एक कुएं में गिर गई। कुएं का तमाम पानी निकाल कर तलाश की गई मगर वह न मिली।

असा मुबारक :

हज़रत अमीरुल–मुमिनीन एक दिन असा मुबारक को हाथ में लिए मिंबर पर खुतबा दे रहे थे कि नागहां एक शख़्स उठा और आपके हाथ से अचानक असा छीन कर तोड़ डाला। इस बेअदबी के सबब उसका हाथ सड़ गल कर टूट पड़ा और वह हलाक हो गया। इसके अलावा और भी तबर्रुकात हैं जो सीरत की बड़ी–बड़ी किताबों में मौजूद हैं।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

दसवां बाब

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तैयबा एक नज़र में

वाक़ियात	उम्र शरीफ़	माह सन्
हज़रत मुहम्मद की विलादत बा सआदत		१२ रबीउल अव्वल ५६६ ई०
अबू लहब की कनीज़ सुवैबा का दूध नोश किया	साल अव्वल	५६६ ई०
रज़ाअत के लिये दाई हलीमा के सुपुर्द	साल अव्वल	५६६ ई०
बनू सअद के इलाके में शक़े सदर का वाक़िया	५ साल	५७३ ई०
अबवा के मक़ाम पर वालिदा का इंतेक़ाल	६ साल	५७४ ई०
आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब का इंतेक़ाल	८ साल	५७६ ई०
जंगे हरबुल फुजार—चचा के साथ शामिल	१२ साल	५८० ई०
तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम का पहला सफ़र	१३ साल	५८१ ई०
हल्फुल फ़िजूल का मुआहेदा	२१ साल	५८६ ई०
हज़रत ख़दीजतुल कुबरा से निकाह	२५ साल	५९३ ई०
विलादत हज़रत क़ासिम वल्द मुहम्मद सल्ल०	२६ साल	५९४ ई०
विलादत सैयदा ज़ैनब बिन्त रसूलुल्लाह सल्ल०	२८ साल	५९६ ई०
विलादत सैयदना ताहिर इब्ने रसूलुल्लाह सल्ल०	२९ साल	५९७ ई०
विलादत सैयदा रुक़ैया बिन्त रसूलुल्लाह सल्ल०	३१ साल	५९९ ई०
विलादत सैयदा फ़ातिमुत्तज़हरा बिन्त मुहम्मद सल्ल०	३३ साल	६०१ ई०
विलादत हज़रत अली करमुल्लाह वजहु अलकरीम	३३ साल	६०१ ई०
कअबतुल्लाह की तामीरे नव हजरे असवद का तनाज़आ	३४ साल	६०२ ई०
विलादत हज़रत उम्मे कुलसुम बिन्ते रसूलुल्लाह सल्ल०	३४ साल	६०२ ई०
विलादत सैयद अब्दुल्लाह इब्ने मुहम्मद सल्ल०	३५ साल	६०३ ई०
ख़िलअते नुबूवत से सरफ़राज़ हुए	४० साल	६ रबीउल अव्वल दोशंबा ६०८ ई०
पहली वही ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई	४० साल	१७ रमज़ानुल मुबारक
सैयदा ज़ैनब बिन्ते रसूल का निकाह अबुल आस से हुआ		
हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत ख़दीजतुल कुबरा और हज़रत ज़ैद बिन हारिस ने इस्लाम क़बूल किया।		
सैयदा रुक़ैया बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निकाह हज़रत उसमान ग़नी से हुआ	४१ साल	६०९ ई०
हज़रत उसमान ग़नी हज़रत रुक़ैया की पहली हिजरत हबशा की जानिब		
हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत हमज़ा का क़बूले इस्लाम	४५ साल	६१३ ई०
शोएब बनी हाशिम महसूर	४६ साल	६१५ ई०

शकुल क़मर मोजिज़ा ज़ाहिर हुआ	४७ साल	६१६ ई०
ताईफ़ की तरफ़ पहला तबलीग़ी सफ़र	४६ साल	६१८ ई०
हज़रत खदीजतुल कुबरा की वफ़ात	५० साल	६१६ ई०
हज़रत अबू तालिब की वफ़ात	५० साल	६१६ ई०
सैयदा बिन्त ज़मआ से निकाह	५१ साल	६२० ई०
हज़रत आयशा बिन्ते अबू बकर से निकाह मगर रुख़सती नहीं हुई		६२० ई०
वाक़िया मेराज पेश आया	५२ साल	२७ रजब ६२१ ई०
सरदारे दो आलम इज़्ने इलाही से मक्का से मदीना हिजरत के लिये रवाना	५३ साल	१ रबीउल अव्वल ६२२ ई०
मदीना मुनव्वरा में दाख़िला और मस्जिदे क़ुबा की बुनियाद	५३ साल	८ रबीउल अव्वल क़ुबा पहुंचे
मदीना मुनव्वरा बनी सालिम में मस्जिदे नबवी की बुनियाद	५३ साल	१६ रबीउल अव्वल ६२२ ई०
सबसे पहला ख़ुत्बा नमाज़े जुमा अव्वलीन	५३ साल	२२ रबीउल अव्वल ६२२ ई०
मदीना मुनव्वरा में पहली अज़ान	५३ साल	२२ रबीउल अव्वल ६२२ ई०
सैयदा अस्मा बिन्ते अबू बकर के बतन से अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर पैदा हुए	५४ साल	१ हिजरी ६२३ ई०
सरिया राबिया हज़रत उबैदुल्लाह बिन हारिस को अबू जहल के बेटे अकरमा की सरकोबी को रवाना किया	५४ साल	१ सन् हि०/६२३ ई०
सरिया ज़र्रार हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास का मुआहेदा अबू मुनअक़िद हुआ	५४ साल	१ सन् हि०/६२३ ई०
ज़कात, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब की नमाज़ में इज़ाफ़ा	५४ साल	१ हि०/६२३ ई०
फ़रज़ियत जिहाद की आयत नाज़िल हुई	५५ साल	२ हि०/६२४ ई०
ग़ज़्वए बवात, सफ़्वान ज़वाउलअशरा हुए	५५ साल	२ हि०/६२४ ई०
सरिया अब्दुल्लाह में सबसे पहला माले ग़नीमत हाथ	५५ साल	रजब ६२४ ई०
दुरूद, सलात का हुक्म नाज़िल हुआ	५५ साल	शाबान ६२४ ई०
तहवीले क़िब्ला का हुक्म नमाज़े ज़ुहर में	५५ साल	यकुम शाबान ६२४ ई०
माहे सियाम का पहला रोज़ा रखा गया	५५ साल	१ रमज़ान ६२४ ई०
ग़ज़्वए बदर में मुसलमानों की फ़तह हुई	५५ साल	१७ रमज़ान ६२४ ई०
हज़रत रुक़ैया बिन्ते रसूल सल्ल० का इंतेक़ाल	५५ साल	१६ रमज़ान ६२४ ई०
मुसलमानों की अव्वलीन ईदुल फ़ित्र का सदक़ा व फ़ित्र का हुक्म नाज़िल हुआ	५५ साल	१ शव्वाल ६२४ ई०
ग़ज़्वए बनी क़ीनक़ाअ, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़सती	५५ साल	१५ शव्वाल ६२४ ई०
मुसलमानों की पहली ईदुल अज़्हा	५५ साल	१० ज़िल हिज्जा ६२४ ई०
सैयदा उम्मे कुलसुम का निकाह हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुआ ग़ज़वए क़रक़रहुलकज़र	५६ साल	३ मुहर्रम ६२५ ई०
ग़ज़्वए ज़ी उमर बनु शअबला के दर्मियान	५६	३ रबीउल अव्वल ६२५ हि०
हज़रत हफ़्सा बिन्ते उमर फ़ारूक़ का निकाह हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुआ	५६	३ शाबान ६२५ ई०
सैयदा फ़ातिमा बिन्त रसूलुल्लाह सल्ल० का निकाह	५५	२ ज़िल हिज्जा ६२५ ई०

हज़रत अली करमुल्लाह वजहु के साथ हुआ

सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत	५६	१५ रमज़ान ३ हि० ६२४ ई०
सैयदा ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा से निकाह	५६	१८ रमज़ान ३ हि० ६२५ ई०
ग़ज़्वए उहद में मुसलमानों की आरज़ी शिकस्त	५६	७ शव्वाल ३ हि० ६२५ ई०
हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत ग़ज़्वए उहद में सैयदुश्शोहदा का लक़ब, मातम की मुमानेअत	५६	७ शव्वाल ३ हि० ६२५ ई०
उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा की वफ़ात	५७ साल	४ रबीउल अव्वल ६२६ ई०
सैयदा हज़रत इमाम हुसैन की विलादत	५७ साल	५ शाबान ४ हि० ६२६ हि०
उम्मुल मोमिनीन हज़रत सलमा बिन्त उमैया मख़ज़ूमिया से निकाह	५७ साल	४ शव्वाल ६२६ हि०
उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया से निकाह	५८ साल	३ शाबान ५ हि० ६२७ ई०
वाक़िया उफ़्क, इफ़्तरा, आयत तयम्मुल नाज़िल	५८ साल	६ शाबान ५ हि० ६२७ ई०
ग़ज़्वए ख़ंदक	५८ साल	३ शव्वाल ५ हि० ६२७ ई०
ग़ज़्वए बनू क़रीज़ा, ग़ज़्वए बनी लिहान, ग़ज़्वए ज़ी क़रदा सराया उमर मरज़ूक़, सरिया ऐस सरिया तरीक़	५६ साल	६ हि० ६२७ ई०
सरिया वादी अलक़ुरा, वाक़िया फ़दक सरिया उम्मे फ़िरक़ा	५६ साल	६ हि० ६२८ ई०
क़हत, नमाज़े इस्तेस्क़ा की वजह से बारिश	५६ साल	६ रमज़ान ६२८ ई०
सरिया अब्दुल्लाह बिन रवाहा	५६ साल	६ शव्वाल ६२८ ई०
बैयते रिज़वान, सुलह हुदैबिया	५६ साल	६ जीक़ादा हि० ६२८ ई०
उमरा की नीयत से एक हज़ार चार सौ सहाबा के हमराह मक्का रवाना हुए. दस साला मुआहेदा हुआ	५६ साल	६ जीक़ादा ६२८ ई०
बैयते रिज़वान	५६ साल	६ ज़िल हिज्जा ६२८ ई०
नजाशी शाह हब्श का क़बूले इस्लाम उसकी नमाजे जनाज़ा गायबाना पढ़ी	५६ साल	६ ज़िल हिज्जा ६२८ ई०
हज़रत उम्मे हबीबा से निकाह	६० साल	७ मुहर्रम ६२६ ई०
ग़ज़्वए ख़ैबर हज़रत अली के हाथों फ़तह	६० साल	७ सफ़र ६२६ ई०
ख़ैबर की अमीरज़ादी सैयदा सफ़िया बिन्ते हई से निकाह	६० साल	७ सफ़र ६२६ ई०
मुहर की अंगूठी तैयार हुई	६० साल	७ रबीउल अव्वल ६२६ ई०
बादशाहों के नाम खुतूत इरसाल किये	६० साल	७ रजब ६२६ ई०
शाह हब्श की लौंडी मारिया से निकाह	६० साल	७ ज़ीक़ादा ६२६ ई०
मुआहेदा हुदैबिया के मुताबिक़ दो हज़ार सहाबा के हमराह उमरतुल क़ज़ा के लिये मक्का तशरीफ़ ले गये	६० साल	जीक़ादा ७ हि०/६२६ ई०
सैयदा मैमूना बिन्ते हारिस से निकाह	६१ साल	रबीअव्वल ८ हि०/६३० ई०
सरिया बनू हवाज़िन	६१ साल	जमादिलउल अव्वल ८ हि०/६३० ई०
सरिया मौता, सरिया दातुल सलासिल, सरिया सैफ़ुल हिज्र सरिया महारिब वग़ैरह	६१ साल	४ रमज़ान ८ हि०/६३० ई०
ग़ज़्वए फ़तह मक्का में दस हज़ार जांनिसारों के साथ रवानगी, अबू सुफ़ियान बिन्ते हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और जाफ़र बिन सुफ़ियान का क़बूले इस्लाम मक्का में फ़ातेहाना दाख़िला	६१ साल	२० रमज़ान ८ हि०/६३० ई०

गज़्वए हुनैन, गज़्वए तायफ	६१ साल	८ हि०/६३० ई०
गज़्वात के बाद मदीना मुनव्वरा वापसी	६१ साल	ज़ीक़ादा ८ हि०/६३० ई०
विलादत हज़रत इब्राहीम इब्ने रसूलुल्लाह मारिया के बतन से	६१ साल	१२ ज़िलहिज्जा ८ हि/६३० ई०
सैय्यदा ज़ैनब बिन्ते रसूले अकरम सल्ल० की वफ़ात	६१ साल	ज़िलहिज्जा ८ हि०/६३० ई०
वफ़ूद का सिलसिला शुरू होकर इस्लाम में दाख़िल होना	६२ साल	९ हि/६३१ ई०
गज़्वए तबूक हुज़ूर पाक सल्ल० का आख़री गज़वा	६२ साल	रजब ९ हि०/६३१ ई०
सरिया देम्तुल, मस्जिद ज़रार शहीद कर दी गयी	६२ साल	९ हि०/६३१ ई०
सैय्यदा उम्मे कुलसुम की वफ़ात	६२ साल	शाबान ९ हि०/६३१ ई०
आयते रब्वा नाज़िल हुई, सूदी लेन देन मना हुआ	६२ साल	ज़ीक़ादा ९ हि०/६३१ ई०
हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को अमीर हज बनाकर तीन सौ सहाबा के साथ हज के लिये मक्का रवाना किया। अपनी तरफ़ से बीस ऊंट कुरबानी के लिये भेजे।	६२ साल	१ ज़िल हिज्जा ९ हि० ६३१ ई०
आयत बरात नाज़िल हुई	६२ साल	ज़िलहिज्जा ८ हि०/६३१ ई०
सूरः अहज़ाब की आयत तख़्यीर नाज़िल हुई	६२ साल	ज़िलहिज्जा ९ हि०/६३१ ई०
आप घोड़े से गिरकर ज़ख्मी हो गये थे। आप तंहाई पसंद हो गये थे। उसको शरअ में ईला कहा जाता है।	६२ साल	९ ज़िलहिज्जा ९ हि०
सरिया उसामा बिन ज़ैद, फ़लिस्तीन की जानिब	६२ साल	
सरिया ख़ालिद बिन वलीद इलाक़ा नजरान की जानिब	६३ साल	१० हि०/६३२ ई०
अदी बिन हातिम का कुबूले इस्लाम	६३ साल	१० हि०/६३२ ई०
मुसैलमा कज़्ज़ाब ने नुबूवत का दावा किया	६३ साल	रमज़ान १० हि०/६३२ ई०
सैयदना इब्राहीम इब्ने रसूलुल्लाह का इंतेकाल हुआ उसी रोज़ सूरज ग्रहण हुआ। आप ने नमाज़ कसूफ़ पढ़ी	६३ साल	शव्वाल १० हि०/६३२ ई०
ज़ुहर की नमाज़ अदा करके हज के लिये रवाना हुए मदीना से कुछ फ़ासले पर ज़ुल हलीफ़ा में नमाज़े अस्र क़स्र अदा की	६३ साल	२५ ज़ीक़ादा १० हि०/६३२ ई०
उमरा हज के नीयत से एहराम बांधा हुज़ूर पाक सल्ल० के साथ तक़रीबन एक लाख जां निसार और तमाम उम्महातुल मोमिनीन भी साथ थीं	६३ साल	२६ ज़ीक़ादा
मक़ामे ज़ी तवा में मुख़्तसर वक़ूफ़, मक्का मुकर्रमा में दाख़िला, सबसे पहले कअबा का तवाफ़ किया, उसके बाद हजरे अस्वद को बोसा दिया सफ़ा, मरवा की सअई की।	६३ साल	४ ज़िलहिज्जा १० हि०
हज़रत अली करमुल्लाह वजहु यमन से तश्रीफ़ लाये, हुज़ूर पाक सल्ल० के साथ हुज्जतुल वदा में शामिल हुए	६३ साल	
क़स्वा पर सवार होकर मिना पहुंचे वहां क़याम किया	६३ साल	८ ज़िल हिज्जा १० हि०
पांच नमाज़ें मिना में अदा कीं अरफ़ात और मुज़दलफ़ा के लिये रवाना, अरफ़ात में ख़ुत्बतुल विदआ में इरशाद फ़रमाया	६३ साल	९ ज़िल हिज्जा ११ हि०
आख़री वही नाज़िल हुई (आज तुम्हारे लिये दीने इस्लाम मुकम्मल किया)	६३ साल	९ ज़िल हिज्जा १० हि०
आपने हल्क़ फ़रमाया, सर के बाल अबू तलहा	६३ साल	९ ज़िल हिज्जा

रज़ियल्लाहु अन्हु को इनायत फ़रमाया लोगों में तक़सीम किये		
मदीना रवाना हुए	६३ साल	१३ ज़िल हिज्जा १० हि०
एक जनाज़े से तशरीफ़ ला रहे थे सर दर्द और बुख़ार का आग़ज़ा हुआ	६३ साल	३० सफ़र ११ हि०
हुज़रए उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा में क़याम फ़रमाया	६३ साल	
५ दिन मामूल के मुताबिक़ उम्महातुल मोमिनीन के हुजरों में बारी बारी तशरीफ़ ले गये	६३ साल	
अलालत के बाइस ख़ुद इमामत न फ़रमाते हुए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के पहलू में बैठकर इमामत फ़रमाई	६३ साल	५ रबीउल अव्वल ११ हि०
हुज़ूर पाक सल्ल० अलालत के बाक़ी दिन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरे मुक़ीम रहे और उसी हुजरे में क़याम करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तमाम अज़वाज बख़ुशी राज़ी हो गयीं	६३ साल	५ रबीउल अव्वल ११ हि. ६३२ हि
हुज़ूर पाक सल्ल० नक़ाहत के बावजूद मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हुए और मिम्बर पर बैठकर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया	६३ साल	८ रबीउल अव्वल ११ हि./६३२ई
हुज़ूर पाक सल्ल० को क़दरे इफ़ाक़ा महसूस हुआ तो हुज़ूर पाक सल्ल० हज़रत अब्बास और हज़रत अली के सहारे से मस्जिद आये और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की इमामत में नमाज़ अदा की।	६३ साल	१० रबीउल अव्वल ११ हि०
हुज़ूर पाक सल्ल० ने चालीस गुलाम आज़ाद फ़रमाये, हज़रत आयशा के पास कुछ अशरफ़ियां थीं, उन्हें ख़ैरात करने का हुक्म दिया और फ़रमाया मुहम्मद सल्ल० ख़ुदा से बदगुमान होकर नहीं मिलेगा, और फिर हुज़ूर सल्ल० पर ग़शी तारी हो गयी	६३ साल	११ रबीउल अव्वल ११ हि०
नमाज़े फ़ज्र के वक़्त हुज़ूर पाक सल्ल० ने पर्दा उठाया तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर की इमामत में लोगों को नमाज़ पढ़ते हुए देखा बेहद मसरूर हुए। हुज़ूर पाक सल्ल० ने पर्दा गिरा दिया ग़शी की हालत बढ़ गयी। हुज़ूर पाक सल्ल० ने तीन बार यह अल्फ़ाज़ दोहराये बल अल रफ़ीक़ुल और इसके साथ ही रहमतुल लिल आलेमीन, ख़ातिमुल नबीईन की रूह मुबारक परवाज़ करके बुराअलवरा हिजाबात इल्लीयीन में साहिबे अर्श बरीं के पास पहुंच गयी	६३ साल	१२ रबीउल अव्वल ११ हि०

इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

उम्र शरीफ़ ६३ साल

बरोज़ दोशंबा ११ हि० १२ रबीउल अव्वल।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह

अस्माए गिरामी	बिन्त	उम्र निकाह	महर	सन् निकाह	मदफ़न
हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा	ख़ुवैलिद	४० साल	५०० दिरम	क़ब्ल ऐलाने नुबूव्वत	मक्का मु
हज़रत आयशा सिद्दीक़ा	अबू बकर	६ साल	५०० दिरम	क़ब्ल ऐलाने नुबूव्वत	मदीना मु
हज़रत सूदा	ज़मआ	५० साल	४०० दिरम	क़ब्ल हिजरत	
हज़रत हफ़्सा	हज़रत उमर		४०० दिरम	सन् ३ हि०	
हज़रत ज़ैनब	ख़ुज़ैमा	३० साल	१२/औक़िया	सन् ३ हि०	
हज़रत उम्मे सलमा	सुहेल	३५ साल		सन् ४ हि०	
हज़रत ज़ैनब	हजश	३५ साल	४०० औक़िया	सन् ५ हि०	
हज़रत जुवैरिया	हारिस	२० साल	४०० औक़िया	सन् ५ हि०	
हज़रत रिहाना	ज़ैद			सन् ५ हि०	
हज़रत उम्मे हबीबा	अबू सुफ़ियान	३७ साल	४०० औक़िया	सन् ७ हि०	
हज़रत सफ़ीया	हई	२७ साल	५०० औक़िया	सन् ७ हि०	
हज़रत मैमूना	हारिस	२६ साल	५०० औक़िया	सन् ७ हि०	
हज़रत मारिया क़ब्तिया	शमऊन			सन् ८ हि०	

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ग्यारहवां बाब

गज़वात व सराया

गज़वात यानी जिन-जिन मअ्रका आराई में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बज़ाते खुद शरीक हुए उसे गज़वा का नाम दिया गया। इस सिलसिले में मुख़्तलिफ़ मुअर्रेख़ीन का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ ने गज़वात की तादाद सत्ताइस बताई, बाज़ ने चौबीस, बाज़ ने पचीस। हज़रत इमाम बुख़ारी ने हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि गज़वात की तादाद उन्नीस है। जिन में चन्द मशहूर गज़वात का तआरुफ़ मुन्दरजा ज़ेल है।

गज़व-ए-बद्र यकुम रमज़ान २ हिज० :

बद्र, मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन अस्सी मील के फासिले पर एक गांव का नाम है। जहां साल में एक मरतबा मेला लगता था। दूसरी बात यहां एक कुवां भी था। उसका नाम बद्र था। इसलिए उसे बद्र कहा जाता है। इस मक़ाम पर गज़वा बद्र का वह अज़ीम मअ्रका हुआ जिस में मुसलमानों को अज़ीमुश्शान फतह नसीब हुई। जिसके बाद इस्लाम की इज़्ज़त व अज़मत का परचम इतना बुलन्द हुआ कि कुफ़्फ़ारे कुरैश के बड़े-बड़े सरदार, उमरा अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब, उतबा बिन रबीअ्, हारिस बिन आमिर, नज़्र बिन हारिस, अबू जहल, उमैया बिन ख़लफ़ वग़ैरह इस्लाम की अज़मतों से ख़ाइफ़ नज़र आने लगे। सिर्फ़ अबू सुफ़ियान अपनी चालाकी की वजह से और अबू लहब बीमारी की वजह से जंग में शरीक न हो सके। बक़िया तमाम वासिले जहन्नम हो गये। इस जंग में कुफ़्फ़ार के सत्तर आदमी क़त्ल और सत्तर आदमी गिरफ़्तार हुए। बाक़ी सामान छोड़ कर भाग निकले और मुसलमानों के सिर्फ़ चौदह शहीद हुए। जिन में छेः मुहाजिर और आठ अंसार थे। कुफ़्फ़ारे मक्का को ऐसी ज़बरदस्त शिकस्त हुई कि उनकी अस्करी ताक़त ही फना हो गई। चूंकि उस जंग में उनकी नामवर हस्तियां एक-एक करके मौत के घाट उतर गईं। और उनकी तादाद ज़्यादा होने की वजह से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अलग-अलग दफ़्नाने की बजाए एक बड़ा गढ़ा खोद कर उसमें तमाम

लाशों को घसीट–घसीट कर उस गढ़े में डालने का हुक्म दिया। चुनांचे सहाबा किराम ने एक ही गढ़े में दफन कर दिया। फतह के बाद तीन दिन हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम के साथ क़ियाम किया और माले ग़नीमत तक़्सीम किया।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु की ज़ौजा हज़रत रुक़ैया बिन्ते रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंगे बद्र के मौक़ा पर बीमार थीं। इसलिए हज़रत उस्मान उनकी तीमारदारी की वजह से जंग में शरीक न हो सके और हज़रत रुक़ैया का इंतिक़ाल भी उसी वक़्त हुआ और जब लोग आपको दफ़्ना कर लौटे तो इधर मुसलमान फतह का नक़्क़ारह बजाते हुए मदीना मुनव्वरा आए।

ग़ज़्व–ए–बनी क़ैनुक़ाअ़ १५ शव्वाल २ हिज० :

रमज़ान २ हिज० में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंगे बद्र से वापस लौटे। इसके बाद ही १५ शव्वाल २ हिज० ग़ज़व–ए–क़ैनुक़ाअ़ का वाक़या पेश आया। इसका सबब यह हुआ कि एक बुरक़ा पोश अरब औरत यहूदियों की बाज़ार में आई। दुकानदार शरारत से उसे बरहना करके क़हक़हा लगा कर हंसने लगे। इस पर एक अरब ने उस यहूदी को क़त्ल कर दिया और फिर दोनों फ़िर्क़ों में लड़ाई शुरू हो गई। हुज़ूर पाक तशरीफ़ लाए और यहूदी की इस नाज़ेबा हरकत पर मलामत फरमाने लगे। इस पर बनी क़ैनुक़ाअ़ के लोग भड़क उठे और फिर जब यहूदियों ने मुआहेदा तोड़ दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने १५ शव्वाल २ हिज० में यहूदियों पर हमला कर दिया। यहूदी मग़लूब हो कर हथियार डालने पर मज्बूर हो गये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से उन्हें शहर बदर होना पड़ा।

ग़ज़व–ए–सुवैक़ १ जिल–हिज्जा २ हिज० :

जंगे बद्र और जंगे बनी क़ैनुक़ाअ़ की शिकस्ते फाश के बाद क़ुरैश के सरदार अबू सुफ़ियान को ख़बर मिली कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंगी तैयारी में मस्रूफ़ हैं तो उसने जोशे इंतिक़ाम में एक सहाबी सअ़द बिन अमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी इत्तिला मिली। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका तआक़ुब किया उसने अपने साथ जो थोड़ी फौज जमा की थी वह भी भाग खड़ी हुई और उनके साथ सत्तू की बोरियां थीं। वह

भी छोड़ कर भागे। उस जंग को ग़ज़्व–ए–सुवैक़ कहते हैं।

ग़ज़्व–ए–उहद ७ शव्वाल ३ हिज० :

उहद एक पहाड़ का नाम है। जो मदीना मुनव्वरा से तीन मील दूर है। हक़ व बातिल का अज़ीम मअ्रका इसी पहाड़ के दामन में वाक़े हुआ। कुरआन मजीद की मुख़्तलिफ़ आयतों में इस का तज़्किरा अल्लाह तआला ने खुद फरमाया है।

चूंकि जंगे बद्र में सत्तर कुफ़्फ़ार क़त्ल हुए थे और सत्तर कुरैश गिरफ़्तार हुए थे। जिसकी वजह से मक्का का घर–घर मातम कदह बना हुआ था और कुरैश का बच्चा–बच्चा जोशे इंतिक़ाम की आग में जल भुन रहा था और अरब का पुराना दस्तूर था कि मक़्तूल का बदला लेना फ़र्ज़ समझते थे। जंगे बद्र के मातम से फ़ुर्सत मिली तो उन्होंने क़सम खाई कि मुसलमानों से अपने मक़्तूलों का बदला लेना चाहिए। चुनांचे उन्होंने अपनी जंगी ताक़त बढ़ाने के लिए पानी की तरह जंगी सामान ख़रीदने के लिए पैसे बहाए और अपनी आतिश बयानी में तमाम क़बाइली इलाक़ों में इंतिक़ाम का जज़्बा पैदा करने के लिए बड़े–बड़े शुअ्रा को मुन्तख़ब किया। मर्दों के साथ–साथ बड़े–बड़े मुअज़्ज़ज़ घराने की औरतें जोशे इंतिक़ाम से फौज में शामिल हो गईं और क़सम खाई कि हम अपने रिश्तेदारों के क़ातिलों का ख़ून पी कर और कलीजा चबा कर मुसलमानों से बदला लेंगे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हिन्दा के बाप उतबा को ग़ज़्व–ए–बद्र में क़त्ल किया था इस बिना पर हिन्दह ने भी क़सम खाई थी कि हज़रत हम्ज़ा का कलेजा चबाएगी और वाक़ई उस ने ऐसा ही किया। ग़ज़्व–ए–उहुद में जब हज़रत हम्ज़ा शहीद हुए तो उसने आपका कलेजा निकाल कर चबाया था।

अल–ग़रज़ निहायत जोश व ख़रोश के साथ लश्करे कुफ़्फ़ार अबू सुफ़ियान की सालारी में मक्का से रवाना हुआ। हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा ने आपको उसकी इत्तिला पहुंचा दी। जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर मिली तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम १४ शव्वाल ३ हिज० जुमा की रात को हथियार ज़ेबतन करके अन्सार के क़बीले औस का झण्डा हज़रत उसैद बिन हिज़्र को और क़बील–ए–ख़ज़रज का झण्डा हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि अल्लाहु अन्हु के हाथ देकर एक हज़ार फौज

लेकर मदीना से बाहर निकले। लश्करे इस्लाम में सात सौ मुजाहिद थे और कुफ़्फ़ार की तीन हज़ार फौज थी। लश्करे कुफ़्फ़ार ने १२ शव्वाल ३ हिज० मदीने के करीब मक़ामे उहद पर अपना पड़ाव डाला। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम १४ शव्वाल ३ हिज० को बाद नमाज़ जुमा मदीने से रवाना हुए। सनीचर के रोज़ फज्र में वहां पहुंचे। हज़रत बिलाल ने अज़ान दी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़े फज्र से फ़ारिग़ हो कर अपने लश्कर की मोर्चा बन्दी शुरू फरमाई और कोह ऐतन की वादी कुतात को अपने दाएं तरफ़ रखा। पीछे एक तंग दुर्रह था। जिसमें से कुफ़्फ़ारे कुरैश हमला आवर हो सकते थे इस दुर्रे की हिफ़ाज़त के लिए पचास तीर अन्दाज़ों का एक दस्ता मुक़र्रर फरमाया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जबीर रज़ि अल्लाहु अन्हु को दस्ते का अफ़सर मुक़र्रर किया और नसीहत की कि देखो हम चाहें मग़लूब हों या ग़ालिब मगर तुम लोग अपनी जगह से उस वक़्त तक न हटना जब तक मैं कोई हुक्म न दूं।

सबसे पहले कुफ़्फ़ारे कुरैश की औरतें दफ़ बजा–बजा कर अश्आर गाती हुई आगे आईं कि उनमें ग़ज़्व–ए–बद्र के मक़्तूलीन का इंतिक़ामी जज़्बा भड़के जिनमें अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दह भी थी। मुश्रेकीन की तरफ़ से पहले अबू आमिर जो इबादत व पारसाई के लिए मदीने में राहिब के नाम से जाना जाता था। जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फासिक़ का लक़ब दिया था। लश्करे इस्लाम की तरफ़ तीर फेंका। मुसलमानों ने उसकी तरफ़ तीरों की बरसात शुरू कर दी जिसकी वजह से अबू आमिर और उसके साथी मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए।

कुफ़्फ़ार की भगदड़ मुसलमानों का फातिहाना मन्ज़र देख कर वह पचास तीर अन्दाज़ जो दुर्रे पर हिफ़ाज़त के लिए मुक़र्रर थे। फतह की जोश में दुर्रह छोड़ कर माले ग़नीमत लूटने में मस्रूफ़ हो गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जबीर ने हर चन्द रोकने की कोशिश की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान याद दिलाया मगर उन तीर अन्दाज़ मुसलमानों ने एक न सुनी। कुफ़्फ़ार का एक अफ़सर (क़ब्ल इस्लाम) ख़ालिद बिन वलीद पहाड़ की बुलन्दी से यह मंज़र देख रहा था कि दुर्रह ख़ाली हो गया तो फ़ौरन पीछे से अचानक हमला कर दिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन जबीर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने चन्द जांनिसारों के साथ डट कर मुक़ाबला किया मगर सबके सब शहीद हो गये। यह देख कर

बाक़ी कुफ़्फ़ारे कुरैश की फौज दोबारा पलट आई और मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू कर दिए और मुसलमान चक्की के दो आटों में पीसे जा रहे थे। इस अफ़रा तफ़री में मुसलमानों में अपने बेगाने की तमीज़ न रही और मुसलमान मुसलमानों की तल्वार से क़त्ल हो रहे थे। इसी दर्मियान हज़रत मुसअब जो सूरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुशाबेह थे। इनको ज़मीन पर गिरते हुए देख कर कुफ़्फ़ार ने शोर मचाया (मआज़ल्लाह) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल हो गये। मुसलमान यह जुमला सुन कर बदहवास हो गये और मैदान छोड़ कर भाग निकले। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा हैं और किस हाल में हैं किसी को ख़बर न थी। हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु तीर चलाते दुशमनों की सफों को चीरते हुए निहायत इज़्तिराबी हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश कर रहे थे। बाज़ सहाब-ए-किराम ने मायूस हो कर हथियार फेंक दिए। इतने में हज़रत अनस बिन नज़्र रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत साबित बिन मद्दाह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने सहाबा किराम को समझाना चाहा तो उन्होंने कहा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब शहीद हो गये तो हमारा जीना किस काम का तब उन्होंने कहा बिलफ़र्ज़ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद भी हो गये तो हम क्यों हिम्मत हारें। हमारा अल्लाह तो ज़िन्दा है। उठो और दीने इस्लाम की ख़ातिर जिहाद करके हुज़ूर के पास पहुंच जाओ। यह कह कर आपने सहाबा को अपने साथ लेकर लश्करे कुफ़्फ़ार पर यल्ग़ार कर दी और जामे शहादत नोश फरमाया। इधर लड़ाई जारी थी फिर भी सबकी नज़रें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश कर रही थी। ऐन मायूसी के आलम में सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जमाले नुबुव्वत देखा वह ख़ुश नसीब हज़र कअब बिन मालिक थे। उन्होंने सहाबा को पुकार कर कहा ऐ मुसलमानों इधर आओ यहां हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हयात हैं आवाज़ सुनते ही तमाम सहाबा जमा होना शुरू हो गये। कुफ़्फ़ार ने भी अपना रुख़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जानिब मोड़ दिया और क़ातिलाना हमला एक साथ ज़ोर लगा कर किया। मगर शेरे ख़ुदा की तल्वार सबके वार रोक रही थी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कौन है जो मेरे ऊपर अपनी जान क़ुरबान करे। यह सुनते ही हज़रत ज़ैद बिन सकन रज़ियल्लाहु अन्हु अंसार को

लेकर हमला रोकते रोकते शहीद हो गये। इसी सरासीमगी की हालत में अब्दुल्लाह बिन क़ैयमा ने जो क़ुरैश के बहादुरों में नामवर था अचानक आकर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमला कर दिया और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहर-ए-अनवर पर तल्वार मारी जिस से ख़ून की दो धारें रुख़ अनवर से बहने लगी दूसरे ने आपके चेहर-ए-अनवर पर ऐसा पत्थर मारा कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो दन्दाने मुबारक शहीद हो गये और नीचे का लबे मुबारक ज़ख़्मी हो गया। इसी हालत में उबय बिन ख़लफ़ मलऊन अपने घोड़े पर सवार हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शहीद करने की नीयत से आया तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हारिस बिन सुम्मा रज़ि अल्लाहु अन्हु से नेज़ह लेकर उस की गर्दन पर वार किया हालांकि उसको मामूली ख़राश आई मगर वह चिल्लाता हुआ भाग निकला कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे क़त्ल कर दिया। लोगों ने उसे कहा अभी तो ज़िन्दा है और यह तो मामूली ख़राश है। उसने कहा तुम नहीं जानते एक मरतबा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से कहा था मैं तुझ को क़त्ल करूंगा। यह उसी का नतीजा है। जब हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ख़्मी हो गये और चारों तरफ़ से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तीर तल्वार चलना शुरू हुए तो तमाम सहाबा किराम ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गर्द चारों तरफ़ से हल्क़ा बना लिया हज़रत अबूद जाना रज़ि अल्लाहु अन्हु झुक कर आपके लिए ढाल बन गये उन पर चारों तरफ़ से तल्वारें बरस रही थीं वह अपनी पुश्त पर लेते रहे। हज़रत तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु कुफ़्फ़ार की तल्वारों के वार अपने हाथ पर रोकते थे। यहां तक उनका एक हाथ कट गया और बदन पर उन्तीलीस ज़ख़्म लगे।

अल-ग़रज़ तमाम सहाबा किराम जो वहां मौजूद थे अपनी जान की बाज़ी लगा कर आपकी हिफ़ाज़त कर रहे थे। हज़रत अबू तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु निशाना बाज़ी में मशहूर थे। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी पीठ पर बिठा लिया और सामने से आने वाले तीर अपने सीने पर झेलते रहे। चूंकि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दन्दाने मुबारक के सदमा और चेहर-ए-अनवर के ज़ख़्मों से निढ़ाल हो रहे थे ऐसी हालत में आप एक गढ़े में गिर गये। अबू आमिर फासिक़ ने

जाबजा ज़मीन में गढ़े खोद कर उस पर घास डाल दी थी ताकि मुसलमान उसमें गिर जाएं।

हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दस्ते मुबारक पकड़ा और हज़रत तलहा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पकड़ कर उठाया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने ख़ौद की कड़ियां जो आपके दन्दाने मुबारक में फंस गई थीं अपने दांतों से पकड़ कर निकालीं। वह दांत टूट कर ज़मीन पर गिर पड़ा फिर दूसरा दांत भी इसी तरह खींच कर निकाला तब चेहर–ए–अनवर से ख़ून बहने लगा। जिसको हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत मालिक बिन सिनान रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जोशे अक़ीदत से चूस–चूस कर पी लिया। एक क़तरा भी ज़मीन पर गिरने नहीं दिया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जांनिसारों के साथ पहाड़ की बुलन्दी पर चढ़ गये। जहां कुफ़्फ़ार का पहुंचना मुश्किल था। चेहर–ए–अनवर से ख़ून जारी था। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू अपनी ढाल में पानी भर–भर कर ला रहे थे और हज़रत फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने हाथों से चेहर–ए–अनवर धो रही थीं मगर ख़ून बन्द न हुआ। आख़िर खुजूर की चटाई का टुक्ड़ा जला कर उसकी राख रख दी तो ख़ून फ़ौरन बन्द हो गया।

इसी दौरान मैदाने जंग में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की औरतों ने जंगे बद्र के बदले में मुसलमान शुहदाए किराम की लाशों के नाक कान वग़ैरह काट कर उनकी सूरतें बिगाड़ दीं और आज़ा का हार पिरो कर गले में डाला। अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दह ने हज़रत हम्ज़ह रज़ि अल्लाहु अन्हु की लाश मुबारक तलाश करके आपका सीना चाक करके कलेजा निकाला और चबा डाला लेकिन हलक़ से न उतर सका और उंगली डाल कर क़य कर दिया। चूंकि हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हिन्दा के बाप को जंगे बद्र में क़त्ल किया था। तब उसने क़सम खाई थी कि वह इसका बदला ज़रूर लेगी और आपका जिगर चबाऊंगी। तारीख़ों की किताबों में हिन्दह का लक़ब जिगर ख़्वार है।

हिन्दह और अबू सुफ़ियान ने फ़तहे मक्का के दिन इस्लाम क़ुबूल किया। उस ग़ज़्वे में मर्दों के साथ–साथ ख़्वातीने इस्लाम ने भी बढ़ चढ़ कर मुजाहिदाना जज़्बात के साथ हिस्सा लिया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा

रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि अल्लाहु अन्हा मश्क में पानी भर–भर कर लाकर ज़ख़्मियों को पिलाती थीं। हज़रत उम्मे अम्मारा भी अपने शौहर और दो बेटों के साथ ग़ज़वा में शामिल हुईं। आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जब तीरों की बारिश का मंज़र देखा तो फौरन खंजर लेकर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सीना सुपर हो गईं और कुफ़्फ़ार के तीर, तल्वार को रोकती रहीं। चुनांचे आपके गर्दन पर तेरह ज़ख़्म लगे। आपके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह को एक काफिर ने ज़ख़्मी कर दिया आपने उसको झपट कर उसकी टांग पर ऐसा वार किया कि वह गिर पड़ा और सुरीन के बल घसीटता हुआ भाग निकला। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस बहादुरी से बेहद ख़ुश हुए। हज़रत उम्मे अम्मारह ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से गुज़ारिश की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ फरमाइए कि हम लोगों को जन्नत में इसी तरह ख़िदमत गुज़ारी का शर्फ़ हासिल हो। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी वक़्त उनके हक़ में दुआ फरमाई।

हज़रत सफ़ीया रज़ि अल्लाहु अन्हा जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी थीं वह भी इस ग़ज़वे में शरीक थीं। उन्होंने भी एक जासूस का सर काट कर कुफ़्फ़ार के ख़ेमे में फेंका था। इसी तरह अपने भाई हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की लाश देखने आईं तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि मेरी फूफी मेरे चचा की लाश न देखने पाएं। क्योंकि हज़रत हम्ज़ा की लाश की बेहुर्मती की गई है मगर हज़रत सफ़ीया ने कहा मैं ख़ुदा की राह में उस से बड़ी कोई कुरबानी नहीं समझती। फिर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इजाज़त लेकर अपने भाई की लाश देख कर सिर्फ़ इतना कहा। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

इस जंग में सत्तर सहाबा किराम ने जामे शहादत नोश फरमाया छियालीस साल बाद शुहदाए उहद की बाज़ क़ब्रें खुल गईं तो उनके कफ़न सही सलामत और बदन भी तरो ताज़ा थे। तमाम अह्ले मक्का ने देखा कि शुहदाए किराम अपने ज़ख़्मों पर हाथ रखे हुए हैं और जब ज़ख़्म पर से उनके हाथ हटाए गये तो देखा वहां से ताज़ा ख़ून बह रहा है।

ग़ज़्वा–ए–बनू नज़ीर :

हज़रत उमर बिन उमैया ज़ुमरी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने क़बीला बनू

कुलाब के दो शख़्सों को क़त्ल कर दिया था हुज़ूर ने इन दोनों का ख़ून बहा अदा करने का एलान कर दिया था और उसकी गुफ़्तगू के लिए क़बील–ए–बनू नज़ीर के पास तशरीफ़ ले गये तो इन लोगों ने बज़ाहिर तो बड़े अख़्लाक़ का मुज़ाहरा किया। मगर अन्दरूनी तौर पर ख़तरनाक मन्सूबा बनाया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु भी थे। यहूदियों ने इन तीनों को एक दीवार के नीचे बड़े एहतराम से बिठाया। उनका मनशा था कि छत पर से बड़ा वज़नी पत्थर गिरा कर हलाक कर दिया जाए। मगर मुहाफ़िज़े हक़ीक़ी परवरदिगार ने अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वही के ज़रिया यहूदियों की नापाक साज़िश से मुत्तला कर दिया। इसलिए आप वहां से फ़ौरन उठ कर अपने हम्राहियों के साथ वापस चले आए सहाबा किराम को इस हक़ीक़त से आगाह किया सहाबा से मशवरे के बाद हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ासिद के ज़रिए यहूदियों को कहला भेजा कि तुमने सियहकारी और क़ातिलाना साज़िश से मुआहेदा तोड़ दिया। इसलिए अब तुम लोग दस दिन के अन्दर–अन्दर मदीना से निकल जाए, अगर जो भी तुम में से यहां पाया जाएगा उसे क़त्ल कर दिया जायेगा। यह फरमाने नुबुव्वत सुन कर यहूदी जला वतन होने को तैयार हो गये। मगर मुनाफ़िक़ों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय ने कहला भेजा कि तुम हरगिज़ मदीना मत छोड़ो हम दो हज़ार आदमियों के साथ तुम्हारी मदद करेंगे। बनू नज़ीर को बहुत बड़ा सहारा मिल गया और वह शेर हो गये और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहला भेजा कि हम हरगिज़ मदीना नहीं छोड़ेंगे आपको जो करना हो वह करें।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत इब्ने मक्तूब रज़ि अल्लाहु अन्हु को मस्जिदे नबवी की इमामत सौंप कर खुद यहूदियों के क़िले का मुहासरा फरमाया। यह मुहासरा पन्द्रह दिन तक रहा। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दर्मियान खजूरों के दरख़्तों को कटवा दिया ताकि यहूदी दरख़्तों की झुण्ड में छुप कर इस्लामी लश्कर पर छापा न मारने पाएं।

आख़िरकार मुहासरे से तंग आकर बनू नज़ीर के यहूदी इस बात पर तैयार हुए कि वह अपना माल व अस्बाब और क़िला छोड़ कर मदीने से चले

जाएंगे मगर हम अपने ऊंटों पर जितना सामान लाद कर ले जा सकते हैं ले जाने की इजाज़त दी जाए। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह शर्त मन्ज़ूर फरमाई। तब तमाम यहूदी मदीना छोड़ कर कुछ ख़ैबर चले गये और कुछ मुल्के शाम में जा कर आबाद हुए।

बद्रे सुग़रा ज़ी क़अ़दा ४ हिज० :

जंगे उहद के बाद अबू सुफ़ियान ने कहा था कि आइन्दा साल बद्र के मक़ाम पर हमारा तुम्हारा मुक़ाबला होगा। चुनांचे ४ हिज० ज़ी क़अ़दा में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने लश्कर के साथ बद्र में तशरीफ़ ले गये। आठ रोज़ तक कुफ़्फ़ार का इंतिज़ार फरमाया लेकिन अबू सुफ़ियान ने इस साल ज़बरदस्त क़हत पड़ने की वजह से मुक़ाबला मुल्तवी कर दिया और यह ग़ज़वा बेग़ैर जंग के ख़त्म हुआ।

ग़ज़व-ए-ज़ातुर्रिक़ा :

११ मुहर्रम ५ हिज० को इंमारद सालबा ने अचानक मदीने पर चढ़ाई करने का इरादा किया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसकी इत्तिला की तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चार सौ साहाब किराम का लश्कर लेकर १० मुहर्रम ५ हिज० को मदीना से उनके मुक़ाबले के लिए मक़ामे ज़ातुर्रिक़ा तक तशरीफ़ ले गये। लेकिन वह लोग हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आमद की ख़बर पाकर पहाड़ों में छुप गये इसलिए कोई जंग नहीं हुई। अल्बत्ता मुश्रेकीन की चन्द औरतें गिरफ़्तार हुईं। इस ग़ज़वे के वक़्त मुसलमानों की हालत बेहद अबतर थी। कोई ज़ादे सफर न होने की वजह से बारी-बारी एक-एक ऊंट पर सवारी करते थे। जिसकी वजह से पहाड़ी पर पैदल चलने की वजह से पैर ज़ख़्मी हो गये थे। इसलिए वह लोग अपने कपड़े लपेट कर सफ़र कर रहे थे। इसीलिए इस ग़ज़वे का नाम ज़ातुर्रिक़ा यानी पैवन्द वाला ग़ज़वा हुआ।

ग़ज़व-ए-दौमतुल-जुन्द :

५ हिज० रबीउल-अव्वल को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चला कि मक़ामे दौमतुल-जुन्द में जो मदीना और दमिश्क़ के दर्मियान एक क़िला है वहां मदीना पर हमला करने की ग़रज़ से एक बड़ी फौज जमा हो रही है। तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार का लश्कर लेकर मुक़ाबले के लिए निकले। जब मुशरेकीन को पता चला तो वह मवेशियों और चरवाहों को छोड़ कर भाग निकले। उन्हें तमाम

सहाबा ने माले ग़नीमत बना लिया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहां तीन दिन क़याम फरमा कर मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर लश्करों को रवाना किया। इस ग़ज़वे में कोई मुक़ाबला नहीं हुआ।

ग़ज़व–ए–मरीसीअ् ३ शाबान ५ हिज० :

इस ग़ज़वे का दूसरा नाम ग़ज़व–ए–बनी अल–मुस्तलक़ भी है यह मक़ाम मदीना से आठ मील दूर है। यहां के क़बीले का सरदार हारिस बिन ज़र्रार था। उसने भी मदीना पर फौज कुशी के लिए लश्कर जमा कर रखा था। जब यह ख़बर मदीना पहुंची तो २ शाबान ५ हिज० को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लश्कर को लेकर रवाना हुए। इस ग़ज़वे में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा भी साथ थीं। जब हारिस बिन ज़र्रार को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तशरीफ़ आवरी की ख़बर हुई तो उसकी फौज भाग खड़ी हुई लेकिन वहां के बाशिन्दों ने मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू कर दिए। लेकिन जब मुसलमानों ने जम कर मुक़ाबला किया तो दस कुफ़्फ़ार मारे गये और सिर्फ़ एक मुसलमान शहीद हुआ बाक़ी तमाम कुफ़्फ़ार गिरफ़्तार हो गये। माले ग़नीमत में दो हज़ार ऊंट और पांच हज़ार बकरियां हाथ आईं। गिरफ़्तार शुदगान में सरदार हारिस की बेटी जुवैरिया भी थी और यह हज़रत साबित बिन क़ैस के हिस्से में आईं तो हज़रत साबित ने कहा अगर तुम मुझे इतनी रक़म अदा करोगी तो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया। मैं क़बीले की सरदार की बेटी हूं और मैं मुसलमान हो चुकी हूं। हज़रत साबित इतनी रक़म मांग कर मुझे आज़ाद करना चाहते हैं। मगर मेरे पास इतनी रक़म नहीं है। तब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रक़म अदा करके उन से निकाह फरमाया। उनका असली नाम बरह था। मगर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुवैरिया नाम रखा।

ग़ज़व–ए–ख़न्दक़ (अल–अहज़ाब) शव्वाल ५ हिज० :

इस ग़ज़वे का सबब यह है कि क़बीला बनू नज़ीर के यहूदी जब मदीना से निकाल दिए गये तो बाज़ यहूदी ख़ैबर में जाकर आबाद हो गये। लेकिन उनके सीनों में इंतिक़ाम की आग दहक रही थी उन्होंने मक्का जाकर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से मिल कर कहा अगर तुम लोग हमारा साथ दो हम लोग

मुसलमानों को सफ़ह–ए–हस्ती से नीस्त व नाबूद कर दें। कुरैशे मक्का को भी शह मिल गई। उन्होंने भी यहूदियों की हां में हां मिला दी। इसके बाद उन्होंने क़बीला बनू ग़तफ़ान, बनू असद, क़बीला बनू सलीम को भी अपने साथ मिला लिया। ग़रज़ तमाम क़बाइले अरब के कुफ़्फ़ार ने मिल कर एक लश्करे जर्रार तैयार कर लिया। जिसकी तादाद दस हज़ार थी और अबू सुफ़ियान पूरे लश्कर का सिपेहसालार था। जब तमाम क़बाइले अरब के ख़ौफनाक हमले की ख़बर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुई तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम सहाबा किराम को जमा फरमा कर मशवरा फरमाया कि इस हमले का मुक़ाबला किस तरह किया जाए। हज़रत सलमान फार्सी ने राय दी कि शहर से बाहर निकल कर मुक़ाबला करना मुनासिब नहीं है बेहतर तो यह है कि शहर के अन्दर रह कर इस हमले का दिफ़ा किया जाए और शहर कि गिर्द जिस तरफ़ से कुफ़्फ़ार की चढ़ाई का ख़तरा है उस तरफ़ ख़न्दक़ खोदी जाए। मदीने में चूंकि तीन तरफ़ मकानात की तंग गलियां थीं जिसकी वजह से हमला का इम्कान नहीं था। इसलिए जिस तरफ़ मदीना का एक रुख़ खुला हुआ था उस तरफ़ पांच इंच गहरी ख़न्दक़ खो दी गई। आठ ज़ी क़अ्दा ५ हिज० को हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन हज़ार सहाबा के साथ ख़न्दक़ खोदने में मसरूफ़ हो गये। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से ख़न्दक़ की हद बन्दी फरमाई। दस–दस आदमियों को दस–दस गज़ ज़मीन तक़्सीम फरमाई। हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि ख़न्दक़ खोदते वक़्त नागहां एक ऐसी चट्टान नमूदार हुई जो किसी से भी टूटने का नाम नहीं ले रही थी। हम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से माजरा बयान किया तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठे और फावड़ा मारा हालांकि आपको तीन दिन का फ़ाक़ा था। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस चट्टान पर तीन बार फावड़ा मारा। हर ज़र्ब पर उस में से एक रौशनी निकलती थी। इस रौशनी में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाम, ईरान और यमन के शहर और महल्लात को देखा और सहाबा को इन मुल्कों के फतह की बशारत फरमाई।

ख़न्दक़ खोदने के बाद ख़्वातीन और बच्चों को मदीना के महफ़ूज़ मक़ामात में जमा किया और तीन हज़ार की फौज लेकर मदीना से निकल

कर सलअ् पहाड़ के दामन में ठहरे जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुश्त पर था और सामने ख़न्दक़ देख कर ठिठुक गया और शहर का मुहासरा कर लिया और तक़रीबन एक माह तक कुफ़्फ़ार शहर का मुहासरा किए हुए थे। इस दर्मियान मुहासरे की वजह से मुसलमानों की परेशानी देख कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्याल किया कि कहीं सहाबा हिम्मत न हार बैठें। इसलिए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरादा ज़ाहिर किया कि क़बीला ग़तफ़लान के सरदार उयैना बिन हिसन से इस शर्त पर मुआहेदा कर लें कि वह मदीने की एक तिहाई पैदावार लेकर कुफ़्फ़ारे मक्का का साथ छोड़ दे। और जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि अल्लाहु अन्हु और सअद बिन उबाद रज़ि अल्लाहु अन्हु से अपना ख़्याल ज़ाहिर फरमाया तो दोनों ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर इस बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से वही उतरी तो हमें इंकार की मजाल नहीं और अगर यह राय है तो हम इन कुफ़्फ़ार को खजूर का अंबार नहीं बल्कि नेज़ों और तल्वारों की मार का तोहफ़ा देंगे। यहां तक अल्लाह तआला इसका फ़ैसला कर दे। हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सुन कर ख़ुश हो गये और आपको पूरा-पूरा यक़ीन हो गया। एक मरतबा लड़ाई के दौरान हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई। हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने सूरज गुरूब होने के बाद कुफ़्फ़ार को बुरा भला कहते हुए बारगाहे रिसालत मआब में हाज़िर हो कर कहा : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने अस्र की नमाज़ नहीं पढ़ी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैंने भी नहीं पढ़ी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वादिए बतहान में सूरज गुरूब होने के बाद पहले नमाज़े अस्र क़ज़ा पढ़ी फिर नमाज़े मग़्रिब अदा फरमाई और कुफ़्फ़ार के हक़ में दुआ मांगी ऐ बारी तआला इन मुश्रिकों के घर और क़ब्र में आग भर दे जिन्होंने हमारी नमाज़े अस्र को रोका और सूरज गुरूब हो गया। ग़ज़वा-ए-ख़न्दक़ के मौक़ा पर जब कुफ़्फ़ार मदीने का मुहासरा किए हुए थे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कौन है जो क़ौमे कुफ़्फ़ार की ख़बर लाए। हज़रत ज़ुबैर बिनुल-अवाम रज़ि अल्लाहु अन्हु जो हज़रत सफ़ीया के फ़रज़न्द थे उन्होंने कहा मैं ख़बर लाता हूं। हज़रत ज़ुबैर की जांनिसारी से

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर नबी के लिए हवारी व मददगार हुए मेरा हवारी ज़ुबैर है।

अबू सुफ़ियान शदीद सर्दी के मौसम, तवील मुहासरे और राशन ख़त्म होने की वजह से परेशान था और फिर यहूदियों ने भी उसका साथ छोड़ दिया था उसका हौसला पस्त हो चुका था। नागहां कुफ़्फ़ार के लश्कर पर क़हर व ग़ज़ब जब्बार की ऐसी मार पड़ी कि अचानक मश्रिक़ की जानिब से ऐसी तूफ़ान ख़ेज़ आंधी आई कि देगें चूल्हों पर से उलट गईं। काफिरों ने इस ख़ौफनाक आंधी से घबरा कर राहे फरार अख़्तियार कर ली और भाग खड़े हुए।

ग़ज़्व–ए–ज़ातुल–क़िर्द ७ मुहर्रम ७ हिज० जून ६२८ हिज० :

मदीने के क़रीब एक मक़ाम पर चरागाह है। जिसका नाम ज़ातुल–क़िर्द है। जहां हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनियां चरती थीं। क़बील–ए–ग़तफ़ान से तअल्लुक़ रखने वाला अब्दुर्रहमान बिन ऐबिया फ़ज़ारी ने चन्द आदमियों के साथ इस चरागाह पर छापा मारा और बीस ऊंटों को पकड़ कर ले गया। हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने बुलन्द आवाज़ से नारा मारा और ख़ुद भी तीर मार–मार कर ऊंटों को छीन लिया। डाकू भाग गये। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां पहुंचे लेकिन जब तक डाकू फरार हो चुके थे। उसके तीन दिन बाद ग़ज़्व–ए–ख़ैबर का वाक़या पेश आया।

ग़ज़्व–ए–ख़ैबर :

ख़ैबर मदीना से आठ मील दूर एक शहर है। यह बड़ा ज़र ख़ेज़ इलाक़ा है। यहां उम्दा खजूर बकसरत पाई जाती है। अरबिस्तान में यहूदियों का सबसे बड़ा मरकज़ था। यहां के यहूदी निहायत मालदार और जंगजू थे। इसलिए काफी घमण्डी थे। इनमें आठ क़िले थे। जिनके नाम कुतैबा, नाइम, शक़, क़मूस, नुतात, सअ़ब, दतीख़, सलालिम थे। यह क़िले महल नुमा थे। इन्हीं आठों क़िलों के मज्मूए को ख़ैबर कहते थे। जंगे ख़न्दक़ में जिन यहूदियों ने हमला किया था। उन में ख़ैबर के यहूदी भी थे। और बनू नज़ीर के यहूदी जो जलावतन हुए थे। मदीना से वह भी ख़ैबर आकर आबाद हुए थे। इसलिए वह दोनों वाक़ेआत का बदला लेने के लिए बेचैन थे। चुनांचे यह लोग मदीना पर फिर से हमला करने की तैयारी में मस्रूफ़ हो गये और एक बहुत बड़ी फौज तैयार करके मुसलमानों को तहस

...करने का मन्सूबा बनाया। जब रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस वाक़ए की ख़बर हुई तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोला सौ सहाबा किराम का लश्कर लेकर ख़ैबर के लिए रवाना हो गये। एक अलम हज़रत ख़ुबाब बिन मुंज़िर रज़ि अल्लाहु अन्हु को और एक अलम हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि अल्लाहु अन्हु को देकर और ख़ास अलमे नबवी हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु के दस्ते मुबारक में इनायत फ़रमाया। अज़्वाजे मुतह्हरात में से सिर्फ़ हज़रत उम्मे सलमा को साथ लिया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात के वक़्त हुदूदे ख़ैबर पहुंचे और नमाज़े फज्र के वक़्त शहर में दाख़िल हुए। लोगों ने देखा तो चिल्लाने लगे कि मुसलमानों का लश्कर आ पहुंचा और उनके साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी हैं। तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ख़ैबर बरबाद हो गया। यहूदियों ने औरतों और बच्चों को महफ़ूज़ क़िले में पहुंचा दिया। इन में सबसे मज़्बूत क़िला क़मूस था। मरहब यहूदी जो अरब का पहलवान था वह हज़ार पहलवानों के बराबर था और इसी क़िले का रईसे आज़म भी था। उनके पास बीस हज़ार फ़ौज इकट्ठा थी। जो मुख़्तलिफ़ क़िलों की हिफ़ाज़त के लिए मोर्चा बन्दी किए हुए थी। सबसे पहले नाइम पर मअ्रका आराई हुई हज़रत महमूद बिन मुस्ले ने निहायत बहादुरी से मुक़ाबला किया। इस क़िले के फ़तह करने में पचास मुजाहिद को जामे शहादत नोश करना पड़ा। क़िल–ए–नाइम के बाद दूसरे क़िले भी आसानी से फ़तह हो गये। लेकिन क़िला क़मूस जो बेहद मज़्बूत था और उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ़ौज भी ज़्यादा थी और यहूदियों का सबसे बड़ा बहादुर मरहब इस क़िले की हिफ़ाज़त पर मामूर था। पहले दिन हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु को इस्लामी कमान में रवाना किया। आपने निहायत जांनिसारी से मुक़ाबला किया मगर उनकी संगबारी की वजह से मुसलमान क़िले के फाटक तक न पहुंच सके और रात हो गई। दूसरे दिन हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु को कमान सौंपी। आप भी निहायत बहादुरी से हमला करते रहे मगर फ़तह न हो सका। इसी तरह पूरा दिन लड़ाई में गुज़र गया। सुबह हुई तो सहाबा किराम बड़े इश्तियाक़ से ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए कि यह एज़ाज़ हमें मिले। चूंकि उसके लिए

तीन बशारतें थीं। जिसके हाथ में यह अलम होगा वह अल्लाह और रसूल का मुहिब्ब होगा। क़िला ख़ैबर उसी के हाथ से फतह होगा। इसलिए सबकी ख़्वाहिश थी कि सुबह का अलम उसी के हाथ हो। लेकिन सुबह को अचानक लोगों के कान में यह सदा गूंजी अली कहां हैं। लोगों ने अर्ज़ किया कि वह आशोबे चश्म की वजह से आराम कर रहे हैं। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें बुला भेजा और उनकी दुखती आंख पर अपना लुआबे दहन लगा दिया। फौरन आपको शिफ़ा हासिल हो गई। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से अपना अलमे नबवी जो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा की सियाह चादर से तैयार किया गया था। हज़रत अली के हाथ सौंपा। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने क़मूस के पास पहुंच कर यहूदियों को इस्लाम की दावत दी। लेकिन उन लोगों ने उसका जवाब तीर और पत्थरों से दिया। फिर क़िला का रईस "मरहब" खुद सर पर यमनी ज़र्द रंग का ढाचा बांधे हुए और सर पर ख़ौद पहने हुए रज्ज़ पढ़ते हुए आया कि मैं मरहब हूं। अस्लहा पोश हूं। बहादुर और तजरबाकार दिलेर हूं। तब हज़रत अली शेरे खुदा ने भी उसका जवाब रज्ज़ से दिया। मैं वह हूं मेरी मां ने मेरा नाम हैदर (शेर) रखा और मैं शेर की तरह ख़तरनाक हूं। मरहब ने आगे बढ़ कर शेरे खुदा पर तल्वार का वार किया कि एक ही ज़र्बे हैदरी से ख़ौद कट गई और सर को काटती हुई आंतों तक उतर गई और वह वहीं तड़प कर ढेर हो गया। मरहब को ज़मीन पर गिरता देख कर उसकी फौज आप पर टूट पड़ी लेकिन वहां भी ज़ुल–फ़िक़ारे हैदरी ऐसी चमकी कि लाशों की सफ़ें बिछ गईं और फिर आप मुक़ाबला करते–करते क़िला के फाटक तक पहुंच गये और उसे उखाड़ डाला जब यहूदी फौज ने आप पर वार करना चाहा। आपने उसी फाटक को अपनी ढाल बना कर उनका वार रोके रखा। यह केवाड़ इतना बड़ा और वज़नी था कि चालीस आदमी उसे उठा नहीं सकते थे। आख़िरकार हज़रत अली शेरे खुदा के हाथों क़िला ख़ैबर फ़तह हुआ तब से आपको ख़ैबर शिकन का लक़ब मिला। अल्लाह तआला ने उन्हें फातेहे ख़ैबर लक़ब से सरफ़राज़ किया। यह वह फतहे अज़ीम है जिसने पूरे दुशमने इस्लाम की ताक़त का जनाज़ा निकाल दिया। और फिर उसके बाद ही इस्लाम को तक़्वियत मिली और मक्का फतह हुआ।

क़िल–ए–ख़ैबर बीस दिन के मुहासरे और ज़बरदस्त मअ्रका आराई

के बाद फतह हुआ जिसमें तिरानवें यहूदी और पन्द्रह मुसलमान शहीद हुए। फतहे ख़ैबर के बाद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरादा फरमाया कि बनू नज़ीर की तरह उन्हें भी जलावतन कर दिया जाए। मगर यहूदियों ने दर्ख़्वास्त की कि हमें यहां से न निकाला जाए। हम यहां की पैदावार का निस्फ़ हिस्सा आपको दिया करेंगे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी दर्ख़्वास्त कुबूल करके उन्हें क़िला में रहने की इजाज़त दी। वहां चन्द दिन क़्याम फरमाया। यहूदी अमन व अमान में थे लेकिन फिर भी अन्दर से कीना रखते थे। इस्लाम दुश्मनी उनके ज़ेहनों में कूट-कूट कर भरी हुई थी। सलाम बिन शिकम की बीवी ज़ैनब ने हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत की और गोश्त में ज़हर मिला दिया। खुदा के हुक्म से ज़हर भरी बोटी ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर कर दी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक निवाला ही उठाया था कि हाथ खींच लिया। लेकिन एक सहाबी हज़रत बशीर बिन बरा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने शिकमे सैर हो कर खाया और उसी ज़हर के असर से उनकी शहादत हो गई। उस ज़हर की वजह से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हलक़ में हमेशा जलन होती थी। चन्द दिनों बाद हज़रत बशीर रज़ि अल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से क़ेसास में ज़ैनब क़त्ल कर दी गई।

सराया

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद जब जिहाद की आयत नाज़िल हुई तो सबसे पहले एक छोटा सा लश्कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिए अपने चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु को एक सफेद झण्डा देकर सिर्फ़ तीस मुहाजिरीन भेजा जबकि दुश्मन तीन सौ की तादाद में थे। अबू जहल उसका सिपेहसालार था। हज़रत हम्ज़ा सिर्फ़ सैफुल-बहर तक पहुंचे उधर से कुफ़्फ़ार का लश्कर भी सामने आ गया। लेकिन एक शख़्स मुजद्दी बिन अमर ने दोनों फरीक़ में सलाह सफ़ाई करा कर लड़ाई मौकूफ़ कराई। यह लड़ाई वहीं पर ख़त्म हो गई।

सरीया उबैदा बिन-हारिस :

माहे शव्वाल १ हिज० में अस्सी मुहाजेरीन को हज़रत उबैदा बिन-हारिस

को सफेद झण्डा देकर राबेआ की तरफ़ रवाना किया। इधर अबू सुफ़ियान और अबू जहल, इकरमा की कमान में दो सौ कुफ़्फ़ारे कुरैश जमा थे। जंग की इब्तिदा हज़रत सअद बिन वक़ास ने मुसलमानों की तरफ़ से पहला तीर फेंका और पय दर पय आठ तीर फेंके। कुफ़्फ़ार इन तीरों से घबरा गये और मैदान छोड़ भाग निकले इसलिए इसमें भी कोई जंग नहीं हुई।

सरीया सअ्द बिन वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु :

ज़ी क़अ्दा १ हिज० हज़रत सअद बिन वक़ास को बीस मुजाहेदीन के साथ इस लिए भेजा कि कुफ़्फ़ारे कुरैश का रास्ता रोके मगर कुफ़्फ़ारे कुरैश को ख़बर हुई तो वह रातों रात फरार हो गये। यहां भी किसी क़िस्म का तसादुम नहीं हुआ।

सरीया अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि अल्लाहु अन्हु :

रजब १ हिज० में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि अल्लाहु अन्हु को अमीरे लश्कर बना कर बारह मुहाजेरीन का एक जत्था रवाना किया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह को एक लिफ़ाफ़ा देकर फरमाया दो दिन सफर करने के बाद इस लिफ़ाफ़े को खोल कर पढ़ना और उसमें जो हिदायत लिखी हैं उस पर अमल करना। जब दो दिन के सफर के बाद लिफ़ाफ़ा खोल कर देखा उस में लिखा था कि तायफ़ और मक्का के दर्मियान मक़ामे नख़्ला में ठहर कर कुफ़्फ़ार के क़ाफ़िले पर नज़र रखना और सूरते हाल से हमें बाख़बर करते रहना। इत्तिफ़ाक़ उसी दिन कुफ़्फ़ारे कुरैश का एक तिजारती क़ाफ़िला आया। हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने साथियों से फरमाया अगर हम उन्हें छोड़ दें तो यह मक्का वालों को ख़बर कर देंगे और मक्का वाले नहीं छोड़ेंगे। अगर जंग करेंगे तो आज रजब की पहली तारीख़ है जिसमें जंग व जिदाल हराम है क्या किया जाए। आख़िर तय हुआ कि जान के ख़तरे की बजाए इन्हीं से जंग की जाए। चुनांचे हज़रत वाक़िद बिन अब्दुल्लाह तमीमी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने ऐसा तीर मारा कि वह अमर बिन अल–हज़रमी को लगा और वह वहीं पर क़त्ल हो कर ढेर हो गया। और एक–एक करके बाज़ लोग क़त्ल हो गये और बाक़ी फरार हो गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश तमाम माल व असबाब जमा करके मदीना मुनव्वरा लौट आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया।

सरीया अबू सलमा :

यकुम मुहर्रम ४ हिज० एक शख़्स ने मदीना में आकर इत्तिला दी कि तलैहा बिन ख़ुवैलिद और सलमा बिन ख़ुवैलिद दोनों भाई मिल कर लश्कर जमा करके मदीना पर चढ़ाई करने के लिए निकले हैं। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस लश्कर की सरकूबी के लिए हज़रत अबू सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हु को डेढ सौ मुजाहिदीन के साथ रवाना फरमाया। कुफ़्फ़ार को पता चला कि मुसलमानों का लश्कर आ रहा है तो वह लोग बहुत से ऊंट और बकरियां छोड़ कर भाग निकले। मुजाहिदीन माले ग़नीमत समेट कर मदीना आ गये और यह सरीया भी बेग़ैर जंग व जिदाल के ख़त्म हुई।

सरीया अब्दुल्लाह बिन अनस सफर ४ हिज० :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला मिली कि ख़ालिद बिन सुफ़ियान हज़ली मदीना पर हमला करने निकला है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके मुक़ाबले के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु को भेजा। उन्होंने मौक़ा पाते ही ख़ालिद बिन सुफ़ियान को क़त्ल कर डाला और उसका सर काट कर मदीना में सरवरे आलम के क़दमों में ला कर डाल दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी बहादुरी से बेहद ख़ुश हुए और उन्हें अपना असा अता फरमाया और इरशाद फरमाया कि इसी असा को हाथ में लेकर तुम जन्नत में चहल–क़दमी करोगे। चुनांचे इंतिक़ाल के वक़्त उन्होंने वसीयत की कि असा मुबारक मेरे कफन के साथ रख देना। लोगों ने वैसा ही किया।

वाक़–ए–रजीह :

क़बील–ए–अफ़ल वक़ारह के चन्द आदमी दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में आए और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे क़बीले वालों ने इस्लाम क़ुबूल किया है। इसलिए आप चन्द सहाबा को भेज दें ताकि वह हमारी क़ौम को इस्लाम के अहकाम व अक़ाइद सिखा दें। उनकी दर्ख़्वास्त पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दस सहाबा को मुन्तख़ब करके रवाना फरमाया। जब यह क़ाफ़िला रजीह के मक़ाम पर पहुंचा तो ग़द्दार कुफ़्फ़ार ने बद अह्दी करके दो सौ की तादाद में जमा हो कर इन दस मुसलमानों पर हमला कर दिया।

मुसलमानों ने अपने बचाव के लिए एक ऊंचे टीले पर चढ़ कर ऊपर से पत्थर बरसाना शुरू किए। तब कुफ़्फ़ार ने और एक धोखा दिया और कहा कि ऐ मुसलमानों हम ने तुमको अमान दी और अपनी पनाह में लेते हैं। हज़रत आसिम बिन साबित रज़ि अल्लाहु अन्हु जो इस क़ाफ़िले के सरदार थे फरमाया हम किसी काफिर की पनाह में आना गवारा नहीं करते और फिर वह दस सहाबा लड़ते हुए टीले से उतरे और कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला शुरू किया। जिन में छेः सहाबा किराम शहीद हो गये और चार सहाबा किराम को जिनमें दो सहाबा को भी शहीद कर दिया और दो सहाबा हज़रत खुबैब और हज़रत ज़ैद बिन दशना को काफिरों ने बांध कर मक्का ले जाकर बेच दिया। जिनको हारिस बिन आमिर ने ख़रीद कर शहीद कर डाला।

जंगे मौता जमादिल–ऊला ८ हिज० ६२६ ई० :

मुल्क शाम में एक मक़ाम है जिसका नाम मौता है। जहां कुफ़्फ़ार व मुसलमानों का अज़ीमुश्शान मअ्रका हुआ। जिसमें कुफ़्फ़ार के एक लाख लश्कर और मुसलमानों के सिर्फ़ तीन हज़ार मुजाहेदीन ने तारीख़ में ऐसा कारनामा अंजाम दिया जो रहती दुनिया तक यादगार होगा। इसका सबब यह था कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बसरा के बादशाह या क़ैसरे रूम के नाम एक ख़त लिख कर हज़रत हारिस बिन उमैर रज़ि अल्लाहु अन्हु को सफीर बना कर भेजा। मगर रास्ते में बल्क़ा के बादशाह शरजील उमर ग़स्सानी ने उस क़ासिद को क़त्ल कर दिया। जब इस हादसे की ख़बर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहुंची तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ल्बे मुबारक पर निहायत सदमा पहुंचा। इस वक़्त हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन हज़ार का लश्कर तैयार करके अपने दस्ते मुबारक से सफेद रंग का झण्डा ज़ैद बिन हारसा रज़ि अल्लाहु अन्हु के हाथ में देकर लश्कर का सिपेहसालार बना कर फरमाया अगर ज़ैद बिन हारसा शहीद हो जाएं तो इस झण्डे के अलम बरदार हज़रत जाफर होंगे। जब वह भी शहीद हो जाएं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा के हाथ में अलम होगा। अगर वह भी शहीद हो गये तो लश्करे इस्लाम जिसको मुन्तख़ब करे वह सिपेहसालार होगा। इस लश्कर को रुख़्सत करने के लिए खुद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़ामे शनीयतुल–विदाअ् तक तशरीफ़ ले गये। जब यह फौज

मदीना से कुछ दूर निकली तो ख़बर मिली कि ख़ुद क़ैसरे रूम मुशरेकीन की एक लाख फौज लेकर बल्क़ा में ख़ेमा ज़न हो चुका है तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ने भी पड़ाव डालने का हुक्म दिया और इरादा किया कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसकी इत्तिला दी जाए। मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने कहा। हमारा मक़्सद फतह पाना माले ग़नीमत हासिल करना नहीं है बल्कि हमारा मक़्सद सिर्फ़ शहादत है। इस तक़रीर से तमाम लश्कर में जोश व ख़रोश पैदा हो गया। जबकि सामने एक लाख का लश्कर था और मुसलमान का लश्कर सिर्फ़ तीन हज़ार। मगर मुसलमान ख़ुदा पर भरोसा करके मैदाने जंग में कूद पड़े। और सबसे पहले हज़रत ज़ैद बिन हारसा ने मुसलमानों के तरफ़ से तीर फेंका और कुफ़्फ़ार ने तीरों से उसका जवाब दिया। आख़िर लड़ते–लड़ते आप शहीद हो गये। फौरन हज़रत जाफर रज़ि. अल्लाहु अन्हु ने परचमे इस्लाम उठा लिया मगर उन्हें भी एक रूमी मुश्रिक ने पीछे से ऐसी तल्वार मारी कि आपके दोनों बाज़ू कट गये। आप नीचे गिरने ही वाले थे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया और निहायत दिलेरी से लड़ते रहे। आख़िर ज़ख़्मों से चूर हो कर निढाल हो कर गिर पड़े और शहादत का जाम नोश फरमाया तब लोगों के मशवरे से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हु सिपेहसालार मुक़र्रर हुए और झण्डा उनके हाथ में दिया गया। हज़रत ख़ालिद रज़ि अल्लाहु अन्हु ने भी निहायत शुजाअत के साथ मुक़ाबला किया कि नौ तल्वारें आपके हाथ से टूट गईं। जिसकी वजह से आपको सैफुल्लाह यानी अल्लाह की तल्वार का लक़ब अता हुआ। अपनी जंगी महारत से इस्लामी लश्कर को कुफ़्फ़ार के नरग़े में से निकाल लाए। मौता की मअ्रका आराई में घमसान का रन पड़ा और मुसलमान दुश्मनों के नरग़े में फंसे रहे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा से मैदाने जंग का नज़ारा देख रहे थे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आंखों से तमाम हिजाबात इस तरह उठ गये गोया मैदाने जंग में ख़ुद हाज़िर रह कर देख रहे हो। हज़रत ज़ैद, हज़रत जाफर, हज़रत अब्दुल्लाह की शहादतों की ख़बर आने से पहले ही आप वहां हाज़िर सहाबा को सरगुज़श्त सुना रहे थे।

जब ख़ालिद बिन वलीद अपने लश्कर के साथ मदीना पहुंचे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद घोड़े पर सवार हो कर इस्तिक़्बाल के लिए तशरीफ़ ले गये। हज़रत जाफर के दोनों बाज़ू कट गये थे तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बारे में इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत जाफर को उनके दोनों हाथों के बजाए दो बाज़ू अता किए हैं जिन से उड़ कर वह जन्नत में जहां चाहे जा सकते हैं। इसी वजह से हज़रत जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु को तैयारा का लक़ब मिला और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को सैफुल्लाह का।

सरीयहुल–ख़बत :

इस सरीया को हज़रत इमाम बुख़ारी ने सैफुल–बहर के नाम से ज़िक्र किया है। इसका सबब यह है कि रजब ८ हिज० में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को तीन सौ सहाबा किराम का अमीरे लश्कर बना कर साहिल समुन्द्र की जानिब रवाना फरमाया। इस लश्कर में ख़ूराक की इस क़द्र कमी थी कि लोग एक–एक खजूर पर दिन काट रहे थे यहां तक कि खजूर भी ख़त्म हो गई और भूख से बीमार हो रहे थे। फिर वह दरख़्तों के पत्ते खाने पर मज्बूर हो गये। चूंकि अरबी में पत्तों को ख़बत कहा जाता है इसलिए इसका नाम सरीया अल–ख़बत हुआ। इस दर्मियान अल्लाह तआला की कुदरत से समुन्द्र में से एक मछली पहाड़ की मानिन्द किनारे पर आ लगी। तीन सौ सहाबा अट्ठारह दिन इस मछली का गोश्त खाते रहें और चलते वक़्त उसके टुकड़े अपने साथ मदीना लाकर हुज़ूर के दरबार में पेश किए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उसका गोश्त तनावल फरमाया।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

बारहवां बाब

ख़ुलफ़ा–ए–किराम

ख़लीफ़–ए–अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु :

आपकी विलादत ५७२ ई० में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दो साल बाद हुई। आपके वालिद का नाम उस्मान बिन आमिर और कुन्नियत अबू कहाफ़ा थी।

इस्लाम से पहला आपका नाम अब्दुल–काबा था। जब आप इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका नाम अब्दुल्लाह और अतीक़ रखा। आपका लक़ब सिद्दीके अकबर है। सबसे पहले मर्दों में ईमान लाने वाले आप ही हैं। आपने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैयबा में सतरह नमाज़ें पढ़ाई। दौरे जाहिलीयत में आपने दो निकाह किए। अव्वल क़बीला बिन्ते अब्दुल–उज़्ज़ा से दूसरे अस्मा बिन्ते उमैस से। आपके दो साहबज़ादे अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु और मुहम्मद बिन अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु। और दो साहबज़ादियां एक अस्मा रज़ि अल्लाहु अन्हा दूसरी हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा जो हुज़ूरँ पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आईं। हज़रत अस्मा का लक़ब दो पटके वाली है यानी आप ग़ारे सौर में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अपने वालिदे मोहतरम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के लिए खाना पानी ले जाया करती थीं। एक को कमर में बांध कर और दूसरा सर पर ओढ़ कर इसलिए दोपटके वाली का लक़ब मिला। आपकी शरीके हयात का नाम उम्मे रूमान था।

एक मरतबा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपसे फरमाया था इन्शाअल्लाह हमें मक्का से मदीना हिजरत करनी पड़ेगी। तब से आपने दो ऊंट तैयार कर रखे थे। एक अपने लिए और एक हुज़ूर के लिए। हिजरत के वक़्त जब आप ग़ारे सौर पर चढ़ रहे थे। रास्ता निहायत ख़तरनाक था आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने कन्धे पर बिठा रखा था आपकी मुहब्बत का यह आलम था कि क़दम–क़दम पर आप हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमे मुबारक चूमते थे। ग़ारे

ग़ार में दाख़िल होने पर आपने अपना पैराहन फाड़ कर ग़ार के सूराख़ों को बन्द किया। एक सूराख़ रह गया तो आपने उस पर अपनी एड़ी लगा दी और आपके ज़ानूए मुबारक पर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आराम फ़रमाने लगे। जिस सूराख़ पर आपने एड़ी लगाई थी उसमें से एक सांप ने आपकी एड़ी को डस लिया। मगर आपने जुंबिश तक न की क्योंकि आपकी ज़ानूए मुबारक पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्तेराहत फ़रमा रहे थे। दर्द की वजह से आपके आंसू निकल कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहर–ए–अनवर पर गिर पड़े। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आंख खोल कर पूछा क्या बात है तब आपने एड़ी बतलाई इतने में एक सांप पछाड़े खाता हुआ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों में गिर पड़ा। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से दरयाफ़्त किया ऐसी हरकत क्यों की तब वह गोया हुआ की आज से पांच सौ बरस पहले से मैं आपका इंतिज़ार इस ग़ार में कर रहा था और अब जबकि मुझे आपके दीदार का वक़्त आया तो आपके यारे ग़ार ने मेरा रास्ता रोक रखा था इसलिए मजबूरन मुझे काटना पड़ा। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा क्या वजह है कि तू पांच सौ साल से मेरा इंतिज़ार कर रहा था। तब सांप ने कहा एक मरतबा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम एक दरख़्त के नीचे लोगों को इंजील का दर्स दे रहे थे और आपकी तारीफ़ फरमा रहे थे। तब मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि मुझे तब तक हयात रखना जब तक पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां का ज़ुहूर न हो अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़ुबूल की। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे मुआफ़ फरमाइए। आपने उसे मुआफ़ किया। आपका पूरा कुंबा दाइर–ए–इस्लाम में आ चुका था। आप ख़ुद आपके वालिद अबू कहाफ़ा। आपकी बीवी उम्मे रूमान। आपके दोनों साहबज़ादों और दोनों साहबज़ादियां। और आपके पोते हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह। आप मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा हुए। आपकी मुद्दते ख़िलाफ़त दो साल चार माह दस दिन थी। आपने ६३ साल की उम्र में वफ़ात पाई। आपकी ज़ौजा अस्मा बिन्ते उमैस और आपके साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान ने गुस्ल दिया। आपने वसीयत की थी कि मेरा जनाज़ा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़–ए–मुबारक के सामने रख देना। अगर दरवाज़ा ख़ुद बख़ुद खुल जाए तो मुझे हुज़ूर के पहलू में दफन करना चुनांचे आपकी

वसीअत के मुताबिक़ जनाज़ा रौज़–ए–मुबारक के सामने रखा गया। दरवाज़ा खुद बखुद खुल गया तब आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलूए मुबारक में सुलाया गया। हज़रत उमर फारूके आज़म हज़रत उस्मान ग़नी, हज़रत तलहा ने क़ब्र में उतारा हज़रत फ़ारूक़े आज़म ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। २२ रबीउस्सानी १३ हिज० को आपकी वफ़ात हुई। आप पर सदाक़त ख़त्म हुई।

ख़लीफ़–ए–दोम अमीरुल–मुमिनीन हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु :

आपकी विलादत हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत के तेरह साल बाद ५८२ ई० में हुई।

आपका लक़ब फ़ारूक़े आज़म है। एक मरतबा एक यहूदी और नस्रानी के दर्मियान झगड़ा हुआ। मुआमला हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में पेश हुआ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदी के हक़ में फ़ैसला दिया। इस पर नसरानी को इत्मीनान न हुआ और उसने यहूदी को लेकर हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास आकर मस्अला रखा आपने उसी वक़्त नस्रानी को क़त्ल कर दिया यह कह कर कि जो अल्लाह के रसूल का फ़ैसला न माने उसका यही अंजाम है। इस वाक़या से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहद खुश हुए और फारूक़ (यानी इंसाफ़ करने वाला) का लक़ब अता किया। यूं तो आपके इंसाफ के कई वाक़ेआत गुज़रे हैं। उनमें से एक वाक़या दर्ज है। आपके दरबार में एक ख़ातून ने आपके बेटे के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा पेश किया। आपने अपने लड़के को बुला कर हक़ीक़त पूछी तो उसने अपने गुनाह का इक़रार किया। तब आपने शरीअत के मुताबिक़ सौ कोड़े मारने का हुक्म दिया। वहां पर दूसरे सहाबी थे उन्होंने कहा हमें सज़ा दे दो मगर उसको सज़ा मत दो। मगर आप न माने और सौ कोड़े लगवाने का हुक्म दिया। अभी पचास कोड़े ही हुए थे कि बेटा जाबहक़ हो गया। आपने पचास कोड़े उसके क़ब्र पर मारने का हुक्म दिया। यह अदना सा वाक़या है। आपकी शहादत का वाक़या इस तरह है कि एक नसरानी फीरोज़ नामी अपने मालिक के ख़िलाफ़ फ़ैसला लेने गया आपने मालिक के हक़ में फ़ैसला दिया जिसकी वजह से वह आपका जानी दुशमन बन गया उसके दिल में बग़ावत का जज़्बा पैदा हुआ। एक दिन मौक़ा पाकर जब आप मस्जिदे नबवी में फज्र की नमाज़ अदा कर

रहे थे तब उस मलऊन जिसका नाम लूलू था नमाज़ की हालत में ख़ंजर से छेः वार किए वार होते ही आप जबकि इमामत के फर्ज़ अदा कर रहे थे फौरन हट गये और अपनी जगह अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को खींच कर खड़ा किया और ज़ख़्मी हालत में गिर पड़े लोगों ने उसी हालत में नमाज़ पूरी कर दी। लोगों ने लूलू को पकड़ कर आपके सामने पेश किया आपने उसे छोड़ देने का हुक्म दिया। जर्राह को बुला कर फटा हुआ सीना सी कर आराम करने का हुक्म दिया मगर जब जुहर की अज़ान सुनी आपने वुज़ू के लिए पानी मांगा। जर्राह ने कहा आप बाद में क़ज़ा नमाज़ पढ़ लें मगर आप न माने और दो दिन बाद यकुम मुहर्रम बरोज़ इतवार शहादत पाई। आख़िरी वक़्त में आपने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा से इजाज़त तलब की कि उन्हें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम के पहलू में दफन किया जाए। हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फरमाया यह जगह मैंने अपने लिए महफूज़ रखी थी मगर आपकी ख़्वाहिश है तो मैं इजाज़त देती हूं। तब आपको हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के बराबर हुज़ूरे अकरम के पहलू में दफन किया गया। आपको हज़रत उस्मान ग़नी, हज़रत अली, हज़रत ज़ुबैर ने क़ब्र में उतारा। हज़रत सुहैब रूमी ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

आपकी मुद्दते ख़िलाफ़त दस साल छेः माह है। आपने ही सबसे पहले तक्बीर का नारा बुलन्द किया। आप पर अदालत ख़त्म हुई।

ख़लीफ़–ए–सोम हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु :

हज़रत उस्मान ग़नी आम फील से पांच साल पहले पैदा हुए। आपके वालिद का नाम अफ़्फ़ान बिन–आस था। वालिदा का नाम वरसी बिन्ते कुरैज़ था। जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी ज़ाद बहन थीं। आपका सिलसिला पांचवें पुश्त पर अब्दुल–मनाफ़ से मिलता है। आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म के कहने पर इस्लाम क़ुबूल किया। आपके अन्दर हया कूट–कूट कर भरी थी। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हज़रत उस्मान से फरिश्ते भी हया करते हैं। आपको जुन्नूरैन का लक़ब अता हुआ। चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो नूरे ऐन (साहबज़ादियां) आपके निकाह में थीं। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा।

आपको जामेउल–कुरआन भी कहा जाता है। आपने देखा कि बाज़ सहाबा किराम जो हाफ़िज़े कुरआन थे। वह या तो वफ़ात पा गये या मदीना छोड़ कर दूसरे शहरों में चले गये। बाज़ सहाबा किराम जिहाद में शहीद हो गये। आपने सोचा अगर इसी तरह हाफ़िज़े कुरआन न रहे तो कुरआन मिट जाएगा। इसलिए आपने हर जगह तमाम मक़ामात पर जहां भी आपको इत्तिला मिलती गई। क़ासिद रवाना करके कुरआन मजीद के नुस्ख़े जमा किए और उसे तरतीब दिया, जिसे मुस्हफ़े उस्मानी कहा जाता है।

हज़रत इमाम बुख़ारी से रिवायत है कि हज़रत हुज़ैफ़ा ने देखा कि मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर क़िरअत में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है तो उन्होंने आपकी ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया। अगर इसी तरह क़िरअत में इख़्तिलाफ़ पाया गया तो फ़ित्ने का अन्दाज़ा है। लिहाज़ा आपने मज्लिसे शूरा तलब की और चन्द सहाबा को यह काम दिया कि जहां कहीं भी ख़त्तात और हुफ़्फ़ाज़ हों उनके पास से कुरआन की आयतें और सूरते जमा करें। जो मशकूक हो उसको मन्सूख़ करें। इस तरह आपने सहाबा किराम के ज़रिया तमाम नुस्ख़े जमा करवा कर उसे तरतीब देकर कुरआन की शक्ल दी। आप ग़ल्ला और कपड़ों की तिजारत किया करते थे। आपने बहुत से इस्लाही काम किए। एक कुवां यहूदी के क़ब्ज़े में था उसे ख़रीद कर मुसलमानों के लिए आम कर दिया। आप मालदार के साथ सख़ी भी थे इसलिए आपको उस्मान ग़नी का भी लक़ब मिला। जब आप इत्तिफ़ाक़ राय से मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए तो मरवान ने फ़ित्ना खड़ा किया चूंकि वह हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाना चाहता था। इसलिए हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु को ओहदे से हटाने के लिए तरह–तरह के हरबे इस्तेमाल किए। उसने हज़रत उस्मान ग़नी को बहकाना शुरू किया कि लोग आपको इस ओहदे से हटाना चाहते हैं आप एलान करें कि अगर किसी ने मुझे हटाने की कोशिश की तो मैं उसको सख़्त सज़ा दूंगा। आपने वैसा ही ऐलान किया। इधर उसने लोगों को भड़काना शुरू किया कि हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु ने बैतुलमाल से अपने रिश्तेदारों को बड़ी–बड़ी रक़में दे रखी हैं दूसरी बात यह कि उसने अब्दुल्लाह के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया जिस से लोग हज़रत अब्दुल्लाह से बदज़न हो गये और मुतालबा करने लगे कि हज़रत अब्दुल्लाह को हटा कर मुहम्मद बिन अबू बकर को मनसब दिया जाए। आपने लोगों

के मुतालबे के मुताबिक़ अब्दुल्लाह को हटाने का फरमान जारी किया। लेकिन मरवान ने आपकी महर की अंगूठी चुरा कर दूसरा फ़रमान अब्दुल्लाह के नाम लिखा कि मुहम्मद बिन अबू बकर को क़त्ल कर दो और उस पर आपकी मुहर लगा दी। जब यह लिफ़ाफ़ा लोगों के हाथ लगा तो लोग आग बगोला हो गये और आपके दुश्मन बन गये। आपने क़सम खा कर कहा मैंने कोई ऐसा फरमान जारी नहीं किया तो उन्हें मुहर लगा हुआ लिफ़ाफ़ा दिखाया गया। इधर लोगों ने आपको क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया उस वक़्त हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु मस्जिदे नबवी में एतकाफ़ में बैठे थे। आपने अपने दोनों साहबज़ादों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन को आपकी हिफ़ाज़त के लिए दरवाज़े पर पहरेदार की हैसियत से बिठाया। लेकिन बाग़ियों ने ऊपर छत तोड़ कर घर में दाख़िल हो कर आप पर पय दर पय वार किए उस वक़्त आप क़ुरआन पाक की तिलावत फरमा रहे थे ख़ून के छींटे इस आयत पर गिरे फ़सीफ़खतहम जो आज तक ताशक़न्द के म्यूज़ियम में महफ़ूज़ है।

आपकी लाश तीन दिन बेग़ौर व कफन पड़ी रही। १८ ज़िल–हिज्जा जुमा ३५ हिज० में शहीद किए गये दिन में परिन्दे आकर आप पर साया करते। तीसरे रोज़ हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु एतकाफ से बाहर आए तब उन्होंने आपकी तज्हीज़ व तक्फीन करके जन्नतुल–बक़ीअ़ में दफन किया। उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ बयासी साल थी। आपने १२ साल ख़िलाफ़त की। एक मरतबा हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु की तरफ़ इशारा करके फरमाया था कि यह बेगुनाह क़त्ल किए जाएंगे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीन गोई के मुताबिक़ हज़रत उस्मान ग़नी बेगुनाह शहीद कर दिए गये।

ख़लीफ़–ए–चहारुम हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू :

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की विलादत ६०२ ई० रजब में बरोज़ जुमा हुई।

आपके वालिद का नाम अबू तालिब था जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ीक़ी चचा थे। आपकी वालिदा माजिदा फातिमा बिन्ते असद हैं। हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम चन्द लोग हरम शरीफ़ में बैठे थे। उस वक़्त आपकी वालिदा कअ़बतुल्लाह का तवाफ़ कर रही थीं। उस वक़्त वालिदा को दर्देज़ेह की तक्लीफ़ शुरू

हुई सिर्फ़ चार चक्कर काटे कि वहीं बैठ गईं और आपकी विलादत का वक़्त आया। तो अल्लाह तआला का दीवारे काबा को हुक्म हुआ कि वह फातिमा बिन्ते असद से दूर हट जाए कि यहां मेरा शेर पैदा होने वाला है। तब पूरा काबा वहां से हट गया। लोगों ने यह मंज़र अपनी आंखों देखा उस वक़्त आपकी ख़ाला भी साथ थीं। तब से आपका लक़ब असदुल्लाह (अल्लाह का शेर) हुआ। आपकी वालिदा ने आपका नाम हैदर रखा था। मगर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अली नाम रखा। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी यह नाम पसन्द आया।

बच्चों में सबसे पहले आप ही ईमान लाए। उस वक़्त आपकी उम्र आठ या दस साल थी। आपकी कुन्नियत अबू तुराब है। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपको हैदरे कर्रार भी कह कर पुकारते यानी बार–बार हमला करने वाला। आपने मदीने के क़रीब ख़ैबर का क़िला फ़तह किया इसलिए आपको ख़ैबर शिकन का लक़ब अता हुआ।

ज़िल–हिज्जा २ हिज० ६२४ ई० में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे छोटी लाडली दुख़्तर हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा से आपका निकाह हुआ। जब तक हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा हयात रहीं आपने दूसरा निकाह नहीं किया। आपको हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा से तीन फ़रज़न्द हुए। हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत मुहसिन रज़ि अल्लाहु अन्हुम जिनका अह्दे तिफली में ही इंतिक़ाल हुआ और दुख़्तरान में हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा।

आप मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा थे जो तमाम सहाबा की इत्तिफ़ाक़ राय से मुन्तख़ब हुए। लेकिन बाज़ लोग समझ रहे थे कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान की शहादत में आप ही का हाथ है और वह चाहते थे कि आप को माज़ूल कर दिया जाए जिनमें हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु का नाम सरे फेहरिस्त है। उन्होंने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा को आपके ख़िलाफ़ भड़काना शुरू किया जिसकी वजह से जंगे जुमल का वाक़या पेश आया। चूंकि अरबी में ऊंट को जुमल कहा जाता है और हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा ऊंट पर सवार हो कर आप से जंग करने निकलीं। आपने क़समें खा–खा कर यक़ीन दिलाया कि

हज़रत उस्मान के ख़ून में मेरा हाथ नहीं। हज़रत मुआविया ने जुमा को खुतबे में लोगों के जज़्बात भड़काने का काम किया और वाक़या उफ़्क़ के सिलसिले में भी हज़रत मुआविया ने हज़रत अली को बदनाम किया कि उन्होंने ही आइशा पर तोहमत लगाई थी। इसलिए हज़रत आइशा और ज़्यादा भड़क उठीं। आख़िरकार जंग का बिगुल बजा और जंग शुरू हुई जिन में बहुत से मुसलमान शहीद हुए। हज़रत आइशा ने भी सुलह करनी चाही मगर बाज़ मुफ़्सिदों ने जंग का नक़्शा बदल दिया जिस से आख़िर कार हज़रत आइशा को शिकस्त हुई। एक फ़िरक़ा हज़रत अली को ख़लीफ़ा रहने पर मिस्र था तो दूसरा हज़रत मुआविया को ख़लीफ़ा बनाने पर तुला हुआ था। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया हज़रत मुआविया का ख़िलाफ़त से क्या वास्ता वह उस मां का बेटा है जिसने जंगे उहद में अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु का कलेजा चबाया था। जिससे हज़रत अमीर मुआविया का गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने आपके दुशमनों में एक शख़्स इब्ने मुल्ज़िम को हज़रत अली के क़त्ल पर आमादा किया। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने एक जंग में फतह के मौक़ा पर उसे एक तल्वार इनाम में दी थी। लेकिन बदक़िस्मती से बदकिरदार ने उसी तल्वार से आपको शहीद कर दिया। आप फज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे कि अचानक उस ने सज्दे में ऐसा वार किया कि तल्वार आर पार निकल गई लोगों ने आपको संभाला और घर ले आए तबीब ने टांके लगाए जब लोगों ने क़ातिल को पकड़ कर आपके सामने पेश किया तो आपने उसे खाना खिलाया और कहा कि इस शहर से कहीं दूर चला जाए उस वक़्त आप नजफ अशरफ में थे। १८ रमज़ान ४ हिज० में ज़ख़्मी हुए तीन दिन बाद २१वीं शब में शहादत के दर्जे पर पहुंच गये। आप का मज़ारे मुक़द्दस नजफ अशरफ इराक़ में है। हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने गुस्ल दिया आपकी ख़िलाफ़त की मुद्दत चार साल रही। शहादत के वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ त्रिसठ साल थी। हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा के बाद आपकी आठ बीवियां हुईं। जिनकी औलाद को कहा जाता है। एक बीवी ख़लीफ़ा की औलाद को हनफ़ीया कहा जाता है। पांच पंजतन में आपका इस्मे गिरामी गिना जाता है।

ख़लीफ़तुल–मुस्लेमीन हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु :

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु की १५ रमज़ानुल–मुबारक ३ हिज० यकुम फरवरी ६२५ ई० को हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा के वतने मुबारक से विलादत हुई।

हज़रत अली के बाद तमाम सहाबा किराम की इत्तिफ़ाक़ राय से मुसलमानों के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुए। लेकिन हज़रत अमीर मुआविया की चपक़लश और मिन्नत समाजत से आप छेः माह के बाद ही ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो गये। और हज़रत अमीर मुआविया को इमारत सौंपते हुए फरमाया मुझे ख़िलाफ़त से कुछ सरोकार नहीं। अल्बत्ता मेरी दो दर्ख़्वास्तें हैं एक मेरे अह्ल व अयाल के लिए वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया जाए और मेरे वालिदे मोहतरम के बारे में नाज़ेबा अल्फ़ाज़ न कहे जाएं। हज़रत मुआविया ने दोनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं। मगर फिर भी दिल में खटका था कि कब इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु पलट जाएं और हज़रत अली रज़ि अल्लहु अन्हु के साहबज़ादे और नवास–ए–रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होने के नाते बाग़ी न हो जाएं।

एक रिवायत में है हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु को सात मरतबा ज़हर दिया गया। एक रिवायत में तीन मरतबा, आख़िर वक़्त में हीरा पीस के पानी में घोल कर पिलाया गया। चूंकि आपको रात में पानी पीने की आदत थी और पानी का कटोरा आपके सरहाने रखा रहता इसलिए उसका फाइदा उठा कर उसी पानी में ज़हर घोला गया। इधर आपके हलक़ से पानी उतरा उधर फौरन आपके कलेजे के टुक्ड़े–टुक्ड़े हो कर क़य के ज़रिया गिरने लगे। आपने फौरन हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा को बुला कर फरमाया दुशमनों ने अपना काम कर दिया। जो ख़ानदाने नुबुव्वत की बरबादी पर कमरबस्ता हैं मेरे बाद अब हुसैन अकेला रह जाएगा। मुझे मौत का मलाल नहीं। लेकिन वालिद साहब ने हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का हाथ मेरे हाथ में दिया था। मगर अफ़्सोस मैं वादा वफ़ा न कर सका और अब तमाम अह्ले ख़ाना को ख़ुदा के हवाले कर रहा हूं। पता नहीं दुश्मन अब हुसैन और अह्ले ख़ानदान के साथ क्या सुलूक करेंगे। हज़रत इमाम हुसैन ने आपके क़ातिल का नाम पूछा मगर आपने कहा अल्लाह बेहतर सज़ा देने वाला है। हालांकि आप जान चुके थे

कि ऐसी नाज़ेबा हरकत किस ने की मगर आपकी शराफ़त आड़े आई और उसे राज़ ही रखा। आख़िर आप ने २८ सफ़रुल-मुज़फ़्फ़र ५० हिज० में हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की गोद में जान-जाने आफ़रीं खुदा के हवाले करके रुतबाए शहादत पाया।

जब आपके कलेजे के टुकड़ों को गिना गया तो ७२ टुकड़े थे जो मैदाने करबला में शहीद होने वाले थे। आपका मदफ़न जन्नतुल-बक़ीअ् में है।

आपको सब्ज़ रंग बेहद पसन्द था। आपकी पेशानी मुबारक पर सब्ज़ रंग का निशान था जो ज़हर की अलामत था। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर आपकी पेशानी चूमा करते थे और फरमाते थे मेरा यह नवासा ज़हर से शहीद होगा। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर यह भी फरमाते हसन व हुसैन मेरे जिगर के टुकड़े हैं जिन्होंने उन्हें नाराज़ किया उन्होंने मुझे नाराज़ किया। जिसने उन्हें खुश किया उसने मुझे खुश किया। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं।

यहां पर ख़ुलफ़ाए राशिदीन का तज़्किरा तमाम हुआ।

हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु :

हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की विलादत बा सआदत ५ शाबाने मुअज़्ज़म ४ हिज० १० जनवरी ६२६ ई० में हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा के बतने पाक से हुई। जिस वक़्त हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु पैदा हुए उस वक़्त अर्शे आज़म पर खुशियों के शादयाने बजाए जा रहे थे तो दूसरी जानिब मलाइका ग़म मना रहे थे। जब मलाइका आपको नवासे की विलादत की मुबारक देने आए तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिब्रील अलैहिस्सलाम से फरमाया : जिब्रीले अमीन यह मैं क्या देख रहा हूं एक तरफ़ मेरे नवासे की आमद पर खुशियां मनाई जा रही हैं और दूसरी तरफ़ यह ग़म व अन्दोह क्यों मनाया जा रहा है। जिब्रीले अमीन ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह मलाइका इसलिए खुशियां मना रहे हैं कि आपको नवासा हुआ। जिसकी नस्ल क़यामत तक चलेगी। और यह आपकी उम्मत को अल्लाह तआला से बख़्शवाने के लिए अपने ख़ानदान को कुरबान कर देगा और दूसरी तरफ़ ग़म इस बात का मनाया जा रहा है कि कूफ़ा के कुफ़्फ़ार

आपके नवासे को धोखे से बुलवा कर तमाम आले ख़ानदान पर ज़ुल्म व सितम की बारिश बरसाएंगे। उन्हीं आले ख़ानदान के साथ तीन दिन भूखा प्यासा दश्ते करबला में दुश्मनों का मुक़ाबला करना पड़ेगा वह अपने सामने अपने बच्चे अली असग़र अकबर को ख़ून में तड़पता हुआ देखेगा। और आख़िर आपकी उम्मत की ख़ातिर हंसते–हंसते अपनी जान क़ुरबान करेगा।

आपके गले मुबारक पर लाल धार जो शहादत की निशानी थी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर आप के गले का बोसा लिया करते थे।

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु तक मंसबे ख़िलाफ़त का ओहदा आम इत्तिफ़ाक़ राय से तय होता आ रहा था। मगर हज़रत इमाम आली मक़ाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हुए और हज़रत मुआविया के बाद उनका बेटा यज़ीद ख़िलाफ़त का वारिस बन कर तख़्ते ख़िलाफ़त पर बैठ गया। और तख़्त पर बैठते ही पहला हुक्म जारी किया कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हु, अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से मेरी बैअ़त लो अगर उन में से जिसने भी इंकार किया उसे फ़ौरन क़त्ल कर दो।

यज़ीद शराब नोशी कसरत से करने लगा जिन औरतों से क़ुरआन व सुन्नत में निकाह की मुमानेअत आई उसे जाइज़ क़रार दिया और हर काम ख़िलाफ़ते शरीअ़त करने लगा। इन चारों ने बैअ़त से इंकार किया। हज़रत अब्दुल्लाह रातों रात मक्का पहुंच गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर भी बाद में चले गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर तो उस का मुक़ाबला करते–करते शहीद हो गये। इधर इमाम हुसैन को कूफ़ा वालों ने बुलाया। हालांकि आपको बड़े–बड़े जलीलुल–क़द्र सहाबा किराम ने रोकने की कोशिश की और कहा उनका कोई एतबार नहीं आप उन पर भरोसा न करें मगर आप आख़िर अपने अह्ल व अयाल को लेकर कूफ़ा रवाना हो गये। सिर्फ़ आपकी एक कमसिन साहबज़ादी हज़रत सुग़रा रज़ि अल्लाहु अन्हा जो कि बीमार थीं उन्हें मदीना में उम्मुल–मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा के पास छोड़ा। मगर अफ़सोस जब यज़ीद को ख़बर पहुंची उस ने फ़ौरन उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को कूफ़ा रवाना किया कि हज़रत हुसैन से बैअत ले अगर वह इंकार करें तो फ़ौरन क़त्ल करे। आख़िर करबला के मैदान

में हक़ व बातिल की जंग शुरू हुई।

आपके साथ ७२ जांनिसार जिन में आपके भांजे, भतीजे, बेटे सब जामे शहादत पी कर हौज़े कौसर पर अपने नाना जान के दस्ते मुबारक पर शर्बत पीने पहुंच गये। सिवाए हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन के चूंकि वह बीमार थे इसलिए जंग में शरीक न हो सके। आख़िर में आप मैदाने जंग में कूद पड़े हज़ारों को जहन्नम रसीद करके दस मुहर्रम आशूरा के दिन जुमा की नमाज़ के वक़्त नमाज़ की हालत में जामे शहादत नोश फरमाया।

क़त्ले हुसैन असल में मर्गे यज़ीद है
इस्लाम ज़िन्दा होता है हर करबला के बाद

५४ बरस की उमर शरीफ़ बरोज़ जुमा ६६१ ई० आप शहीद हुए। करबलाए मुअल्ला में इन्हीं ७२ शुहदा के साथ आपका जिस्मे अतहर मदफून है। सरे मुबारक का किसी किताब में ज़िक्र नहीं मिला। बाज़ का ख़्याल है दमिश्क़ में बाज़ का ख़्याल मुल्के शाम में और बाज़ों का ख़्याल है मदीना मुनव्वरा में।

गो कि आप मसनदे ख़िलाफ़त पर नहीं बैठे ताहम आप ख़लीफ़तुल–मुस्लेमीन बनने के हक़्दार थे। इसलिए यहां आपका तज़्किरा करना ज़रूरी था क्योंकि आप भी अह्ले बैत की तारीख़ का एक बाब रह चुके हैं।

हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का मक़ाम अह्ले बैत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अबवाब में सरेफेहरिस्त है। जिसका वाक़्या तारीख़ में सुनहरी हरफ़ों से लिखा जा चुका है। ताक़्यामत अह्ले सुन्नत व जमाअत इस बाब को दुहराते जाएंगे और यौमे आशूरा मनाते जाएंगे।

मअ्रक–ए–करबला के ७२ शुहदाए किराम

अहले बैत : हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु।

बेटे : हज़रत अली अकबर, हज़रत अली असग़र।

भांजे : औन, मुहम्मद, अब्दुल्लाह, जाफर बिन अक़ील, अब्दुर्रहमान बिन अक़ील।

भतीजे : हज़रत इमाम क़ासिम, हज़रत अब्बास, हज़रत अब्बास बिन हसन, हज़रत अब्बास बिन अली, मुहम्मद बिन अली, मुहम्मद बिन हनीफ़ा, मुहम्मद बिन अबी सअद, अबू बकर, अब्दुल्लाह, हज़रत उस्मान, हज़रत

जाफर बिन हुसैन, औन बिन अब्दुल्लाह और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह।

१८ सहाबा किराम, ६ राविथाने अहादीस, ६ हाफ़िज़े कुरआन और १८ दीगर जांनिसार इस तरह ७२ शुहदाए किराम ने करबला में जामे शहादत नोश फरमाया।

हज़रत इमाम आली मक़ाम की शहादत से क़ब्ल रूम के एक गिरजा घर में एक शेअ्र लिखा हुआ पाया गया जिसका मतलब यह था कि क्या हुसैन के क़ातिल यह उम्मीद रखते हैं कि बरोज़े क़्यामत उनके नाना की शफ़ाअत पाएंगे।

हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबेदीन :

करबला के मैदान में हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु और फ़रज़न्दाने तौहीद शहीद हुए। उस वक़्त हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन ख़ेमे में बीमार थे। इसलिए मअ्रके में शरीक न हो सके। चूंकि आपकी नस्ल से सादाते अह्ले बैत का सिलसिला आगे बढ़ना था। इसी बिना पर कुदरते ख़ुदावन्दी से आप बीमारी की वजह से शरीक न हो सकते थे। लेकिन फिर भी आपने अपने वालिदे मोहतरम से जंग में शरीक होने की इजाज़त तलब की। तब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया: क्या तुम चाहते हो कि सादात की नस्ल दुनिया से मुन्क़ता हो जाए। याद रखो बरोज़े क़्यामत दादा जान नाना जान को उसका जवाब देना होगा। तुम्हारी शहादत बनू फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा का ख़ातमा है। तुम्हें ज़िन्दा रहना है मुसलमानों को बताना होगा कि तुम्हारे बाप ने किस तरह अपने लख़्ते जिगर को ख़ुदा की मर्ज़ी पर कुरबान कर दिया। अगर तुम ज़िन्दा न रहोगे तो यहां के हालात कौन बताएगा। अब आगे मेरे बाद तुम्हें दुख झेलना पड़ेगा। मेरे बाद अपनी फूफी अपनी वालिदा और बहनों का ख़्याल कौन रखेगा। बाप की इस दिल ख़राश तक़रीर सुन कर आबिद बीमार ख़ामोश हो गये। मअ्रक–ए–करबला के बाद यज़ीदी फौज ने आपको और अह्ले बैत की मस्तूरात को बेग़ैर कजावे के ऊंटों पर रस्सियों से बांध कर दमिश्क़ में यज़ीद के सामने पेश किया। जब हुसैनी क़ाफ़िला दरबारे इब्ने ज़्याद में आया तो वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक तश्त में मंगवा कर आपके मुंह पर छड़ी मारता जाता और कहता जाता था यही वह लब हैं जो यज़ीद की बैअत से इंकार कर रहे थे। आबिद रज़ि अल्लाहु अन्हु बीमार ने कलामे इलाही की आयत पढ़ कर

सुनाई कि मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है जिस से किसी को मुफ़र नहीं। फिर काफ़िला दोबारा यज़ीद के दरबार में पेश हुआ। यज़ीद ने हुक्म दिया कि तमाम क़ैदियों की रस्सियां खोल दी जाएं और हुसैन का सर सोने के तश्त में रख कर लाया जाए और उन्हें घर जाने की इजाज़त दी जाए। तब ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपने वालिद माजिद का सरे मुबारक लेने की दर्ख़्वास्त की तो यज़ीद पलीद ने आपको हज़रत इमाम हुसैन का सरे मुबारक सौंप दिया। आप गोशा नशीनी अख़्तियार करके दिन रात अपने वालिद की शहादत और मअ्रका–ए–करबला का मंज़र याद करके रोते रहते थे। वाक़–ए–करबला की मुफ़स्सल तफ़्सील बड़ी किताबों में मुलाहिज़ा करें।

ख़िलाफ़ते बनू उमैया

हज़रत अमीर मुआविया :

हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त से दस्तबरदार होने के बाद अमीर मुआविया शबो रोज़ इसी फ़िक्र में थे कि अपने बेटे (यज़ीद) की ख़िलाफ़त अपने आंखों से देख लें। चूंकि उस वक़्त अमीर मुआविया की उम्र नव्वे साल हो चुकी थी। कन्धे की हड्डियां कम्ज़ोर हो चुकी थीं और जब उन्हें यक़ीन हो गया तो यज़ीद को बुला कर कहा देख मैंने इतना तो काम कर दिया कि तेरी ख़िलाफ़त के लिए रास्ता साफ कर दिया। क्योंकि उन्होंने खुद हज़रत इमाम हसन से दस्तबरदार होने की दर्ख़्वास्त की थी तब इमाम हसन ने चन्द शर्तों की बिना पर ख़िलाफ़त से सुबुक दोश हो गये। अब तक तो बनी हाशिम में ख़िलाफ़त का सिलसिला चला आ रहा था। विरासत के तौर पर नहीं बल्कि आम इंतिख़ाब इत्तिफ़ाक़ राय से तमाम ख़ुलफा मुक़र्रर हुए थे। लेकिन अमीर मुआविया ने अपनी मर्ज़ी से अपने बेटे यज़ीद को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया और फिर उन्होंने बिस्तरे मर्ग पर यज़ीद को बुला कर कहा। तेरे रवैये से यूं महसूस हो रहा है कि तू हज़रत इमाम हुसैन से जंग करेगा। तू जानता है वह कोई ग़ैर नहीं अपने अज़ीज़ हैं। अगर ख़ुदानख़्वास्ता इमाम हुसैन मग़लूब हो जाएंगे क्योंकि तेरे पास काफ़ी लश्कर है तो ग़ालिब होने के बाद उनका एहतराम करना लेकिन

यज़ीद पर उसका कोई असर न हुआ। आख़िर वह हज़रत इमाम हुसैन को शहीद करके दुनिया और आख़िरत में जहन्नम का हक़्दार बन गया।

अमीर मुआविया ने ४१ हिजरी से ५६ हिज० तक ख़िलाफ़त की। उनके बाद उनका बेटा यज़ीद ५६ हिज० से ६४ हिज० तक ख़लीफ़ा रहा। फिर मुआविया सानी बिन यज़ीद एक साल तक ख़लीफ़ा रहा तब ही से ख़िलाफ़ते उमैया चलती रही।

ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन :

ख़िलाफ़ते राशिदा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से लेकर ४१ हिज० हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु तक रही यह ३० साल ३ माह १८ दिन का अरसा होता है। उसके बाद ख़िलाफ़ते उमैया, ख़िलाफ़ते अब्बासिया और ख़िलाफ़ते उस्मानिया तक क़ायम रही जो १३४२ हिज० तक क़ायम रही।

सिलसिल–ए–ख़ुलफ़ाए राशिदीन :

(१) हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ११ हिज० ता १३ हिज०, ३ साल।

(२) हज़रत उमर फारूक़ १३ हिज० ता २३ हिज० तक, १० साल।

(३) हज़रत उस्मान ग़नी २३ हिज० ता ३५ हिज० १२ साल।

(४) हज़रत अली मुर्तज़ा ३५ हिज० ता ४० हिज० ५ साल।

(५) हज़रत इमाम हसन ४० हिज० सिर्फ़ ६ माह।

ख़िलाफ़ते बनू उमैया : मुआविया बिन सुफ़ियान से मुहम्मद अमीन बिन रशीद तक ४० हिज० से १६८ हिज० तक कल १६ खुलफ़ा हो गुज़रे।

ख़िलाफ़ते अब्बासिया : अब्दुल्लाह बिन मामून रशीद से मुहम्मद तवक्कुल अलल्लाह बिन अल–मुस्तमिक तक कल ४० ख़ुलफ़ा गुज़रे १६८ हिज० से ६२३ हिज० तक।

ख़िलाफ़ते उस्मानिया : सुल्तान सलीम अव्वल से सुल्तान अब्दुल–मजीद तक २६ ख़लीफ़ा हुए। ६२३ हिज० ता १३४२ हिज० तक।

कुल ख़ुलफ़ा : बनू हाशमी ५, बनू उमैया १४, अब्बासी ५२, तुर्की २६।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तेरहवां बाब

अइम्मा और सेहाहे सित्ता

(१) इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि :

इमाम अबू हनीफ़ा का असल नाम नौमान और कुन्नियत अबू हनीफ़ा है। उसकी वजह यह है कि अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआन पाक में मुसलमानों से ख़िताब करते हुए इरशाद फरमाया। **फ़त्तबेऊ मिल्लता इब्राहीमा हनीफ़ा।** (इब्राहीम की तरीके की पैरवी करो जो एक खुदा को मानते) आपने इस निस्बत से अपनी कुन्नियत अबू हनीफ़ा अख़्तियार की। आपका ख़ानदान फ़ारस का एक मुअज़्ज़ज़ और मशहूर ख़ानदान था। आपके वालिद माजिद कूफ़ा में पैदा हुए तो आपके परदादा ने आपको हज़रत अली की ख़िदमत में पेश किया। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने शफ़क़त से गोद लेकर उनके हक़ में दुआए खैर की। चालीस बरस की उम्र में आपके वालिद माजिद हज़रत साबित रज़ि अल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने फरज़न्द अता फरमाया जिस का नाम नौमान रखा। जो बाद में अबू हनीफ़ा के लक़ब से मशहूर हुए। यह वह अह्दे मुबारक था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाले नूर से जिनकी आंखें रौशन हुई थीं। उनमें से चन्द सहाबा व ताबईन मौजूद थे। जिनमें हज़रत अनस बिन मालिक रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ादिमे ख़ास थे ६३ हिज० में वफ़ात हुई। इसी तरह हज़रत सहल बिन सअद, आमिर बिन वासिम वग़ैरह मौजूद थे जो आपके आलमे शबाब तक ज़िन्दा रहे। मगर आपने किसी से कोई हदीस रिवायत नहीं की। इस सिलसिले में मुहद्देसीन का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ का क़ौल है कि हदीस सीखने के लिए कम अज़ कम बीस बरस की उम्र शर्त थी इसलिए कि इस दौर के तालिबे इल्म से ग़लती होने का एहतमाल है। बाज़ का ख़्याल है कि आपका बचपन से लड़कपन तक का ज़माना निहायत पुर आशोब था। हज्जाज बिन यूसुफ़ इराक़ का गवर्नर था जिसकी सफ़्फ़ाकी की बिना पर ज़्यादा तवज्जोह इन्हीं लोगों पर मब्ज़ूल थी जो अइम्मा, इल्म व फ़ज़्ल की हैसियत बहरवर थे। चूंकि आपने अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत आमिर रज़ि अल्लाहु अन्हु

बिन फ़हद वग़ैरह जैसे जलीलुल-क़द्र सहाबा किराम को अपनी रौशन आंखों से देखा था। इसलिए आपका शुमार ताबईन में होता है और क़ुदरत ने ऐसे मौक़ा पैदा किए कि आपने उन से ख़ूब-ख़ूब इस्तिफ़ादा किया। रगों में ईरानी ख़ून और तबीअत में जिद्दत मौजूद थी। मज़हबी रिवायतें और मसाइले कूफ़े में ऐसे आम थे कि एक मामूली आदमी भी तालीम याफ़्ता लोगों में उठ बैठ कर इल्म हासिल कर सकता था। आप इससे फाइदा उठाते हुए कूफ़ा के मशहूर व मारूफ़ उस्ताद हम्माद की महफ़िल में शामिल हो गये। चूंकि हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु जो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ास ख़ादिम थे उन्होंने उन से हदीस सुनी थी और बड़े-बड़े शहरों कूफ़ा, बसरा, यमन जैसे शहरों में उनका चरचा था। हज़रत हम्माद के इंतिक़ाल के बाद आप फ़िक़्ह व हदीस के उस्ताद हुए। आपने जिन सहाब-ए-किराम व ताबईन से इल्म हासिल किया उनमें हज़रत इमाम हम्माद, हज़रत इमाम शअ़्बी, हज़रत अबू इसहाक़, हज़रत सिमाक हज़रत इमाम हिशाम हज़रत इमाम क़तादा थे। इमाम अबू हनीफ़ा को अगरचे उन सहाबा किराम से हदीस का बड़ा ज़ख़ीरा हासिल हुआ था ताहम तक्मीले इल्म की सनद हासिल करने के लिए हरमैन जाना ज़रूरी था जो उलूम का मरकज़ था। जिस वक़्त आप मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचे दर्स व तद्रीस का निहायत ज़ोर था। वहां आप अता बिन अबी रिबाह के हल्क़-ए-दर्स में शामिल हो गये इसी तरह वहां हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास के ग़ुलाम हज़रत इकरमा भी थे। वहां भी तालीम का काम चलता रहा। फिर हज़रत इकरमा ने आपको इल्म की सनदें अता कीं। १०२ हिज० में जब आपको तहसीले इल्म की सनद हासिल हो गई तो आपने दर्स व तद्रीस का काम जारी किया। कूफ़ा के ख़लीफ़ा मन्सूर ने आपको क़ज़ा का ओहदा पेश किया। मगर आपने साफ इंकार कर दिया और कहा कि मैं इस ओहदे के क़ाबिल नहीं हूं। तब मन्सूर ने कहा तुम झूठे हो तब आपने फरमाया कि एक झूठा शख़्स क़ाज़ी किस तरह मुक़र्रर हो सकता। लेकिन मन्सूर न माना और उन्हें क़सम दे डाली। मगर वहां अदालत में जब एक मुक़द्दमा पेश हुआ मुद्दई ने क़र्ज़ देने के सिलसिले में दावा किया और मुद्दआ अलैह साफ मुकर गया तब आपने उस से क़सम खाने को कहा तो उसने क़सम खाने से इंकार किया। तब आपने मन्सूर से कहा मैं यह ओहदा नहीं संभाल सकता तो मन्सूर ने नाफरमानी के जुर्म में उन्हें क़ैद में डाल दिया।

लेकिन चारों तरफ़ से एहतिजाज शुरू हो गये मन्सूर ने बग़ावत के डर से उन्हें १४१ हिज० में क़ैद में ही ज़हर दिलवा कर शहीद कर दिया। आनन फ़ानन में यह ख़बर जंगल की आग की तरह चारों तरफ़ फैल गई। नमाज़े जनाज़ा में तक़रीबन पचास हज़ार का मजमा था उसके बाद भी आने वालों का सिलसिला जारी था यहां तक छेः बार नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपको कूफ़ा के ख़ेज़रान के मक़्बरे के क़रीब दफ़नाया गया। दफ़नाने के बाद भी बीस दिन तक लोग नमाज़े जनाज़ा पढ़ते रहे। यह आपकी मक़्बूलियत की दलील है।

सुल्तान अरसलान सल्जूक़ी जो बड़ी अज़मत वाला फरमां रवां ख़लीफ़ा गुज़रा है उसने ४५६ हिज० में आपकी क़ब्र पर शानदार कुब्बा तामीर किया और क़रीब ही एक मदरसा तैयार किया जो बग़दाद में पहला मदरसा है यहां फ़िक़्ह व हदीस के उलमा के दर्स व तद्रीस का काम होता है।

(२) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह :

हज़रत इमाम शाफ़ई का नाम मुहम्मद है और कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह। लक़ब नासिरुल–हदीस शाफ़ई सातवें पुश्त से आपका सिलसिला नसब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलता है वालिद का नाम शाफ़ई वालिदा का नाम हाशिमा था आप बमक़ाम ग़ुज़्ज़ह में रजब १५० हिज० को पैदा हुए लेकिन आपकी वालिदा आपको असक़लान ले गई। बाप का साया पहले उठ चुका था इसलिए आपकी वालिदा आपको अपने क़बीले अज़्दे नवाअ् यमन ले गईं। अपने मामू के पास आप ने आठ साल गुज़ारे वहां आपने सिर्फ़ आठ साल की उम्र में कुरआन हिफ़्ज़ कर लिया और दस साल की उम्र में मुअत्ता इमाम मालिक को हिफ़्ज़ कर लिया। जब आप दस साल के हुए तो आपकी वालिदा माजिदा ने मक्का मुकर्रमा आपके चचा के पास भेज दिया ताकि इल्म हासिल करें। आपकी माली हालत कमज़ोर थी इसलिए आपके लिए इल्म हासिल करना दुशवार हो गया। आपको किसी ने मशवरा दिया कि कोई ज़रिया मआश पैदा करो फिर इल्म हासिल करो। लेकिन आपका इल्म हासिल करने का रुज्हान था इसलिए जब भी किसी आलिम से हदीस सुनते उसे याद कर लेते आपको पता चला कि मक्का में मुस्लिम बिन ख़ालिद फ़िक़्ह व हदीस के इमाम हैं तब आपने उन से इस्तिफ़ादा किया। और मुकम्मल तीन बरस तक उन से फ़िक़्ह व हदीस की तक्मील की। उन्हीं की मज्लिस में हज़रत इमाम मालिक का ज़िक्र

हो था इसलिए आपको हज़रत इमाम मालिक से मिलने का इश्तियाक़ पैदा हुआ। चूंकि आपके पास ज़ादे राह था न आपके चचा के पास इतना सरमाया था कि वह कुछ इमदाद कर सकें। इसलिए आपने हज़रत मुस्अब बिन जुबैर से अपनी ज़रूरत पेश की तो उन्होंने बतौर इमदाद सौ दीनार दिए। इमदाद मिलते ही आप मदीना मुनव्वरा पहुंच गये। वहां पहुंचते ही आप हज़रत इमाम मालिक के मकान तशरीफ़ ले गये और अपनी ज़ौके इल्मी को पेश किया। इमाम मालिक ने सर से पैर तक आप पर नज़र डाली और पूछा तुम्हारा नाम क्या है आपने कहा मुहम्मद बिन इद्रीस उन्होंने फ़रमाया अल्लाह तआला से डरते रहना। अन्क़रीब तुम्हारी शान बड़ी नुमायां होगी। इमाम साहब की मज्लिस निहायत बावक़ार रहती। तमाम तलबा मुअद्दब बैठे रहते और ऊददान में ऊद सुलगता रहता। हज़रत इमाम मालिक ने बकमाल हज़रत इमाम शाफ़ई को क़िरअत की इजाज़त अता फ़रमाई। आपने इमाम मालिक जैसे जलीलुल–क़द्र मुहद्दिस की ख़िदमत में तीन साल गुज़ारे और हदीस का दर्स बाक़ायदा आपने हज़रत मालिक से ही हासिल फ़रमाया। इल्म हासिल करने के बाद अपनी ननिहाल गये और फिर यमन गये।

आपने मनाज़िले शम्स व क़मर, रुजूअ़, इस्तिक़ामत, सअ़दद, नहस, तअस्सुराते कवाकिब, रफ़्तार सैयारात, मौसम के लिहाज़ से मद्दे जज़्र, इल्मे नुजूम अच्छी तरह सीखा। इस इल्म की बाबत हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने मुहम्मद बिन इद्रीस शाफ़ई से चंद रिवायतें नक़ल कीं। इल्म नुजूम में आपको तो काफ़ी महारत हासिल थी ही इसके अलावा आप बेहतरीन तबीब भी थे। इल्म फ़रासत में भी आप मुमताज़ थे। यमन में इमाम शाफ़ई के आस पास के अफ़राद आपकी अज़मत और शान व शौकत से बेहद मुतास्सिर थे। चूंकि आप रिश्वतख़ोरी, जुल्म, जानिबदारी की वजह से फ़ैसले देने से रुक जाते थे। इसलिये मुतर्रब नामी शख़्स ने हारून रशीद को ख़त लिखा कि अगर तुम यमन की ख़ैर चाहते हो तो फ़ौरन मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई को यमन से निकलवाओ या क़त्ल कर डालो वह सादाते ख़ानदान की ख़िलाफ़त का ख़्वाब देख रहा है। हारून रशीद ने फ़ौरन हुक्म दिया कि शाफ़ई को गिरफ़्तार किया जाए और तमाम सादात के अफ़राद में से रोज़ाना दस–दस को ख़त्म किया जाए और फिर हज़रत शाफ़ई को क़ैद कर दिया लेकिन एक मुबाहिसे में उसने आपकी तक़रीर

सुनी तो आपको रिहा कर दिया। इब्तिदा में आप तंगदस्ती की ज़िन्दगी बसर करते रहे मगर ख़ुदाए करीम ने आपके लिए रहमत के दरवाज़े खोल दिए। अक्सर ख़लीफ़–ए–वक़्त, उमरा व वज़रा, दौलतमन्द आपको नज़राने पेश करते आप क़ुबूल न करते मगर बेहद इसरार पर आप क़ुबूल कर लेते। एक मरतबा हारून रशीद ने आपको पचास दीनार नज़्राने के तौर पर भेजे मगर आपने चालीस दीनार ग़ुरबा और मसाकीन में तक़्सीम कर दिए। आपको जो रक़म बतौर नज़्राना देता उसका अपने पास सिर्फ़ चौथाई हिस्सा रखते बाक़ी ग़ुरबा में तक़्सीम कर देते। आपका मामूल था कि सुबह की नमाज़ के बाद आफताब निकलने तक फ़िक़्ह का दर्स देते। फिर हदीस का दर्स देते। फिर मज्लिसे वअ्ज़ शुरू होती फिर इल्मी मुज़ाकरात होते। ज़ुहर की नमाज़ के बाद अदब, शेअ्र व शाइरी, सर्फ़ व नह्व और लुग़त का दर्स होता अस्र से मग़्रिब तक ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल रहते। रात के तीन हिस्से करते एक तिहाई में आराम फरमाते दूसरी तिहाई में किताबते हदीस व फ़िक़्ह करते तीसरी तिहाई में तिलावते कलाम पाक करते।

आप १९८ हिज० में मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गये फिर हज किया और फिर वहां से मिस्र तशरीफ़ ले गये और वहीं क़याम पज़ीर रहे आपको बवासीर की तक्लीफ़ थी। ३० रजब पंजशंबा को मग़्रिब के वक़्त तबीअ़त ज़्यादा बिगड़ गई तबीब इमाम मुज़नी पास बैठे थे आप से पूछा उस्तादों के उस्ताद का क्या हाल है आपने फरमाया आज मैं दुनिया से रुख़्सत होने वाला हूं। अपने बुरे आमाल की सज़ा पाने वाला हूं। ख़ुदा की बारगाह में पेश होने वाला हूं। मुझे कुछ ख़बर नहीं मेरी रूह जन्नत में जाएगी या दोज़ख़ में। उसके बाद आपने मग़्रिब की नमाज़ अदा की। नमाज़ के बाद आपकी निज़ा की कैफ़ियत शुरू हो गई आपने फरमाया मिस्र में जो मशहूर आबिद इद्रीस है उन से कहो मेरी मग़्फ़िरत की दुआ करे। फिर दुआ करने लगे ऐ रहम करने वाले अगरचे मैं गुनाहगार हूं। लेकिन तेरी बारगाह में भीख मांगने हाज़िर हो रहा हूं। तूने लग़्ज़िशों और गुनाहों को हमेशा मुआफ़ फरमाया है। आपने बहुत लम्बी चौड़ी दुआ मांगी फिर इशा की नमाज़ पढ़ी फिर दोबारा दुआ में मशग़ूल हो गये उसी दौरान आपकी रूह क़फ़्से उन्सुरी परवाज़ कर गई और फ़िर्दौसे बरी में पहुंच गई।

इमाम मुज़नी ने ग़ुस्ल दिया। जनाज़ा शब ही में तैयार हुआ लेकिन इतने बड़े जलीलुल–क़द्र इमामुल–अइम्मा की मौत कोई मामूली हादसा न

था। इसलिए जुमा को बाद नमाज़े जुमा दफ़न किए गये। सबसे पहले आपके जनाज़े की नमाज़ हज़रत सैयदह नफ़ीसा बिन्ते हसन बिन ज़ैद बिन हसन बिन अली करमल्लाहु वजहहू ने पढ़ी चूंकि आप सादाते खानदान से थे। इसलिए सादात खानदान वालों ने पहले नमाज़ अदा की उसके बाद ख़िल्क़त का हुजूम नमाज़ के लिए उमन्ड पड़ा। आपको क़ाहिरा के बाहर के क़ब्रिस्तान क़राफ़ते सुग़रा में दफ़न किया गया। आपका मज़ार मुबारक आज तक ज़्यारतगाह बना हुआ है। लोग जूक़ दर जूक़ आते और फ़ातिहा पढ़ कर ईसाले सवाब पहुंचाते हैं।

(३) हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह :

इमाम मालिक का असल नाम मालिक और कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब दारुल–बहर है। वालिद का इस्मे गिरामी अनस है और वालिदा आलिया बिन्ते शरीक बिन अब्दुर्रहमान हैं। आबाई वतन यमन था लेकिन आपके परदादा ने मदीना मुनव्वरा में सुकूनत अख़्तियार की। पैदाइश के सिलसिले में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं कहीं ९३ हिज० कहीं ९४ हिज० कहीं ९५ हिज०। मदीना मुनव्वरा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु के बाद उनकी इल्मी दर्सगाह के जानशीन हज़रत नाफ़े हुए उनकी वफ़ात के बाद आप उनके जानशीन मुक़र्रर हुए। आपने सतरह साल की उम्र में अपनी मज्लिसे इफ़ादा का आग़ाज़ किया और तक़रीबन बासठ साल की उम्र तक मुसलसल फतावा का काम अंजाम देते रहे। जब हदीसे नबवी के लिखने का मौक़ा आता तो पहले वुज़ू करते उम्दा पोशाक ज़ेबतन करते खुशबू लगाते और जब भी इल्मी मजालिस में हदीस का ज़िक्र आता तो आप लोबान जलाते रहे। आपसे बेशुमार लोगों ने हदीसें रिवायत कीं उनकी तादाद एक हज़ार थी। सुन्नते नबवी की ताज़ीम में बेमिसाल थे। इमाम मालिक के एक शामिर्द बयान करते हैं कि एक रोज़ आप दर्स हदीस दे रहे थे कि आपके पैरहन में बिच्छू घुस गया और आपको दस मरतबा काटा मगर आपने हदीस को क़तअ़ नहीं फरमाया आपको मदीना मुनव्वरा से बेहद लगाव था।

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और फरमाया अगर आप मेरे साथ चलना चाहो तो चलो आपने फरमाया कि मैं यहां से कहीं नहीं जा सकता मैं मदीना से कभी जुदा नहीं हो सकता। वाली–ए–मदीना जाफर बिन सुलेमान से किसी ने शिकायत की

कि हज़रत मालिक आपकी बैअ़त को सही नहीं मानते। उस पर जाफर ने बुल्वा कर आप पर कोड़े बरसाए और दोनों हाथ मोंढों से अलग कर दिए जिसकी वजह से आपकी इज़्ज़त व शोहरत में वेपनाह इज़ाफ़ा हुआ। जब मन्सूर हज के सिलसिले में मदीना पहुंचा तो इमाम जाफर से उसका क़िसास मांगा मगर आपने रोक दिया।

इमाम मालिक की उम्र ८४ हुई। आप बीमार हो गये और इसी मरज़ में १४ चौदह रबीउल–अव्वल १७६ हिज० में वफात पाई जसदे मुबारक मदीना मुनव्वरा जन्नतुल–बक़ीअ़ में मदफून है आपने कुतुबे अहादीस में आला मक़ाम पाया। मुअत्ता की तालीफ ख़लीफ़ा अबू मन्सूर अब्बासी की फरमाइश पर ख़ुद शुरू की और ज़िल–हिज्जा १५८ हिज० में मन्सूर की वफ़ात के बाद मुकम्मल हुई। इस किताब को मदीना मुनव्वरा में सत्तर फ़ुक़्हा ने उसे तस्लीम किया। इमाम शाफ़ई फरमाते हैं कि रूए ज़मीन पर मुअत्ता मालिक जैसी कोई किताब नहीं है। आपने उसमें दस हज़ार अहादीसे मुबारका को तालीफ़ किया। आपने तक़रीबन पच्चानवे शुयूख़ से मुअत्ता में रिवायत की आप भी मदीना मुनव्वरा से बाहर तशरीफ़ नहीं ले गये।

आप मदीनतुर्रसूल के सबसे बड़े मुहद्दिस गुज़रे हैं। १७६ हिज० में आपने वफ़ात पाई। और जन्नतुल–बक़ीअ़ में मदफून हैं।

(४) इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैह :

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल की पैदाइश बग़दाद में १६४ हिज० में हुई आपके वालिद अब्बासी फौज के एक सिपाही थे और जवानी में ही इंतिक़ाल कर गये थे। दो साल के ही थे कि आपके वालिद का साया सर से उठ गया और आपकी पूरी निगहदाश्त आपकी वालिदा ने की। इब्तिदाई तालीम बग़दाद में हुई। और सोला साल की उम्र में हदीस की समाअत शुरू की और इमाम अबू यूसुफ़ के हल्क़–ए–दर्से हदीस व फ़िक़्ह से इस्तिफ़ादा हासिल किया। आपने १८० हिज० में पहला हज किया फिर आपने पांच हज किए। १९९ हिज० में यमन जाकर अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुहद्दिस से हदीस सुनी। इमाम अहमद की तंगदस्ती का आलम था। आपने इमाम शाफ़ई से मिस्र आने का वादा किया मगर ज़ादे सफर न होने की वजह से न जा सके। आपने तमाम इस्लामी मुल्कों का दौरा करके मशाइख़ से हदीसें हासिल कीं। आपके तमाम शुयूख़ आपकी बड़ी ताज़ीम करते। आप जहां भी जिस महफ़िले में दर्से हदीस होते और वहां इमाम शाफ़ई का नाम

सुनते और ज़्यादा तर इमाम शाफ़ई की हदीसें अपनी किताब में दर्ज करते।

एक मरतबा इमाम शाफ़ई ने हारून रशीद से तज़्किरा किया कि यमन में एक क़ाज़ी की ज़रूरत है। हारून रशीद ने कहा आप से बेहतर कौन हो सकता। इमाम शाफ़ई ने कहा मैं उसका बन्दोबस्त करता हूं और फिर उन्होंने इमाम अहमद से उसका ज़िक्र किया तब इमाम अहमद हंबल ने कहा मैं आपके यहां इल्म सीखने आता हूं न कि क़ज़ा के मनसब पर बैठने। इमाम शाफ़ई को निदामत हुई। रिवायत है कि आप ने अपने चचा और अपने बेटे के पीछे कभी नमाज़ नहीं पढ़ी इसलिए कि यह दोनों बादशाही मन्सब पर फाइज़ थे।

ख़लीफ़ा अब्बासी मुअ़्तसिम ने आप से बारहा कहा कि मेरे मसलक में दाख़िल हो जाओ मगर आपने साफ इंकार कर दिया। तब मुअ़्तसिम ने उनके पैरों में बेड़ी डाल दी। और पीठ पर कोड़े बरसाए गये। उनके हाथ में बांध दिए गये। आपके पास मूए मुबारक थे वह भी छीन लिए गये। ख़लीफ़ा ने आपको घर पहुंचाने का इंतिज़ाम किया। जब लोगों को पता चला कि मुअ़्तसिम ने आप पर नाहक़ कोड़े बरसाए तो उन में ग़ुस्से की आग भड़क उठी। आप जब अपने मकान पर आए और अपने ज़ख़्मों का इलाज शुरू किया। इस दौरान आपने जुमा की जमाअत में दर्से हदीस मौक़ूफ़ कर दिया। जब मुतवक्किल अलल्लाह ख़लीफ़ा बना तो लोगों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। उसने आपसे कहा कि अब कोई शख़्स ख़ल्क़े क़ुरआन का ज़िक्र न करे फिर अपने नाइब इस्हाक़ बिन इब्राहीम से कहला भेजा कि आपको बग़दाद से बड़ी ताज़ीम के साथ मेरे पास लाए लेकिन आप रास्ते में ही में थे कि एक शख़्स ने ख़लीफ़–ए–वक़्त से कहा कि इमाम अहमद बिन हंबल मसलके अल्वी की तालीम देते हैं। फिर उसे पता चला कि सब झूठ है तो उसने आपको दस हज़ार दृहम नज़्राने के तौर पर भेजे मगर आपने लेने से इंकार किया इब्राहीम ने आपसे कहा ले लो वरना ख़लीफ़ा नाराज़ हो कर पता नहीं आप से क्या सुलूक करे। तब आपने वह रक़म लेकर कहा कि बग़दाद और बसरा के ग़रीब मुहद्देसीन की फ़ेहरिस्त तैयार करके उन लोगों में तक़्सीम कर दो और फिर वह तमाम रक़म अह्ले इल्म और ग़ुरबा में तक़्सीम कर दी गई। आपके बेटे सालेह का बयान है कि मेरे वालिद अहमद बिन हंबल २४१ हिज० में रबीउल–अव्वल में मरज़े मौत में मुब्तला हुए। आपकी अयादत के लिए लोगों का हुजूम होता आपने

फरमाया मेरे पास शुरफ़ा दाइयाने क़ौम और अवाम को कसरत से आ रहे हैं गोया आपको नागवार गुज़र रहा था। आपने अपने दोनों बेटों को यह नसीहत की अल्लाह एक है मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और वह हिदायत के लिए दीने हक़ के लिए आए हैं।

फिर आपने अपने छोटे बच्चों को अपने क़रीब बुला कर दुआएं दीं एक बच्चा डेढ़ का माह था और एक उससे बड़ा था और कहा इस बुढ़ापे में इन से क्या फाइदा हासिल होगा लोगों ने कहा आप के सवाबे जारिया के लिए दुआ करेंगे तब आपने कहा फिर ठीक है। जब आपका आख़िरी वक़्त आया तो आप फरमा रहे थे दूर हो दूर हो। लोगों ने पूछा आप किसे फरमा रहे हैं। आपने फरमाया इब्लीस घर के कोने में बैठा है और कह रहा कि थोड़ी देर के लिए अपना ख़्याल फरामोश कर दो आपने फरमाया मुझे वुज़ू कराओ और फिर फरमाया गुस्ल के वक़्त मेरे फुलां–फुलां हिस्से को ख़ूब अच्छी तरह धोना और मेरे पैरों की उंगलियों के अन्दर ख़िलाल ज़रूर करना जब वुज़ू मुकम्मल हुआ तो मुतह्हर हो कर आप आलमे बाला में तशरीफ़ ले गये।

२१२ हिज० बरोज़े जुमा को आपने इंतिक़ाल फरमाया। सारा बग़दाद नमाज़े जनाज़ा में शरीक हुआ। रिवायत है कि आपके जनाज़े में तक़रीबन सात लाख लोग थे और उस दिन बीस यहूदी नसारा और मजूसी मुसलमान हुए इंतिक़ाल के वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ ७७ साल थी।

सेहाहे सित्तह

जब तमाम मसाइल की रिवायतें यकजा हुईं तो फिर उस दौर के मुहद्देसीन ने इख़्तिसार का तरीक़ा अख़्तियार किया और सेहाहे सित्तह की तदवीन अमल में आई।

सहीह बुख़ारी :

इमाम बुख़ारी जिनका नाम मुहद्देसीन में सरे फ़ेहरिस्त है एक दिन इमाम इस्हाक़ की मज्लिस में हाज़िर थे। वहां एक शख़्स की ज़ुबान से निकला काश तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुनन के बारे में कोई मुख़्तसर सी किताब जमा कर देते। यह बात आपके दिल में उतर गई और आपने इस किताब को जमा करना शुरू कर दिया। उधर गुज़िशता दौर में मुख़्तलिफ़ अबवाब पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी थीं। इमाम बुख़ारी ने इन तमाम तसानीफ़ से फाइदा उठाया और अहादीसे सहीहा का

निहायत उम्दा और मुख़्तसर मजमूआ मुरत्तब करके लोगों के सामने पेश किया। इमाम बुख़ारी ने मुख़्तलिफ़ फ़ुनून को अपनी किताब में बिल–इख़्तिसार जमा करके मुख़्तसर मगर जामे किताब बना दिया यह उनका अज़ीम कारनामा है उसमें उन्होंने सही हदीसों को दर्ज करने की कोशिश की। आप खुद फरमाते हैं कि मैंने अपनी किताब में तमाम अहादीस को इसलिए छोड़ दिया कि यह किताब तवील न हो जाए।

आपने सौलह साल की मुद्दत में छेः लाख अहादीस का इंतिख़ाब करके उस किताब को पाय–ए–तक्मील तक पहुंचा दिया आप फरमाते हैं मैंने कोई हदीस उस वक़्त तक दर्ज नहीं की जब तक लिखने से पहले ग़ुस्ल करके दोगाना नफ़्ल अदा न किया और उसकी सेहत का यक़ीन न हो गया उसका काम मस्जिदे नबवी में मिंबर शरीफ़ और रौज़–ए–अक़्दस के दर्मियान हुआ। यह हदीसें आपको ज़बानी याद थीं आपने सहाबा, ताबईन, तबअ् ताबईन से रिवायत करके दर्ज कीं।

सहीह मुस्लिम :

इमाम मुस्लिम ने अपनी इस किताब में तीन लाख ऐसी अहादीस मुन्तख़ब कीं। जिनको उन्होंने खुद बराहे रास्त अपने शुयूख़ से सुना था और न सिर्फ़ यह कि अपनी ज़ाती तहक़ीक़ पर इक्तिफ़ा की बल्कि मज़ीद एहतियात के पेशे नज़र सिर्फ़ वही हदीसें दर्ज कीं जिनकी सेहत पर मशाइख़े वक़्त का भी इत्तिफ़ाक़ था। इमाम मुस्लिम ने उस पर भी बस नहीं किया बल्कि जब किताब मुकम्मल हुई तो हाफ़िज़े अस्र अबू ज़रआ की ख़िदमत में पेश की जो उस दौर के हदीस व फन जरह व तअ्दील के बहुत बड़े इमाम माने जाते थे उसमें उन्होंने किसी इल्लत की तरफ़ इशारा किया तो उसे ख़ारिज कर दिया इस तरह पन्द्रह साल की जद्दो जहद में बारह हज़ार हदीसों का मुन्तख़ब मजमूआ तैयार किया। आज बारह सौ बरस गुज़र चुके मगर किताब की मक़्बूलियत अभी तक क़ायम है।

सुनने निसई :

इमाम निसई ने भी अपनी सुनन में इमाम बुख़ारी और मुस्लिम की तरह हदीसें जमा कीं। उनकी तस्नीफ़ बुख़ारी व मुस्लिम दोनों तरीक़ों की जामे समझी जाती है। लेकिन उसके साथ हसीन तरतीब और जिद्दते तालीफ़ में भी मुम्ताज़ है। चुनांचे सुनन में जिस क़द्र किताबें तालीफ़ हुईं उन सब में तस्नीफ़ के लिहाज़ से यह किताब अनोखी और तरतीब में बेहतरीन है उसमें

रिजाल के तअल्लुक़ जब मुहद्देसीन ने जांच पड़ताल की तो मालूम हुआ तन्क़ीद और सेहते अस्नाद के एतबार से इमाम निसई की शराइत इमाम बुख़ारी व मुस्लिम से भी ज़्यादा सख़्त हैं। चुनांचे इब्ने हजर अस्क़लानी फ़रमाते हैं कि बहुत से ऐसे अश्ख़ास है कि जिन से अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत ली है मगर इमाम निसई ने उनकी रिवयतों से एहतराज़ फ़रमाया है बल्कि इमाम ने तो रावियों की एक जमाअत से हदीस में इज्तिनाब किया है। मुहद्दिस इब्नुल–अहमर ने अपने मक्की शुयूख़ से नक़ल किया कि यह किताब तमाम तस्नीफात से बढ़ चढ़ कर है और इस्लाम में उसके मिस्ल कोई किताब नहीं है।

३५१ हिज० में अबू अब्दुर्रहमान निसई ने सुनने निसई हदीस की किताब मुरत्तब की जिसमें बुख़ारी मुस्लिम शरीफ़ की रिवायतें भी शामिल है।

तिर्मिज़ी :

अबू ईसा बिन मुहम्मद (तिर्मिज़ी) इमाम तिर्मिज़ी की किताब इमाम अबू दाऊद और इमाम बुख़ारी दोनों तरीक़ों की जामे है। एक तरफ़ उन्होंने अपनी किताब अहादीसे अहकाम में सिर्फ़ उन अहादीस को लिया है जिन पर फ़ुक़हा का अमल रहा है। दूसरी तरफ़ उसको सिर्फ़ अहकाम लिए मुख़्तस नहीं किया बल्कि इमाम बुख़ारी की तरह सब अबवाब की अहादीस को लेकर अपनी किताब की तिर्मिज़ी को जामे बना दिया। चुनांचे अबू जाफ़र ने सहाहे सित्ता पर तबसरा करते हुए लिखा कि इमाम तिर्मिज़ी को इल्मे हदीस में मुख़्तलिफ़ फ़ुनून को जमा के लिहाज़ से जो इम्तियाज़ हासिल है कोई उनका शरीक नहीं। इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं कि इस किताब को तस्नीफ़ करके उलमाए हिजाज़, उलमाए इराक़, उलमाए ख़ुरासान के सामने पेश किया तो उन्होंने उसको पसन्द किया। और कहा जिस घर में यह किताब मौजूद हो उस घर में गोया पैग़म्बर मौजूद है। इस किताब में चौदह उलूम हैं। बयाने अस्नाद तस्हीह व तस्नीफ़, तादाद व तरक़्क़ी, जिरह व तअ़द्दुल, बयान इस्मे कुन्नियत व रिवायत बयाने वस्ल व इन्क़िता, मअ़मूल, मतरूके अमले रिवायत की तौज़ीह, अहादीसे किताब के रद्दो बदल क़बूल के बारे में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। यह वह उलूम हैं कि उन में हर इल्म अपनी जगह मुस्तक़िबल हैसियत रखता है अइम्म–ए–अह्ले नक़ल का इमाम मालिक की इमामत पर इत्तिफ़ाक़ है वह जो भी हदीस नक़्ल करें वह सही है, क्योंकि उनकी रिवायात बिल–ख़ुसूस

अहले मदीना से हैं वह जो नक्ल करते उसमें सिवाए हदीस के और कोई हदीस नहीं पाई जाए। इसलिए जामे तिर्मिज़ी क़ाबिले नकल है उस पर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है।

सुनने इब्ने माजा :

यह किताब भी तमाम सेहाहे सित्ता में मुम्ताज़ है। उसमें ख़ूबी और उम्दगी से तरतीब के साथ अहादीस को बेग़ैर तक्रार के दर्ज किया गया है जिसे देख कर हाफ़िज़ शैख़ अबू ज़र रावी ने कहा कि अगर यह किताब लोगों के हाथ में पहुंच गई तो फन्ने हदीस की अक्सर जवामे बेकार और मुअत्तल हो जाएंगी। सुनने इब्ने माजा में बहुत सी ज़ाइद हदीसों का पाया जाना ही खुसूसी इम्तियाज़ है जिसे देख कर सहाबा की तादाद पांच से बढ़ कर छेः कर दी गई।

लिहाज़ा यह मुफ़ीद किताब है और मसाइले फ़िक़्ह में उसकी तरतीब निहायत उम्दा है, दूसरी नुमायां ख़ुसूसियत इस किताब की यह है कि यह बहुत सी हदीसों पर मुश्तमिल है कि जिन से सेहाहे सित्ता की दूसरी किताबें यक्सर ख़ाली हैं। इस बिना पर उसकी इफ़ादियत उन किताबों से कहीं ज़्यादा बढ़ गई। सहाबा किराम में हज़रत मुआज़ बिन जबल का यह मामूल था कि आम तौर पर ऐसी हदीस बयान करते जो औरों को मालूम न होती चुनांचे सुनन इब्ने माजा में अबू सईद हमीरी ज़्यानी से मन्कूल है कि हज़रत मुआज़ बिन जबल वह हदीसें बयान करते जो दीगर सहाबा ने न सुनी हो। सहाबा किराम को इस अम्र का बड़ा ख़्याल रहता था कि रिवायत में भूल चूक न हो जाए क्यों ग़लत रिवायत बयान करने पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोज़ख़ की वईद सुना चुके थे इसी लिए बहुत से सहाबा हत्तल वसी बिला ज़रूरत हदीस बयान करने से गुरेज़ करते थे।

छठी किताब के बारे में इख़्तिलाफ़ है अहले मश्रिक़ के नज़्दीक अबू दाऊद है और अहले मग़्रिब के नज़्दीक इमाम मालिक बिन अनस की किताब मुअत्ता है। यहां मुअत्ता का ज़िक्र किया जा रहा है।

मुअत्ता इमाम मालिक :

मुअत्ता इमाम मालिक की वह किताब है जो कुतुब ख़ाना इस्लाम की दूसरी जो कुरआने करीम के बाद बाक़ायदा तौर पर फ़िक़्ही तरतीब से मबूब व मुरत्तब हो कर मन्स–ए–शुहूरद पर आई। अल्लामा अबू बकर बिनुल–अरबी फरमाते हैं मुअत्ता ही नक़्शे अव्वल है। बुख़ारी की हैसियत तो इस बाब में

नक़्शे सानी है उन्हीं दोनों किताबों पर मुस्लिम व तिर्मिज़ी जैसे बाद के मूलेक़ीन ने अपनी किताबों की बिना रखी उसकी तालीफ़ का मक़ाम मदीना मुनव्वरा है क्योंकि इमाम मालिक का क़याम हमेशा मदीना मुनव्वरा में रहा। अल्बत्ता तालीफ़ का सही ज़माना मालूम नहीं सिफ़ क़राइन से अन्दाज़ा लगाया गया मुहद्दिस क़ाज़ी ने अपने मदारिक में इमाम मालिक के शागिर्द अबू मुसअब की ज़बानी यह रिवायत नक़ल की है कि मुअत्ता की तालीफ़ ख़लीफ़ा अबू मन्सूर अब्बासी की फरमाइश पर खुद उसी के अहद में शुरू हुई। लेकिन पाय–ए–तक्मील को उसकी वफ़ात के बाद पहुंची। मन्सूर की वफ़ात १५८ हिज० उसके बाद उसका बेटा मेहदी मसनदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुआ और उसी के दौर में तालीफ़ पूरी हुई। इमाम मालिक ने मुअत्ता की तालीफ़ यहिया बिन सईद अन्सारी १४३ हिज. के बाद की।

मुअत्ता तोतिया का मफ़ऊल है। जिसके मानी हैं तैयार किया हुआ। नर्म और सहल बना हुआ। अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इब्राहीम कहते हैं कि मैंने अबू हातिम से दरयाफ़्त किया कि उसका नाम मुअत्ता क्यों रखा गया फरमाया कि इमाम मालिक ने इस किताब को मुरत्तब क़रके लोगों के लिए सहल और आसान बना दिया। इसलिए उसे मुअत्ता कहते हैं। इमाम मालिक फरमाते हैं इस किताब को लिख कर मैंने फुक़्हाए मदीना मुनव्वरा में सत्तर फुक़्हा के सामने पेश किया। सबने ही मुझ से इत्तिफ़ाक़ किया इसलिए मैंने उसका नाम मुअत्ता रखा। जम्हूर उलमा मुअत्ता को तमाम किताबों में मुक़द्दम और अफ़ज़ल मानते हैं। मुअत्ता की सेहत और उसके मरतबे का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता कि इमाम शाफ़ई खुद फरमाते हैं कि रूए ज़मीन पर किताबुल्लाह के बाद मुअत्ता मालिक से ज़्यादा सही किताब कोई नहीं है।

इमाम मालिक के शुयूख़ और आपके मुआसेरीन ने मुअत्ता को क़द्र की निगाह से देखा। अल्लामा नौवी शरह मुस्लिम के मुक़द्दमे में अपने उस्ताद का बयान करते हुए लिखते हैं कि एक किताब मुझको ऐसी मिली जो तमाम किताबों से बेहतर है अगरचे तमाम किताबें लाइक़े तहसीन हैं और मुअत्ता जिन के मुसन्निफ़ इमाम मालिक बिन अनस हैं जो तमाम मुहद्देसीन के शैख़ हैं यूं तो इमाम मालिक ने एक लाख अहादीस रिवायत की थीं उन में से दस हज़ार मुन्तख़ब करके मुअत्ता में दर्ज कीं फिर बराबर उनको किताबे सुन्नत व अख़्बारे सहाबा से मुताबिक़त करते रहे यहां तक उन सबको क़लम

ज़द कर दिया और सिर्फ़ पांच सौ बाक़ी रह गईं। अबू वकर अवहरी कहते हैं कि मुअत्ता की कुल अहादीस एक हज़ार सात सौ बीस हैं जिनमें मुसनद और मरफ़ूअ छे: सौ, मुर्सल दो सौ बाईस, मौकूफ़ छे: सौ तेरह और ताबईन के अक़्वाल व फतावा दो सौ पचास हैं इमाम मालिक से तक़्रीबन एक हज़ार लोगों ने मुअत्ता को सुन कर जमा किया और फिर लोगों से फ़ुक़्हाए मुहद्देसीन, सूफ़िया और ख़ुलफ़ा ने तबर्रुकन उस आली मक़ाम इमाम से उसकी सनद हासिल की है।

अहले बैत के बारह इमाम रज़ियल्लाहु अन्हुम

नं० शुमार	अस्माए गिरामी	वलदियत	पैदाईश	वफ़ात	जाए मदफ़न
१	हज़रत अली मुर्तज़ रज़ि०	अबू तालिब रज़ि०	क़ब्ल हिजरत	२१ रमज़ान ४ हि०	नजफ अशरफ़
२.	हज़रत इमाम हसन रज़ि०	हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु	१५ रमज़ान ३ हि.	२८ सफ़र ४ हि०	मदीना मुनव्वरा
३	हज़रत इमाम हुसैन रज़ि०	हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु	५ शाबान ४ हि०	१० मुहर्रम ६१ हि०	करबला ईराक़
४.	हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रज़ि०	हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु		१८ मुहर्रम ६४ हि०	मदीना मुनव्वरा
५.	हज़रत इमाम बाक़र रज़ि०	हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहु		१० ज़िलहिज्जा ११० हि.	मदीना मुनव्वरा
६.	हज़रत इमाम जाफ़र रज़ि०	हज़रत इमाम बाक़र रज़ियल्लाहु		१८ रजब १८२ हि.	मदीना मुनव्वरा
७.	हज़रत इमाम मूसा रज़ि०	हज़रत इमाम जाफर रज़ियल्लाहु	७ सफ़र १२८ हि०	५ सफ़र १८८ हि.	काज़मीन
८	हज़रत इमाम रज़ा	हज़रत इमाम मूसा रज़ियल्लाहु	११ ज़ीक़ादा १४७ हि.	५ सफ़र ३०३ हि.	मुशहिदे ईराक़
९	हज़रत इमाम असकरी	हज़रत इमाम रज़ा	२७ ज़िलहिज्जा २२७ हि०	२७ ज़िलहिज्जा २७० हि०	मुशहिदे ईराक़
१०.	हज़रत इमाम तक़ी	हज़रत इमाम असकरी		२ मुहर्रम २७० हि०	काज़िम ईराक़
११	हज़रत इमाम नक़ी	हज़रत इमाम तक़ी		३ मुहर्रम २६२ हि०	सामरा ईराक़
१२	हज़रत इमाम मेहदी	क़रीब क़यामत आपका ज़ुहूर होगा।			

अहादीस व इल्मे फ़ेक़्ह के जलीलुलक़द्र इमाम

नं० शुमार	आइम्मए	मुक़ाम	विलादत	वफ़ात	कुतुब
१.	इमाम अबू हनीफ़ा	कूफ़ा	८० हि०	१५० हि०	मुसनद
२.	इमाम मालिक	कूफ़ा	६५ हि०	१७६ हि०	मोअत्ता
३.	इमाम शाफ़ई	शाम	१५० हि०	२०४ हि०	अलरसाला
४.	इमाम अहमद बिन हंबल	बग़दाद	१६४ हि०	२१२ हि०	मिस्बाहुल मारूफ़
५.	इमाम अब्दुल्लाह बुख़ारी	बुख़ारा	१६४ हि०	२५६ हि०	बुख़ारी शरीफ़
६.	इमाम अबुल हसन	ईरान	२०४ हि०	२६१ हि०	मुस्लिम शरीफ़
७.	सुलेमान इब्ने अशअब	सीतान	२०२ हि०	२७५ हि०	सुनन दाऊद
८.	अबू ईसा बिन मुहम्मद	तिरमिज़	२०६ हि०	२७६ हि०	तिर्मिज़ी
६.	मुहम्मद बिन यज़ीद	ईराक़	२२२ हि०	२८३ हि०	माजा
१०.	अहमद बिन शोएब	ख़ुरासान	२१५ हि०	३०३ हि०	निसाई

रावियाने अहादीस

नं० शुमार	रावियाने अहादीस	अहादीस
१.	हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु	५३७४
२.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु	२६६०
३.	हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा	२२१०
४.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस रज़ि अल्लाहु अन्हु	१७००
५.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु	१६३०
६.	हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु	१५४०
७.	हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु	१२८६
८.	हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु	११७०
६.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु	८४८
१०.	हज़रत अली मुर्तज़ा करमुल्लाह वजहू अलकरीम	५८६

दरजाते कुतुबे हदीस व दरजाते हदीस

नं० शुमार	अहादीस की किस्में	खुलासा
१.	सहीह	वह हदीस की किताब जिसमें अक़ायद, अहकाम, शरीअत, आदाब, मनाक़िब, सैर व फ़तन, तफ़सीर, जुमला अबवाब जमा हों
२.	मुसनद	जिसमें किसी एक सहाबी की रिवायत करदा हदीसें जमा हों।
३.	मुस्तदरक	इसमें वह हदीसें जमा की गयी हैं जो बुख़ारी और मुस्लिम में नहीं हैं।
४.	मुफ़रिद	इसमें एक मुहद्दिस की मुन्फ़रिद हदीसें जमा होती हैं।
५.	सनद	हदीसों को रिवायत करने वाले के सिलसिले को कहते हैं।
६.	सुनंन	जिसे फ़ेक़ही तरतीब के लिहाज़ से मुरत्तब किया गया हो।
७.	मतन	हदीस की असल इबारत या अलफ़ाज़।
८.	रावी	अपनी सनद के साथ हदीस को रिवायत करने वाला।
९.	मरवी	रिवायत की हुई हदीस या क़ौल।
१०.	हदीसे कुद्सी	उस हदीस को कहते हैं जिसको अल्लाह तआला ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इलहाम या ख़्वाब में या जिब्राईल अलैहिस्सलाम के ज़रिये इत्तेला दी हो और हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी जुबान मुबारक से ब्यान फ़रमया हो।
११.	सहीह हदीस	जिसकी सनद मुत्तसिल हो और रावी सीरत व किरदार से क़ाबिले एतेमाद हो।
१२.	ज़ईफ़ हदीस	जिसमें सहीह हदीस के शरायत या बाज़ औक़ात औसाफ़ में कमी हो।

१३.	सरीह हदीस	जिसमें साफ़ तौर पर ज़िक्र हो कि यह हुज़ूर अक़दस का क़ौल है या अमल है।
१४.	हसन हदीस	वह रिवायत जिसमें सहीह हदीस की तमाम शरायत न हों।
१५.	मुनक़तअ हदीस	जिसमें दर्मियान हदीस ही में कोई रावी छूट जाये।
१६.	ग़रीब हदीस	रावियों में कोई एक रावी किसी दूसरे तबक़े से हो और किसी दूसरे से रिवायत मंकूल हो।
१७.	मुरसल हदीस	जिसके आख़िर में कोई कोई रावी छूट जाये।

चन्द इस्तिलाहात के मतालिब

१. **चार कुतुबे समावी अरबा** : वह चार किताबें जो अल्लाह तआला की जानिब से ख़ास चार पैग़म्बरों पर आसमान से नाज़िल हुईं। (१) क़ुरआन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ। (२) ज़बूर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर। (३) तौरेत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर (४) इंजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई।

२. **सहीफ़े** : बाज़ पैग़म्बरों पर नाज़िल हुई छोटी–छोटी किताबें।

३. **शरीअत** : किताब व सुन्नत के मुताबिक़ इस्लामी क़वानीन।

४. **वही** : अल्लाह तआला की जानिब से फ़रिश्तों के ज़रिया हिदायत या पैग़ाम नाज़िल होना।

५. **इल्हाम** : अल्लाह तआला की जानिब से दिल में बात उतरना।

६. **लिक़ा** : अल्लाह तआला की जानिब से फ़रिश्तों का सिखाना।

७. **इल्मे लदुन्नी** : वह इल्म जो अल्लाह तआला की जानिब से हासिल हुआ बिल–वास्ता।

८. **मोजिज़ा** : अनहोनी बात, क़ुदरत का करिशमा जो पैग़म्बरों से ज़ाहिर होता है।

९. **मुसलमान** : एक ख़ुदा को मानने वाला, किताब व सुन्नत पर अमल करने वाला।

१०. **काफ़िर** : अल्लाह को मानता है लेकिन उसके रसूल, किताब पर यक़ीन नहीं रखता।

११. **मुश्रिक** : अल्लाह के साथ किसी ग़ैर को शरीक करना कई ख़ुदाओं

को मानना।

१२. **मुनाफ़िक़** : दोहरी चाल चलने वाला। ज़ाहिर में कुछ बातिन में कुछ।

१३. **मुर्तद** : दीने इस्लाम से फिरा हुआ।

१४. **दहरिया** : न ख़ुदा को मानता न रसूल को और न ख़ुदा की क़ुदरत को मानता है।

१५. **ज़िन्दीक़** : नेकी, बदी के दो ख़ुदा को मानने वाला।

१६. **मजूसी** : आग की परस्तिश (पूजा) करने वाला।

१७. **राहिब** : दुनिया से किनाराकशी करने वाला।

१८. **मुराक़बा** : किसी बात की सोच में ग़र्क़ हो जाना दुनिया व माफ़ीहा से बेगुनाह हो जाना थोड़ी देर के लिए।

१९. **वज्द** : मस्त बेख़ुद हो जाना। ज़िक्रे इलाही की हलावत में रूहानी ग़लब–ए–शौक़ में मुस्तग़रक़ हो जाना। आपे से बाहर हो जाना।

२०. **फ़िक़ह** : इस्लामी शरीअत (क़ानून) की किताबों में कोई मस्अला हल न हो सके मुफ़्तियान अपनी अक़्ल व फहम से उसका मस्अला हल करें।

फ़िक़ह के चार उसूल : (१) किताबुल्लाह (२) सुन्नत (३) इज्मा (४) क़्यास। उसके ज़रिए मुफ़्ती फतवा देते हैं।

तक़्लीद : दीन के चार अइम्मा :

(१) हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (२) हज़रत इमाम शाफ़ई (३) हज़रत इमाम मालिक (४) हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल।

उन चारों में से किसी एक को अपना इमाम मान कर उनकी तक़्लीद (नक़ल) करना।

फ़र्ज़ : अल्लाह तआला का हुक्म। जान बूझ कर नाफरमानी करने वाला गुनहगार होगा। फ़र्ज़ की दो क़िस्में हैं : फ़र्जे ऐन, फ़र्जे किफ़ाया।

फ़र्ज़े ऐन : मुंफरिद तौर पर अपना–अपना फ़र्ज़ अदा करना जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरह हुक़ूक़ुल्लाह, हुक़ूक़ुल–इबाद।

फ़र्ज़े किफ़ाया : एक के करने से सब को सवाब मिले और सब गुनाह से बरी होंगे। मसलन नमाज़े जनाज़ा, नमाज़े तरावीह में रमज़ान में पूरे क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ना, मैयत को नहलाना।

हुक़ूक़ुल्लाह : वह हुक़ूक़ जो अल्लाह तआला के हैं जो हर एक के लिए ज़रूरी हैं। ईमान, कलिमा, रोज़ा, नमाज़, ज़कात, हज वग़ैरह।

हुकूकुल–इबाद : रिश्तेदारों के हुकूक़, पड़ोसियों के हुकूक़, वालिदैन के हुकूक़, मियां बीवी के हुकूक़ वग़ैरह।

सुन्नत : वह फ़ेअ़ल जो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया हो। सुन्नत की दो क़िस्में हैं। सुन्नते मुअक्कदह, सुन्नते ग़ैर मुअक्कदह।

सुन्नते मुअक्कदह : वह सुन्नत जो हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी नहीं छोड़ी मसलन फज्र की दो सुन्नत, ज़ुहर में चार फर्ज़ से क़ब्ल दो फर्ज़ के बाद। दो मग़रिब में बाद फर्ज़ के और दो इशा में फ़र्ज़ के बाद इस तरह बारह रकअत सुन्नते मुअक्कदह है।

सुन्नते ग़ैर मुअक्कदह : आम तौर पर अस्र से पहले चार रकअत, इशा के फ़र्ज़ के बाद दो सुन्नत ग़ैर मुअक्कदह है।

वाजिब : फ़र्ज़ का दरजा रखता है, इशा की तीन रकअत वित्र, नमाज़े जुमा, नमाज़े ईदैन, ईदुल–फ़ित्र और ईदुज़्ज़ुहा।

मक्रूहे तहरीमी : वह फ़ेअ़्ल जिसमें दलील के साथ मुमानेअ़त साबित हो।

मक्रूहे तंज़ीही : वह फ़ेअ़्ल जो न करे तो बेहतर है।

मुबाह : वह जाइज़ काम जिसके करने से न सवाब न अज़ाब मसलन शादी का वलीमा सुन्नत है वह करना सवाब है। लेकिन वलीमा का खाना कुछ भी खिला सकते हैं। बिरयानी खिलाओ या ज़र्दह पुलाव, उसकी कोई पूछ न होगी।

बिदअत : दीन में नई बात पैदा करना। उसकी दो क़िस्में हैं : बिदअते हसना, बिदअते सैय्येआ।

बिदअते हसना : दीन में वह नई बात पैदा करना जिसका कुरआन व सुन्नत में ज़िक्र न हो लेकिन उसके करने से सवाब मिले। वह नेक काम जो सवाब का सबब बने। मसलन जिस तरह हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने तरावीह में ८ रकअ़त के बजाए बीस रकअत का इज़ाफ़ा किया। दूसरा जिस तरह हुज़ूर के दौरे हयात में ख़्वातीन मस्जिद में नमाज़ अदा करने जाया करती थीं मगर हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने मस्जिद में फित्ना पैदा होने की वजह से औरतों का मस्जिद में जाना मना फरमाया।

बिदअते सैय्येआ : दीन में वह नई बात पैदा करना जिसका कुरआन व सुन्नत में ज़िक्र न हो और अगर वह बुराई की तरफ़ जा रहा हो तो उसे बिदअते सैय्येआ कहा जाता है।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

चौदहवां बाब

क़्यामत का बयान

अलामते क़्यामत :

जिस तरह इंसान के मरने से क़ब्ल मरज़ की शिद्दत में सकरात वग़ैरह निशानात ज़ाहिर होते हैं इसी तरह क़्यामत से क़ब्ल उसकी अलामतें ज़ाहिर होंगी। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें उसकी निशानियां बता दी हैं जो रफ़्ता–रफ़्ता ज़ाहिर हो रही हैं और होने वाली हैं। अलामाते क़्यामत दो क़िस्म की हैं : अलामाते कुबरा और अलामाते सुग़रा।

अलामाते सुग़रा :

अलामाते सुग़रा में से चन्द यह हैं इल्म उठ जाएगा। लोग जाहिलों को अपना इमाम व पेशवा बना लेंगे। ख़ुद गुमराह होंगे और दूसरों को गुम्राह करेंगे। ज़िना, शराब ख़ोरी, बदकारी और बेहयाई बढ़ेगी। मर्द कम और औरतें ज़्यादा होंगी, माल की कसरत होगी, ज़मीन अपने दफ़ीने उगल देगी, दीन पर क़ाइम रहना दुशवार होगा, वक़्त में बरकत न रहेगी, बहुत जल्द–जल्द दिन गुज़रेंगे, ज़कात देना लोगों को गिरां होगा, इल्म हासिल करेंगे मगर दुनिया की ख़ातिर, औरतें मर्दाना वज़अ् अख़्तियार करेंगी और मर्द ज़नाना वज़अ् अख़्तियार करने लगेंगे। गाने बजाने की कसरत होगी, शर्म व हया जाती रहेगी, लोग इस्लाम के बजाए ग़ैरों का तरीक़ा अख़्तियार करेंगे। मस्जिद के अन्दर शोर व गुल होगा और दुनिया की बातें होंगी। नमाज़ के शराइत व अरकान जाने बेग़ैर नमाज़ पढ़ेंगे। औरतें कपड़े पहन कर भी बरहना नज़र आएंगी और ऊंट की कोहान की तरह बालों का जूड़ा बांधेंगी।

अलामाते कुबरा :

दाब्बतुल–अर्ज़ : मुज़्दलिफ़ा की लात जियाद नामी चट्टान से बरामद होगा। बाज़ का क़ौल है कि कोहे सफ़ा से बरामद होगा, साठ गज़ लम्बा होगा, उसके जिस्म पर बाल और पैरों में खुर होगे, दाढ़ी होगी, उसका सर बैल की तरह होगा, आंखें ख़िंज़ीर और कान हाथी जैसे होगे, शुतुर मुर्ग़ की तरह गर्दन होगी, शेर जैसा सीना, ऊंट जैसे पांव रंग चीते जैसा होगा चार पैर और पर भी होंगे।

उसकी रफ़्तार इतनी तेज़ होगी कि कोई भागने वाला उस से बच न

पाएगा। वह फसीह ज़बान में कहेगा। **हाज़ा मुमिनुन व हाज़ा काफ़िरून।** यह मोमिन है और यह काफिर है। उसके एक हाथ में मूसा अलैहिस्सलाम का असा और दूसरे हाथ में सुलेमान अलैहिस्सलाम की अंगुश्तरी होगी। असाए मूसा से मोमिन की पेशानी पर एक नूरानी ख़त खींचेगा, जिससे मोमिन का चेहरा मुनव्वर हो जाएगा और अंगुश्तरी से काफिर की पेशानी पर सियाह मुहर लगाएगा। जिस से काफिर का चेहरा सियाह हो जाएगा। जिससे मोमिन और काफिर पहचाने जाएंगे। उसका क़्याम सिर्फ़ एक दिन होगा।

जब आफताब मश्रिक़ के बजाए मग़्रिब से तुलूअ़ होगा और लोग उसी हैरानी व परेशानी में होंगे कि कोहे सफा अचानक फट पड़ेगा और उस में से यह मख़्लूक़ पैदा होगी। यमन में नज्द में ज़ाहिर होगा।

दज्जाल का ज़ाहिर होना : दज्जाल का ख़ुरूज ख़ुरासान से होगा, उसकी पेशानी पर **हाज़ा काफ़िरून क–फ़–र** लिखा होगा। वह एक आंख से काना होगा, वह सिर्फ़ चालीस दिन रहेगा मगर चालीस दिन में ख़ूब फसाद बरपा करेगा, उसका पहला दिन एक साल के बराबर, दूसरा दिन एक माह के बराबर, तीसरा दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा, बाक़ी दिन आम दिनों की तरह होंगे, दज्जाल तमाम रूए ज़मीन का गश्त करेगा। मगर मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा में दाख़िल न हो सकेगा, उसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बैतुल–मुक़द्दस के क़रीब जिसे बाबुल्लाह कहा जाता है वहां क़त्ल करेंगे। और उसका ख़ून लोगों को दिखाएंगे।

इमाम मेहदी : बारह इमामों में आख़िरी इमाम होंगे, आपका इस्मे गिरामी मुहम्मद, बाप का नाम अब्दुल्लाह, मां का नाम आमिना होगा। हज़रत इमाम हसन की औलाद में से होंगे। चालीस साल की उम्र में आपका ज़ुहूर होगा आपकी ख़िलाफ़त ७ या ८ साल होगी। जब क़्यामत के आसारे सुग़रा ख़त्म हो जाएंगे और नसारा का ग़ल्बा होगा, हरमैन शरीफ़ैन के अलावा तमाम इस्लामी ममालिक मुसलमानों के हाथ से निकल जाएंगे। तमाम ज़मीन सिवाए हरमैन शरीफ़ैन के फित्ना व फसाद से भर जाएगी, तमाम औलिया अब्दाल हरमैन शरीफ़ैन की तरफ़ हिजरत करेंगे रमज़ान का महीना होगा, तमाम अबदाल व औलियाए किराम तवाफ़े कआबा में मस्रूफ़ होंगे उस वक़्त हज़रत इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की होगी वहां तमाम अबदाल उन्हें पहचान लेंगे और आपके दस्ते मुबारक पर बैअ़त करेंगे, आप वहां से सबको लेकर मुल्के शाम की तरफ़ तशरीफ़ ले जाएंगे लश्करे इस्लाम की ख़बर सुन कर नसारा भी लश्करे

जर्रार लेकर शाम में जमा हो जाएंगे उस वक़्त इमाम मेहदी का लश्कर तीन हिस्सों में तक़सीम हो जाएगा एक हिस्सा फरार हो जाएगा तीन की मौत कुफ्र पर होगी। दूसरा हिस्सा शहादत से मुशर्रफ़ होगा, बाक़ी तीसरा हिस्सा नसारा पर फतह पाएगा, फिर लश्करे इस्लाम कुस्तुनतुनिया से रवाना हो कर शाम में आएगा, उसके सात साल बाद दज्जाल ज़ाहिर होगा और फ़ित्ना व फसाद बरपा करके मुल्क शाम में पहुंचेगा जहां तमाम मुसलमान सिमट कर जमा हो चुके होंगे और यह ख़बीस उन सबका मुहासरा करेगा, उनमें बाइस हज़ार मर्द और एक लाख औरतें होंगी, जो एक क़िले में महसूर होंगे, वहां मुसलमानों को ग़ैब से आवाज़ आएगी घबराओ मत तुम्हारा दादरस आ पहुंचा।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नुज़ूल :

उस वक़्त दो फ़रिश्तों के परों पर हाथ रखे ज़र्द रंग का जोड़ा ज़ेबतन किए हुए निहायत नूरानी शक्ल में दमिश्क़ की जामे मस्जिद के मश्रिक़ी मनारे पर दीने मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाकिम बन कर नुज़ूल फरमाएंगे। सुबह का वक़्त होगा नमाज़े फज्र के लिए इक़ामत हो चुकी होगी हज़रत इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु अन्हु जो उस जमाअत में मौजूद होंगे हज़रत ईसा से इमामत की दर्ख़्वास्त करेंगे मगर आप उन से कहेंगे आगे बढ़ो और नमाज़ पढ़ाओ तक्बीर तुम्हारे ही लिए हुई थी। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, सलाम फेर कर क़िले का दरवाज़ा खोलेंगे, उधर दज्जाल के साथ सत्तर हज़ार यहूदी की फौज होगी, दोनों में घमासान की जंग होगी, जब दज्जाल की नज़र हज़रत ईसा पर पड़ेगी तो वह वहां से भाग निकलेगा, हज़रत ईसा उसे तलाश करके बैतुल–मुक़द्दस के क़रीब बाबुल्लाह के क़रीब जा लेंगे और उसकी पुश्त पर नेज़ह मारेंगे तब वह वासिले जहन्नम होगा आप मुसलमानों को उसका ख़ून अपने नेज़े पर दिखाएंगे अह्ले किताब भी ईमान लाएंगे, सिवाए इस्लाम के अल्लाह तआला तमाम मज़ाहिब को फना कर देगा। और सिर्फ़ दीने इस्लाम बाक़ी रहेगा।

याजूज व माजूज का ज़ुहूर :

क़त्ले दज्जाल के बाद लोग अमन व अमान की ज़िन्दगी बसर करते होंगे कि हज़रत ईसा को हुक्म होगा कि मुसलमानों को लेकर कोहे तूर पर ले जाओ चुनांचे आप अपने साथी मुसलमानों को लेकर क़िला तूर पर महसूर होंगे, उधर याजूज माजूज ज़ाहिर होंगे और आते ही फित्ना व फसाद शुरू करेंगे। और लोगों को क़त्ल करेंगे, जब फिर कहेंगे कि हमने

ज़मीन वालों को तो कत्ल कर डाला अब आसमान वालों को क़त्ल करें फिर आसमान की तरफ़ तीर फेंकेंगे। खुदा की कुदरत उनके तीर खून आलूद करेंगे, उस वक्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम दुआ फरमाएंगे उस पर अल्लाह तआला उनकी गर्दनों में एक किस्म के कीड़े पैदा करके एक रात में सब को हलाक कर देगा। फिर आप अपने सहाबियों के साथ पहाड़ से उतरेंगे देखेंगे तमाम ज़मीन लाशों से भरी पड़ी है और बदबू फैल गई है आप फिर दुआ फरमाएंगे। एक सख्त आंधी आएगी और उन्हें उड़ा कर ले जाएगी फिर बारिश होगी और तमाम ज़मीन धुल जाएगी। आप चालीस साल ज़मीन पर इमामत फरमाएंगे। इस दर्मियान हज़रत इमाम मेहदी का इंतिकाल होगा आप उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएंगे। आप निकाह फरमाएंगे औलाद भी होगी आप हज व उमरा को भी जाएंगे फिर आप मदीना मुनव्वरा में इंतिकाल फरमाएंगे लोग नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहलूए मुबारक में जहां पहले से क़ब्र तैयार है दफन करेंगे।

तुलूअ़ होना आफताब का मग़रिब से :

आफ़ताब रोज़ाना बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ हो कर इज़्ने तुलूअ़ चाहता है जब अल्लाह तबारक व तआला इजाज़त देता है तब वह मश्रिक़ से निकलता है लेकिन क़यामत के नज़्दीक जब आफताब मामूल के मुताबिक़ इजाज़त चाहेगा तो उसे हुक्म होगा वापस पलट जा वह वापस पलट जाएगा उसके बाद माह ज़िल–हिज्जा यौमे नहर के बाद रात इस क़द्र लम्बी हो जाएगी कि तमाम ख़ल्क़ बेक़रार होगी, लोग हाए तौबा हाए तौबा पुकारेंगे आख़िर तीन दिन तीन रात के बाद आफताब मग़रिब से निकल कर निस्फ़ आसमान तक आकर लौट आएगा और फिर दस्तूर के मुताबिक़ मश्रिक़ से निकलेगा।

आग का नमूदार होना :

आफ़ताब के मग़रिब से निकलने के बाद दूसरे रोज़ लोग इसी चर्चे में होंगे कि अचानक कोहे सफ़ा ज़लज़ला से फट पड़ेगा और उसमें से जानवर निकलेगा पहले यमन फिर नज्द में ज़ाहिर हो कर गायब हो जाएगा। हज़रत ईसा की वफ़ात के चालीस साल बाद जब कि क़यामत को भी सिर्फ चालीस साल बाक़ी रहेंगे। एक खुशबूदार ठण्डी हवा चलेगी जिसके असर से मुसलमानों की रूह क़ब्ज़ होगी यहां तक कि कोई अह्ले ईमान बाक़ी न रहेगा सिर्फ़ काफ़िर रहेंगे रफ़्ता–रफ़्ता उनमें फसाद बरपा होगा। खुदा तर्सी शर्म व हया उठ जाएगी, खाने–ए–काबा को ढा देगा, बुतपरस्ती कहत

और वबा का ज़ुहूर होगा, उस वक़्त मुल्के शाम में अमन व अमान रहेगा इसलिए दीगर ममालिक के लोग अपने अहल व अयाल को लेकर शाम को रवाना होंगे, इसी अस्ना एक बड़ी आग जुनूब से नमूदार होगी वह लोगों का तआकुब करेगी। यहां तक वह मुल्के शाम में पहुंच जाएंगे। फिर वह आग गायब हो जाएगी और फिर चालीस साल इसी तरह गुज़रेंगे दुनिया में काफिर ही काफिर होंगे। लोग अपने कामों में मशग़ूल होंगे कि सुबह के वक़्त अल्लाह तआला हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम को सूर फूंकने का हुक्म देगा और फिर क़्यामत बरपा होगी। जिस तरह दुनिया की हर शय फना होती है इसी तरह दुनिया भी फना होगी। चूंकि हर चीज़ की उम्र, मौत जितनी अल्लाह तआला चाहता है उसने लिख रखी है बस दुनिया की उम्र ख़त्म हो गई क़्यामत आ गई अब यहां से मख़्लूक़ का हिसाब, किताब और सज़ा व जज़ा का फ़ैसला होगा। जब इस्राफील अलैहिस्सलाम सूर फूंकेंगे तो शुरू–शुरू में उसकी आवाज़ बारीक होगी और फिर रफ़्ता–रफ़्ता बुलन्द होती जाएगी। इस आवाज़ से लोग बेहोश हो जाएंगे हर जानदार मर जाएगा। और जो मर चुके उन्हें क़ब्र में और जो ज़िन्दा हैं जैसे अंबियाए किराम, शुहदाए किराम, वग़ैरह पर ग़ुनूदगी छाएगी।

ज़मीन व आसमान में हलचल मच जाएगी, पहाड़ रेज़ा–रेज़ा हो जाएंगे। आसमान से सितारे टूट कर गिरेंगे यहां तक कि तमाम मलाइका भी फना हो जाएंगे, उस वक़्त मालिके हक़ीक़ी वाहिद के कोई न होगा। अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त फरमाता है, है कोई हुक्मरान, कहां हैं जब्बार, कहां हैं मुतकब्बेरीन जब कोई जवाब देने वाला बाक़ी न रहेगा, फिर खुद ही फरमाएगा अल्लाह अल–वाहिदुल–क़हहार।

तमाम मख़्लूक़ का दोबारा ज़िन्दा होना :

फिर अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से सबसे पहले हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फरमाएगा, सूर को पैदा करके दोबारा फूंकने का हुक्म देगा, सूर फूंकते ही तमाम जिन्न व इन्स, हैवानात ज़िन्दा हो जाएंगे, अव्वल हामिलाने अर्श, फिर जिब्रील फिर मीकाईल, फिर इज़राईल अलैहिमुस्सलाम उठेंगे। फिर दोबारा अज़सरे नौ ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज मौजूद हो जाएंगे। फिर मेंह बरसेगा जिस से सब्ज़ह के मिस्ल हर एक रूह जिस्म के साथ ज़िन्दा क़ब्र से उठेगा। सबसे पहले हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ब्रे अनवर से इस तरह उठेंगे कि दाहिने हाथ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का हाथ होगा, और बाएं हाथ में फारूक़े आज़म

का हाथ होगा फिर मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा से जितने मुसलमान मदफ़ून होंगे अपने हमराह लेकर मैदाने हश्र में तशरीफ़ ले जाएंगे।

यौमे हश्र

बरोज़े हश्र जब तमाम लोग अपनी–अपनी क़ब्रों से बरहना उठेंगे उस वक़्त मैदाने महशर का अजीब हाल होगा सब एक दूसरे को हैरत से देखेंगे, मोमिनों की क़ब्रों पर अल्लाह तआला की रहमत के फ़रिश्ते सवारियां लिए हाज़िर होंगे, उनमें से बाज़ तन्हा सवार होंगे, किसी पर दो किसी पर तीन किसी पर पांच किसी पर दस–दस सवार होंगे लेकिन काफ़िर मुंह के बल घसीट कर ले जाए जाएंगे, ज़मीन उसी तरह हमवार कर दी जाएगी, उस दिन सूरज एक मील के फ़ासिले पर होगा उसकी तपिश इतनी होगी कि हांडी में भेजा खौलता होगा, पसीना इस क़द्र निकलेगा कि किसी के टखनों तक, किसी के घुटनों तक, किसी के कमर तक, किसी के मुंह तक और ऊपर से प्यास की शिद्दत इतनी बढ़ेगी कि ज़बान सूख कर कांटा हो जाएगी हर कोई बक़द्रे गुनाह तक्लीफ़ में गिरफ़्तार होगा फिर हिसाब का दफ़्तर खुलेंगे सबके सामने अपने–अपने आमाल नामे दिए जाएंगे। नेक बन्दों को दांए हाथ में बुरे लोगों को बाएं हाथ में कि वह पुश्त से निकाल कर दाएं जानिब लें। फिर मीज़ान में उनके आमाल नामे तौले जाएंगे, मीज़ान तराज़ू को कहते हैं जिसमें एक तरफ़ नेकियां और दूसरे पलड़े में बदियां रखी जाएंगी अगर नेक काम की मिक़्दार ज़्यादा होगी तो उस पलड़े का वज़न ज़्यादा होगा इसी तरह बदी की मिक़्दार देखी जाएगी उसके मुताबिक़ उन्हें सज़ा व जज़ा दी जाएगी।

अह्ले महशर की क़िस्में :

वक़ूअ़् महशर के बाद तमाम इंसानों की तीन क़िस्म कर दी जाएंगी। (१) दोज़ख़ी (२) आम जन्नती (३) ख़ास मुक़र्रेबीन।

(१) दोज़ख़ी को कुरआने करीम में अस्हाबुश्शिमाल फ़रमाया जो मीसाक़ के वक़्त आदम के बाएं जानिब से रूहों को निकाला गया था अर्शे आज़म के बाएं जानिब खड़ा करके उनके नाम–ए–आमाल बाएं हाथ में दिए जाएंगे फ़रिश्ते बाएं तरफ़ से घसीटते हुए दोज़ख़ की तरफ़ ले जाएंगे, जिनकी बदबख़्ती का कोई ठिकाना न होगा।

(२) आम जन्नती जिन्हें कुरआने करीम में अस्हाबुल–यमीन कहा गया। उन्हें मीसाक़ के दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दाएं जानिब के पहलू

से निकाला गया था वह अर्शे आज़म के दाएं जानिब होंगे उनको भी आमाल नामा दाएं हाथ में दिया जाएगा और फ़रिश्ते उन्हें दाहिनी तरफ़ ले चलेंगे, उस वक़्त उनकी मुसर्रत का ठिकाना न होगा। शबे मेअ्राज में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हीं दोनों गरोह को देखा था कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी दाहिनी तरफ़ देख कर मुस्कुराते और बाएं तरफ़ देखा कि वह रो रहे हैं। कुरआने करीम में उन मुक़र्रेबीन को साथियों फरमाया जो हक़ तआला की रहमतों और मरातिब में सब से आगे हैं।

पुल सिरात पर से गुज़रना :

पुल सिरात पर से लोग मुख़्तलिफ़ तरह से गुज़रेंगे। सब से अव्वल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुज़रेंगे, फिर अंबियाए किराम फिर उम्मते मुहम्मदी, उसके बाद दीगर उम्मतें।

हौज़े कौसर :

रोज़े महशर में बदहवासी के आलम में अल्लाह तआला की एक बड़ी रहमत हौज़े कौसर है जिसकी मसाफ़त एक माह की राह है, उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद शहद से ज़्यादा मीठा और मुश्क से ज़्यादा पाकीज़ा और खुशबूदार, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मती को बुला–बुला कर अपने दस्ते मुबारक से जामे कौसर से सैराब फरमाएंगे।

मुख़्तलिफ़ टोलियां :

बरोज़े क़्यामत हर टोला अपने–अपने इमाम के साथ होगा चुनांचे हज़रत अबू बकर के साथ सिद्दीक़ों का टोला होगा, आदिल बादशाहों का टोला हज़रत उमर फारूक़े आज़म के झण्डे तले होगा। सख़ियों का गरोह उस्मानी झण्डे तले होगा। शुहदा की जमाअत लिवाए हैदरी के तले होगी, फ़ुक़्हा व उलमा का गरोह हज़रत मुआज़ बिन जबल के झण्डे तले होगा। तारिकुद्दुनिया का गरोह हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी के झण्डे तले होगा, मुअज़्ज़िनों की जमाअत हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हु के झण्डे तले होगी। मज़्लूम मक़्तूल शुहदा की जमाअत हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के झण्डे तले होंगे। उसके अलावा तमाम पैग़म्बरों के झण्डे के नीचे उनके उम्मती होंगे, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत आपके अलम जिसका नाम लिवाउल–हम्द है, जिसका अर्ज़ मश्रिक़ से मग़्रिब तक और तूल शुमाल से जुनूब तक होगा। उसकी सनान (नूर)

याकूत अहमर उसका कब्ज़ा चांदी का और डन्डा सब्ज़ मरवारेद का होगा। लिवाउल–हम्द में तीन सतरें होगी, एक सतर पर बिस्मिल्लाहिर्रहमान दूसरी सतर पर अल्हम्दु लिल्लाहे रब्बिल–आलमीन। और तीसरी सतर पर ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा होगा।

मक़ामे महमूद :

अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीबे ख़ास रसूले मक़्बूल को मक़ामे महमूद अता करेगा यानी अल्लाह तआला एक तरफ़ और उसी के दाएं तरफ़ हमारे आक़ा होंगे।

आराफ़ :

जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान एक पर्दा होगा यह दीवार जन्नत की नेमतों को दोज़ख़ तक और दोज़ख़ की तक्लीफ़ को जन्नत तक पहुंचने में माने होगी।

दीदारे इलाही :

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला का दीदार जो आख़िरत में हर मुसलमान के लिए मुम्किन है और यह हक़ीक़त मुसल्लम है। यह तो नहीं कह सकते कि कैसे देखेंगे और उसका दीदार क्योंकर होगा। क्योंकि यहां कोई दख़ल नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला का राज़ मख़्फ़ी होता है और यह राज़ वही जानता है कि कब और कैसे दीदार कराया जाए उसका इद्राक एहाता लामहदूद है जिस तरह हम उसकी क़ुदरत का मुशाहिदा करते हैं। इन्शाअल्लाह उसका भी दीदार मुम्किनात में से है। अगर उसका दीदार नामुम्किन होता तो हज़रत मूसा को उसकी तजल्ली नज़र न आती। अह्ले मोमिन के लिए ख़ुदा का दीदार ऐसा साफ़ होगा जैसे आफ़ताब और चौदहवीं रात का चांद हर एक अपनी जगह से देखता है इसी तरह अल्लाह तआला हर एक को अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा। और अल्लाह तआला के नज़्दीक जो है उसे सुबह व शाम उसका दीदार अता होगा। पस अल्लाह तबारक व तआला का दीदार वह नेमते अज़ीमा है कि उस दीदारे अज़मत के लिए दीन व दुनिया की तमाम नेमतें हैच हैं। अल्लाह तआला हम सबको अपना दीदार नसीब करे। आमीन

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

पन्द्रहवां बाब

सफ़रे आख़िरत

कुरआने करीम में ज़िक्र है। कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल–मौत। हर नफ़्स (ज़ी रूह) को मौत का मज़ा चखना है। रूह की दो क़िस्में हैं :

(१) सैलानी, जिसे हैवानी भी कहा जाता है।

(२) सुल्तानी, जिसे जिस्मानी भी कहा जाता है।

रूहे सैलानी जो इंसान के जिगर या सीने में रहती है और इंसान के जिस्म से थोड़ी देर के लिए जिस्म से अलग कर दी जाती है। जैसे नींद में ख़्वाब की सूरत में कहां–कहां भटकती रहती हैं। और जैसे ही हम नींद से बेदार होते है फौरन जिंस्म में दाख़िल हो जाती है। दूसरी जिस्मानी रूह जिसका तअल्लुक़ गोश्त पोस्त, ख़ून की रगों, जिस्म के हर अज़्व से होता है। और जब वह इंसान के जिस्म से जुदा होती है तो दोबारा लौट कर नहीं आती जिसे मलिकुल–मौत ले जाते हैं। मलिकुल–मौत एक फ़रिश्ता है जिसका नाम इज़्राईल है। दुनिया में जितनी अशिया हैं उसमें एक माद्दह जुड़ा होता है जैसे फूल से ख़ुशबू, सितारों, सूरज से रौशनी, पानी में रवानी, जिस्म में हरकत यह तमाम लतीफ़ चीज़ें अशिया से जुड़ी हैं। जिसे जान व रूह कहा जाता है। जिस्मानी रूह की दस्तर्स आसमानों तक है जब कि हैवानी रूह सिर्फ़ ज़मीन के इर्द गिर्द होती है जब जिस्मानी रूह से अलग होती है तो जिस्म बेहिस व साकित व जामिद हो जाता है। उसके बावजूद उसका तअल्लुक़ जिस्म से लगा रहता है। इसलिए अगर मुर्दे को तक्लीफ़ व राहत का एहसास होता है मगर इज़्हारे कुव्वत ज़ाइल हो जाती है। जिस तरह इंसान के जिस्म में रूह हो और जिस्म को तक्लीफ़ पहुंचे तो उसकी रूह भी तड़प जाती है। इसी तरह मरने के बाद भी मुर्दे को तक्लीफ़ पहुंचे तो रूह को तक्लीफ़ पहुंचती है।

मलकुल–मौत :

सफ़रे आख़िरत के वक़्त सबसे पहले इंसान को मलकुल–मौत का सामना करना पड़ता है जिसका नाम इज़्राईल है जो अपने मुआविन फ़रिश्तों के साथ हाज़िर होते हैं, वह भी एक मख़्लूक़ है और क़्यामत के बाद हिसाब व किताब के बाद जब जन्नती जन्नत में चले जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में तब मलकुल–मौत को मेंढे की शक्ल में हाज़िर किया जाएगा

और उसे भी मौत दे दी जाएगी। इसलिए जन्नती हमेशा हमेशा के लिए जन्नत में और दोज़ख़ी हमेशा–हमेशा के लिए दोज़ख़ में रहेंगे। क्योंकि वहां किसी को मौत नहीं आएगी क्योंकि मौत को ख़ुद मौत दे दी गई है।

काफिर की मौत :

काफिर की मौत के वक़्त अजल का फरिश्ता एक सियाह बादल की तरह हैबतनाक सूरत में आता है वह इतना लम्बा होगा कि जिसका सर आसमान से टिका होता है। उसके मुंह से आग के शोअ़ले और धुवां निकलता है और जिस्म के मसामात से चिंगारियां फूटती हैं जिसे देख कर इंसान भागने की कोशिश करता मगर फरिश्ते उसे जकड़े हुए दबोचे हुए रहते हैं। वह चीख़ना चाहता है। मगर चीख़ नहीं सकता और यह भयानक सूरते हाल ही उसके लिए अज़ाबे जान बन जाती है। फिर वह फरिश्ते उस से कहते हैं ऐ ख़बीस रूह अल्लाह की नाराज़गी और ग़ज़ब की तरफ़ चल। लेकिन रूह को पता होता है कि आगे उसके साथ क्या मुआमला होगा इसलिए वह जिस्म से बाहर निकलने को तैयार नहीं होती। इसलिए फ़रिश्ते ज़बरदस्ती उसकी रूह जिस्म से निकालते हैं और इस रूह को टाट में लपेट कर ले चलते हैं जिसमें मुरदार सड़े हुए जानवर की बदबू आती है। फ़रिश्ते उसे आसमान की तरफ़ ले चलते हैं मगर आसमान के फरिश्ते ऊपर नहीं आने देते हुक्म होता हैं कि उसका नाम सिज्जीन में लिख दो फिर उसे ज़मीन में फेंक कर जिस्म में दाखि़ल करके क़ब्र के फ़रिश्तों के हवाले कर दिया जाता है। वहां फ़रिश्ते उस से सवाल करते हैं। तेरा रब कौन है? वह जवाब देता है मुझे मालूम नहीं। फिर पूछते हैं तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है मुझे पता नहीं। फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं तब भी वह यही जवाब देता है कि मैं नहीं जानता। तब खुदा का हुक्म होता है कि उसने झूठ कहा उसके आगे नीचे आग का बिस्तर बिछा दो और दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो। क़ब्र उसे इस तरह दबोचती है कि उधर की पिस्लियां इधर, इधर की पिस्लियां उधर हो जाती हैं। उसके अलावा क़ब्र में बड़े–बड़े अज़्दहे मुसल्लत कर दिए जाते हैं और अपने मुंह से आग के शोअ़ले निकाल कर फुंकारते हैं जिस से मुर्दा दस हाथ अन्दर धंस जाता है और उसके आमाल बदशक्ल में आते हैं और बदबू आती है यह अज़ाब उसे क़यामत तक झेलना पड़ेगा।

मोमिन की मौत :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से रिवायत है कि जब हक़ तआला

किसी मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म देता है तो मलकुल–मौत को हुक्म देता है कि मेरे उस बन्दे को मेरा सलाम पहुंचाना और जब मलकुल–मौत उस से कहते कि तेरा रब तुझे सलाम कहता है फिर उस से मुख़ातब हो कर कहते कि ऐ ख़ुदा के दोस्त उस घर से निकलो जिसे तुमने ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को कुरबान करके वीरान कर दिया और अब उस घर की तरफ़ चलो जिसे तुम ने रियाज़त व इबादत के ज़रिया आबाद किया। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ने फरमाया मोमिन की मिसाल उस वक़्त ऐसी होती है गोया क़ैद ख़ाने से रिहा हो रहा हो और फिर मलकुल–मौत उसकी रूह जिस्म से इस तरह निकालते जैसे मक्खन में से बाल। फिर उसे जन्नती कफन में ख़ुशबू में रख कर आसमान की तरफ़ चलते हैं। उन ख़ुशबू के मुतअल्लिक़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि दुनिया में उम्दा से उम्दा ख़ुशबू भी उसकी बराबरी नहीं कर सकती। फिर फ़रिश्ते उसकी रूह को लेकर आसमान पर जाते हैं फ़रिश्तों की जिस जमाअत से उनका गुज़र होता है ताज़ीम व तक्रीम से उसका तआरुफ़ कराते हैं। इस तरह यके बाद दीगरे सातों आसमानों के दरवाज़े खुल जाते हैं। फिर अल्लाह तआला का हुक्म होता है मेरे बन्दे का नाम इल्लीईन में लिख दो उसके बाद रूह को दोबारा क़ब्र में भेजा जाता है। फ़रिश्ते क़ब्र में मुर्दे के साथ सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में क्या जानता है जब वह सही–सही जवाबात देता है तो अल्लाह तआला की तरफ़ से निदा आती है कि मेरा बन्दा सच कह रहा है उसके लिए जन्नत का फ़र्श बिछा दो उसको जन्नत का लिबास पहनाओ और उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दो फिर क़ब्र इतनी वसीअ् कर दी जाती है कि ताहदे नज़र कुशादा कर दी जाती है उसके बाद हसीन व ख़ूबसूरत शख़्स आमाल की शक्ल में उसे जन्नत की बशारत देते हैं।

मदफ़न की जगह :

'हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है कि एक फरिश्ता औरत के रहम पर मुक़र्रर होता है और अल्लाह तआला के हुक्म से जहां उसकी मौत लिखी है वहां की मिट्टी उस औरत के नुत्फ़े में डाल कर खमीर तैयार करता है। और वह वहीं पर दफन होता है जहां की मिट्टी से उसका ख़मीर तैयार किया जाता है। मिसाल के तौर पर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के दरबार में एक शख़्स बैठा हुआ था। जिसकी मौत दूसरी जगह लिखी हुई

थी इसलिए हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम उसे घूर–घूर कर देख रहे थे कि उसकी मौत तो फुलां जगह है और यह तो यहां बैठा है।

उस शख़्स ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया यह शख़्स कौन है जो मुझे घूर–घूर कर देख रहा है तब सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा वह मलकुल–मौत हैं जो तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने आए हैं यह सुनना था कि वह शख़्स वहां से उठ कर बेतहाशा दौड़ने लगा भागते–भागते वह उसी जगह पहुंचा जहां उसकी रूह क़ब्ज़ करनी थी वहीं उसकी हरकते क़ल्ब बन्द हो गई और वहीं उसका इंतिक़ाल हुआ जहां उसकी मौत और मदफन की ज़गह लिखी हुई थी।

रिवायत है कि किसी बुज़ुर्ग ने मौत से पूछा तू अपने आमद की इत्तिला क्यों नहीं देती। उसने जवाब दिया मेरी आमद से क़ब्ल मेरे क़ासिद मेरा पैग़ामे अजल पहुंचा देते हैं। हादिसात, बुढ़ापा, बालों की सफेदी, दांतों का गिरना, समाअत व बसारत की कमज़ोरी वग़ैरह मेरे क़ासिद तो हैं। मगर अफसोस इंसान उसे समझ नहीं पाता और वह ग़फ़्लत में पड़ा रहता है। उसे मैं क्या करूं। रूहों के रहने के मक़ाम दो हैं एक इल्लीईन दूसरा सिज्जीन। जब इंसान मर जाता है तो उसका हिसाब व किताब लेने के बाद अगर वह बदबख़्त की रूह हो तो उसे सिज्जीन में भेज दिया जाता है और अगर नेक बख़्त हो तो उसकी रूह को इल्लीईन में भेज दिया जाता है। इल्लीईन का मतलब है आला मक़ाम।

अंबिया व मुरसलीन की रूहें जन्नतुल–अद्न में। उलमा की रूहें जन्नतुल–फ़िर्दौस में नेक लोगों की और नेक जिन्नात की इल्लीईन में। शहीदों की रूहें जन्नती ताइरों के पोटों में, गुनहगार की ताक़्यामत ऊहर में काफ़िरों की रूहें मरघट पर, वीरानी में, नजासत वाली जगह पर, खण्डरात में।

आलमे बरज़ख़ :

जब नेक इंसान की रूह इल्लीईन में जाती है तो वहां की तमाम नेक रूहें जो पहले से वहां पहुंच चुकी थीं और वहां मौजूद होती हैं वह उस रूह का इस्तिक़बाल करती हैं। ख़ुशी व मुसर्रत का इज़्हार करती हैं। यहां तक क़रीबी लोगों से बग़लगीर भी होतीं और मुसाफ़हा भी करतीं जिस तरह दुनिया में मिलती थीं। फिर उस से दुनिया के अपने अज़ीज़ व अक़ारिब का हाल दरयाफ़्त करती हैं। अगर वह कहता कि फुलां–फुलां का इंतिक़ाल हो चुका तब वह रूहें अफसोस करती हैं कि वह इल्लीईन में नहीं आया शायद सिज्जीन में होगा। इसी तरह गुनहगारों की रूहों का भी हाल होता है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़ब्र में मुर्दे का तमाम जिस्म यहां तक हड्डियां भी गल जाती हैं मगर रीढ़ की हड्डी बाक़ी रहती है और क़्यामत के दिन उसी हड्डी पर दोबारा गोश्त पोस्त लगा कर ज़िन्दगी अता की जाएगी।

आलमे बरज़ख़ क़ब्र से हश्र तक के दर्मियानी दौर को कहा जाता है। मरने के बाद और क़्यामत से क़ब्ल इंसान जिस दौर से गुज़र रहा है या गुज़रेगा वह सब उसी आलम में होता है। आलमे बरज़ुख़ में किसी को तक्लीफ़ है तो किसी को आराम। कोई मक़ामे इल्लीईन में होगा कोई मक़ामे सिज्जीन में। इल्लीईन का मतलब है आला मरतबा और सिज्जीन का मतलब है पस्त मरतबा। आलमे बरज़ख़ में क़ब्र के हालात, जन्नत, दोज़ख़ के हालात, मुर्दे जिस हाल में रखे होंगे क़्यामत तक उसी हाल में उसी मक़ाम पर होंगे। लेकिन यौमे हश्र में तमाम मुर्दों के जिस्म में रूह लौटा दी जाएगी। और फिर उन से हिसाब व किताब लेकर उनके आमाल के मुताबिक़ उनके दरजात मुक़र्रर करके जन्नत, दोज़ख़ में भेजा जाएगा जहां हमेशा–हमेशा के लिए रहेंगे। वहां मौत, हयात का सवाल ही पैदा नहीं होगा न दुनिया रहेगी न आलमे बरज़ख़ सिर्फ़ जन्नत और दोज़ख़ और अल्लाह तआला बाक़ी रहेगा। न सवाल न जवाब न हिसाब किताब न सज़ा, सब चीज़ ख़त्म हो जाएगी। हां अगर इंसान बेहद गुनहगार है तो उसके अज़ाब में कमी व तख़्फ़ीफ़ के लिए अगर उसके अज़ीज़ व अक़ारिब ने सवाब की नीयत से दुनिया में सदक़ा, ख़ैर, ख़ैरात करके मुर्दे के सवाब पहुंचाया हो तो उसकी सज़ा में कमी हो सकती है।

आदाबे मैयत

जांकुनी की अलामत :

पांव का सुस्त होना, नाक का टेढ़ा होना। दोनों कन्पटियों का बैठ जाना, मुंह की खाल का सख़्त होना, टकटकी बांधे देखना, जब मौत का वक़्त क़रीब आए और मुन्दरजा बाला अलामतें पाई जाएं। तो क़रीबी लोगों को चाहिए कि मैयत का मुंह क़िब्ला की तरफ़ कर दें। अगर ऐसा करना दुश्वार हो तो छोड़ दें। जब तक रूह न निकले मैयत के पास बुलन्द आवाज़ से कलिम–ए–तैयबा या कलिम–ए–शहादत पढ़ें। मगर उसे तल्क़ीन न करें। एक बार उसकी ज़बान से कलिमा निकल जाए तो उसे कोई बात करने का मौक़ा न दें। ताकि उसकी ज़बान पर आख़िरी कलिमा

रहे खुशबू रखें लोबान या अगर बत्ती सुलगाएं मकान में [illegible]
हो तो फौरन उसे निकाल दें। और दुआइया कलिमात पढ़ें। कोई [illegible]
मुंह से न निकालें। नज़अ् में सख़्ती देखें तो यासीन वग़ैरह पढ़ें।

जब दम निकल जाए तो चौड़ी पट्टी से जबड़े के नीचे से सर [illegible]
जाकर कर गिरह दें ताकि मुंह खुला न रहे आहिस्ता से आंखें बन्द [illegible]
हाथ पांव सीधे करें ज़ुबान से कोई भी कलिमा पढ़ें। अगर चारपाई [illegible]
तो नीचे उतार लें। उसके पूरे बदन को कपड़े से ढांक दें पेट पर कोई [illegible]
या मिट्टी की कोई नमक की बोतल रखें ताकि फूल न जाए। ज़्यादा [illegible]
न हो कि मैयत को तक्लीफ़ पहुंचे कफ़न दफ़न में जल्दी करें। [illegible]
अहबाब रिश्तेदारों को फौरन इत्तिला दें ताकि नमाज़े जनाज़ा में कसरत [illegible]
हो। मैयत के पास क़ुरआन पाक की तिलावत मुस्तहब है जबकि उस [illegible]
पूरा बदन ढका हुआ हो। मैयत को ग़ुस्ल देना फ़र्ज़े किफ़ाया है चन्द लो[illegible]
ने ग़ुस्ल दिया सब उस ज़िम्मेदारी से बरी हो गये। बावजूद इल्म होने [illegible]
ग़ुस्ल में ताख़ीर हो या ग़ुस्ल न दिया हो सब गुनहगार होंगे।

मैयत को ग़ुस्ल देने का तरीक़ा :

जिस तख़्ते पर मैयत को ग़ुस्ल देना हो उसे तीन या पांच या सात [illegible]
धो ले। फिर खुशबू की चीज़ें जैसे लोबान, अगरबत्ती या इत्र वग़ैरह उस[illegible]
गर्द फेरे फिर मैयत को लेटा कर नाफ से घुटने तक कपड़े से छुपा [illegible]
औरत हो तो गले से पैर के टख़नों तक ढांप ले जिस जगह ग़ुस्ल दे[illegible]
पर्दा कर ले। सब से पहले ग़ुस्ल देने वाले को चाहिए कि अपने हाथ [illegible]
कपड़ा लपेट कर इस्तिंजा कराए फिर नमाज़ की तरह वुज़ू कराए [illegible]
मैयत का मुंह फिर कुहनियों समेत दोनों हाथ धो ले फिर सर का मसह [illegible]
फिर सीधा दायां पैर फिर बायां पैर धोए। फिर कपड़ा या रूई से भिगो[illegible]
दांतों मसूढ़ों होंठों और नाक के नथुनों पर फेरे सर के बाल अच्छे [illegible]
से धोए या पाक चीज़ से धोए। फिर पहले बाएं करवट पर लिटा क[illegible]
से पांव तक बेरी के गर्म पानी में भिगोए और वह पानी बाएं टखने से [illegible]
तक बहाए फिर दाएं करवट से, इसी तरह तीन बार पानी बहाए। न[illegible]
साथ पेट पर हाथ फेरे ताकि कुछ हो तो निकल जाए फिर हाथ धो क[illegible]
करा कर सर से पैर तक काफ़ूर का पानी तीन मरतबा बहाए फिर बद[illegible]
किसी नर्म कपड़े या कपास से साफ करे तीन बार पानी बहाना सुन्नत [illegible]
एक बार बहाना फ़र्ज़ है।

मैयत के कपड़े :

मर्द के लिए तीन कपड़े होते हैं एक लिफ़ाफ़ा इस तरह लम्बा हो कि दोनों तरफ़ बांध सके। दूसरा एज़ार यानी तहबन्द चोटी से क़दम तक और क़मीस जिसे कफ़्नी कहते हैं गर्दन से घुटनों तक। औरत के लिए पांच कपड़े होते हैं। (१) लिफ़ामा (२) एज़ार (३) क़मीस (४) ओढ़नी (५) सीना बन्द कफ़न का कपड़ा होना चाहिए। ज़ाफ़रानी और रेशम का कफ़न मर्द के लिए मम्नून है औरत के लिए जाइज़ है जहां तक हो सके सफ़ेद रंग का कफ़न बेहतरीन हो।

कफ़न पहनाने का तरीक़ा :

मैयत को ग़ुस्ल देने के बाद किसी पाक कपड़े से उसका बदन आहिस्ता–आहिस्ता साफ़ करे कफ़न तर न हो। कफ़न को लोबान की धोनी देकर यूं बिछाए कि बड़ी चादर फिर तहबन्द फिर कफ़नी पर मैयत को लिटाए कफ़नी पहनाने के बाद ख़ुशबू मले और माथा, नाक, कान, हाथ पैर की उंगलियों में काफ़ूर मले। फिर तहबन्द पहले बाएं जानिब फिर दाएं जानिब फिर लिफ़ाफ़ा लपेटे पहले बाएं हाथ की तरफ़ फिर दाहिने तरफ़ ताकि दायां हाथ ऊपर रहे औरत को कफ़नी पहना कर उसके बाल के दो हिस्से करके कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दे और ओढ़नी निस्फ़ पुश्त के नीचे से बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर मिस्ल नक़ाब डाल दे फिर बदस्तूर एज़ार और लिफ़ाफ़ा लपेटे फिर सबके ऊपर सीना बन्द बांध दे। आंख में सुर्मा लगाए।

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा :

मैयत के सीने के सामने मैयत के बिल्कुल क़रीब खड़ा हो और मुक़्तदी की तीन सफ़ें कर ले। इमाम और मुक़्तदी नीयत करके (कि नीयत की मैंने नमाज़े जनाज़ा की मअ़ ज़ाइद चार तक्बीरों के, वास्ते अल्लाह तआला के, दुआ वास्ते इस मैयत के, मुंह मेरा तरफ़ काबा शरीफ़ के (इमाम इमामत की और मुक़्तदी इक़्तिदा की नीयत करे) कानों तक हाथ उठा कर तक्बीरे तहरीमा कहते हुए हाथ नीचे लाए और हस्बे दस्तूर नाफ के नीचे बांध कर सना पढ़े जो नमाज़ में पढ़ी जाती है फिर अल्लाहु अकबर कहकर अपने लिए मैयत के लिए और तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों के लिए दुआ करे। तीन तक्बीरें कहे चौथी तक्बीर के बाद बेग़ैर हाथ खोले सलाम फेर दे, तक्बीर और सलाम इमाम जेहर से और मुक़्तदी आहिस्ता से पहली तक्बीर कहते के वक़्त हाथ उठाए दोबारा हाथ नहीं उठाना है। दुआएं

आहिस्ता पढ़ी जाएं।

मैयत को क़ब्र में उतारना :

मैयत को क़िबला की जानिब उतारे दाहिनी करवट लिटाए और उस मुंह क़िबला की तरफ़ करे।

औरत का जनाज़ा उतारना हो तो उसके महरिम हों यह न हों क़रीबी रिश्तेदार हो। यह भी न हों तो मुत्तक़ी परहेज़गार शख़्स उतारे। क़ब्र में उतारने से तख़्ते लगाने तक क़ब्र को कपड़े वग़ैरह से छुपाए। मैयत क़ब्र में रखते पढ़े **बिस्मिल्लाहि बिल्लाहि व तआला मिल्लतहू रसूलिल्लाह** और क़ब्र में रखने के बाद सर की बन्दिश खोल दे और लहद को कच्ची ईंटों से बन्द कर दे क़ब्र सन्दूक़ नुमा भी हो तो जाइज़ है।

मस्जिद के अन्दर नमाज़े जनाज़ा मक्रूहे तहरीमी है चाहिए कि जनाज़ा बाहर हो। नमाज़ बाहर ही होगी। दफ़न के बाद क़ब्र के पास थोड़ी देर ठहरना मुस्तहब है कि मैयत को उन्स हो और नकीरैन का जवाब देने में वहशत न हो और तिलावते कलाम पाक पढ़ना इस्तिग़फ़ार, दुआ करना ताकि मुर्दह साबित क़दम रहे दफ़न के बाद सूरः बक़रह का पहला और आख़िरी रुकूअ़ तिलावत करे। उजरत लेकर पढ़ना या पढ़ाना जाइज़ नहीं है। शजरा या अहदनामा मैयत के मुंह के सामने ताक़ में क़िबला की जानिब रखे जनाज़ा या क़ब्र पर फूल डालना जाइज़ है क्योंकि जब तक फूल तर रहेंगे तस्बीह करेंगे जिस से क़ब्र पर रहमत उतरती है।

क़ब्र पर अज़ान देना :

जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है और मुंकर नकीर सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है तो शैतान अपनी तरफ़ इशारा करता है कि मैं तेरा रब हूं। इसलिए हुक्म है कि मुर्दे की साबित क़दमी की दुआ करे। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि अज़ान की आवाज़ सुनते ही शैतान भाग जाता है। उस अज़ान की बरकत से मैयत को सवालात के जवाबात देने में आसानी होती है कि अज़ान में उन्हीं सवालात के जवाबात होते हैं जिस से मुर्दे को राहत मिलती है। अज़ान मुंकिरीन के सवालात के लिए मुआविन व मददगार साबित होती है। गोया ज़िन्दों की तरफ़ से नफ़अ़ बख़्श ईसाले सवाब का तोहफ़ा है।

तअ़ज़ियत :

किसी मुसलमान की मौत पर दूसरे मुसलमान भाई को जो मैयत का क़राबतदार क़रीबी रिश्तेदार को चाहिए कि मैयत के घर जा कर ताज़ियत

करे। सब्र की तल्क़ीन करे मरने वाले के हक़ में दुआए इस्तिग़्फ़ार करे कम अज़ कम तीन दिन तक ताज़ियत का हुक्म है। अगर कोई उज़्र हो तो बाद में भी ताज़ियत की जा.सकती है। सवाब की ख़ातिर पढ़ कर बख़्शा भी जा सकता है कि ईसाले सवाब पहुंचे और मुर्दे को राहत मिले मुर्दे के हक़ में दुआए ख़ैर करे।

नौहा करना :

मैयत के औसाफ़ बयान करके बुलन्द आवाज़ से रोना सीना पीटना। बाल नोचना, मुंह पर तमांचे मारना वग़ैरह यह सब जाहिलीयत के काम हैं। खुसूसन औरतों में यह बात ज़्यादा पाई जाती है इसलिए ख़ास औरतों को सब्र की तल्क़ीन करना चाहिए अगर रोने में आवाज़ बुलन्द न हो तो कोई हरज नहीं अल्लाह तआला हम सब को सब्र की तौफ़ीक़ अता करे।

ज़ियारते क़ुबूर :

ज़ियारते क़ुबूर जाइज़ व मुस्तहब है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद शुहदाए उहद की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाया करते थे और उनके हक़ में दुआ भी फरमाते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़ब्रों की ज़ियारत किया करो जो दुनिया से बेरग़बती का सबब और आख़िरत की याद दिलाती हैं।

ज़ियारते क़ुबूर का मुस्तहब तरीक़ा :

क़ब्र की ज़ियारत को जाने से क़ब्ल ग़ुस्ल करे या वुज़ू करे पाक साफ़ कपड़े पहने। मकान में दो रकअत नफ़्ल नमाज़ अदा करे हर रकअत में एक बार आयतुल–कुर्सी और तीन मरतबा सूरः इख़्लास पढ़े और उसका सवाब अह्ले क़ब्र को पहुंचाए जिस से अल्लाह तआला क़ब्र में नूर पैदा करता है और उसको सवाब अता करेगा। क़ब्रिस्तान जाते वक़्त फ़ुज़ूल बातें न करे। क़ब्रिस्तान पहुंचे तो जूते उतार दे। ज़ियारत के लिए पाइन्ती के तरफ़ से जा कर इस तरह खड़ा हो कि क़िबला की तरफ़ पुश्त हो और मैयत के चेहरे की तरफ़ मुंह सरहाने की तरफ़ से न आए कि मैयत के लिए बाइसे तक्लीफ़ हो। यानी मैयत को गर्दन घुमा कर देखना न पड़े कि कौन आया।

क़ब्रिस्तान में पहुंच कर अह्ले क़ुबूर को सलाम करे अगर बैठना चाहे तो इतनी दूर बैठे कि जो कुछ भी पढ़े क़ब्र में सोने वाले को सुनाई दे। ज़ियारत के लिए दोशंबा पंजशंबा, जुमा का दिन बेहतर है।

क़ब्र से किस तरह उठेगा :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रोज़े महशर में

बाज़ लोग बेपांव बेहाथ क़ब्र से उठेंगे जो हमसाया को सताने वाले होंगे।

❖ बाज़ लोग ख़िंज़ीर की शक्ल में उठेंगे जो नमाज़ में सुस्ती करने वाले होंगे।

❖ बाज़ लोग ख़ून थूकते हुए उठेंगे जो ख़रीद व फरोख़्त में झूठ बोलने वाले होंगे।

❖ बाज़ लोग सूजे फूले होंगे जो इंसानों के ख़ौफ़ से गुनाहों को छुपाया करते थे।

❖ बाज़ लोग गद्दी और गला किए हुए उठेंगे यह लोग झूठी गवाही देने वाले होंगे।

❖ बाज़ लोग बेज़बान होंगे कि मुंह से पीप ख़ून जारी होगा। सच्ची गवाही को छुपाने वाले होंगे।

❖ बाज़ लोग सर झुकाए निकलेंगे कि उनके पांव उनके सरों पर होंगे। यह ज़ना करके बेग़ैर तौबा मर गये थे।

❖ बाज़ लोग जुज़ामी और कोढ़ी हो कर उठेंगे जो वालिदैन के नाफरमान होंगे।

❖ बाज़ लोग काले मुंह के, पेट में आग भरी हुई होगी। जो ज़बरदस्ती नाहक़ यतीमों का माल खाते थे।

❖ बाज़ लोग नेक बख़्त होंगे जो क़ब्र से ऐसे उठेंगे कि उनके चेहरे चौदहवीं रात के चांद की मानिन्द चमकते होंगे। यह नेक अमल करने वाले गुनाहों से बचने वाले नमाज़ की हिफ़ाज़त करने वाले होंगे तौबा करने वाले। नमाज़ रोज़ा के पाबन्द होंगे।

शफ़ाअत तीन तरह की होगी :

(१) बुलन्दी–ए–दरजात। (२) मुआफीए सैय्यात के लिए (३) मैदाने हश्र से नजात पाने वालों के लिए।

(१) **बुलन्दीए दरजात :** यह बेगुनाहों के लिए है। चूंकि वह बख़्शे बख़्शाए होंगे इसलिए उनके दरजात बुलन्द किए जाएंगे।

(२) **मुआफ़ीए सैय्यात :** सिर्फ़ मुसलमान गुनहगारों के लिए होगी।

(३) मैदाने हश्र से नजात पाने वाले गुनहगार कुफ़्फ़ार अपनी पूरी सज़ा भुगत कर शिफ़ा पायेंगे।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

सोलहवां बाब

अरकाने इस्लाम वुज़ू का बयान

वुज़ू के साइंसी फ़वाइद :

तजरबात से यह बात साबित हो चुकी है कि इंसानी ज़िन्दगी एक बरक़ी निज़ाम के तहत काम करती है इसलिए यह देखा गया कि वुज़ू के ज़रिए हमारे मुख़्तलिफ़ आज़ा से निकलने वाले बर्क़ी असरात से क्या–क्या फ़वाइद हासिल होते हैं।

१. पहले हाथ धोना :

हाथ धोने से मौजूदा जरासीम और गन्दगी दूर होती है इंसान बहुत सी बीमारियों से महफूज़ रहते हैं तीन मरतबा हाथ धोने का मतलब यह है कि वाफर मिक्दार में पानी गुज़रने से कुव्वत और हिस पैदा होती है। और उंगलियों के पोरों से पानी बहने से शुआएँ एक ऐसा हल्क़ा बनाती हैं जिस से अन्दरूनी बर्क़ी रू का निज़ाम तेज़ होता है इस अमल से हाथ की हथेलियां नर्म गुदाज़ और उंगलियां लम्बी होती हैं।

२. कुल्ली करना :

तीन बार कुल्ली करने से मुंह की बदबू दूर होती है दांतों में सड़ी गली चीज़ें निकल जाती हैं जिससे मुंह की बदबू दूर हो जाती है और दांतों की बीमारियों पाइरिया वग़ैरह से हिफ़ाज़त होती है।

३. नाक में पानी डालना : नाक सांस लेने का वाहिद ज़रिया है और नाक से सांस लेने से हवा के ज़र्रात नाक के बालों में अटकते हैं नाक में तीन बार पानी डालने और छंगुलियां से साफ़ करने से नाक साफ़ होती है और सांस लेने में आसानी होती है। नाक में मुंजमिद बल्ग़मी रुतूबतें रफ़ा हो जाती हैं। नाक में पानी डालने से दिमाग़ तरोताज़ा हो जाता है दाइमी नज़्ला वग़ैरह नाक के अमराज़ से हिफ़ाज़त होती है।

४. चेहर धोना :

चेहरा धोने से भंवें पानी से तर होती हैं जिसकी वजह से अन्दरूनी ज़ाजिया जो बहती है उस से चेहरे की ज़ेरीं जिल्द के ग़ुदूद पर मुस्बत असरात मुरत्तब होते हैं और चेहरे के अज़्लात चमक्दार, नर्म और लतीफ़ होते हैं चेहरे पुरकशिश नमूदार होती है आंखों के अज़्लात को ठन्डक और उसमें तक़्वियत पहुंचती है।

५. कुहनियों तक हाथ धोना :

फन्ने सरजरी व जराही के माहिर का क़ौल है कि एक रग का जिसका नाम नेहरुल-बदन है और उसका तअल्लुक़ दिल, जिगर से है। जो जिगर की बीमारियों को रफ़ा करने का काम करती है चूंकि उस रग के ख़ून का तअल्लुक़ कुहनियों से होता है इसलिए डॉक्टर उसी रग का इंजेक्शन से ख़ून निकाल कर मुआइना करते हैं इसलिए कि जिगर के साथ-साथ जिस्म के दीगर आज़ा से गहरा तअल्लुक़ होता है। पूरे जिस्म से उसका तअल्लुक़ होता है उसकी वजह से नफ़्सानी बीमारी ज़ेहनी कम्ज़ोरी और जिगर के अमराज़ से निजात मिलती है अन्दरूनी शुआओं से क़ाइम शुदह एक बहाव की सिम्त ख़ुसूसन हाथ की कुहनियों तक पहुंचती है इसलिए कुहनियों तक हाथ धोए जाते हैं।

६. सर का मसह : दिन में पांच मरतबा सर पर गीला हाथ फेरने से बालों पर चढ़ा हुआ मैल ज़र्रात गर्द व गुबार साफ़ हो जाते हैं।

सर इंसानी अज़्लात में सबसे ज़्यादा अहमियत रखता हैं तमाम जिस्मानी अफ़आल का तअल्लुक़ दिमाग़ के ज़रिया अंजाम पज़ीर होता है। वुज़ू से दिमाग़ी इर्तिआश ताक़तवर होते हैं सर का मसह करते वक़्त हमारा ज़हन और सर की कसाफत से पाक होता है जो अल्लाह तआला की क़ुर्ब का ज़रिया है उसके अलावा चकर, फरकाम, नींद की कमी से नजात मिलती है।

७. कानों का मसह :

कानों का मसह करते वक़्त शहादत की उंगलियां गीली करके कानों में डालने से कानों की अन्दरूनी सफ़ाई होती है। सुनने की क़ुव्वत में इज़ाफ़ा होता है। कानों के पीछे ख़ाली जगह होती है उस हिस्से को तर करने से इंसान की नज़र भीं तेज़ होती है जिसका तअल्लुक़ कान के पिछले हिस्से में ज़्यादा होता है।

८. गर्दन का मसह :

वुज़ू से गर्दन का मसह ख़ास अहम है चूंकि गर्दन का तअल्लुक़ रीढ़ की हड्डी से है। अन्दरूनी हराम मग्ज़ और जिस्म के तमाम आज़ा का कन्ट्रोल होता है जो जिस्म के तमाम जोड़ों से मुतअल्लिक़ है। हाथों के ज़रिया बर्क़ी रू रीढ़ की हड्डी से गुज़रते हुए जिस्म के तमाम अज़्लाती निज़ाम को बर्क़ी तवानाई बख़्शती है। जिसे जबलुल-वरीद Juglavuein यानी रगे जान कहा जाता है। अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है मैं

तुम्हारे रगे जान से भी ज़्यादा क़रीब हूं गर्दन का मसह करने से रअ़शा (गर्दन का हिलना) की शिकायत नहीं होती। पानी गीला हाथ लगने से बुख़ार का आरेज़ा नहीं होता। दिमाग़ी सुकून मिलता है।

६. पांव का धोना :

चूंकि पांव अक्सर टख़नों तक खुले रहते हैं जिससे अक्सर गर्द व गुबार जमा हो जाती है और पांव धोने से साफ सुथरे रहते हैं हथेलियों की तरह पांव के तल्लुवों का भी जिस्म के अज़लात से तअल्लुक़ होता है। जिसमें ख़ास तौर पर पेट, मसाना, गुर्दे, तिल्ली, पित्ता वग़ैरह से जुड़ा होता है। चूंकि दिमाग़ इत्तिलआत का मरकज़ है। जो हर वक़्त मुतहर्रिक रहता है। क़ानूने क़ुदरत है कि पानी, हवा, रौशनी में बहाव की क़ुव्वत होती है।

जब कोई नमाज़ी वुज़ू करता है तो ज़ाइद रौशनी पैरों के ज़रिया Earth से जिस्म में ऐतदाल पैदा करके मुहलिक बीमारियों से महफ़ूज़ रखती है। यही वजह है कि जब कोई तल्लुवों में तेल मले तो तमाम जिस्म से दौरा करके दिमाग़ तक पहुंचता है जिस से दिमाग़ी सुकून मिलता है। इसी तरह ग़शी के मौक़ा पर हाथ की हथेलियों और पैरों के तलुवों को मल कर जिस्म में हरारत पैदा की जाती है।

वुज़ू के उख़रवी फ़वाइद :

१. हाथ धोना : जब नमाज़ी वुज़ू करता है तो पहले अपने हाथ धोता है और नीयत करता है कि उन हाथों से कोई गुनाह न हो बल्कि उन हाथों से नेक काम हो।

२. कुल्ली करना :

कुल्ली करने से ज़बान पाक साफ हो जाती है और उसकी ज़बान से कोई बुरी बात नहीं निकलती। जब तक वुज़ू की हालत में होता है ज़बान पर ज़िक्रे इलाही जारी रहता है जो अल्लाह तआला की क़ुर्बत का ज़रिया बनता है।

३. नाक में पानी डालना :

नाक में पानी डाल कर और साफ करके उसके अन्दर के गर्द व गुबार को साफ किया जाता है आख़िरत में उसे जन्नत की ख़ुशबू सुंघाई जाएगी।

४. चेहरा धोना :

दिन में पांच मरतबा चेहरा धोना वुज़ू की नीयत से बरोज़े हश्र वुज़ू की वजह से मोमिन के चेहरे चौदहवीं रात की चांद के मानिन्द चमकेंगे।

५. कुहनियों समेत हाथ धोना :

इन हाथों से किसी पर ज़ुल्म सितम ढाने से बचे। इन हाथों से कि[illegible] किसी क़िस्म की ईज़ा न पहुंचे इंसान जब ऐसी बातों से परहेज़ कर[illegible] मुम्किन है उसके गुनाह भी झड़ जाएं और उसे आग से ख़लासी मि[illegible]

६. सर का मसह :

इंसान जब गुनाहों के बोझ से दब जाता है और जब वह वुज़ू करता है और सर का मसह करता है तो सर का बोझ उतार देता है। और वह गुनाह से पाक हो जाता है।

७. कानों का मसह :

जब बन्दा वुज़ू के वक़्त कान में शहादत की उंगली डालता है तो गोया वह कलिमा शहादत सुनने की क़ुव्वत पैदा करता है और उसे जन्नत की खुशख़बरी सुनाई जाती है।

८. गर्दन का मसह :

जब नमाज़ी वुज़ू करता है और गर्दन का मसह करता है तो बरोज़े महशर आग के तौक़ से महफ़ूज़ रहेगा।

६. सीधा पैर धोना :

सीधा पैर धोने से बन्दा सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की कोशिश करता है और अल्लाह तआला उसे नेक रास्ते पर चलने की हिदायत देता है।

१०. बायाँ (उलटा) पैर धोना :

वुज़ू के वक़्त पैर धोने से अल्लाह तआला बुराई के रास्ते से रोकता है और कभी बुराई के रास्ते पर भूल कर भी क़दम नहीं बढ़ाता उसके दोनों क़दम नेकी के रास्ते पर चल कर जन्नत की तरफ़ गामज़न होते हैं।

इस्लाम का दूसरा रुक्न—नमाज़

नमाज़ का फ़लसफ़ा :

शबे मेअ्राज में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पचास (५०) वक़्त की नमाज़ का तोहफ़ा अता हुआ था। लेकिन जब मूसा अलैहिस्सलाम के कहने पर आपकी उम्मत ५० वक़्त की नमाज़ किस तरह अदा करेगी। तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तक़रीबन नौ बार वापस जा कर नमाज़ कम कराई और फिर अल्लाह तआला ने पांच वक़्त की नमाज़ अता की। और जब बन्द—ए—मोमिन दिन भर में पांच वक़्त की नमाज़ अदा करता है तो पांच पर और एक सिफर बढ़ा कर पचास (५०)

का सवाब बख़्शता है।

दिन भर में सतरह (१७) रकअ़तें फ़र्ज़ क्यों ?

जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेअ़राज की रात सतरह मक़ामात की सैर की। सातों आसमानों की आठों बहिश्तें अर्शे मुअल्ला और कुर्सी वग़ैरह उन मक़ामात को मुलाहिज़ा फ़रमाया और यह सब मिला कर सतरह मक़ामात हुए इसलिए उम्मते मुहम्मदीया को भी यह शर्फ़ हासिल है कि हर नमाज़ी उन मक़ामात का रूहानी सफर होता है। लेकिन हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन मक़ामात पर जिस्मानी सफर का शर्फ़ हासिल हुआ।

मुक़र्ररह औक़ात में नमाज़ का सबब

फज्र की नमाज़ का वक़्त :

जब आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से दुनिया में तशरीफ़ लाए उस वक़्त रात की तारीकी थी। अन्धेरा देख कर रात भर ख़ौफ़ की वजह से रोते रहे क्योंकि आपको जन्नत में तारीकी का वास्ता नहीं पड़ा था जब सुबह हुई तमाम तारीकी कार्फ़ूर हो गई तो आपकी वहशत दूर हो गई आपने शुकराने के तौर दो रकअत नमाज़ अदा की। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उम्मते मुहम्मदीया पर फज्र की दो रकअत नमाज़ फर्ज़ कर दी।

ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त :

जब हज़रात इब्राहीम अलैहिस्सलाम नमाज़ से बाहर तशरीफ़ लाए तो फितरी तौर पर हक़ीक़ी माबूद की जुस्तजू हुई। चुनांचे रात के वक़्त चांद को देखा और उसकी चमक और रौशनी देख कर ख़ुश हो कर कहने लगे यही मेरा रब है लेकिन जब सुबह हुई सूरज निकला चांद ग़ायब हुआ तो सूरज को देख कर आपको पुख़्ता यक़ीन हो गया कि यही मेरा ख़ुदा है और जब वह भी ढलने लगा तो कहा मैं शिर्क से बेज़ार हूं। और अब मैं अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ़ करता हूं जिस ने चांद सूरज, ज़मीन, आसमान बनाए आपने चार रकअतें नमाज़ अदा कीं और यही चार रकअतें मुसलमानों पर ज़ुहर के वक़्त फर्ज़ की गईं।

अस्र की नमाज़ का वक़्त :

जब आदम अलैहिस्सलाम ने जन्नत में गन्दुम का दाना खाया और अल्लाह तआला की नाफरमानी की तो उस वक़्त की मुनासिबत से अल्लाह तबारक व तआला ने उम्मते मुहम्मदीया को हुक्म दिया कि हर तरह से खाना पीना रोक कर थोड़ी देर के लिए नमाज़ में मशग़ूल रहे ताकि अल्लाह तआला

की खुशनूदी हासिल हो और फिर अस्र के वक़्त चार रकअत फ़र्ज़ क

मग़्रिब की नमाज़ का वक़्त :

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलै
की जुदाई के फ़िराक़ में बेक़रार रहते थे और रोते–रोते आप
गये थे। लेकिन जब आपकी आंखों पर हज़रत यूसुफ़ अलैहि
पैरहन रखा गया आप बीना हो गये और हज़रत यूसुफ़ अलैहि
सलामती और दीने इब्राहीम पर क़ायम रहने की खुशख़बरी सु
रकअतें नमाज़ शुक्राने के तौर पर अदा कीं। पहली बीनाई की वा
दूसरी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सही व सलामत पाने की
तीसरी रकअत हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को दीने इब्राहीम पर
रहने की खुशी में शुक्राने की अदा की इस तरह मग़्रिब की तीन रक
आपकी इत्तिबा में उम्मते मुहम्मदीया पर फ़र्ज़ कर दी गईं।

इशा की नमाज़ का वक़्त :

अल्लाह तबारक व तआला के हुक्म से जब फ़िरऔन दरियाए
ग़र्क़ हुआ। और हज़रत मूसा दरिया पार कर गये उस वक़्त रात का
(इशा) था आपने चार रकअतें शुक्राने के तौर पर अदा कीं।
फ़िरऔन के ग़र्क़ होने की, दूसरी आपके दरिया पार करने की,
दरिया में रास्ता पैदा होने की और चौथी बनी इस्राईल के भी ब
की। इसलिए अल्लाह तबारक व तआला ने उम्मते मुहम्मदीया को
दिया कि वह भी इशा की चार रकअत फ़र्ज़ नमाज़ अदा करें।

नमाज़ के अरकान के अस्बाब

तक्बीरे तहरीमा :

जब बन्दा नमाज़ के ज़रिया अल्लाह तबारक व तआला के
हाज़िर होता है तो दुनिया को अपने पीछे छोड़ने का अहद करता
अल्लाह तआला की बड़ाई करके अपने हाथ उठा कर अल्लाह
क़हता है।

क़्याम : फ़रिश्तों का एक गरोह ऐसा है जो हमा वक़्त अल्लाह
के दरबार में हाथ बांधे खड़ा है नमाज़ के दौरान बन्दों में वह
जाती है।

सूरः फ़ातिहा का सबब :

बन्दा जब अहकमुल–हाकेमीन के दरबार में हाज़िर होता
शायाने शान अपनी दर्ख़्वास्त पेश करता है और अल्लाह तआला

अपने कलामे पाक से कुरआन मजीद की पहली ही सूरः में दुआ मांगने का तरीका बता दिया कि इस तरह दुआ मांगो जो तमाम दुआओं का निचोड़ है।

रुकूअ् :

क़्याम में बन्दा अपनी अर्ज़ पेश करता है अल्लाह तआला उसे कुबूल फरमाता है और कहता है मैंने तेरी दुआ कुबूल की तब बन्दा झुक कर उसकी तारीफ़ में तस्बीह **सुबहाना रब्बियल–अज़ीम**। तीन बार कहता है और फिर सीधा खड़ा हो कर कहता है। **समेअल्लाहुलिमन हमेदह।**

सज्दा :

खुशख़बरी सुनने के बाद बन्दे पर एक कैफ़ तारी होता है और फिर फितरी तक़ाज़े के तहत वह शुक्राने के तौर पर फौरन सज्दे में गिर जाता है यह कहते हुए अल्लाह बहुत बड़ा है फिर सज्दे में भी तीन मरतबा अल्लहु अक्बर की तारीफ़ में **सुबहाना रब्बियल–आला**। कहता है। फिर अल्लाहु अक्बर कहता हुआ जल्सा (बैठना) में देखता है कि कहीं ऐसा न हो कि शैतान की तकब्बुर से मरदूद हो जाऊं। इसलिए दोबारा सज्दे में गिर कर दोबारा अल्लाहु अक्बर कहता हुआ सज्दे में जाता है अल्लाह तआला की तारीफ़ करता है। और शुक्र बजा लाता है।

क़अ्दे का सबब :

बन्दा अल्लाह तआला की इताअत का फ़र्ज़ अदा करके इत्मीनान से बैठ जाता है और ख़ूब अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करता है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलात व सलाम का नज़्राना भेजता है फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उनकी आल पर दुरूद भेजता है। फिर आदम अलैहिस्सलाम की दुआ, दुआए मासूरह पढ़ कर दाएं बाएं खड़े फ़रिश्तों को सलाम करके नमाज़ से बाहर आ जाता है।

एक सिफर की अहमियत :

शबे मेअ्राज में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पचास (५०) वक़्त की नमाज़ का तोहफ़ा अता हुआ था। लेकिन बार–बार कम करने पर सिर्फ़ पांच तक नमाज़ मुक़र्रर हुई जब बन्द–ए–मोमिन यही पांच वक़्त की नमाज़ अदा करता है तो अल्लाह तआला अपनी रहमत से उस पर सिफ़र बढ़ा कर ५० का सवाब अता करता है।

मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में ५ पर दो सिफर बढ़ा कर पांच सौ ५०० का सवाब अता करता है मस्जिदे हरम कअ्बतुल्लाह में और उसके क़रीब नमाज़ में ५ पर तीन सिफर बढ़ा कर पांच हज़ार (५०००)

का इज़ाफ़ा करता है और बैतुल–मक़्दिस मस्जिदे अक़्सा में एक लाख का सवाब अता करता है।

नमाज़ की क़िस्में

फ़र्ज़ : दिन में पांच वक़्तन नमाज़ में फज्र की दो, ज़ुहर की चार, अस्र की चार, मग़्रिब की तीन, इशा की चार।

वाजिब : इशा में तीन वाजिब जो फर्ज़ का दरजा रखती हैं।

सुन्नत : सुन्नत की दो क़िस्में हैं सुन्नते मुअक्कदह, ग़ैर मुअक्कदह।

सुन्नते मुअक्कदह वह सुन्नते नमाज़ है जिसे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी तर्क न किया हो। और सुन्नते ग़ैर मुअक्कदह वह है जिसे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी कभार छोड़ा हो। जिस में फज्र की सुन्नत ज़ुहर की सुन्नत मग़्रिब के बाद की सुन्नत और इशा के बाद की दो सुन्नते मुअक्कदह है। अस्र की सुन्नते ग़ैर मुअक्कदह है और इशा से क़ब्ल चार सुन्नत और बाद की दो सुन्नत ग़ैर मुअक्कदह है।

नफ़्ल : फर्ज़ व सुन्नत के अलावा जितनी नमाज़ें हैं वह नफ़्ल कहलाती है नफ़्ली नमाज़ें जितनी अदा की जाएं नफ़ा बख़्श होती हैं।

नफ़्ल नमाज़ों के औक़ात

तहयतुल–वुज़ू : वुज़ू के फौरन बाद आज़ा ख़ुश्क होने से क़ब्ल दो रकअत नमाज़ अफ़्ज़ल है और यही तहयतुल–वुज़ू है।

तहयतुल–मस्जिद : मस्जिद में दर्स, ज़िक्र, नमाज़ के लिए आए इससे क़ब्ल तहयतुल–मस्जिद दो रकअत नमाज़ अदा करे, मक्रूह वक़्त में अदा न करे।

इशराक़ : तुलूअ़् आफ़ताब के तक़रीबन आधा घन्टा बाद इशराक़ का वक़्त शुरू होता है तो बुलन्दीए आफताब तक दो या चार रकअत नफ़्ल अदा करे।

चाश्त : उसका वक़्त आफताब बुलन्द होने से ज़वाले आफताब तक होता है बेहतर यह है कि चौथाई दिन चढ़े तब अदा करे।

अव्वाबीन : नमाज़े मग़्रिब के बाद छेः रकअत नफ़्ल नमाज़ अदा करना निहायत अफ़्ज़ल है।

तहज्जुद : नमाज़े इशा पढ़ने के बाद सो रहे इसलिए कि नमाज़े तहज्जुद के लिए नींद का होना ज़रूरी है फिर उठ कर दो रकअत से बारह रकअत तक जितनी चाहे पढ़े। अगर बारह रकअत पढ़नी हो तो इस तरह

पढ़े दो रकअत छेः सलाम से कि पहली रकअत में बारह मरतबा सूरः इख़्लास, दूसरी में ग्यारह। सलाम फेर कर तीसरी में दस, इस तरह एक– एक सूरः इख़्लास कम करते हुए आख़िर में एक सूरः इख़्लास पर ख़त्म होगी।

सलातुल्लैल : ईदैन, शबे बरात, शबे मेअ्राज, शबे क़द्र, एतकाफ़ और शबे बेदारी में जितनी चाहे नफ़्ल अदा करे।

सलातुत्तस्बीह : ग़ैर मक्रूह वक़्त में कभी भी पढ़ी जा सकती है। अफ़ज़ल यह है कि नमाज़े ज़ुहर से क़ब्ल पढ़े। हदीस में आया है कि उस नमाज़ को रोज़ाना पढ़े, रोज़ाना न पढ़ सके तो हफ़्ते में एक बार, हफ़्ते में न हो सके तो महीने में एक बार, अगर महीने में न पढ़ सके तो साल में एक बार, अगर यह भी न हो सके तो उम्र में एक मरतबा ज़रूर पढ़े। उस नमाज़ की तरतीब इस तरह है कि अल्लाहु अकबर कह कर तीसरा कलिमा सुबहानल्लाह से अल्लाहु अकबर तक पन्द्रह मरतबा पढ़े फिर तअव्वुज़ व तस्मिया के बाद सूरः फातिहा पढ़ कर कोई सूरः पढ़े। फिर दस मरतबा यही तस्बीह सुबहानल्लाह से अल्लाहु अकबर तक पढ़े। फिर रुकूअ् की तस्बीह के बाद फिर तीसरे कलिमे की तस्बीह दस मरतबा पढ़े क़ोमा में सीधे खड़े होने पर दस मरतबा तस्बीहे फातिहा सुबहानल्लाह से अल्लाहु अकबर तक पढ़े फिर सज्दे में यही तस्बीह दस मरतबा फिर सज्दे से सर उठा कर जल्से में दस मरतबा फिर दूसरे सज्दे में सज्दे की तस्बीह के बाद फिर दस बार पढ़े इस तरह चार रकअत नमाज़ में कुल तीन सौ मरतबा तीसरा कलिमा की तस्बीह पढ़े। एक रकअत में ७५ बार पढ़े। अगर बीच की तस्बीह भूल जाए तो दूसरे रकअत में पढ़ ले।

नमाज़े हाजत : जब कोई हाजत दर पेश हो तो अच्छी तरह वुज़ू करके ख़ुशूअ् व ख़ुज़ूअ् के साथ चार रकअत में चार कुल पढ़े फिर अपनी हाजत पेश करे दुआ क़ुबूल होगी।

सलातुत्तौबा : अगर ख़ुदा नख़्वास्ता कोई गुनाह सादिर हो जाए तो दो रकअत सलातुत्तौबा की नीयत से पढ़ कर अपने गुनाहों की मुआफी मांगे और गिड़ गिड़ा कर दुआ करे और आइन्दा उसका मुर्तकिब न होने का अज़्म करे इन्शाअल्लाह अल्लाह तआला इस नमाज़ के तुफ़ैल तौबा क़ुबूल होगी।

नमाज़े तरावीह : नमाज़े तरावीह हर मुसलमान मर्द, औरत के लिए सुन्नते मुअक्कदह है। रमज़ानुल–मुबारक में इशा की नमाज़ के बाद तुलूअ़े आफ़ताब तक पढ़ी जा सकती है।

बीस रकअत दस सलाम से दो दो रकअत नीयत करके अदा करे।

चार रकअत के बाद तरावीह की तस्बीह पढ़े अगर हर चार रकअत के बाद तरावीह की तस्बीह न पढ़ सके तो दुआ मांगते हुए इतनी देर बैठे जितनी देर में चार रकअत पढ़ी जाती हैं। जिसे तरवीह कहते हैं पूरे रमज़ानुल–मुबारक में तरावीह में एक कुरआने मजीद ख़त्म करना सुन्नते मुअक्कदह है। अगर पूरा कुरआन मजीद ख़त्म न हो सकता हो तो दस सूरतें पढ़ ले फिर दस रकअत में दोबारा दस सूरतें पढ़ ले तमाम सुन्नतों में क़वी तर सुन्नते मुअक्कदह फज्र की है बाज़ उसे वाजिब का दरजा देते हैं।

सज्द–ए–सह्व : अगर दर्मियाने नमाज़ में किसी तरह की भूल चूक हो जाए अगर रुकूअ़ या सज्दे की तीन मरतबा तस्बीह पढ़ने तक याद आ जाए तो सज्द–ए–सह्व कर ले अगर इस से ज़्यादा वक़्त लगे और सोच बिचार में ज़्यादा वक़्फ़ा हो तो नमाज़ तोड़ कर दोबारा लौटाई जाए।

सज्द–ए–सह्व का तरीक़ा यह है कि ख़त्मे नमाज़ के बाद सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़ कर सिर्फ़ दाएं तरफ़ सलाम फेर कर दोबारा सज्दे में जाए सज्दे की तस्बीह पढ़ कर दो सज्दे करके दोबारा अत्तहीयात और दुरूदे इब्राहीम पढ़ कर दोनों तरफ़ सलाम फेर कर नमाज़ से फारिग़ हो जाए।

सज्द–ए–तिलावत : पूरे कुरआन मजीद में मस्लके हन्फ़ी के नज़्दीक चौदह सज्दे वाजिब हैं लेकिन मसलके शाफ़ई में पन्द्रह सज्दे वाजिब हैं। जो सतरहवें पारे के आख़िर में एक इज़ाफ़ी सज्दा है। तिलावते कलाम पाक पढ़ते वक़्त जहां कहीं सज्द–ए–तिलावत आए तो वह वाजिब हो जाता है उसका तरीक़ा यह है : क़ारी खड़े हो कर अल्लाह अकबर कह कर सज्दा करे सज्दा की तस्बीह पढ़ कर फिर खड़ा हो जाए। सज्दे के लिए खड़ा होना ज़रूरी है। बैठे–बैठे वहीं पर सज्दा करना मना है। बेहतर यही है कि खड़े हो कर सज्दे में जाए।

नमाज़े क़स्र : वह मुसाफिर जो घर से तीन दिन के क़याम का इरादा रखता हो तो हर फ़र्ज़ नमाज़ की सिर्फ़ दो ही रकअत अदा करे। सुन्नत, नफ़्ल कोई नमाज़ अदा न करे। अगर तीन दिन के बाद एक–एक दिन क़याम बढ़ता रहे यहां तक कि पन्द्रह दिन हो जाए तब भी सिर्फ़ फ़र्ज़ की दो और इशा की वित्र तीन रकअत अदा करे। अगर जान बूझ कर पूरी नमाज़ अदा की तो गुनहगार होगा कि शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की। पन्द्रह दिन के बाद पूरी–पूरी नमाज़ अदा करनी होगी।

नमाज़ के फ़राइज़

नमाज़ के लि जो अफ़्आ़ल फ़र्ज़ है उन में बाहर के फ़र्ज़ तीन हैं :

(१) जगह का पाक होना (२) बदन का पाक होना (३) कपड़ों का पाक होना।

नमाज़ के फराइज़ : (१) तकबीरे तहरीमा (२) क़्याम (३) रुकूअ् (४) सुजूद (५) क़िरअत (६) क़अ्दा आख़िर तशह्हुद पढ़ कर सलाम के बाद नमाज़ से बाहर होना।

नमाज़ के अरकान : क़्याम यानी नमाज़ के लिए खड़ा होना, तक्बीर तहरीमा यानी अल्लाहु अकबर कह कर दोनों हाथ मर्दों के कानों तक ले जाना और औरतों का कन्धे तक ले जाना। सूरः फातिहा पढ़ना, रुकूअ् करना, क़ौमा यानी रुकूअ् से सीधा खड़ा होना, दो सज्दे, जल्सा दोनों सज्दों के दर्मियान बैठना (तवक़्कुफ़ करना) क़अ्दा आख़िर में तशह्हुद, दुरूदे इब्राहीम और दुआए मासूरह पढ़ कर नमाज़ ख़त्म करना।

नमाज़ के वाजिबात : तकबीरे तहरीमा में अल्लाहु अकबर कहना, रुकूअ् में **सुबहाना रब्बियल–अज़ीम** पढ़ना, रुकूअ् से सीधा होते वक़्त **रब्बना लकल–हम्द।** पढ़ना, दोनों सज्दों में **सुबहाना रब्बियल–आला।** कहना। क़अ्दा आख़िर में अत्तहीयात पढ़ना, सलाम फेरना।

नमाज़ की सुन्नतें : तअव्वुज़ पढ़ना, तस्मिया पढ़ना, सूरः फातिहा के बाद कोई भी सूरत पढ़ना, नमाज़ के बाद चार चीज़ों से पनाह मांगना। (१) जहन्नम की आग से (२) क़ब्र के अज़ाब से (३) दज्जाल के फित्ने से, ज़िन्दगी और मौत के फित्नों से।

नमाज़ के मुस्तहब्बात : क़्याम की हालत में सज्दे की जगह नज़र रखना, रुकूअ् में क़दमों पर, क़अ्दा और जल्सा में अपनी गोद में नज़र रखना, सज्दे में नाक और सलाम में कन्धों की जानिब नज़र रखना, जमाही आए तो मुंह बन्द रखना, या दाएं हाथ की पुश्त मुंह पर रखना, खांसी आए तो आहिस्ता खांसे, दोनों पंजों के दर्मियान तक़रीबन चार अंगुल का फासिला रखे।

सज्दे में मर्दों के दोनों बाज़ू पहलू से अलग हों और औरतें सिमट कर सज्दा करें। सज्दे के वक़्त दोनों घुटनों को अलग रखना, क़अ्दा में दोनों हाथ न ज़्यादा आगे हो न पीछे, क़्याम में नाफ के ऊपर बाएं हाथ पर दायां हाथ रखना।

औरतों की नमाज़ की सुन्नतें : तकबीरे तहरीमा के वक़्त कांधों तक हाथ उठाना, दोपट्टे के अन्दर से ही हाथ उठाना, हाथ सीने पर बांधना, उंगलियां मिली हुई हों, दोनों पैर दाहिनी जानिब निकाल कर सुरीन पर बैठे, रुकूअ् में सिर्फ़ इस क़द्र झुके कि हाथ घुटनों तक पहुंचें। औरतों में कोई

इमामत न करे हर एक इंफ़िरादी तौर पर नमाज़ पढ़े। जुमा और ईद [illegible]
वाजिब नहीं है अल्बत्ता नफ़्ल शुकराने की और सलातो तौबा (इस्तगफ़ार) [illegible]
पढ़े। जहां तक हो सके खड़े रह कर नमाज़ पढ़े कि बैठ कर नमाज़ [illegible]
से आधा सवाब मिलता है, लिहाज़ा आधे सवाब से महरूम न हों। हैज़ व
निफ़ास से पाक होते ही गुस्ल करके नमाज़ शुरू करे।

इस्लाम का तीसरा रुक्न – रोज़ा

रोज़ा इस्लाम का तीसरा रुक्न है और फ़र्ज़े ऐन है। इसकी फ़र्ज़ियत का मुंकिर काफिर और बिला उज़्र छोड़ने वाला सख़्त गुनहगार है। शरीअ़त में रोज़ा के मानी हैं अल्लाह तआला की इबादत की नीयत से सुबह सादिक़ से लेकर सूरज गुरूब होने तक खाने, पीने, जिमाअ् से अपने आपको रोके रखना।

मुफ़स्सेरीने किराम का इरशाद है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फरमा कर मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ ले आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और तमाम मुसलमानों पर आशूरह का रोज़ा और हर महीने में १३, १४ और १५ तारीख़ के रोज़े फ़र्ज़ थे जिन्हें अय्यामे बीज कहा जाता है। जंगे बद्र के एक माह बाद २ हिज. में रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो पिछले रोज़े मन्सूख़ हो गये।

रमज़ान रम्ज़ से मुश्तक़ है उसके मानी हैं जलाना, और चूंकि इस माह में गुनाह जला दिए जाते हैं इसलिए इसका नाम रमज़ान रखा। अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है। मुसलमान मेरे लिए रोज़ा रखता है उसकी जज़ा भी मैं ही दूंगा।

रोज़ा हर मुसलमान आक़िल व बालिग़ पर फ़र्ज़ है। सिर्फ़ इस दौरान औरत को हैज़ निफ़ास की हालत में रोज़े की इजाज़त नहीं लेकिन बाद में उन रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है, जबकि नमाज़ की क़ज़ा वाजिब नहीं। इस से पता चलता है कि रमज़ान कितना मुक़द्दस व मोहतरम महीना है। अगर किसी मज्बूरी की हालत में रोज़ा न रख सके तो बाद में उसकी क़ज़ा वाजिब होती है। अगर क़ज़ा रोज़े न रखे तो सख़्त गुनहगार होंगे।

रोज़े की क़िस्में :

जिस तरह नमाज़ में फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल है उसी तरह रोज़ा भी फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत और नफ़्ल है।

फ़र्ज़ रोज़े : रमज़ानुल–मुबारक का पूरा महीना रोज़ा रखना फ़र्ज़ है,

हर मुसलमान आक़िल, बालिग़ पर पूरे माह के रोज़े रखना फ़र्ज़ है अगर किसी मजबूरी की वजह से रोज़ा न रख सके आइन्दा रमज़ान का महीना आने से क़ब्ल उसकी क़ज़ा पूरी करे। अगर खुदा नख़्वास्ता रोज़ा नहीं रख सकता और क़ज़ा भी नहीं रख सकता तो उसका फिदया अदा करे अगर जान बूझ कर रोज़ा तोड़ा उसका कफ़्फ़ारा अदा करना होगा और कफ़्फ़ारा यह है कि एक रोज़े के बदले एक गुलाम या लौंडी आज़ाद करे। अगर वह न कर सके तो साठ मिस्कीनों को पेट भर कर खाना खिलाए अगर एक वक़्त में खाना खिलाने की इस्तिताअत नहीं रख सकता तो रोज़ाना दो वक़्त में दो मिस्कीनों को खाना खिलाए अगर वह भी न कर सके तो लगातार साठ रोज़े रखे अगर बीच में एक रोज़ा भी छूट जाए तो दोबारा फिर से रोज़े शुरू करे अल्बत्ता औरत हैज़ व निफ़ास के दिन छोड़ कर उसके बाद रोज़ों की तादाद पूरी करे।

वाजिब रोज़े :

वाजिब रोज़े वह हैं जो मन्नत मानी कि फ़ुलां का काम होने पर रोज़े रखेगा तो वह रोज़े वाजिब होंगे और जो क़ज़ा रोज़े रखे वह भी वाजिब कहलाते हैं। इसी तरह नफ़्ल रोज़ा रख कर तोड़ दे तो उसका कफ़्फ़ारा तो न होगा मगर बाद में उसको अदा करना वाजिब है।

सुन्नत रोज़े :

यौमे आशूरा और अरफ़ा का रोज़ा सुन्नत कहलाता है। आशूरा का रोज़ा सुन्नत है मगर एक रोज़ा रखना मक्रूह है उसके साथ या तो मुहर्रम की नौ तारीख़ को रखे या ग्यारह तारीख़ को रोज़ा रखे। क्योंकि आशूरा का रोज़ा यहूदी लोग रखते हैं कि मूसा अलैहिस्सलाम को फिरऔन से नजात मिली थी तो वह शुक्राने का रोज़ा उस दिन रखते हैं। इसलिए हुज़ूर पाक ने उनकी नक़्ल करने की सख़्त मुमानेअत फरमाई। इसलिए मुसलमानों के लिए आशूरा के साथ एक और रोज़े का इज़ाफ़ा हुआ।

नफ़्ल रोज़े :

अय्यामे बीज़ यानी हर माह की १३, १४, और १५ तारीख़ के रोज़े उसके अलावा पीर, जुमेरात के रोज़े, शबे मेअ्राज, शबे बराअत वग़ैरह के रोज़े नफ़्ल कहलाते हैं।

रोज़े की नीयत :

अगर रात में नीयत की तो इस तरह करे कि मैं कल के लिए रमज़ान का रोज़ा रखूंगा/रखूंगी। अगर दिन में नीयत की तो यूं करे कि नीयत की

मैंने कि आज रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा या रखूंगी।

अगर २९ शाबान को रोज़ा रख लिया तो नफ़्ल की नीयत करनी होगी, यह नीयत न करे कि रमज़ान का रोज़ा साबित हुआ तो रमज़ान का रोज़ा होगा ऐसी नीयत से रोज़ा मकरूहे तहरीमी होगा। अगर कहीं से चांद की खबर न आए शक पैदा हो तो ज़हवा–ए–कुबरा तक इंतिज़ार करे वरना अगर इस दर्मियान चांद की ख़बर आए तो नीयत कर ले वरना खा पी ले। (दुर्रे मुख़्तार)

कफ़्फ़ारा लाज़िम होने की शर्तें :

माहे रमज़ान में रोज़ा रखने की नीयत की मगर न रखा। रोज़ेदार मुक़ीम हो, मुसाफ़िर न हो। क़स्दन जान बूझ कर रोज़ा तोड़ा और ग़िज़ा, दवा खाई तो रोज़ा का कफ़्फ़ारा होगा और क़ज़ा भी होगी। रोज़े की हालत में जिमाअ् किया। अगर मियां–बीवी दोनों रोज़ेदार हों तो दोनों पर कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा।

अगर कोई रोज़े की हदीस सुनी या किसी आलिम ने फतवा दिया उसके बावजूद रोज़ा तोड़ा। अल्बत्ता हदीस का मतलब न समझाया ग़लत फतवा दिया गया। तो कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा। सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम होगी।

रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ें :

क़स्दन जान बूझ कर कुछ खा पी लिया या दवाई वग़ैरह पी ली। जान बूझ कर लोबान, अगरबत्ती या किसी चीज़ का धुवां नाक के ज़रिया खींचा। दांत से ख़ून निकल कर हलक़ में पहुंचा नीचे उतर गया। सुबह सादिक़ के वक़्त का गुमान हो फिर भी सहरी में खा पी लिया रोज़ा जाता रहा। रोज़े की हालत में जिमा किया रोज़ा टूट गया।

जिन कामों से रोज़ा नहीं टूटता :

भूल कर खा पी लिया। अंजाने में धुवां या गर्द व गुबार हलक़ में चला गया। सुर्मा, तेल या खुशबू लगाई, थूक निगल गया। दांत से ख़ून आए वह हलक़ तक पहुंच गया मगर हलक़ के नीचे न उतरा, भूले से कुछ खा पी रहा हो, अगर याद आने पर फौरन थूक दिया तो रोज़ा न टूटा मगर याद आने पर भी खा पी लिया तो रोज़ा टूट जाएगा। कोई चीज़ तिल के बराबर भी हलक़ के नीचे उतरी तो रोज़ा न गया और अगर उसका ज़ायक़ा मालूम हुआ तो रोज़ा जाता रहा। कान या आंख में दवाई डाली अगर हलक़ में न पहुंची तो रोज़ा न टूटा।

जिन हालात में रोज़ा न रखने की इजाज़त है :

जिन हालात में रोज़ा रखने की इजाज़त नहीं मगर बाद में क़ज़ा या

फ़िदया वाजिब होता है वह यह हैं कि सफर के दौरान, हमल के दौरान, कमज़ोर हो और मज़ीद कमज़ोरी बढ़ने का ख़दशा हो या डॉक्टर ने मना किया हो। बच्चे को मां के दूध की ज़रूरत हो अगर बच्चा कमज़ोर हो और हलाक होने का अन्देशा हो। किसी मरीज़ के मरज़ बढ़ने का डर हो, किसी मूज़ी जानवर ने काटा और जान जाने का ख़तरा हो, ऐसी हालत में रोज़ा न रखने की इजाज़त है शर्त यह है कि उसकी क़ज़ा या फ़िदया वाजिब होगा। वह बूढ़ा जिसकी उम्र ऐसी हो कि रोज़ बरोज़ कमज़ोरी बढ़ रही हो और आइन्दा भी रोज़े रखने की उम्मीद न हो वह भी रोज़ा नहीं रख सकता। मगर हर रोज़े के बदले फ़िदया देना होगा।

ईदैन या अय्यामे तशरीक़ में भूल कर रोज़ा रख लिया जो न फ़र्ज़ है न वाजिब बल्कि रोज़ा तोड़ना वाजिब और उसके तोड़ने से न कफ़्फ़ारा है न क़ज़ा है न फ़िदया।

मेहमान की ख़ातिर नफ़्ल रोज़ा तोड़ सकते हैं अगर उम्मीद हो कि क़ज़ा रोज़ा रख सकेंगे। और यह रोज़ा ज़हव–ए–कुबरा से क़ब्ल तक तोड़ सकते हैं या तो किसी के यहां दावत हो तो ज़हव–ए–कुबरा से अव्वल रोज़ा तोड़ सकते हैं लेकिन बाद में उसकी भी क़ज़ा रखना होगी।

औरत शौहर की इजाज़त के बेग़ैर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती अगर रख लिया तो शौहर के कहने पर रोज़ा तोड़ सकती है मगर रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा नहीं तोड़ सकती रमज़ान के रोज़ों के लिए शौहर की इजाज़त की ज़रूरत नहीं।

चन्द रोज़ों की फ़ज़ीलत

यौमे आशूरह और अरफ़ा का रोज़ा :

यौमे आशूरह यानी मुहर्रम की दस तारीख़, चूंकि यौमे आशूरह को बाज़ पैग़म्बरों के साथ अहम वाक़ेआत पेश आए। उस रोज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कुबूल हुई। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती जूदी पहाड़ पर रुकी। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को शिफ़ा हासिल हुई। हज़रत यूनूस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से बाहर आए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिरऔन से नजात मिली। इसी लिए यहूद व नसारा भी आशूरा का रोज़ा रखते हैं इसलिए हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी नक़्ल करने से मना फ़रमाया और एक रोज़ा का इज़ाफ़ा किया। यानी कि मुहर्रम की नौ या ग्यारह तारीख़ को रोज़ा रखे दसवीं के साथ।

रमज़ान के बाद आशूरा का रोज़ा अफ़्ज़ल है उसके बाद अरफ़ा का रोज़ा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद भी यह रोज़े रखा करते और लोगों को भी यह रोज़े रखने का हुक्म देते थे। हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरफ़ा के रोज़े को हज़ार रोज़े के बराबर फरमाया। मगर हज के दौरान हाजी को अरफ़ात में रोज़ा रखने को मना फरमाया।

शव्वाल के छेः रोज़े :

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस ने रमज़ान के बाद छेः रोज़े रखे तो ऐसा है जैसे हमेशा रोज़ा रखता हो।

शाबान का रोज़ा :

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब शाबान की पन्द्रहवीं शब आए तो उस रात क़्याम करे और दिन में रोज़ा रखे। चूंकि अल्लाह तआला उस रात ग़ुरूबे आफताब के बाद आसमान से दुनिया पर अपनी ख़ास तजल्ली फरमाता है : कि है कोई जो बख़्शिश चाहता हो मैं उसे बख़्श दूं। है कोई ऐसा जो रोज़ी चाहता है मैं उसे रोज़ी अता करूं। है कोई गिरफ़्तारे मुसीबत कि उसकी मुसीबत दूर करूं। यह फरमान तुलूए आफ़ताब तक जारी रहता है। पस मुसलमानों को चाहिए कि शबे बरात में क़्याम करें और सुबह रोज़ा रखें कि उसकी बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

अय्यामे बैज़ के रोज़े :

हर मांह के १३, १४, १५, तारीखों में रोज़ा रखने की बड़ी फ़ज़ीलत है। यह रोज़े गुनाह को इस तरह पाक कर देते हैं जैसे पानी नापाक कपड़ों को पाक करता है।

दोशंबा और पंजशंबा के रोज़े :

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पीर और जुमेरात को अल्लाह तआला के दरबार में मुसलमान के आमाल पेश होते हैं। अल्लाह तआला हर मुसलमान की मग़्फ़िरत फरमाता है सिवाए उनके जो आपस में निफ़ाक़ पैदा करते हैं। जब तक कि वह सुलह न करा लें। सिर्फ़ जुमा के दिन का रोज़ा न रखे कि वह मुसलमानों की निस्फ़ ईद का दिन माना जाता है। उस रोज़ हर मुसलमान ईद की तरह ग़ुस्ल करके पाक साफ़ कपड़े पहन कर, खुशबू लगा कर जुमा के खुतबा में शरीक हो कर खुशी महसूस करता है। अक्सर घरों में मीठा पका कर खुशी का इज़्हार किया जाता है इसलिए उस रोज़ आक़ाए नामदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़ा रखने से मना फरमाया। अल्बत्ता उसको जोड़ कर रोज़ा रखे।

रोज़े के मक्रूहात :

झूठ, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच, फ़हश गोई, किसी पर नाहक़ जुल्म करना, किसी को ज़ेहनी तक्लीफ़ पहुंचाना, वैसे भी यह चीज़ें नाजाइज़ व हराम हैं। रोज़े में और भी ज़्यादा गुनाह होने का बाइस बनते हैं। रोज़ेदार को बिला उज़्र किसी चीज़ को चखना या चबाना मक्रूह है। अल्बत्ता अगर किसी औरत का शौहर ज़ालिम हो या बद मिज़ाज हो खाने में नमक, मिर्च कमो बेश होगा तो नाराज़गी का बाइस होगा। उस वक़्त उसे चख़ने में हरज नहीं लेकिन सिर्फ़ ज़बान से मज़ा चखना चाहिए अगर हलक़ के नीचे उतर गया तो रोज़ा जाता रहेगा। रोज़े में मिस्वाक करना जाइज़ है। इस तरह सुर्मा लगाना, खुशबू लगाना जाइज़ है। मगर ज़ेब व ज़ीनत की नीयत से आराइश ज़ेबाइश की तो मक्रूह है। गर्मी के मौसम में बार–बार कुल्ली करना या बार–बार ठन्डे पानी से ठन्डा रखने की कोशिश करना मक्रूह है।

सहरी की फ़ज़ीलत :

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया : सेहरी खाया करो कि उस में बरकत है। सेहरी में देरी करना अफ़ज़ल है इतनी भी देर न करे कि सुबह सादिक़ हो जाए या अज़ान हो जाए उस से क़ब्ल ही सेहरी कर लेनी चाहिए। जन्त्री वग़ैरह पर ऐतबार नहीं करना चाहिए कि वह भी ग़लत हो सकती है अल्बत्ता अगर किसी दीनदार आलिम ने नक़्शा बनाया हो तो हरज नहीं। सेहरी खाने वालों पर अल्लाह और फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं। (तिर्मिज़ी) सेहरी खाना सुन्नत है।

इफ़्तार की फ़ज़ीलत :

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि रोज़े के इफ़्तार में जल्दी करो। खुजूर या छोहारे से इफ़्तारी करो कि वह बरकत वाली चीज़ है अगर वह न मिले तो पानी से इफ़्तार करो सेहरी की नीयत इस तरह करे। अगर रात में नीयत की तो कहे कल का रोज़ा रखा, अगर सुबह नीयत की तो कहे आज का रोज़ा रखा।

इफ़्तार की नीयत :

ऐ अल्लाह रोज़ा रखा तेरे लिए और तेरी ही दी हुई चीज़ से इफ़्तार किया।

सदक़–ए–फ़ित्र :

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बन्दे का रोज़ा आसमान व ज़मीन के बीच में लटका रहता है जब तक वह सदक़–ए–फ़ित्र

अदा न करे। क्योंकि सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब है। सदक़–ए–फ़ित्र के लिए कोई दिन, तारीख़ मुऐयन नहीं साल भर में कभी भी अदा कर सकते हैं। अगर उमर में न किया तो अब अदा कर दे। अदा न करने पर साक़ित न होगा और उसकी न क़ज़ा है बल्कि जब भी अदा करेगा अदा ही होगा। ईदुल–फ़ित्र के दिन सुबह सादिक़ होते ही सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब हो जाता है। लिहाज़ा अगर ख़ुदानख़्वास्ता सुबह तुलूअ़ होने से पहले जिस शख़्स का इंतिक़ाल हो गया या फ़क़ीर हो गया तो उस पर सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब न हुआ। इसी तरह सुबह सादिक़ तुलूअ़ होने के बाद जो बच्चा पैदा हुआ या जो काफिर मुसलमान हुआ या फ़क़ीर था ग़नी हो गया तो उस पर सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब न हुआ। लेकिन सुबह सादिक़ शुरू होने से क़ब्ल काफिर मुसलमान हुआ या बच्चा पैदा हुआ या जो फ़क़ीर था ग़नी हो गया तो सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब हुआ। सदक़–ए–फ़ित्र के लिए मुसलमान आक़िल बालिग़ या मालदार होना शर्त नहीं और न माल पर साल गुज़रना शर्त है। जिस शख़्स के पास अपने बीवी बच्चों की ज़रूरियात के अलावा माल हो वह ईद के दिन अपनी ज़ात, अपनी औलाद, बीवी, गुलाम, बांदी, मां–बाप, भाई, बहन, चचा, चची उनकी औलाद की किफ़ालत नान नफ़क़ा की ज़िम्मेदारी उस पर हो उस पर उनका सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब है। मालिके निसाब पर अपनी तरफ़ से अपने बच्चों की तरफ़ से सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब है। अगर बच्चा मालिके निसाब हो तो उस का फ़ितरा उसके माल से अदा किया जाए। बाप की जगह दादा को अपने पोते पोती का फितरा देना वाजिब है। चाहे नाबालिग़ हो या मज्नून हो या बेहोश हो उन पर भी फितरा वाजिब है। अल्बत्ता उनका फितरा उसके बाप या दादा पर वाजिब है। शौहर पर बीवी का फितरा वाजिब है मगर शौहर का फितरा बीवी पर वाजिब नहीं।

सदक़–ए–फ़ित्र के मसारिफ़ वही हैं जो ज़कात के मुस्तहिक़ हैं।

सदक़–ए–फ़ित्र की मिक़्दार यह है दो सौ ४५ ग्राम गेहूं या उस की क़ीमत, चाहे रक़म दो या अनाज सब जाइज़ है। फितरे की अदाइगी के लिए गेहूं या उसका आटा या सत्तू या खुजूर या मुनक़्क़ा या जौ या उसका आटा सब दे सकते हैं।

इस्लाम का चौथा रुक्न – ज़कात

अल्लाह तआला फरमाता है फलाह पाते हैं वह लोग जो अपने माल की

ज़कात अदा करते हैं। और फरमाया जो लोग बुख़्ल करते हैं उसके साथ जो अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया वह यह गुमान न करें कि यह अच्छा है बल्कि उनके लिए बुरा है कि उसी चीज़ से बरोज़े क़यामत उनके गले में तौक़ डाला जाएगा जिसके साथ बुख़्ल किया गया।

और फरमाया जो लोग सोना चांदी जमा करते हैं अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें दर्दनाक अज़ाब दिया जाएगा और उसी चीज़ से उनकी पेशानी और पीठ पर दाग़ा जाएगा और कहा जाएगा यह वह माल है जो तुमने अपने नफ़्स के लिए जमा किया था।

ज़कात फ़र्ज़ है उसका मुंकिर काफिर और न देने वाला फासिक़ और क़त्ल का मुस्तहिक़ और अदा करने में ताख़ीर करने वाला गुनहगार व मरदूदुश्शहादह है।

ज़कात वाजिब होने के लिए चन्द शराइत हैं :

मुसलमान हो, बालिग़ हो, आक़िल हो, आज़ाद, मालिके निसाब, निसाबे दीन (क़र्ज़) से फारिग़ हो और पूरा एक साल का गुज़र जाए, मज्नून पर अगर साल के अव्वल या आख़िर या बीच में अच्छा हो जाए ज़कात वाजिब होगी। निसाब से कम माल पर ज़कात वाजिब नहीं निसाब का तू मालिक है मगर उस पर इतना देन है कि अदा करने के बाद निसाब नहीं रहता तो ज़कात वाजिब नहीं। जो शख़्स साहिबे निसाब था मगर वह साल गुज़रने के बाद उसे पहले बक़िया साल की ज़कात अदा करनी होगी।

ज़कात तीन माल पर वाजिब है :

(१) समन यानी सोना, चांदी (२) माले तिजारत। (३) साइमा यानी चरने वाले जानवर।

हीरे जवाहरात पर ज़कात वाजिब नहीं अल्बत्ता इस क़िस्म तिजारत की नीयत लेन देन हो तो उस पर ज़कात वाजिब होगी।

जो शख़्स साहिबे निसाब था, दर्मियान में और माल बढ़ा तब उसकी ज़कात नहीं होगी क्योंकि निसाब के साथ-साथ एक साल पूरा गुज़रना चाहिए। ज़कात देते वक़्त या ज़कात का माल अलग निकालते वक़्त ज़कात की नीयत का होना ज़रूरी है। जिसका मतलब है कि अगर किसी ने पूछा तो बिला तअम्मुल बता सके कि ज़कात है जिसको ज़कात दी जाए उसे बताया जाए कि यह ज़कात की रक़म है। अल्बत्ता अगर कोई ग़ैरतमन्द हो कि ज़कात लेने में आर समझता हो तो दिल में नीयत काफी है।

ज़कात का रुपया मुर्दे की तज्हीज़ व तक्फ़ीन या मस्जिद की तामीर

के लिए नहीं लगा सकते अगरचे इस क़िस्म का रुपया मस्जिद को बेहद ज़रूरी है या कफन दफन का इंतिज़ाम करने वाला कोई न हो तो किसी को उस रक़म का मालिक बना दिया जाए ताकि वह जहां चाहे ख़र्च कर सके और अगर उस ने ईमानदारी से वह पैसा मस्जिद वग़ैरह में लगाया तो दोनों को उसका सवाब मिलेगा।

अगर एक से ज़ाइद का निसाब है तो इतने निसाब पर ज़कात वाजिब होगी। अगर एक साल का निसाब है या एक हज़ार की ज़कात का मालिक है लेकिन उस ने दो हज़ार की ज़कात दी और नीयत यह कि साल तमाम तक अगर एक हज़ार रुपये हो गये तो यह उसकी है वरना साल आइन्दा में शुमार हो जाएगी तो जाइज़ है। जो माल हाजते अस्लीया के अलावा हो उसी पर ज़कात वाजिब होगी। यानी ज़िन्दगी बसर करने के लिए जिस चीज़ की ज़रूरत हो जैसे रहने का मकान, कपड़े, ख़ानादारी का सामान, सवारी के जानवर, आलाते हर्ब, पेशावर के औज़ार, ज़रूरत के लिहाज़ से ग़ल्ला वग़ैरह पर वाजिब नहीं अगर किसी के पास एक से ज़ाइद मकान हो जो किराए पर दिया हो या खेत हो कि उस से अनाज ज़रूरत से ज़्यादा पैदा होता हो तो ज़कात वाजिब होगी।

ज़कात का निसाब :

ज़कात के लिए निसाब का चालीसवां १/४० हिस्सा देना वाजिब है। साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी पर चालीसवें हिस्से के हिसाब से दिया जाएगा। ज़ाती इस्तेमाल के अलावा जितना माल ज़ाइद है उस पर चालीसवां निसाब निकाल कर ज़कात देनी होगी। सोने की ज़कात सोने की क़ीमत के मुताबिक़ ही देनी होगी चांदी की ज़कात चांदी की क़ीमत पर ही होगी। यानी सोना हो या चांदी उसका जो चलन हो हाल का वही उसका निसाब होगा। यानी जिस वक़्त सोना ख़रीदा उस वक़्त एक हज़ार रुपये तोला था आज उसी एक तोला की क़ीमत बारह सौ हो गई तो बारह सौ का निसाब पकड़ा जाएगा न कि एक हज़ार रुपये का। ज़कात निकालने का आसान तरीक़ा यह है कि एक हज़ार रुपये पर पचीस रुपये के हिसाब से ज़कात निकाली जाए।

साइमा :

पांच ऊंट से कम पर ज़कात वाजिब नहीं लेकिन अगर पांच या पांच से ज़्यादा हों लेकिन पचीस से कम हों तो हर पांच पर एक बकरी की क़ीमत वाजिब होगी। ज़कात में जो बकरी दी जाए वह एक साल से कम उम्र की न हो।

इसी तरह तीस से कम गाएं या भैंस हों तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं। लेकिन अगर तीस हों या तीस से एक भी ज़ाइद हो तो साल भर का बछड़ा या साल भर की बछिया ज़कात में देना वाजिब होगी। गाय भैंस का एक ही निसाब है।

चालीस से कम भेड़ बकरियां हों तो ज़कात वाजिब नहीं चालीस हों या चालीस के ऊपर एक भी बकरी ज़ाइद हुई तो उस पर एक बकरी की ज़कात देना होगी और यह हुक्म एक सौ बीस तक है। ज़कात में अख़्तियार है बकरी की या भेड़ दे या उसकी क़ीमत।

अगर किसी के पास ऊंट, गाय, भैंस, बकरी, भेड़ हो लेकिन वह किसी एक के भी निसाब में दाख़िल नहीं होती तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं। अगर तमाम जानवर मिला कर एक निसाब होता हो तो तमाम जानवरों की क़ीमत निकाल कर चालीसवां हिस्सा निकाल कर ज़कात वाजिब होगी।

गवर्नमेंट को जो माल गुज़ारी (टैक्स) दिया जाता है उस पर इस्लामी शरीअ़त का दख़ल नहीं। उसमें मुख़्तलिफ़ ममालिक के एलाहिदा–एलाहिदा टैक्स होते हैं। ज़कात की रक़म गवर्नमेंट छोड़, तमाम भलाई के काम में दे सकते हैं, इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा, तालिबात, पुल बनाने, सराय बनाए।

ज़कात किन लोगों को दी जाए :

ज़कात के मसारिफ़ सात हैं : (१) फ़क़ीर (२) मिस्कीन (३) आमिल (४) रिक़ाब (५) ग़ारिम (६) फ़ी सबीलिल्लाह (७) इब्ने सबील।

(१) फ़क़ीर वह है जिसके पास कुछ न हो मगर इतना माल हो कि निसाब को पहुंच जाए जैसे रहने का मकान, कपड़े, पेशे के औज़ार वग़ैरह रखता हो या उसके पास निसाब बनता मगर इतना क़र्ज़ है कि उसे निकाल कर कुछ न बचे उसे ज़कात दे सकते हैं।

(२) मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक खाने और बदन छुपाने के लिए भी मुहताज हो कि सवाल करे। मिस्कीन को सवाल हलाल है मगर फ़क़ीर को सवाल नाजाइज़ है इसलिए जिसके पास खाने की अशिया हों बदन छुपाने को कपड़ा हो उसे बग़ैर ज़रूरत सवाल हराम है।

(३) आमिल वह है जिसे बादशाहे इस्लाम ने ज़कात व उश्र वसूल करने के लिए मुक़र्रर किया हो।

(४) रिक़ाब से मुराद मकातिबे ग़ुलाम को देना कि माले ज़कात से बदल किताबत दे कर ख़र्च कर सके।

(५) ग़ारिम से मुराद यूं है कि उस पर इतना देन (क़र्ज़) हो कि उसे निकालने के बाद निसाब बाक़ी न रहे।

(६) फ़ी सबीलिल्लाह यानी राहे ख़ुदा में ख़र्च करना जैसे जिहाद पर जाने वाला कि उसके पास ज़ादे सफर नहीं कोई हज को जाना चाहता हो मगर उसके पास इतनी रक़म न हो उसे ज़कात दे सकते हैं। मगर उसे सवाल करना जाइज़ नहीं। तालिबे इल्म सवाल करे या इल्मे दीन सीखता हो जबकि उसे अपने काम से फ़ुर्सत न मिलती हो वह ज़कात ले सकता है और दे सकते हैं। फ़ी सबीलिल्लाह हर नेक काम में ज़कात ख़र्च कर सकते हैं किसी को उजरत के तौर पर देना जाइज़ नहीं।

(७) इब्ने सबील यानी मुसाफिर जिसके पास माल न हो, जबकि घर पर माल मौजूद है उसे भी ज़कात दे सकते हैं।

ज़कात अदा करते वक़्त उसे बता देना ज़रूरी है कि यह ज़कात का माल है और यह भी ज़रूरी है कि उसे माल का मालिक बनाए वरना ज़कात अदा न होगी।

मसारिफ़े ज़कात कौन नहीं हैं :

मां, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी, वग़ैरह जिसकी खुद औलाद हो। इसी तरह अपनी औलाद में बेटा, बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी वग़ैरह इसी तरह सदक़ा, फ़ित्र, नज़्र, कफ़्फ़ारा भी नहीं दे सकते। अल्बत्ता बहू, दामाद, सौतेली मां, सौतेले बाप को ज़कात दे सकते हैं। शौहर बीवी को और बीवी शौहर को भी ज़कात नहीं दे सकती। अल्बत्ता तलाक़ देने के बाद इद्दत के दिन पूरे होने के बाद शौहर अपनी साबेक़ा बीवी को दे सकता है। काफिर, मुश्रिक को ज़कात नहीं दे सकते।

ज़कात में किस को मुक़द्दम रखे :

सबसे अफ़ज़ल अपने भाई, बहन, उनकी औलाद फिर चचा, फूफी उनकी औलाद, फिर मामूं, ख़ाला उनकी औलाद। फिर गांव के फिर शहर के ज़रूरत मन्दों को दे बदमज़्हब, मुरतदीन और ख़ुदा और रसूल की शान घटाने वाले, किसी ज़रूरी दीनी काम का इंकार करने वाले लोगों को ज़कात नहीं दे सकते।

और भी दीगर ऐसे काम जिन में इस्लाम और मुसलमानों की तामीर व तरक्क़ी हो मगर ऐसे कामों में हील–ए–शरई करके ज़कात की रक़म लगाई जाएगी।

इस्लाम का पांचवां रुक्न – हज

हज के तमाम शराइत मौजूद हों तो मुसलमान पर हज फ़र्ज़ हो जाता है।

हज के शराइत :

हज करने वाला आक़िल, बालिग़ हो। हज के अख़राजात मौजूद हों। सफर के दौरान सफर करने की क़ुव्वत हो। राह में किसी क़िस्म का ख़तरा न हो। वक़्त में इतनी गुंजाइश हो कि पूरा–पूरा हज मुकम्मल हो। अपने अह्लो अयाल के लिए इस क़द्र ख़र्च मुहैया हो कि वापस आने तक गुज़र बसर हो सके। अगर क़र्ज़ हो तो क़र्ज़ पूरा अदा किया हो। अगर इन शराइत में से एक शर्त रह जाए तो हज क़ुबूल न होगा। शव्वाल से दस्वीं ज़िल–हिज्जा तक हज का वक़्त है। उस से क़ब्ल हज के अफ़आल नहीं हो सकते। मुकम्मल तन्दुरुस्त हो कि हज के पूरे अरकान ख़ुद अदा कर सके। पहले तन्दुरुस्त था, मालदार था, हज की तमाम शर्तें पाई जाती थीं लेकिन हज न किया और इसी अस्ना इंतिक़ाल हुआ। और माल बाक़ी है अगर वह वसीयत करे तो उसके माल से हज बदल कराया जाए हज के अरकान का इल्म हो।

हज के अहम अफ़आल :

मीक़ात : उस मक़ाम को कहते हैं जहां से एहराम बांधा जाता है उसके आगे मक्का मुकर्रमा जाने वाला बेग़ैर एहराम बांधे आगे नहीं जा सकता।

बर्रे सग़ीर हिन्दो पाक के मुसलमानों के लिए यलमलम है लेकिन अक्सर एयर पोर्ट पर ही एहराम बांधा जाता है। चूंकि हवाई जहाज़ में गुस्ल वग़ैरह का इंतिज़ाम नहीं होता इसलिए एयरपोर्ट पर ही एहराम बांध कर उमरा की नीयत करते हैं।

मर्द नीयत करके गुस्ल करके बेग़ैर सिले कपड़े पहने सफेद लुंगी और ऊपर से सफेद चादर ओढ़े फिर दो रकअत नमाज़ बनीयत एहराम पढ़ कर फारिग़ हो।

औरत सिले हुए कपड़े में ही एहराम की नीयत कर ले सिर्फ़ चेहरा हाथ की हथेलियां, पैरों के तल्वें खुले रहें बाक़ी तमाम जिस्म ढांकने का हुक्म है।

हज तीन तरह का होता है :

(१) अफ़राद (२) तमत्तोअ़ (३) क़िरान।

(२) अफ़राद में सिर्फ़ हज का एहराम बांधना होता है।

(२) तमत्तोअ़ में सिर्फ़ उमरा का एहराम बांध कर मक्का मुकर्रमा में

उमरा अदा करके एहराम खोल दिया जाता है फिर हज के ... दोबारा हज की नीयत करके एहराम बांधा जाता है।

(३) क़िरान हज व उमरा दोनों के एक साथ एहराम बांधने को कहते हैं।

तवाफ़ : खान–ए–काबा के सात चक्कर लगाना।

रमल : पहले तीन चक्करों में बहादुरों की तरह सीना ताने जल्दी–जल्दी छोटे–छोटे क़दम रखते हुए चलना, औरतें अपनी चाल से चलें।

अस्तबा : तवाफ़ में एहराम की चादर दाहिनी बग़ल के नीचे करके दोनों पल्लू बाएं मोंढे पर डालना।

सई : मक्का मुकर्रमा में ऐन खान–ए–काबा के सामने सफ़ा और मरवह दो पहाड़ियों के दर्मियान सात चक्कर लगाना यानी सफा से शुरू करे मरवा पर पहुंचे एक चक्कर होगा और मरवा से सफा तक पहुंचे दो चक्कर होंगे। सफा से शुरू हो कर मरवा पर ख़त्म होगी।

इन ही सफ़ा और मरवा के दर्मियान नीली ट्यूब है जहां एक ट्यूब से दूसरी ट्यूब तक मर्दों को दौड़ते हुए जल्दी–जल्दी दौड़ते हुए गुज़रना होता है। लेकिन औरतें धीमी अपनी चाल से चलें।

रुक्ने अस्वद : ख़ान–ए–काबा के उस कोने को कहते हैं जहां संगे अस्वद (सियाह पत्थर) नसब है।

मुस्तहाब : रुक्ने अस्वद और रुक्ने यमानी के दर्मियान ख़ान–ए–काबा की दीवार है जहां ज़ाइरीन की दुआ क़ुबूल होती है।

मताफ़ : ख़ान–ए–काबा का वह हिस्सा जहां तवाफ़ किया जाता है।

इस्तिलाम : हजरे अस्वद को मुंह से या हाथ का इशारा करके अपने हाथों को चूमना, दूर से भी इस्तिलाम कर सकते हैं।

क़स्र : सई के बाद सर के थोड़े बाल कतरना।

हलक़ : सर के पूरे बाल मुंडवाना मर्दों के लिए। औरतें सिर्फ़ अपनी चोटी के बाल एक उंगली के पोरों बराबर काटें।

मिलयन अख़ज़रीन : सफ़ा व मरवा के दर्मियान थोड़े फासिले पर दोनों जानिब दो सब्ज़ रंग के ट्यूब नसब हैं जहां हाजी को दौड़ना पड़ता है मगर औरतें अपनी–अपनी चाल से चलें।

मिना : मक्का से चार मील के फासिले पर पहाड़ों से घिरा हुआ एक मक़ाम है जहां ८ जिलहिज्जा को तमाम हाजियों को ज़ुहर से सुबह तक पांच वक़्त की नमाज़ें अदा करना ज़रूरी है।

रमी : जमरात को सात–सात कंकर मारना।

जमरात : मिना में थोड़े फासिले पर पत्थर और गारे से बने तीन सुतून हैं। जिन्हें आम बोल चाल में शैतान कहा जाता है। इन्हीं शैतानों को सात–सात कंकर मारे जाते हैं। पहले दिन बड़े जमरा को दूसरे और तीसरे दिन तीनों जुमरात को कंकर मारे जाते हैं।

अरफ़ात : मैदाने अरफ़ात में ९ जिल–हिज्जा को वकूफ़ यानी जुहर से अस्र तक वहां क़याम करना, यहां ज़ुहर के आख़िरी वक़्त में अस्र की नमाज़ पढ़ी जाती है और मग़्रिब की नमाज़ पढ़े बेग़ैर अरफ़ात का मैदान छोड़ देना पड़ता है। मुज़्दलेफ़ा में पहुंच कर मग़्रिब और इशा की नमाज़ अदा की जाती है।

उमरा :

हज बैतुल्लाह से पहले तमाम हाजियों को उमरा करना पड़ता है उसके लिए एयर पोर्ट पर ही एहरामे उमरा की नीयत बांधी जाती है और फिर मक्का मुकर्रमा पहुंच कर अपनी ज़रूरियात से फारिग़ हो कर उमरा अदा करने बैतुल––हरम पहुंचते हैं तवाफ़ काबतुल्लाह सई क़स्र वग़ैरह से फारिग़ हो कर एहराम खोल दिया जाता है और फिर हज के दौरान दोबारा हज का एहराम बांधा जाता है। जो पांच दिन बंधा रहता है। माहे रमज़ान में उमरा करना ग़ोया हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज करना है।

एहराम की हालत में हराम अफ़्आल :

जिमाअ् करना, जंगली जानवरों का शिकार करना, नाखुन कतरना, बाल काटना, सर या मुंह को कपड़ों से ढांपना, अमामा बांधना, मोज़े पहनना, ऐसा जूता पहनना जिस से पैरों का ऊपरी दर्मियानी हिस्सा छिप जाए, सिला हुआ कोई कपड़ा पहनना, खुशबू या बालों में तेल लगाना, मुश्क, ज़ाफरान, लोंग, इलाइची, दार चीनी वग़ैरह कच्ची प्याज़ खाना, जिस्म को नाखुन से खुजाना, जू मारना, मुंह पर ओढ़ कर सोना कंघी करना।

नोट : चन्द चीज़ें ऐसी हैं जो मर्दों के लिए हराम है मगर औरतों के लिए जाइज़ हैं जैसे सर छुपाना, सिले हुए कपड़े पहनना, दस्ताने मोज़े पहनना, लेकिन मुंह छुपाना हराम है।

हज की फ़ज़ीलत :

९ हिजरी में हज फर्ज़ हुआ उस साल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद तो हज के लिए तशरीफ़ नहीं ले गये, लेकिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु को अमीरे हज, हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि

अल्लाहु अन्हु को नक़ीबे इस्लाम और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु को मुअल्लिम बना कर क़ाफ़िले को मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा रवाना किया था।

हज हर मुसलमान आक़िल व बालिग़ मालदार पर फ़र्ज़ है ज़िन्दगी में एक बार हज करना फ़र्ज़ है। उसका इंकार करने वाला मुंकिर, फ़ासिक़ व सख़्त गुनहगार होगा।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हज करने से मुसलमान गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है जैसे मां के पेट से पैदा हुआ है जिसने कोई गुनाह न किया हो। और फरमाया कि हज कमज़ोर और औरतों के लिए जिहाद है। और फरमाया हाजी की मग़्फ़िरत के साथ–साथ उसकी दुआ भी क़ुबूल होती है और फरमाया हाजी के हर क़दम पर सात लाख नेकियां उसके नाम–ए–आमाल में लिखी जाती हैं। जो हज के लिए चला और रास्ते में इंतिक़ाल हो जाए तो बेहिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल होगा और क़्यामत तक उसके लिए हज का सवाब लिखा जाएगा।

हज के अरकान :

हज के पांच अरकान हैं। (१) एहराम (२) वक़ूफ़ (३) सई (४) तवाफ़ (५) ज़ियारत।

इन अरकान में से एक भी रुक्न छूट जाए तो हज अदा न होगा और न किसी क़िस्म की कुरबानी (दम) से उसकी तलाफ़ी होगी। दोबारा अगले साल एहराम बांध कर हज करना वाजिब हो जाता है।

हज के वाजिबात :

हज के वाजिबात यह हैं। (१) मीक़ात से एहराम बांधना। (२) सफ़ा व मरवा के दर्मियान दौड़ना। (३) सई को सफ़ा से शुरू करना। (४) उज़्र न हो तो पैदल सई करना। (५) दिन में वक़ूफ़ किया तो इतनी देर तक वक़ूफ़ करे कि आफ़ताब डूब जाए। (६) वक़ूफ़ में रात का कुछ जुज़ आ जाना। (७) अरफ़ात से वापसी में इमाम की मुताबेअत करना। (८) मुज़्दलिफ़ा में ठेहरना। (९) मग़्रिब व इशा की नमाज़ का वक़्त इशा में मुज़्दलेफ़ा में आकर पढ़ना। (१०) तीनों जमरों पर दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तीनों दिन कंकरियां मारना। **मस्अला :** वाजिब के तर्क से दम लाज़िम आता है ख़्वाह क़स्दन तर्क किया हो या सहवन ख़ता के तौर पर हो।

हज की सुन्नतें :

(१) तवाफ़े क़ुदूम करना। (२) तवाफ़ का हजरे अस्वद से शुरू करना।

(३) तवाफ़े कुदूम या तवाफ़े फ़र्ज़ में रमल करना। (४) सफा व मरवा के दर्मियान जो दो मील अख़्ज़र हैं उनके दर्मियान दौड़ना। (५) इमाम का मक्का में सातवीं को और अरफ़ात में नवीं को और मिना में ग्यारहवीं को खुतबा पढ़ना। (६) आठवीं की फज्र के बाद मक्का से रवाना होना। (७) नवीं रात मिना में गुज़ारना। (८) आफताब निकलने के बाद मिना से अरफ़ात को रवाना होना वग़ैरह सुन्नतें हैं।

हज्जे अकबर का तरीक़ा :

८ जिल–हिज्जा से ग्यारह जिल–हिज्जा तक जो हज होता है उसे हज्जे अकबर कहा जाता है और जो रमज़ानुल–मुबारक में या आम दिनों में उमरा किया जाता उसे हज्जे असग़र कहा जाता है।

हरम शरीफ़ की हाज़िरी :

हरम शरीफ़ में लब्बैक पढ़ते हुए दरबारे आली में पहले दाहिना क़दम रखते हुए बाअदब सर झुकाए हैबते इलाही से डरते हुए हरम शरीफ़ में दाख़िल हो जाए। अल्लाहु अकबर, कलिमा तैय्यबा पढ़े और काबा पर जब पहली नज़र पड़े तो यह दुआ करे। रब्बुल–इज़्ज़त मैं जहां–जहां मुक़द्दस मक़ामात पर जाऊं वहां जो भी दुआ मागूं उसे शर्फ़े क़बूलियत अता कर और मेरा उमरा व हज्जे मबरूर कुबूल फरमा।

अगर क़िरान या तमत्तोअ् का एहराम बांधा तो उमरा करे उसके लिए ख़ान–ए–काबा के क़रीब पहुंच कर संगे अस्वद वाले कोने पर रुक्ने यमानी की जानिब रुख़ करके खड़े हो कर तवाफ़ की नीयत करके तवाफ़ शुरू करे।

तवाफ़ के हर चक्कर के सात चक्कर की सात दुआएं हैं अगर वह दुआएं न पढ़ सकते हैं तो जो भी दुआएं हों मांग सकते हैं या तो कम अज़ कम दुरूद शरीफ़ पढ़ें।

पहले तीन चक्कर में मर्दों के लिए रमल करना है यानी शाने हिला–हिला कर अकड़ कर चलना होता है हर चक्कर में जहां से हजरे अस्वद नज़र आए वहां इस्तिलाम करे यानी दोनों हाथ की हथेलियों को हजरे अस्वद की जानिब करके बिस्मिल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर कह कर अपने हाथों को चूम कर फिर आगे बढ़ना है फिर दूसरा चक्कर शुरू करना। तवाफ़ से फारिग़ हो कर मक़ामे इब्राहीम के पास आए जगह मिली तो ठीक वरना जहां जगह मिले वहां दो रकअत नमाज़ अदा करे और ख़ूब दुआएं मांगे पेट भर कर पानी पिए। शिफ़ाए मरज़ की ख़ास दुआ करे।

सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई :

सई के लफ़्ज़ी मानी हैं दौड़ना उसका शरई तरीक़ा यह है कि सफ़ा और मरवा के दर्मियान सात चक्कर लगाना।

सई की शराइत :

सई की भी चन्द शराइत है :

(१) सई सिर्फ़ सफ़ा और मरवा के दर्मियान ही हो।

(२) सफ़ा से शुरू करे, सफा से मरवा तक एक चक्कर और मरवा से सफ़ा पर ख़त्म करे दूसरा चक्कर होगा फिर सफा से शुरू हो कर मरवा पर ख़त्म होगा।

अपाहिज, बीमार, माज़ूर, ज़ईफ़ वग़ैरह मजबूर ही सवारी पर सवार हो कर चक्कर लगा सकता है। बिला उज़्र सवारी पर चक्कर लगाए तो दम वाजिब होगा। सफ़ा और मरवा के दर्मियान जहां नीली ट्यूब हो वहां से दूसरी ट्यूब तक मर्दों के लिए दौड़ने का हुक्म है। औरतें अपनी चाल से चलें। तवाफ़ से फ़ारिग़ होते ही सई करना होगी बिला उज़्र देर हुई तो दम देना होगा।

सई के बाद मर्द सर मुंडवाए और औरतें अपने सरों के दो उंगल बाल काटें।

उमरा का एहराम खोल कर तमाम पाबन्दियों से आज़ाद हो गये। ८ जिल–हिज्जा तक जब तक जितने दिन रुकें तवाफ़ करें हर ख़ानदान के हर फ़र्द के नाम से तवाफ़ कर सकते हैं।

मिना में क़्याम :

८ जिल–हिज्जा जिसको यौमुत्तरवियह भी कहते हैं। सुबह सूरज निकलने के बाद हुज्जाज को मिना के लिए निकलना होगा। अगर उमरा का एहराम खोल दिया थ तो दोबारा हज का एहराम बांधना होगा। एहराम बांध कर हरम शरीफ़ आए वहां दो रकअत नमाज़ एहराम की नीयत से पढ़ कर फिर हज की नीयत करके बुलन्द आवाज़ से लब्बैक कहते हुए मिना पहुंचे। जुहर की नमाज़ से क़ब्ल वहां पहुंचना ज़रूरी है, क्योंकि ज़ुहर से ५ वक़्त की नमाज़ें वहां अदा करनी हैं, मिना पहुंच कर मस्जिद ख़ीफ़ में या उसके क़रीब नमाज़ अदा करे। ९ जिल–हिज्जा की शब निहायत अहम होती है, उस रात मिना में तिलावत, दुरूद, तस्बीहात में गुज़ारे।

९ जिल–हिज्जा को यौमे अरफ़ा कहा जाता है।

मैदाने अरफ़ात में क़्याम :

९ ज़िल–हिज्जा अय्यामे हज का सबसे बड़ा और अहम दिन है। सुबह की नमाज़ के बाद आफताब बुलन्द हो जाए अरफ़ात की जानिब चले गये।

यह वही मक़ाम है जहां हज़रत आदम और हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात हुई थी। दोपहर ढलते ही मस्जिदे नमरा में ज़ुहर की नमाज़ होगी और उसके फ़ौरन बाद अस्र की नमाज़ होगी। ज़ुहर और अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर अपने गुनाहों पर नादिम हो कर अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगे कि यह मग़्फ़िरत का मक़ाम है गुरूबे आफ़ताब तक दुआ में मशग़ूल हो जाए और मग़्रिब के फ़ौरन बाद बग़ैर मग़्रिब नमाज़ अदा किए मुज़्दलिफ़ा के लिए रवाना हो जाए।

मुज़्दलिफ़ा में क़्याम :

मुज़्दलिफ़ा एक जगह का नाम है। जहां जाने रहमत सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़्याम फरमाया था। वहां पहुंच कर मग़्रिब और इशा की नमाज़ एक साथ अदा करेंगे। यहां भी रात भर क़्याम करके इबादत में गुज़ारे ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ हो कर निहायत इज्ज़ व इंकिसारी से मग़्फ़िरत की दुआ करे। इसी दर्मियान रमी जमरात के लिए छोटी–छोटी कंकरियां चुन ले। तीन दिन तीन जमरात को सात–सात कंकरियां मारने के लिए कंकरियों को धो कर रखे। जब तुलूअ़े आफताब हो जाए और दो रकअत नमाज़ पढ़ने का वक़्त बाक़ी रह जाए तो मिना के लिए रवाना हो जाए। मिना और मुज़्दलिफ़ा के दर्मियान एक वादी महशर है जिस जगह अस्हाबे फील का वाक़्या पेश आया था वहां से गुज़र हो तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि फौरन वहां से निकलने की कोशिश करो।

दोबारा मिना में क़्याम :

१० ज़िल–हिज्जा को मिना पहुंच कर ज़रूरियात से फारिग़ हो कर उस दिन जमरा उक़्बा (बड़े शैतान) को सात कंकरियां मारती हैं यहां लब्बैक पढ़ना मना है।

रमी का तरीक़ा :

जमरात के सामने खड़े हो कर अंगूठे और उसकी साथ वाली शहादत की उंगली में पकड़ कर सीधे हाथ से **बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर** रज्मन **लिश्शैताने रिज़ाअन लिर्रहमान।** कह कर कंकरी मारे हर कंकरी के वक़्त यह कलिमा पढ़े फिर अपने–अपने ख़ेमे में आए।

कुरबानी

ख़ेमे में पहुंचते ही कुरबानी की तैयारी शुरू करे कोई अच्छा तन्दुरुस्त फरबा जानवर ख़रीद कर कुरबानी करे या तो किसी को वकील बना कर

कुरबानी की ज़िम्मेदारी सौंप दे कुरबानी की वही शर्तें हैं जो ईदे कुरबां की शर्तें हैं। मगर यह कुरबानी ईदुज़्ज़ुहा के मौक़े पर दी जाती वह नहीं क्योंकि मुसाफिर पर ईदुज़्ज़ुहा की कुरबानी वाजिब नहीं है। बल्कि यह शुक्राने की कुरबानी मानी जाती है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अशर–ए–जिल–हिज्जा में अल्लाह तआला को कोई इतना पसन्द नहीं जितना इन दिनों में हलाल जानवर की कुरबानी। चूंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत भी है इसलिए इस कुरबानी के जानवर के हर बाल के बराबर नेकी मिलती है और यह जानवर पुल सिरात पर सवारी का काम देगा।

हलक़ या तक़्सीर :

कुरबानी करने के बाद सर के बालों का हलक़ वाजिब है हलक़ मर्दों पर वाजिब है पूरे बाल कटवाए या थोड़े–थोड़े बाल कटवाए।

औरतें अपने बालों के सिरे एक उंगल काटें और जब कुरबानी की ख़बर मिले तब ही काटें।

तवाफ़े ज़ियारत :

रमी व कुरबानी के फारिग़ होते ही तवाफ़ ज़ियारत के लिए मक्का मुकर्रमा रवाना होना है। इस तवाफ़ के लिए एहराम की ज़रूरत नहीं है। यह हज का एक अज़ीम रुक्न है। अगर ख़ुदा नख़्वास्ता यह छूट जाए तो हज न होगा। तवाफ़ के बाद दोगाना नमाज़ अदा करे। पेट भर कर ज़म–ज़म पिए अपने लिए और तमाम मुसलमानों के लिए दुआ करे।

अगर १० जिल–हिज्जा को कुरबानी न हो सकी तो ग्यारह तारीख़ को तवाफ़े ज़ियारत करे और अगर १० ज़िल–हिज्जा को कुरबानी हो जाए और तवाफ़े ज़ियारत को जाए तो फौरन मिना आ जाए क्यों दस और ग्यारह ज़िल–हिज्जा की रातें मिना में गुज़ारनी होती हैं। ग्यारह तारीख़ को तीनों जमरात को सात–सात कंकरियां मारनी में रमी (कंकरियां मारना) का वक़्त ज़वाले आफताब से गुरूबे आफ़ताब तक है। औरतें रात में भी मार सकती हैं।

ग्यारह तारीख़ को कंकरियां मारने इब्तिदाअन जमरए औला जो मस्जिदे ख़ीफ़ के क़रीब है वहां से करे। कंकरियां मारने के लिए इस तरह खड़े हों कि दाएं जानिब मिना और बाएं जानिब मक्का मुकर्रमा हो कंकरियां दाएं हाथ की कलिमे की उंगली और अंगूठे में पकड़ कर मारे नीचे गिरी हुई कंकरियां न उठाए। फौरन दूसरी कंकरियां लेकर मारे कंकरियां मार कर थोड़ा पीछे हट कर दुआ मांगे उसकी दुआ अरबी की "तालीमुल–हज" में देख कर पढ़े या जो याद हो वह पढ़े। इसी तरह दूसरे और तीसरे

जमरार को कंकरियां मारे मगर तीसरे जमार के पास दुआ न मांगे। इसी तरह बारह तारीख़ को भी तीनों जमरार को कंकरियां मारनी हैं। अगर खुदानख़्वास्ता बारह तारीख़ को कंकरियां न मार सके और सूरज ग़ुरूब हो जाए तो बेहतर यही है कि बारह तारीख़ की रात भी मिना में गुज़ारनी है फिर तेरा तारीख़ को कंकरियां मार कर वहां ग़ुरूबे आफ़ताब से पहले निकलना है। क्योंकि तेरहवीं की रात में मिना ख़ाली करना होता है। इस तरह ८ ज़िल–हिज्जा तक पांच दिन हज के होते हैं।

अब उसके बाद जितने दिन मक्का मुकर्रमा में रहे तवाफ़ करते रहे। अगर किसी की जानिब से उमरा करना हो तो मस्जिद आइशा में जाकर गुस्ल करके उसकी तरफ़ से उमरे की नीयत करके एहराम बांध कर, तवाफ़, सई, सर मुंडवाना या बाल कतरवाए। जिस दिन मक्का मुकर्रमा से निकलना हो उस रोज़ तवाफ़े विदाअ् करे। उसमें न रमल है न इस्तिबाना सई, सिर्फ़ दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ कर ख़ूब गिड़ गिड़ा कर दोबारा हाज़िरी की दुआ मांगे आइन्दा गुनाह न करने का अज़्म करे हज के अरकान में कोई ग़लती हो गई हो तो उसके लिए मुआफ़ी मांगे। जी भर कर आबे ज़मज़म पिए।

तवाफ़ विदाअ् के लिए कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं जब भी मक्का मुकर्रमा छोड़ना हो उस वक़्त कर सकते हैं। आख़िरी तवाफ़े विदाअ् होने के बाद उलटे पांव वहां से आहिस्ता–आहिस्ता क़दम उठाते हुए हसरत भरी निगाह से काबतुल्लाह को देखते हुए बाहर आए जब काबा नज़र से ओझल हो जाए तब सीधे क़दम हो कर अपने मक़ाम पर आ जाए।

नोट : तवाफ़े विदाअ् उन ही लोगों पर वाजिब है जो मक्का मुकर्रमा के बाहर से आए हुए हों अगर बाहर के लोग तवाफ़े विदाअ् किए बेग़ैर मक्का से बाहर चले गये तो मीक़ात के अन्दर हों तो वापस एहराम बांध कर उमरा की नीयत करके दोबारा उमरा के अरकान पूरे करना होगे। उमरा करके तवाफ़े विदाअ् करके वापस आएं। अगर यह नामुम्किन हो तो दम यानी कुरबानी वाजिब होगी।

हज के दौरान ख़्वातीन के अफ़आल :

हज का सबसे अहम बड़ा रुक्न वकूफ़े अरफात है इस अस्ना अय्यामे माहवारी, हैज़ व निफ़ास की हालत में वकूफ़े अरफ़ात मिना में क़याम और तमाम अरकान अदा कर सकती है सिर्फ़ ख़ान–ए–काबा का तवाफ़ नहीं कर सकती। क्योंकि कअ्बतुल्लाह मस्जिदे हराम में होने की वजह से अगर हराम की हालत में मख़्सूस अय्याम शुरू हो जाएं तो तब तक एहराम न

खोले जब कि पाकी का गुस्ल न कर ले। जैसें ही नापाकी दूर हो जाए फौरन गुस्ल करके एहराम खोले।

हज्जे बदल :

(१) जिसकी तरफ़ से हज्जे बदल किया जा रहा हो उस पर हज फ़र्ज़ हो। और वह आजिज़ हो यानी किसी मज्बूरी की वजह से हज न कर सकता हो। अगर वह हज करने के क़ाबिल हो कि खुद कर सकता है तो वह हज कुबूल न होगा। जिसकी तरफ से हज किया जाए उसने हुक्म दिया हो। उसके बेग़ैर हुक्म के नहीं हो सकता अल्बत्ता वारिस ने मूरिस की तरफ़ से किया हो तो उसकी हुक्म की ज़रूरत नहीं। जिसकी तरफ़ से हज किया जा रहा हो तो उसके माल से हज किया जाए। जिस मूरिसे वसीयत थी कि मेरी जानिब से फलां को हज कराए अगर जिस के हक़ में वसीयत की थी वह इंतिक़ाल कर गया तो दूसरों को भेज सकते हैं। हज्जे बदल कराने वाले पर वाजिब है कि हज्जे बदल करने वाले का पूरा–पूरा ख़र्च दे ज़ादे सफर अदा करे और हज्जे बदल करने वाला उसकी नीयत से हज करे बेहतर यह है कि ज़बान से भी लब्बैक अन फुलां कहे।

बच्चों का हज व उमरा :

नाबालिग़ लड़के लड़कियों और दूध पीते बच्चों पर हज फ़र्ज़ नहीं है। ता हम अक्सर लोग अपने अह्लो अयाल के साथ अपने बच्चों को भी साथ ले जाते हैं यह उन बच्चों का नफ़्ली हज होगा। छोटे बच्चों की तरफ़ से जो शख़्स उनके साथ हो उसे एहराम बांधे और उस बच्चे की तरफ़ से एहराम की नीयत करे। अगर बच्चा खुद अरकाने हज अदा करने के क़ाबिल हो तो खुद कराए वरना बाप, भाई उसकी तरफ़ से अफ़्आले हज अदा करे। अगर खुदा नख़्वास्ता बच्चे से बाज़ अफ़्आल तर्क हो गये या बाप ने उसकी तरफ़ से नीयत करके एहराम बांधा तो बच्चा या उसके वली पर कोई दम वग़ैरह वाजिब न होगा क्योंकि बच्चे पर हज फ़र्ज़ नहीं था और वालिद ने चूंकि बच्चे की नीयत की थी और उसकी ग़लती न थी इसलिए उस वली पर भी दम वाजिब न होगा। अल्बत्ता तल्बिया दोनों की तरफ़ से कह सकता है।

कुरबानी का बयान

कुरबानी यह एक माली इबादत है जो साहिबे निसाब पर वाजिब है यानी कुरबानी देने वाले के पास इतना माल हो कि वह कुरबानी का जानवर ख़रीद कर उसकी कुरबानी कर सके। मसलन इतना माल हो कि जितना

माल होने से सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब होता है तो उस पर क़ुरबानी वाजिब हो जाती है।

क़ुरबानी का वक़्त :

दस ज़िल–हिज्जा की सुबह सादिक़ से बारह ज़िल–हिज्जा की ग़ुरूबे आफताब तक है यानी तीन दिन मुक़र्रर किए गये सबसे अफ़ज़ल दसवीं ज़िल–हिज्जा फिर ग्यारह ज़िल–हिज्जा फिर बारह। अगर शहर में ईदगाह हो तो वहां नमाज़े ईद के बाद क़ुरबानी शुरू करे अगर क़ुरबानी दिहात में कर रहे हों तो सुबह सादिक़ से शुरू कर सकता है जबकि वहां ईद की नमाज़ न होती हो।

क़ुरबानी के वक़्त क़ुरबानी ही करना लाज़िम है उसके बजाए रक़म या कपड़ा वग़ैरह नहीं दे सकते कि जिस तरह ज़कात और सदक़–ए–फ़ित्र में दिया जाता है।

क़ुरबानी का दिन गुज़र जाने के बाद क़ुरबानी फौत हो जाती है।

क़ुरबानी के जानवर :

गाय, भैंस, ऊंट, बकरी, बकरा, भेड़, दुंबा जो पाल्तू जानवर हों जंगली जानवर जैसे हिरन, ज़ैबरा, ज़र्राफ़ वग़ैरह पर क़ुरबानी नहीं हो सकती।

ऊंट की उमर तक़रीबन पांच साल, भैंस दो साल, भेड़, बकरी एक साल होना लाज़िम है। इस से कम उम्र की क़ुरबानी नाजाइज़ है। अगर भेड़ बकरी एक साल से कम उम्र के हों मगर देखने में एक साल का हो तो उसका क़ुरबानी जाइज़ है।

क़ुरबानी के जानवर की शराइत :

क़ुरबानी का जानवर मोटा ताज़ा फरबा हो। जिस जानवर के पैदाइशी सींग न हों तो जाइज़ है अगर सींग पहले थे मगर किसी वजह से टूट गये या अगर ज़्यादा टूटा तो नाजाइज़ अगर थोड़ा टूटा जिस से कोई ऐब नज़र न आए तो जाइज़ है। अन्धा, लंगड़ा, काना, कान, कटा हुआ, दुम कटी हुई दांत टूटे हुए, बकरी का थन कटा हुआ या सूखा हुआ, ग़लाज़त खाने वाला वग़ैरह जानवरों की क़ुरबानी नाजाइज़ है। अगर किसी जानवर का अज़्व एक तिहाई कम कटा हो उसकी क़ुरबानी जाइज़ है। अगर क़ुरबानी का जानवर अच्छा ख़ासा था मगर क़ुरबानी के वक़्त अच्छा और उसकी वजह से उसमें कोई ऐब लग जाए तो जाइज़ है। अगर क़ुरबानी के बाद पेट में ज़िन्दा बच्चा हो तो उसे भी ज़बह करे वरना फेंक दे। अगर क़ुरबानी का जानवर ख़ुदा नख़्वास्ता बेच दिया तो उसकी क़ीमत का सदक़ा दे।

साहिबे निसाब अपनी जानिब से दूसरे के नाम पर कुरबानी कर सकता है। लेकिन उसके लिए शर्त है कि पहले उसे उसका मालिक बनाए। मसलन अगर किसी बच्चे या भाई बहन की तरफ़ से कुरबानी देना चाहे तो जानवर उनके नाम हिबा करना होगा चाहे कुरबानी के वक़्त क्यों न हो। हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद अपनी उम्मते मुस्लेमा की जानिब से कुरबानी फरमाई।

कुरबानी करते वक़्त अल्लाह तआला का नाम लेना फ़र्ज़ है। किसी ग़ैरुल्लाह के नाम पर कुरबानी नाजाइज़ है। यानी कुरबानी करते वक़्त अल्लाह का नाम लेकर कुरबानी करना होगी। गाय, भैंस ऊंट की कुरबानी में सात अफ़राद हिस्सा ले सकते हैं। कुरबानी के गोश्त के तीन हिस्से हों एक खुद के लिए एक रिश्तेदारों के लिए और एक ग़रीब व मिस्कीन के लिए।

सफर मदीना मुनव्वरा

हाजियो! आओ शहन्शाह का रौज़ा देखो
काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो

खुदा के फ़ज़्ल व करम से जब मदीना मुनव्वरा का सफर शुरू करे तो उस वक़्त मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की नीयत कर ले। रास्ते भर दुरूद शरीफ़ का विर्द रखे। आशिक़ाने रसूल का वलवला लेकर जज़्ब–ए–शौक़ में सरशार हो कर अपनी मुहब्बत का सुबूत पेश करे। जूं–जूं मदीना मुनव्वरा क़रीब आता जाए निहायत ज़ौक़ व शौक़ और इज्ज़ व नियाज़ से दिल मुनव्वर और दुरूद व सलाम से ज़बान तर करता है। यह वह मुक़द्दस मक़ाम है जहां का चप्पा–चप्पा क़ाबिले एहतराम है कि उस मुक़द्दस सर ज़मीन पर फ़ख़्रे दोआलम नूरे मुजस्सम के क़दम मुबारक पड़े।

आंखों से भी चलना तो यहां बेअदबी है। हुदूदे मदीना मुनव्वरा में पहुंचे तो यह दुआ करे ऐ अल्लाह यह तेरे महबूब रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हरमे मोहतरम है तू इसे मेरे लिए दोज़ख़ से आड़ बना दे और आख़िरत के अज़ाब व हिसाब की सख़्ती से अमन व अमान का ज़रिया बना दे। उलमाए किराम ने मदीना के चौरानवें नाम शुमार किए। जिसे दौरे जिहालत में यस्रिब कहा जाता था जिसके मानी है ख़राब आब व हवा। चूंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत से क़ब्ल यहां की आब व हवा बेहद ख़राब थी लेकिन जब आक़ाए नामदार ने हिजरत की तो उस वक़्त आपने अल्लाह तआला से दुआ फरमाई कि उस शहर की आब व हवा को खुशगवार और उस शहर को

अमन व अमान बना दे। अल्लाह तबारक व तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ कुबूल फरमाई फिर वहां हर तरफ़ खुशहाली का दौर दौरा शुरू हुआ। अल्लाह तबारक व तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ कुबूल फरमाई फिर वहां हर तरफ़ खुशहाली का दौर दौरा शुरू हुआ। मेवह जात की फरावानी हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस शहर का नमा मदीना रखा।

दरबारे बेकस पनाह में हाज़िरी :

जब मदीना पहुंच तो अपने क़याम की जगह सामान वग़ैरह रखे, हो सके तो गुस्ल करे या वुज़ू करके पाक व साफ़ लिबास ज़ेब तन करके खुशबू लगा कर दरबारे बेकस पनाह पहुंचे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि जब मस्जिदे नबवी में दाखिल हो तो बाबे जिब्रील से दाखिल हो या बाबुस्सलाम से मस्जिदे नबवी में दाखिल होने के लिए मश्रिक़ की जानिब तीन दरवाज़े हैं : बाबे जिब्रील, बाबुन्निसा, बाबे अब्दुल–अज़ीज़। मग़्रिब की जानिब चार बाब हैं। बाबुस्सलाम, बाबे अबू बकर (रज़ि अल्लाहु अन्हु), बाबुर्रहमा, बाबे सऊद। शुमाल की जानिब तीन दरवाज़े हैं। बाबे उस्मान (रज़ि अल्लाहु अन्हु), बाबे उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु)। जुनूब की जानिब क़िबला है इसलिए उधर कोई दरवाज़ा नहीं है।

मस्जिदे नबवी की पूरी इमारत खुश नुमाई का बेमिसाल नमूना है। मौजूदा इमारत में एक खिड़की है जहां से जिब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िरे ख़िदमत हुआ करते थे जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमे मुबारक के ऐन मुक़ाबिल है। वहां बाएं जानिब सुनहरी जाली की गैलरी है जिधर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम शरीफ़ हैं उधर से गुज़र कर मवाजा शरीफ में आ जाए जहां दाएं जानिब अस्हाबे सुफ़्फ़ा का चबूतरा है। जिसके सामने खुद्दाम के बैठने की जगह है। उसके सामने मक़्सूरा शरीफ़ है जो चारों तरफ़ से सुनहरी जालियों से महसूर है। सुफ़्फ़ह के सामने की दीवार पर एक मेहराब बनी है जिस पर मेहराबे तहज्जुद लिखा हुआ है जहां हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करते थे। जब मस्जिदे नबवी में पहुंचे तो निहायत अदब व एहतराम और ताज़ीम व तक्रीम के साथ दर व दूं के फूल लिए पहले दायां पैर दाखिल करे फिर बायां। फिर सीधा रियाज़ुल–जन्नत में आए यहां दो रकअत तहयतुल–मस्जिद पढे अगर वहां जगह न मिले तो कहीं भी पढ़ ले। मगर बेग़ैर तहियतुल–मस्जिद नमाज़ पढ़े रौज़–ए–मुबारक (मक़्सूरह शरीफ़)

में न जाए। जब दरबारे अक़्दस में हाज़िर हो तो निहायत अदब व एहतराम के साथ हाथ बांधे क़िबला की जानिब मवाजा शरीफ़ पर सुनहरी जालियों के सामने खड़े हो कर नज़रें नीची किए हुए दुरूद व सलाम के फूल निछावर करे। जाली को छूना और बोसा ख़िलाफ़े अदब है। दिल में यह ख़्याल रहे कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रौज़–ए–अक़्दस में क़िबलारू इस्तेराहत फरमा रहे हैं और दुरूद व सलाम और कलामे समाअत फरमा रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़मत व जलाल का लिहाज़ रखते हुए मुतवस्सित आवाज़ में सलाम व कलाम करे। अगर अरबी में लिखी हुई दुआ हो तो वह पढ़े या अपने दिल से जो भी दुआ व सलाम पेश करना चाहे कर सकता है। फिर दो क़दम चल कर अमीरुल–मुमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु के मज़ारे अक़्दस के रूबरू आए वहां भी दुआ व सलाम पेश करे फिर और दो क़दम चल कर अमीरुल–मुमिनीन हज़रत उमर फारुके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु के मज़ारे अक़्दस के क़रीब आ कर दुरूद व सलाम पेश करे फिर क़िबला की तरफ़ रुख़ करके दुआ करे। फिर दोबारा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरहाने मुबारक की जानिब लौट आए फिर अपना इस्तिग़ासा पेश करे।

ज़ियारते बा बरकत से फ़ैज़याब हो कर अदब व एहतराम से मस्जिदे नबवी में कहीं भी मुनासिब जगह देख कर तिलावते कुरआने पाक और तस्बीहात में मशग़ूल हो जाए। मक्रूहे नमाज़ का वक़्त छोड़ कर क़ज़ा नमाज़ें अदा करे। जब तक मदीना मुनव्वरा में क़्याम रहे दरबारे आली मक़ाम हाज़िरी दे और पांचों वक़्त की नमाज़ का एहतमाम करके अपने क़ल्ब को मुनव्वर करे।

जन्नतुल–बक़ीअ़ :

मदीना मुनव्वरा का क़ब्रिस्तान है। जन्नतुल–बक़ीअ़ मस्जिदे नबवी के मशरिक़ में वाक़े है। बाबे जिब्रील से निकले तो सामने सड़क के उस पार जन्नतुल–बक़ीअ़ नज़र आएगा जिस में बेशुमार सहाब–ए–किराम एक रिवायत के मुताबिक़ दस हज़ार औलिया अल्लाह इस जन्नतुल–बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं। तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात, सहाबियात, तमाम अह्ले बैते औलादे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत इब्राहीम रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत क़ासिम रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह (तैय्यब ताहिर) आले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु

अन्हा, हज़रत रुकैया रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा, हज़रत अस्मा रज़ि अल्लाहु अन्हा। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु वग़ैरह जलीलुल–क़द्र हस्तियां वहां आराम फरमा रही हैं। सिवाए ज़ौज–ए–रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा के कि वह मक्का मुकर्रमा में जन्नतुल–मुअल्ला में मदफ़ून हैं।

जन्नतुल–बक़ीअ़ में औरतों को जाने की इजाज़त नहीं क्योंकि क़ब्रिस्तान में औरतों को जाना हराम है। अल्बत्ता बाहर से जहां जाली का और दीवार का एहाता है वहां से ज़ियारते क़ुबूर करके दुरूद व सलाम का नज़्राना भेज सकती हैं। अगर वहां के मदफ़ून अफ़्राद के नाम मालूम हों तो उनके नाम दुरूद व सलाम भेजे अगर साथ किताब हो तो किताबचा में देख कर या जो वहां से ख़ादिम पढ़ाते हैं वह पढ़ ले तो इतना ही काफी है। मस्जिदे नबवी मक़्सूरह, रियाज़े जन्नत नमाज़ अदा करने के लिए फज्र की नमाज़ और ज़ुहर की नमाज़ के बाद ख़्वातीन के लिए खोला जाता है जो तक़रीबन दो घन्टे खुला रहता है इस दर्मियान ख़्वातीन जूक़ दर जूक़ रियाज़े जन्नत में नमाज़ के लिए आती हैं और एक दूसरे पर टूट पड़ती हैं। अगर रियाज़े जन्नत में या अस्हाबे सुफ़्फ़ा के चबूतरे में नमाज़ अदा करने का मौक़ा न मिले तो जहां कहीं भी जगह मिले नमाज़ अदा कर ले। मस्जिदे नबवी में मुख़्तलिफ़ ममालिक की तक़रीर करने वाली ख़्वातीन गुरूप बना कर अपनी–अपनी ज़बान में वअ़्ज़ करती हैं।

मदीना मुनव्वरा की मसाजिद :

मस्जिदे नबवी के अलावा भी मदीना मुनव्वरा में कई मसाजिद ऐसी हैं जहां हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने या साहाब किराम ने नमाज़ पढ़ी। उन मसाजिद में नमाज़ अदा करना और ज़ियारत करना बाइसे सवाब है। उनमें चन्द मसाजिद का मुख़्तसर ज़िक्र करना ज़रूरी है ताकि ज़ाइरीन उन से इस्तिफ़ादा कर सकें।

मस्जिदे क़ुबा :

मस्जिदे नबवी से तक़रीबन तीन मील पर वाक़े है। यह आग़ाज़े इस्लाम की सबसे अव्वल मस्जिद है जिस की बुनियाद तक़्वा और परहेज़गारी पर है उस मस्जिद के तामीर करने में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद बनफ़्से नफ़ीस सहाबा किराम के साथ मिल कर काम किया

यहां पर दो रकअत नमाज़ का सवाब उमरा के बराबर है।

मस्जिदे जुमा :

मस्जिदे कुबा के मशरिक़ी जानिब वाके है यहां हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबसे पहले नमाज़े जुमा बाजमाअत अदा फरमाई।

मस्जिदे गमामा :

मस्जिदे नबवी के बाबुस्सलाम के ऐन सामने है जहाँ हुज़ूर के दौरे हयात में बाज़ार लगा करता था जिसे सूकुल–मक़ाश कहते हैं उस मस्जिद को मस्जिदे मुसल्ला भी कहते हैं। यहां हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईदैन की नमाज़ अदा फरमाई। नमाज़े इस्तिस्क़ा भी अदा फरमाई उसके अलावा एक मरतबा धूप की शिद्दत के वक़्त उसी मक़ाम पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर साया फगन हुआ था।

मस्जिदे सुक़िया :

बाबे अंबरीया मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के दर्मियान जहां पहले रेलवे स्टेशन था उसके अन्दर एक कुब्बा है जिसे कुब्बतुर–रुऊस भी कहते हैं। उसमें एक कुवां बीरुस्सक़ियां है हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ज़्व–ए–बद्र के लिए तशरीफ़ ले जाते वक़्त उस मक़ाम पर जैशे बद्र का मुआयना किया था और वहां नमाज़ अदा फरमाई थी और अह्ले मदीना के लिए दुआ भी फरमाई थी।

मस्जिदे फतह :

उसका नाम मस्जिदे अहज़ाब भी है यह जबले सलअ् के मग़्रिबी किनारे पर ऊंचाई पर वाक़े है। यहां ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ के मौक़ा पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन दिन दुआ फरमाई थी। पीर, मंगल, बुध अल्लाह तआला ने चहार शंबा (बुध) के रोज़ दुआ क़ुबूल की। उस मस्जिद के क़िबला के जानिब और चार मस्जिदें हैं जो मस्जिद सलमान फार्सी (रज़ि अल्लाहु अन्हु), मस्जिद अबू बकर (रज़ि अल्लाहु अन्हु), मस्जिदे उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) और मस्जिदे अली (रज़ि अल्लाहु अन्हु) के नाम से मशहूर हैं। उसके अलावा ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ के मौक़ा पर लश्कर का पड़ाव डाला गया था। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां नमाज़ अदा फरमाई थी।

मस्जिदे बनी हराम :

मस्जिदे फतह के क़रीब जबले सलअ् की खाई में एक ग़ार है जिसमें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही नाज़िल हुई थी।

ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ के दौरान आपने यहां क़्याम फरमाया और नमाज़ अदा फ़रमाई थी।

मस्जिदे रुबाब :

उसे मस्जिदे राया भी कहते हैं। जबले उहद के रास्ते में यह मस्जिद वाक़े है। उस मक़ाम पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ेमा नसब था यहां पर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ अदा फरमाई थी।

मस्जिदे क़िब्लतैन :

मदीना मुनव्वरा के शुमाल मग़्रिब में वादिए अतीक़ के क़रीब ऊंचाई पर वाक़े है उसकी एक दीवार मग़्रिब की जानिब मेहराब है जिसका रुख़ बैतुल–मक़्दिस की तरफ है और दूसरी दीवार शुमाल पर काबा की मेहराब बनी है। उस मस्जिद में तहवीले काबा का हुक्म ऐने जुहर की नमाज़ की हालत में हुआ था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ की हालत में अपना रुख़ बैतुल–मक़्दिस से क़ाबतुल्लाह की जानिब किया। इसलिए उसको मस्जिद क़िबलतैन यानी दो क़िबला वाली मस्जिद कहा जाता है।

मस्जिद फसीह :

यहूदी क़बीले बनू नज़ीर के मुहासरे के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां नमाज़ अदा फरमाई थी उसी मस्जिद में शराब की हुर्मत की आयत नाज़िल हुई। दूसरी रिवायत में है कि उस मस्जिद को मस्जिदे शम्स भी कहा जाता है। बाज़ रिवायतों में यह भी वारिद है कि यहां हज़रत अली की नमाज़े अस्र क़ज़ा होने का वक़्त हो गया था तो हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई तो आपके हुक्म से सूरज पलट आया था। दूसरी वजह यह है कि काफी ऊंचाई पर होने की वजह से सबसे पहले सूरज यहां तुलूअ़ होता हुआ नज़र आता है।

मस्जिदे बनू नज़ीर :

यहूदी क़बीले बनू नज़ीर के मुहासरे के मौक़ा पर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां क़्याम फरमाया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां एक पत्थर पर बैठ गये थे जहां एक सहाबी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ुरआन मजीद की तिलावत पढ़ कर सुनाई थी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर गिरया तारी हो गया था।

मस्जिदुल–इजाबे :

बक़ीअ़ से शुमाल की जानिब वाक़े है यह मस्जिद भी ऊंचाई पर है उस मस्जिद का दूसरा नाम मस्जिदे मुआविया है। एक मरतबा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यहां तशरीफ़ फरमा हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां नमाज़ अदा की और देर तक दुआ में मशग़ूल रहे। नमाज़ के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां अल्लाह तआला से तीन दुआएं मांगीं।

मस्जिदे मशरबा उम्मे इब्राहीम :

मुहल्ला अवालिद में मस्जिद वाक़े है यह जगह हज़रत सैयदना इब्राहीम की जाए पैदाइश है। मशरेबा मानी है बाग़, यहां हज़रत मारिया क़िब्तीया के कुछ बाग़ात थे और यहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भी कुछ अतीयात थे जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ुक़रा व मसाकीन को वक़्फ़ फरमाए।

मस्जिद बनी क़ुरैज़ा :

मस्जिदे फसीह से मश्रिक़ की जानिब बनी क़ुरैज़ा नामी क़बीला आबाद था। एक मरतबा सरकारे दो आलम सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां क़्याम फरमाया था। और यहूद के मुक़र्रर करदह हकम हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने यही वह फैसला सादिर किया था कि यहूदी मर्दों को क़त्ल और बच्चों और औरतों को क़ैदी बनाया जाए।

मस्जिदे सज्दा :

बुस्तान बहरी और बुस्तानीन सदक़ा के दर्मियान वाक़ेय है उस जगह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो रकअत नमाज़ अदा फरमाई थी और काफी तवील सज्दा फरमाया था। यह मस्जिद हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु के मक़ामे शहादत की तरफ़ जाने वाले रास्ते पर है।

उसके अलावा मस्जिदे उबय, मस्जिदे हज़रत अबू बकर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) मस्जिदे हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु), मस्जिदे अली (रज़ि अल्लाहु अन्हु), मस्जिदे बिलाल (रज़ि अल्लाहु अन्हु), मस्जिदे फातिमा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) वग़ैरह भी हैं।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

सत्तरहहवां बाब

अव्वलियात

- अल्लाह तबारक व तआला ने दुनिया बनाने से क़ब्ल नूरे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बनाया।
- दुनिया में सबसे अव्वल इबादत ख़ाना, ख़ान–ए–काबा बनाया।
- सबसे अव्वल मदीना मुनव्वरा में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक से मस्जिदे कुबा तामीर हुई।
- सबसे अव्वल ग़ारे हिरा में पहली वही नाज़िल हुई।
- सबसे अव्वल आयत **इक़रा बिस्मे रब्बिकल्लज़ी ख़लक़** नाज़िल हुई।
- सबसे अव्वल मर्दों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ईमान लाए।
- सबसे अव्वल औरतों में ईमान लाने वाली हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा हैं।
- सबसे अव्वल बच्चों में ईमान लाने वाले हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु हैं।
- सबसे अव्वल गुलामों में ईमान लाने वाले हज़रत ज़ैद बिन हारिसा हैं।
- सबसे अव्वल पूरा घराना दाइरे–ए–इस्लाम में दाख़िल होने वाला हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का है।
- सबसे अव्वल इस्लाम में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने हज अदा किया।
- सबसे अव्वल इस्लाम की ख़ातिर हिजरत करने वाला जोड़ा हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु और आपकी अहलिया हज़रत रुक़ैया रज़ि अल्लाहु अन्हा हैं।
- सबसे अव्वल इस्लाम की ख़ातिर तीर चलाने वाले हज़रत सअद बिन वक़ास हैं।
- सबसे अव्वल कुबूले इस्लाम का ऐलान हज़रत खुबाब ने किया।
- सबसे अव्वल राहे हक़ में शहीद होने वाले हज़रत यासिर थे।
- सबसे अव्वल अव्वल इस्लाम की ख़ातिर ख़्वातीन में शहीद होने वाली हज़रत सुमैया हैं।
- सबसे अव्वल इस्लामी अलम (झण्डा) हज़रत यज़ीद बिन सलमी के हाथ में लहराया।
- सबसे अव्वल अपनी हयात में अपना वली अहद मुक़र्रर करने वाले

हज़रत अमीर मुआविया थे।

❖ सबसे अव्वल बुलन्द आवाज़ से तिलावत करने वाले हज़रत अब्दुल्लाह थे।
❖ सबसे अव्वल अज़ान देने वाले हज़रत बिलाल हबशी थे।
❖ सबसे अव्वल जन्नतुल–बक़ीअ् में दफन होने वाले हज़रत अस्अद बिन ज़अ हैं।
❖ सबसे अव्वल हिज. का आग़ाज़ हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने किया।
❖ सबसे अव्वल इस्लाम में अमीरुल–मुमिनीन का लक़ब पाने वाले हज़रत उमर फारूके आज़म हैं।
❖ सबसे अव्वल क़ुबूले इस्लाम की वजह से हज़रत ख़ुबाब बिन अदी को सूली पर चढ़ाया गया।
❖ सबसे अव्वल मुसलमान मुहाजिर के घर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हु पैदा हुए।
❖ सबसे अव्वल तरावीह में ८ के बजाए २० रकअतों का एहतमाम हज़रत उमर ने किया।
❖ सबसे अव्वल अन्सार सहाबियों में इंतिक़ाल फरमाने वाले हज़रत कुल्सूम बिन अल–हुदम हैं।
❖ सबसे अव्वल उमर फ़ारूके आज़म ने मुसाफिर ख़ाने बनवाए।
❖ सबसे अव्वल हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अस्अद बिन ज़अ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।
❖ सबसे अव्वल नमाज़े जुमा के लिए अज़ान का आग़ाज़ अव्वल हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया।
❖ सबसे अव्वल अज़ान के लिए मस्जिद में मनार हज़रत मुआविया ने बनवाए। सबसे अव्वल मुआल्लिमे इस्लाम हज़रत मुस्अब मुकर्रर हुए।
❖ सबसे अव्वल मदीना मुनव्वरा में इंतिक़ाल फरमाने वाले मुहाजिर सहाबी हज़रत उस्मान बिन मज़्ऊन थे।
❖ सबसे अव्वल नमाज़े जनाज़ा में चार तक्बीर हज़रत उमर फारूके आज़म ने बढ़ाई।
❖ सबसे अव्वल बैतुल–माल हज़रत फारूके आज़म ने मुकर्रर किया।
❖ सबसे अव्वल ख़ान–ए–काबा में नमाज़ उस दिन पढ़ी गई जिस

दिन हज़रत उमर फ़ारूक़ मुशर्रफ़ बइस्लाम हुए।

❖ सबसे अव्वल ईदुल–फ़ित्र की नमाज़ २ हिज. में हुई।
❖ सबसे अव्वल ईदुज़्ज़ुहा की नमाज़ २ हिज. में पढ़ी गई।
❖ सबसे पहले इस्लाम में कअ़ब बिन अशरफ़ का सर काटा गया।
❖ सबसे अव्वल नमाज़े जुमा १ हिज. में बनी सालिम के मुहल्ले में पढ़ी गई।
❖ सबसे अव्वल बरोज़े क़्यामत फ़रिश्ते हज़रत अबू दरदह से मुसाफ़हा करेंगे।
❖ सबसे अव्वल हौज़े कौसर का पानी पीने वाले हज़रत सुहैब रूमी होंगे।
❖ सबसे अव्वल आसमान पर हसद की वजह से जो गुनहगार हुआ वह इबलीसे लईन था।
❖ सबसे अव्वल रूए ज़मीन पर हाबील व का क़त्ल क़ाबील के हाथों हुआ।
❖ सबसे अव्वल मदीना मुनव्वरा को आबाद करने वाला तबअ् अकबर अस्अद हमीरी था।
❖ सबसे अव्वल मुक़ीस बिन जनाया मुर्तदे इस्लाम हुआ।
❖ सबसे अव्वल हुक्मरां बादशाहे हबश नज्जाशी ने इस्लाम क़ुबूल किया था।
❖ सबसे अव्वल नुबुव्वत का दावा करने वाला मुसलैमा कज़्ज़ाब था।
❖ सबसे अव्वल सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तल्वार) का ख़िताब पाने वाले ख़ालिद बिन वलीद थे।
❖ सबसे अव्वल मुसलमानों को सरीया नख़्ला का माले ग़नीमत हाथ आया जंगे मौता के मौक़ा पर।
❖ सबसे अव्वल आग की पूजा करने वाला क़ाबील था।
❖ सबसे अव्वल दुनिया में ज़ैतून का दरख़्त उगा था।
❖ सबसे अव्वल सर पर ताज पहनने वाला नमरूद था।
❖ सबसे अव्वल कअ़बतुल्लाह में बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ने पर मार खाने वाले हज़रत अबू ज़र ग़िफ़्फ़ारी थे।
❖ सबसे अव्वल हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने इल्मे जफर को ईजाद किया।
❖ सबसे अव्वल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मिंबर बना कर उस पर खुतबा दिया।
❖ सबसे अव्वल **सुबहानल्लाह** जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्श को देख कर कहा था।

- सबसे अव्वल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जिस्म में रूह फूंके जाने पर अल्हम्दुलिल्लाह कहा।
- सबसे अव्वल अल्लाहु अकबर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल का फ़िदया देख कर कहा था।
- सबसे अव्वल -ला इलाहा इल्लल्लाह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तूफ़ान देख कर कहा था।
- सबसे अव्वल सुबहाना रब्बियल–आला हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने कहा था।
- सबसे अव्वल हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अरबी ज़बान बोले थे।

मशहूर हस्तियों के नाम व अल्क़ाब

नम्बर शुमार	इस्मे गिरामी	अल्क़ाब
१.	हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम	इमामुल–अंबिया
२.	हज़रत आदम अलैहिस्सलाम	अबुल–बशर
३.	हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम	ख़लीलुल्लाह
४.	हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम	ज़बीहुल्लाह
५.	हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम	ख़लीफ़तुल्लाह
६.	हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम	कलीमुल्लाह
७.	हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम	रूहुल्लाह
८.	हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम	इस्राईल
९.	हज़रत नूह अलैहिस्सलाम	जुन्नून
१०.	हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम	हकीमुल–हुकमा
११.	हजरत इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु अन्हु	साहिबुज़्ज़मां
१२.	हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु	सदाक़त
१३.	हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु	अदालत
१४.	हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु	सख़ावत जुन्नूरैन
१५.	हज़रत अली रज़ि अल्लहु अनहु	शुजाअत–अस्दुल्लाह
१६.	हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु	शहीदे आज़म
१७.	हज़रम अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु	सैय्यदुश्शुहदा

१८.	हज़रत जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु	ज़ुल–जनाहीन (दो बाज़ू वाले) तैयार (उड़ने वाले)
१९.	हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हु	सैफुल्लाह
२०.	हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि अल्लाहु अन्हु	महबूबे रसूल
२१.	हज़रत साबित बिन कैस रज़ि अल्लाहु अन्हु	ख़तीबे रसूल
२२.	हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बकर सिद्दीक़ – रज़ि अल्लाहु अन्हु	ज़ातुन्नताक़तैन
२३.	हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु	हुब्बे रसूल
२४.	हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि अल्लाहु अन्हु	हवारीए रसूल
२५.	हज़रत ख़ुबैब रज़ि अल्लाहु अन्हु	बलीगुल–अर्ज़
२६.	हज़रत हन्ज़ला रज़ि अल्लाहु अन्हु	ग़ुसैलुल–मलाइका
२७.	हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि.	मेज़बाने रसूल
२८.	हज़रत सलमान फार्सी रज़ि अल्लाहु अन्हु	साहिबुल–किताब
२९.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि.	साहिबे तुहूर
३०.	उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा	उम्मुल मसाकीन
३१.	हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु	अबुल–ख़ुलफ़ा
३२.	हज़रत आइशा बिन अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हा	हुमैरा–सिद्दीक़ा
३३.	हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा बिन्ते रसूल	ख़ातूने जन्नत
३४.	शाह हबश अस्महा	नज्जाशी

बाज़ हस्तियों के असल नाम

नम्बर शुमार	इस्मे गिरामी	असल नाम
१.	अल्लाह तआला का सिर्फ़ एक ज़ाती नाम अल्लाह है	बाक़ी सिफ़ाती नाम ५ हज़ार हैं
२.	हुज़ूर पाक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अल्लाह के नज़दीक अहमद है।	और कुरआने करीम में मुहम्मद आया है बाक़ी सिफ़ती नाम ९९ हैं।
३.	हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम	अब्दुल्लाह
४.	हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम	अब्दुर्रहमान

५.	हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम	अब्दुर्रज़्ज़ाक़
६.	हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम	अब्दुल–जब्बा
७.	हुज़ूर के पर दादा हाशिम	अम्
८.	हज़रत अब्दुल–मुत्तलिब	शै
९.	हज़रत अबू तालिब	अब्दुल–मुनाफ़
१०.	हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु	अब्दुश्शम्स इस्ला के बाद अब्दुल्ला
११.	हज़रत अबू ज़र गिफ़्फ़ारी	जुन्दुब बिन जनाद
१२.	हज़रत सलमान फार्सी	मुआविया बिन बूज़ख़्श
१३.	हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी	ख़ालिद बिन ज़ैद अन्सारी
१४.	हज़रत अबू सुफ़ियान	सख़ बिन हर्ब अल–कर्शी
१५.	हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूब	अब्दुल्लाह बिन अम्र
१६.	हज़रत अबू तलहा	ज़ैद बिन सुहैल अन्सारी
१७.	हज़रत अबू दरदा	उवैमिर बिन आमिर
१८.	हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह	आमिर बिन अब्दुल्लाह
१९.	हज़रत उम्मे हानी	फ़ाख़्ता या आतिला
२०.	हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन	अली बिन हुसैन
२१.	हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा	नौमान बिन साबित
२२.	हज़रत इमाम शाफ़ई	मुहम्मद बिन इद्रीस
२३.	हज़रत इमाम हंबल	अहमद बिन हंबल
२४.	हज़रत इमाम बुख़ारी	मुहम्मद बिन इस्माईल
२५.	हज़रत इमाम मुस्लिम	मुहम्मद बिन हज्जाज
२६.	हज़रत दाऊद	सुलेमान बिन–अशअस
२७.	हज़रत इमाम तिर्मिज़ी	मुहम्मद बिन ईसा अत्तिर्मिज़ी
२८.	हज़रत इमाम निसई	अहमद बिन शुऐब
२९.	हज़रत इब्ने माजा	मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा
३०.	हज़रत इमाम बैहक़ी	अहमद बिनुल–हुसैन
३१.	हज़रत इमाम जौज़ी	अब्दुर्रहमान बिन अली
३२.	इब्ने ख़ल्दून	अब्दुर्रहमान बिन ख़ल्दून
३३.	इब्ने हिशाम	अब्दुल–मालिक बिन हिशाम
४३.	अबू जहल	अमर बिन हिशाम
३५.	हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लहु अन्हा	हुमै

३६.	हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा	हिन्दह
३७.	हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश	बर्रह
३८.	हज़रत जुवैरिया	बर्रह
३६.	हज़रत उम्मे हबीबा	रमल्ला या हिन्दह
४०.	अबू लहब	अब्दुल–उज़्ज़ा

बाज़ पैग़म्बरों के पेशे

नम्बर शुमार	इस्मे गिरामी	असल नाम
१.	हज़रत आदम अलैहिस्सलाम	खेती बाड़ी
२.	हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम	बढ़ई
३.	हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम	कपड़ा बुनना
४.	हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम	ज़ेरह–लोहा
५.	हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम	काश्तकारी
६.	हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम	तीर बनाना
७.	हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम	कम्बल बनाना
८.	हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम	चटाइयाँ
६.	हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम	बकरियां, मवेशी चराना
१०.	हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम	खेती बाड़ी

बेमिसाल हस्तियाँ

नम्बर शुमार		
१.	फ़रिश्तों में	हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम
२.	तमाम अंबिया में	हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
३.	सदाक़त में	हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु
४.	अदालत में	हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु
५.	सख़ावत में	हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु
६.	शुजाअत में	हज़रत अली ख़ुदा रज़ि अल्लाहु अन्हु
७.	शहादत में	हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु

८.	इताअत व शराफ़त में	हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा
६.	इल्मे फरासत में	हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा
१०.	रियाज़त में	हज़रत राबेआ बसरी रज़ि अल्लाहु अन्हा
११.	ख़िलाफ़त में	हारून रशीद रज़ि अल्लाहु अन्हु
१२.	हिक्मत में	लुक़माने हकीम
१३.	अइम्मा में	हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु
१४.	फ़िक़्ह में	हज़रत इमाम जा़फर सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु
१५.	दराज़ीए उम्र में	हज़रत नूह अलैहिस्सलाम
१६.	सब्र में	हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम
१७.	गिरया में	हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम
१८.	ख़ूबसूरती में	हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम
१६.	रज़ा जोई में	हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम
२०.	तख़्त शाही में	हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम
२१.	मुजाहिदीन में	सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी
२२.	फ़ल्सफ़–ए–इस्लाम में	इमाम ग़ज़ाली
२३.	कसबे हलाल में	सुल्तान नासिरुद्दीन
२४.	मर्दानगी में	मुहम्मद बिन क़ासिम
२५.	हमला आवरी में	महमूद ग़ज़नवी
२६.	फ़िक्र में	डॉक्टर अल्लामा इक़बाल
२७.	शाइरी में	हज़रत शैख़ सअ्दी
२८.	फुतूहात में	सिकन्दरे आज़म
२६.	अय्याशी में	मुहम्मद शरनगीले
३०.	सयाहत में	इब्ने बतूता
३१.	दानिश में	अरस्तून
३२.	पुख़्ता इरादों में	नेपोनलीन बूनापार्ट
३३.	ख़ूंरेज़ी में	चंगेज़ ख़ां
३४.	क़त्ल गरी में	रोहेला
३५.	मुसव्विरी में	मानी
३६.	मौसीक़ी में	तान सेन
३७.	हाज़िर जवाबी में	बीरबल
३८.	मज़ाहिया निगारी में	मुल्ला नसीरुद्दीन /मुल्ला दो पियाज़ा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अट्ठारहवां बाब

निकाह का बयान

इंसान की नस्ल बढ़ाने का दारो मदार निकाह पर है। दूसरी वज्हे नफ़्सानी ख़्वाहिशात को हलाल तरीक़े से पूरा करना भी मक़्सूद है। अगर इंसान बेग़ैर निकाह के बच्चे पैदा करेगा तो वह हराम होगी। उसके अहकामे क़ुरआन में हैं। रूसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बार–बार निकाह की तल्क़ीन फरमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम में जो निकाह की इस्तिताअत रखता हो वह निकाह कर ले क्योंकि निकाह ग़ैर मर्द, औरत पर बुरी नज़र और बुरे कामों को रोकने वाला ज़रिया है। अगर यक़ीन हो कि निकाह न करने से बुरा काम हो जाएगा वह फौरन निकाह कर ले।

निकाह के लिए मुस्तहब बातें :

(१) निकाहे एलानिया हो। (२) निकाह से क़ब्ल खुतबा पढ़ना। (३) मस्जिद में हो। (४) जुमा के बाद हो। (५) आदिल के सामने हो। (६) औरत माल, इज़्ज़त, दौलत में मर्द से कम हो। (७) चाल चलन अख़्लाक़, तक़्वा परहेज़गारी हसब, नसब का ख़्याल रखा जाए। (८) ईजाबे क़ुबूल हो यानी मर्द कहे मैंने तुम्हें अपनी ज़ौजियत में लिया। यानी माज़ी का सेग़ा आना ज़रूरी हैं इसी तरह औरत भी कहे मैंने क़ुबूल किया तब ही मक़्बूल होगा अगर दोनों में ईजाबे क़ुबूल न होगा तो निकाह भी न होगा। क्योंकि निकाह के लिए दोनों औरत और मर्द का राज़ी होना लाज़मी है। निकाह के लिए आक़िल व बालिग़ होना ज़रूरी है। पागल नाबालिग़ बच्चे का निकाह न होगा। अल्बत्ता नाबालिग़ का निकाह उसके वली, मसलन वालिदैन, चाचा, बड़ा भाई वग़ैरह सरपरस्त हो तो उसकी इजाज़त से निकाह जाइज़ है।

निकाह के लिए गवाह :

ईजाबे क़ुबूल के लिए गवाह का होना ज़रूरी है कम अज़ कम मर्द या दो औरतें गवाह हों गवाह के लिए भी आक़िल व बालिग़ होना ज़रूरी है पागल नाबालिग़ की गवाही में निकाह न होगा।

मुसलमान मर्द, मुसलमान औरत के लिए मुस्लिम गवाह हों। गवाह को ईजाबे कुबूल के वक़्त वहां हाज़िर होना ज़रूरी है।

निकाह के लिए इज़्न और वकालत :

औरत से इज़्न (इजाज़त) लेते वक़्त गवाह की ज़रूरत नहीं मगर निकाह पढ़ाते वक़्त गवाह होना ज़रूरी है कि अगर उस ने निकाह से इंकार कर दिया कि मेरा इज़्न नहीं था तो गवाह उसे साबित कर सकते हैं। ईजाबे कुबूल के लिए गवाहों के अलावा वकील की मौजूदगी भी ज़रूरी है कि औरत की या मर्द की जानिब से वकील बना कर ईजाबे कुबूल की रस्म पूरी हुई। इसी तरह ईजाबे कुबूल के वक़्त वालिद का नाम लिया जाए कि फुलां बिन फुलां और फुलां बिन्ते फुलां। ईजाबे कुबूल के वक़्म महर भी मुक़र्रर कर ले। उसमें भी दोनों की राय ले ले। अगर लड़की बालिग़ा हो तो उसकी मर्ज़ी ज़रूरी है वली को अख़्तियार नहीं कि बेग़ैर दोनों मर्द और औरत की रज़ामन्दी के निकाह कराए।

मुहर्रमात यानी जिन से निकाह हराम है :

मर्द के लिए वह औरतें मुहर्रमात हैं जिनमें निकाह हराम है एक वह जो नसब से हराम हो। जैसे मां, बेटी, फूफी, ख़ाला, भतीजी, भांजी, पोती, नवासी, सास, इसी तरह रज़ाई (दूध शरीक) बहन दोनों ने एक ही औरत का दूध पिया हो। वह औरत उसकी मिल्क में हो जैसे बांदी वग़ैरह। एक मुसलमान ग़ैर मुस्लिम औरत से निकाह नहीं कर सकता जब तक उसे कलिमा पढ़ा कर मुसलमान न करे उसके लिए दोनों का मुस्लिम होना ज़रूरी है। एक साथ दो बहनें भी निकाह में नहीं रख सकता।

महर का बयान :

निकाह के वक़्त महर भी वाजिब है जो कम अज़ कम दस दृहम है उस से कम नहीं हो सकता। जिस की आज के दौर में तक़रीबन दो रुपये बारह आने अड़तालीस पैसे होती है (एक दृहम की क़ीमत है) चाहे सिक्के की सूरत में हो या चांदी और सोना की सूरत में हो या उस क़ीमत का कोई सामान दिया जा सकता है ग़रज़ जो भी जितना भी महर बांधा गया वह वाजिबे महर है बाद में कमी या ज़्यादा नहीं हो सकती। चाहे मर्द, औरत में से जिसका इंतिक़ाल हो तो भी महर में कमी ज़्यादती नहीं हो सकती।

अल्बत्ता औरत महर मुआफ़ कर दे तो मुआफ़ हो सकता है। अगर लड़की नाबालेग़ा हो उसका बाप वग़ैरह मुआफ़ करना चाहे तो कर सकता है या लड़की बालेग़ा हो और उसकी मर्ज़ी शामिल हो तो महर मुआफ़ हो सकता है। अगर औरत मर्द में मुहब्बत हुई और निकाह हो गया तो चाहे दूसरे दिन ही क्यों न तलाक़ हुई हो महर वाजिब होगा।

तलाक़ का बयान :

निकाह से औरत शौहर की पाबन्द होती है इस पाबन्दी से आज़ादी को तलाक़ कहा जाता है। तलाक़ की दो सूरतें हैं। एक बाइन दूसरी रजई।

बाइन का मतलब है जिस वक़्त बाइन तलाक़ दी गई औरत उसी वक़्त ज़ौजियत से आज़ाद हो जाती है यानी मर्द ने एक साथ तीन तलाक़ें दीं वह निकाह से बाहर हो जाती है और उसी वक़्त से उस पर इद्दत वाक़े हो जाती है और तीन माह यानी तीन हैज़ तक वह इद्दत में रहती है और अगर दोबारा निकाह में आना चाहती तो हलाला करके दोबारा निकाह साबेक़ा शौहर से कर सकती है दूसरी तलाक़े रजई यह है कि तलाक़ की इद्दत गुज़रने के बाद ज़ौजियत से ख़ारिज होती है यानी इस दौरान वह दोबारा तज्दीदे निकाह करके ज़ौजियत में दाख़िल हो सकती है।

तलाक़ की शरई इजाज़त :

यूं तो अल्लाह के नज़्दीक तलाक़ सबसे बुरा जाइज़ फ़ेअ़्ल है मगर बेवजह मना है। अगर शरई वजह हो तो मुबाह है बल्कि बाज़ औक़ात तलाक़ मुस्तहब है क्योंकि आगे चल कर कहीं बात आगे बढ़ कर फसाद बरपा न हो और शौहर को ईज़ा पहुंचने का सबब न बन जाए।

अगर औरत बद चलन हो। शौहर की नाफरमान हो नमाज़ न पढ़ती हो, या तो शौहर नामर्द हो, पागल हो, अगर औरत बेजा नाजायज़ फरमाइश करे। ऐसे में तलाक़ की इजाज़त है। बल्कि वाजिब है।

तलाक़ के लिए शराइत :

तलाक़ के लिए शर्त है कि शौहर आक़िल व बालिग़ हो। नाबालिग़ या मज्नून न हो तलाक़ देने का अह्ल हो। अगर नाबालिग़ मज्नून हो तो वालिदैन तलाक़ दिला सकते हैं यानी वालिदैन भी अपनी तरफ़ से तलाक़

दे सकते हैं। नशा वाले से तलाक़ हो जाएगी कि वह आक़िल के हुक्म में आता है। तलाक़ में औरत की जानिब से कोई शर्त नहीं नाबालिग़ा हो। मज्नून पागल हर हाल में तलाक़ हो जाएगी। अगर अल्फ़ाज़े तलाक़ हज़्ल किए यानी तलाक़ के दूसरे मानी बनते हों जिसका मतलब तलाक़ हो तो भी तलाक़ होगी। अगर गूंगे ने इशारे से तलाक़ दी जबकि वह लिखना पढ़ना न जानता हो तब तलाक़ होगी अगरचे लिखना पढ़ना जानता हो फिर भी इशारे से तलाक़ दी तो तलाक़ न होगी। अगर मज़ाक़ में, सह्व, या ग़फ़्लत में कहा कि मैंने सिर्फ़ डराने धमकाने के लिए ऐसा कहा था तो इस सूरत में भी तलाक़ होगी। अल्बत्ता ग़शी की हालत में तलाक़ न होगी। अगर ज़बान से तलाक़ न कहा मगर किसी काग़ज़ पर लिख कर भेजा तब भी तलाक़ होगी जबकि वह लिफ़ाफ़ा चिट्ठी औरत को न भेजे तब भी तलाक़ होगी। बल्कि तलाक़ का लफ़्ज़ लिखा गया उसी वक़्त से इद्दत शुरू होगी। या चिट्ठी औरत को मिली मगर उस ने पढ़ा नहीं और तहरीर उस तक पहुंच गई तब भी तलाक़ होगी। अगर मज़ाक़ से तलाक़ लफ़्ज़ लिख दिया तब भी तलाक़ होगी। (तफ़्सीली मसाइल बहारे शरीअत में देखें)।

अगर शौहर ने रू–ब–रू ज़बान से तीन मरतबा तलाक़ तलाक़ तलाक़ कह दिया तो तलाक़ बाइन होगी और औरत पर उसी वक़्त से इद्दत शुरू होगी। अगर एक मरतबा तलाक़ कहा तो रजई तलाक़ होगी। दूसरी मरतबा, फिर तीसरी मरतबा तलाक़ दी तो वह रजई से बाइन में तब्दील होगी कि बाइन के लिए तीन तलाक़ का होना ज़रूरी है अगर कहा कि कल से तुझे तलाक़ या दूंगा तो दूसरे दिन सुबह होते ही उस पर तलाक़ वाक़े होगी। अगर कहा फुलां–फुलां तारीख़ से तुझे तलाक़ है तो उसी तारीख़ से उस पर इद्दत वाजिब हो जाती है।

नोट : उसके अलावा और अगर कोई मस्अला हो तो किसी मुत्तक़ी, परहेज़गार मुफ़्ती से फतवा हासिल करे।

तलाक़ की इद्दत :

तलाक़ के फौरन बाद औरत पर तलाक़ वाजिब हो जाती है और एक मुक़र्ररह शरई मुद्दत तक इंतिज़ार करना होगा।

इद्दत के शराइत :

इद्दत के लिए शराइत हैं कि किसी औरत को हैज़ नहीं आया या इतनी उम्र को पहुंच चुकी कि बालिग़ हो चुकी हो तो इद्दत की मुद्दत तीन माह पकड़ी जाएगी। जिस माह में जिस तारीख़ को तलाक़ हुई तो चांद के हिसाब से तीन माह इद्दत के लिए शुमार किए जाएंगे। यानी नव्वे दिन पूरे होने चाहिए। अगर किसी औरत को हैज़ आया मगर बाद में नहीं आया और सन्ने बुलूग़ को न पहुंची तो भी उसकी मुद्दत जब तक तीन हैज़ न आए इद्दत पूरी न होगी। अगर उस हिसाब से दर्मियान में हैज़ आ गया तो अब उस हैज़ के हिसाब से इद्दत तीन हैज़ की मुद्दत पूरी करनी होगी। अगर हैज़ की हालत में तलाक़ हुई तो वह इद्दत न गिनी जाएगी बल्कि उसके बाद पूरे तीन हैज़ ख़त्म होने पर ही इद्दत पूरी होगी।

हामिला की इद्दत :

औरत अगर हामेला हो तो उसकी इद्दत वज़अ़े हमल है। वज़अ़े हमल से इद्दत पूरी होने के लिए कोई ख़ास मुद्दत मुक़र्रर नहीं है। शौहर की मौत या तलाक़ की इद्दत जिस वक़्त बच्चा पैदा हुआ इद्दत ख़त्म हुई। अगरचे मौत या तलाक़ के बाद एक मिनट ही में क्यों न पैदा हुआ हो। मौत के बाद अगर हमल क़रार पाया तो वह इद्दत वज़अ़े हमल से पूरी न होगी बल्कि दोनों की इद्दत होगी। अगर औरत रजई की इद्दत में थी और मर्द उस इद्दत में मर गया तो औरत मौत (बेवगी) की इद्दत पूरी करे ताकि तलाक़ की इद्दत भी ख़त्म हो। अगर बाइन तलाक़ दी थी यानी तीन तलाक़ एक साथ दी तो तलाक़ की इद्दत पूरी करे जबकि सेहत व तन्दुरुस्ती में तलाक़ दी हो अगर मरज़ में दी हो तो दोनों इद्दतें पूरी करनी होंगी। यानी बेवगी के चार माह दस दिन में तीन हैज़ के दिन पूरे हो जाएं मगर चार माह दस दिन में तीन हैज़ अभी पूरे न हुए तो उसे पूरा करे तीन हैज़ और पूरा होने का इंतिज़ार करना होगा। ग़रज़ तलाक़ के तीन माह की इद्दत हो या बेवगी के चार माह दस दिन इद्दत के हों दोनों इद्दत के दिनों में तीन हैज़ का होना वाजिब है।

हलाला :

हलाला उसे कहते हैं कि तलाक़ की इद्दत पूरी होने के बाद और किसी दूसरे मर्द के साथ निकाह करे फिर वह शौहर तलाक़ दे या मर जाए तो उसकी इद्दत पूरी होने पर साबेक़ा शौहर से यानी पहले शौहर से निकाह कर सकती है मगर हलाला के लिए दूसरे शौहर से कम अज़ कम एक मरतबा सोहबत लाज़मी है वरना हलाला न होगा। किसी औरत से निकाह फासिद करके तीन तलाक़ें दीं तो हलाला की हाजत नहीं बेग़ैर हलाला उससे निकाह कर सकती है।

बेवह की इद्दत :

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो औरत अल्लाह और क़्यामत के दिन पर ईमान रखती है उसे हलाल नहीं कि किसी की मैयत पर तीन रातों से ज़्यादा सोग मनाए मगर शौहर की मौत पर चार महीने दस दिन सोग मनाए। सोग करने का मतलब है इद्दत के दौरान रंगा हुआ गहरा कपड़ा न पहने, सुर्मा न लगाए और इत्र या ख़ुशबूदार तेल इस्तेमाल कर सकती न मेंहदी लगा सकती है। सोने चांदी के ज़ेवरात न पहने। ज़ाफरानी, गीरवां या सुर्ख़ रंग के कपड़े इस्तेमाल न करे कि जिस से ज़ीनत की झलक आए। अल्बत्ता जिस कपड़े का रंग पुराना हो गया या सफेद या काले रंग के कपड़े पहन सकती है। सफेद सबसे बेहतरीन रंग है जो अमन और सन्जीदगी की निशानी है। सोग का मतलब है अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाना, ज़ेब व ज़ीनत से परहेज़ करना है लेकिन इद्दत की हालत में मज्बूरी की वजह से बाज़ बातों की इजाज़त है। जैसे आंख के दर्द की वजह से दवाई के तौर पर सुर्मा लगाना लेकिन उसके लिए भी शर्त है कि दिन के बजाए रात में लगाए। सर में दर्द हो रहा है तो तेल लगाना ज़रूरी हो तो लगा सकती है। मौत का सोग मनाना हर आक़ेला व बालेग़ा पर ज़रूरी है चाहे तलाक़ का हो या मौत का।

बिस्मिल्लाहिर रह्मानिर रहीम

उन्नीसवां बाब

उम्मते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के 73 फ़िर्क़े

नम्बर शुमार	फ़िर्क़े	तादाद
१.	शीआ़	३२
२.	ख़ार्जी	१५
३.	मुर्जिया	१२
४.	मोतज़ेला	६
५.	नज्जारिया	१
६.	ज़र्रारिया	१
७.	कलाबिया	१
८.	मुशब्बह	३
६.	जहमीया	१
१०.	अह्ले सुन्नत व जमाअत	१
११.	कुल गरोह	७३

चन्द फ़िर्क़ों की मुख़्तसर मालूमात :

तिर्मिज़ी में मरवी है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ज़रूर–ज़रूर मेरी उम्मत पर वह हालात आएंगे जो बनी इस्राईल पर थे जैसे एक जूती दूसरी की हम शक्ल होती है। जिस तरह बनी इस्राईल ७२ फ़िर्क़ों में बट गये मगर मेरी उम्मत ७३ फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो जाएगी और उनमें सिर्फ़ एक नजात पाने वाला है और वह अह्ले सुन्नत व जमाअत है बाक़ी फ़िर्क़े जहन्नमी होंगे।

अह्ले सुन्नत व जमाअत :

अह्ले सुन्नत व जमाअत वह हैं जो खुसूसन रसूलुल्लाह के पैरू हैं जिन

उमूर में कुरआन व अहादीस ख़ामोश हैं उसके बारे में खुलफ़ाए ...दीन के मुत्तफ़ेक़ा फ़ैसलों के मुताबिक़ अमल करते हैं। यह जमाअत चारों मस्लक के इमामों पर अक़ीदा रखती है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरे बाद मेरी आल व अस्हाब फिर औलियाए किराम बुज़ुर्गाने दीन को थामे रहो। गोया तुमने अल्लाह की रस्सी को थामा। इसी हदीस को मद्दे नज़र रखते हुए अह्ले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा है। सुन्नत इस तरीक़े को कहते हैं जिसको रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शुरू फरमाया और उस पर गामज़न रहे और जमाअत उसे कहते हैं जिसने चारों खुलफ़ा की ख़िलाफ़त को माना और उस पर इत्तिफ़ाक़ किया।

शीआ : उनमें कुछ ३२ छोटे–छोटे फ़िर्क़े हैं जिनमें बोहरी, बुलोची, ईरानी, राफ़ज़ी वग़ैरह यह खुल्फ़ाए राशिदीन में सिर्फ़ हज़रत अली को फ़ौक़ियत देते हैं। शीआ की एक शाख़ राफ़ज़ी है वज्हे तस्मीया यह है कि हज़रत ज़ैद बिन अली (हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन) ने जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर से दोस्ती का एतेराफ़ किया तो उन लोगों ने हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन का साथ छोड़ दिया तो आपने फरमाया जिन लोगों ने मुझे छोड़ा वह राफ़ज़ी कहलाया जाएगा। दूसरी वजह यह है वह लोग हज़रत अली को हज़रत उस्मान से अफ़्ज़ल क़रार देते हैं। शीआ का दूसरा गरोह हज़रत अली के बारे में ज़्यादा ग़ुलू करता यानी हज़रत अली के अन्दर रुबूबियत और नुबुव्वत की सिफ़ात को तस्लीम करता है। उस गरोह की आबादी ज़्यादा तर कूफ़ा में है उसके अलावा राफ़ज़ी में बारह फ़िर्क़े हैं। (१) बनानिया (२) तैयारिया (३) मन्सूरिया (४) मुग़ीरिया (५) ख़िताबिया (६) मुअम्मरीया (७) बज़ीईया (८) मुफ़ज़्ज़ेला (९) मुतनासे... (१०) शरीईया (११) सबीया (१२) मुफ़व्वेज़ा।

यह लोग हज़रत अली को तमाम सहाबा पर तरजीह देने में मुबा... हैं। उनका अक़ीदा है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अली का मरतबा है। जिन लोगों ने हज़रत अली को ... मानने से इंकार किया वह मुर्तद हो गये वह छेः अफ़राद यह हैं। (१) ... अम्मार रज़ि अल्लाहु अन्हु (२) हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद (३) हज़रत सुलेमान फ़ार्सी (४) दो शख़्स और ख़ुद हज़रत अली, उनका यह शी...

है कि हज़रत अली ने ख़ौफ़ की हालत में कहा मैं इमाम नहीं हूं दूसरा क़ौल यह है कि जिस ने हज़रत अली से जंग की वह काफिर है।

ख़ारजी : इस गरोह की ख़ासियत यह है कि उसने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया था उन्होंने अबू मूसा अशअ़री और उमर बिन–आस के हुक्म का इंकार किया था और हज़रत अली ने दोनों का हुक्म मान लिया तो ख़ार्जियों ने कहा कि हुक्म देना तो सिर्फ़ अल्लाह तआला के साथ मख़्सूस है। ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने का हक़ किसी को नहीं इसलिए यह लोग हज़रत अली का साथ छोड़ कर मक़ामे हरूर में जा कर बस गये। दूसरी वजह यह भी है कि वह दीन से ख़ारिज हो गये थे। यह लोग अज़ाबे क़ब्र और हौज़े कौसर पर ईमान नहीं रखते और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत पर यक़ीन रखते एक जमाअ़त से नमाज़ नहीं पढ़ते। ताख़ीर से नमाज़ अदा करते हैं। बेग़ैर चांद देखे रोज़े और इफ़्तार को जाइज़ समझते हैं। बेग़ैर वली के निकाह करने को जाइज़ समझते हैं, सूद को जाइज़ समझते हैं। चमड़े के मोज़ों पर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं मानते। उस फ़िर्क़े के लोग ज़्यादा तर जज़ीर–ए–अमान, हज़रे मौत के इतराफ़ में हैं उनके १५ फ़िर्क़े हैं एक फिरक़ा नज्द में बसा है।

ग़ालिया : ख़ारजी में एक फ़िक़–ए–ग़ालिया है जिनका अक़ीदा है कि हज़रत अली तमाम अंबिया से अफ़ज़ल हैं उनका यह भी अक़ीदा है कि हज़रत अली ज़मीन में दफ़न नहीं बल्कि वह अब्र में मौजूद हैं और आख़िरी ज़माने में फिर आएंगे और काफिरों को क़त्ल करेंगे। उनका यह भी दावा है कि हज़रत अली नबी हैं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने वही पहुंचाने में ग़लती की। अल्लाह तआला हमें ऐसे फ़िर्क़ों से महफ़ूज़ रखे जो अल्लाह और रसूल और क़ुरआन के मुंकिर हैं।

तैयारा : यह भी एक ऐसा फ़िर्क़ा है जो अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन जाफर तैयारे मन्सूब है उनका अक़ीदा है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की रूह अल्लाह की रूह थी जो आदम के अन्दर हुलूल कर गई। उसी गरोह का कहना है कि इंसान के मरने के बाद जब रूह दोबारा दुनिया में आती है तो गुनहगारों की रूहें कीड़ों मकोड़ों की नजासत में जनम लेती हैं या तो लोहे, कच्चे बर्तनों की शक्ल अख़्तियार करती हैं और फ़िर अपने

गुनाहों की सज़ा इस तरह पाती हैं कि आग में जलाई जाती हैं। इस तरह कूटा पीटा जाता है। और ज़लील व ख़्वार होने के लिए उन पर जिस्मानी अज़ाब होता रहता है।

मुग़ीरीया : यह फ़िर्क़ा मुग़ीरह बिन सअद की तरफ़ मन्सूब है। जिसने नुबुव्वत का दावा किया था उसने यह भी दावा किया था कि वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है।

मन्सूरिया : यह फ़िर्क़ा मन्सूर बिन अबू मन्सूर से निस्बत रखता है उसका दावा था कि उसे आसमानी मेअ्राज हुई थी। और अल्लाह तआला ने मेरे सर पर हाथ फेरा था। अल्लाह के पैग़म्बरों का सिलसिला ख़त्म नहीं होगा। जन्नत व दोज़ख़ की कोई हक़ीक़त नहीं उनके गरोह का अक़ीदा है कि जो शख़्स हमारे चालीस मुख़ालेफ़ीन को क़त्ल करेगा वह जन्नती होगा।

ख़िताबिया : उनका अक़ीदा है कि हर ज़माने में दो पैग़म्बर होते हैं एक नातिक़ दूसरा ख़ामोश हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नातिक़ थे और हज़रत अली ख़ामोश।

शरीईया : उनका अक़ीदा है कि अल्लाह तआला पांच हस्तियों में महलूल है। (१) नबी अलैहिस्सलाम। (२) अली (३) अब्बास (४) जाफर (५) अक़ील (नऊज़ुबिल्लाह)

सुलैमानिया : यह फ़िर्क़ा सुलैमान बिन कसीर की तरफ़ मन्सूब है इस फ़िर्क़ा का गुमान है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु और उमर फ़ारूक़ की बैअ़त ग़लत हुई। क्योंकि जब उन से बैअ़त ली गई तो हज़रत अली इमाम थे और खुद अली ने ख़िलाफ़त छोड़ दी थी। यह दोनों हज़रात हज़रत अली से बैअ़त के मुस्तहिक़ न थे। उम्मते मुहम्मदीया ने अम्रे अस्लह को छोड़ दिया।

नईमीया : यह फ़िर्क़ा नईमीया बिन नईम बिन यमान की तरफ़ मन्सूब है यह फ़िर्क़ा हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु से तबर्रा (नफ़रत) करते हैं उन में बाज़ तो आप रज़ि अल्लाहु अन्हु को (मआज़ल्लाह) काफ़िर भी कहते हैं।

मुर्जीया : मुर्जीया के १२ फ़िर्क़े हैं :

(१) जेहमीया (२) सालेहीया (३) शिमरिया (४) यूनिसया (५) यूनानिया (६) नज्जारिया (७) गैलानिया (८) शैबा (६) हन्फ़ीया (१०) मुआविया (११) मुर्सीया (१२) करामिया।

मुर्जीया की वज्हे तस्मिया यह है कि इस फ़िर्के का ख़्याल है। ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह का क़ाइल ख़्वाह कितने भी गुनाह करे मगर वह दोज़ख़ में नहीं जाएगा। ईमान कौल का नाम है अमल का नहीं।

(१) **जेहमीया :** यह फ़िर्क़ा जेहम से मन्सूब है इस फ़िर्क़ा का दावा है कि कुरआन मख़्लूक़ है। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम नहीं किया। अल्लाह तआला किसी से कलाम कर ही नहीं सकता। न उसे देखा जा सकता है। न उसका कोई मक़ाम है न अर्श है न कुर्सी न जन्नत न दोज़ख़। जब जन्नत दोज़ख़ पैदा हूंगी तो फना हो जाएंगी। उन्होंने अल्लाह तआला की तमाम सिफ़ात से इंकार किया।

(२) **सालेहा :** इसका अक़ीदा है कि मारिफ़त का नाम ईमान और जिहालत का नाम कुफ़्र है।

(३) **शिमरिया :** यह फ़िर्क़ा अबू शिमर की तरफ़ मन्सूब है उस गरोह का ख़्याल है ईमान, मारिफ़त, ख़ुज़ूअ् व ख़ुशूअ् और मुहब्बत के साथ–साथ ज़बान से इक़रार करना फ़र्ज़ है कि अल्लाह के सिवा कोई मिस्ल नहीं। उन तमाम मज्मूए का नाम ईमान है।

(४) **यूनुसिया :** उनका अक़ीदा है कि अल्लाह तआला से मुहब्बत और ख़ुशूअ् व ख़ुज़ूअ् का नाम ईमान है जिसने उन बातों में से एक बात भी तर्क कर दी वह काफिर हो गया।

(५) **यूनानिया :** यह फ़िर्क़ा यूनान से मन्सूब है उनका भी यही अक़ीदा है कि अल्लाह और रसूल व मारिफ़त का इक़रार करने का नाम ईमान है।

(५) **नज्जारिया :** उनका अक़ीदा भी यूनानिया की तरह है इसी तरह ग़ैलानिया, शबीबीया, शाज़िया और हन्फ़ीया तमाम में यक्सानियत पाई जाती है।

मोतज़ेला या क़द्रीया :

उसकी वज्हे तस्मिया यह है कि यह लोग हक़ से किनारा कश हो गये थे। दूसरी बात यह कि मुसलमानों में गुनाहे कबीरा के मुर्तकिब के बारे में इख़्तिलाफ़ था। बाज़ का क़ौल था कि वह काफिर है। बाज़ का क़ौल था कि गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब न काफिर है न मोमिन इस वजह से फ़िर्क़ा मोतज़ेला अलग हो गया। दूसरी वजह यह है कि यह लोग हसन बसरी की मज्लिस से अलग हो गये थे। तीसरा क़ौल है कि मोमिन गुनाहे कबीरा के

इर्तिकाब से अगरचे काफिर नहीं होता लेकिन ईमान से खारिज हो जाता है।

नज्जारिया : यह फ़िर्क़ा हुसैन बिन उमर नज्जार की तरफ़ मन्सूब है। नज्जारिया बन्दों के फ़ेअ्ल का हक़ीक़ी फाइल अल्लाह को भी क़रार देता है। नज्जार मस्लक के पैरू ज़्यादा तर काशान में आबाद हैं।

ज़र्रारिया : यह फ़िर्क़ा ज़र्रार बिन अमर से मन्सूब है इस फ़िर्क़ा का नज़रिया यह था कि क़ुदरत क़ादिर का जुज़ है और यह फ़ेअ्ल के सादिर होने से क़ब्ल होती है।

हज़रत इब्ने मस्ऊद और हज़रत उबय बिन कअब की क़िरअतों का मुंकिर है।

कुलाबिया : यह फ़िर्क़ा अबू अब्दुल्लाह बिन कुलाब की जानिब मन्सूब है। उसका अक़ीदा था कि अल्लाह तआला की सिफ़ात न क़दीम हैं न हादिस। अल्लाह तआला जिस हाल पर पहले था उसी हाल पर हमेशा से है। अल्लाह तआला की कोई मख़्सूस जगह नहीं है।

जेहमीया : जेहम बिन सफ़्वान से मन्सूब है उसका अक़ीदा था कि चीज़ों की पैदाइश से क़ब्ल उनका इल्म अल्लाह के लिए मुहाल है। वह जन्नत, दोज़ख़ दोनों को फानी कहता है। अल्लाह तआला की सिफ़ात के वजूद की नफी करता है। इस मसलक के लोग शहर तिर्मिज़ में रहते हैं।

फ़िर्क़ा मुशब्बह : उसके तीन फ़िर्क़े हैं :

(१) हिशामिया (२) मक़ातिला (३) वासमीया। यह तीनों फ़िर्क़े इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि अल्लाह जिस्म है इसलिए किसी मौजूद का इल्म बग़ैर जिस्म के नहीं हो सकता उसकी एक मिक़्दार मुक़र्रर है। वह खड़ा होता है, बैठता है, वह मुतहर्रिक है, उसका गोश्त, ख़ून, ज़बान और दूसरे आज़ाए जवारेह भी हैं लेकिन उसकी कोई चीज़ किसी चीज़ के मुशाबेह है न कोई चीज़ उस से मुशाबेह है। हिशाम बिन हकम ने मुशब्बह फ़िर्क़े की किताबें तालीफ़ कीं अल्लाह तआला की जिस्मानियत के सिलसिले में यह किताबें लिखी गईं :

(माख़ूज़ : गुनियतुत्तालेबीन, मुसन्निफ़ः हज़रत ग़ौसुल–आज़म दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैह, तरजमा : उर्दू, शम्स सिद्दीक़ी बरैलवी)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

बीसवां बाब

इल्म का बयान

तलबुल–इल्मे फ़रीज़तुन अला कुल्लि मुस्लेमिन।

हदीस में आया है कि इल्मे दीन सीखना हर मुसलमान मर्द औरत पर फ़र्ज़ है। जिस तरह नमाज़, रोज़ा और साहिबे निसाब पर ज़कात फ़र्ज़ है इसी तरह इल्मे दीन का सीखना भी फ़र्ज़ है और जिस तरह इस्लाम के पांच अरकान में से एक रुक्न भी अदा न करे तो गुनहगार होते हैं इसी तरह इल्मे दीनीया ज़रूरिया अगर न सीखे तो भी गुनहगार होते हैं।

वैसे तो इल्मे दीन का सीखना हर मुसलमान पर ज़रूरी है मगर खुसूसन औरत पर और भी ज़्यादा ज़रूरी है। जिस तरह खाना पकाना सीखना ज़रूरी है। औरत अगर इल्मे दीन से वाक़िफ़ हो तो वह दीन व दुनिया की ज़ाहिरी बातनी बातों के मस्अले मसाइल से रोशनास होती है। अपने खुद के मसाइल खुद हल कर सकती है। उसके रोज़े नमाज़ सही तरीक़े से अदा कर सकती है। एक औरत पर पूरे ख़ानदान का दारोमदार होता है। एक तालीम याफ़्ता औरत पूरे ख़ानदान को जन्नत का रास्ता दिखाती है और एक जाहिल औरत पूरे घर का बिगाड़ कर ख़ानदान को दोज़ख़ की तरफ़ धकेल देती हैं।

इल्म की फ़ज़ीलत :

- रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला का इल्म तलब करना नेकी है। उस पर ग़ौर करना रोज़े के बराबर सवाब है और दूसरों तक पहुंचाना अफ़ज़ल सदक़ा है।
- मर्द हो या औरत दीन का इल्म सीखने की गरज़ से घर से निकले और उस राह में मर जाए उसको नबियों के दर्मियान जन्नत में दरजा अता होगा।
- इरशादे नबवी है कि इल्मे दीन के हुसूल के लिए एक लम्हा भी आलिमों के हल्क़े में बैठने से हज़ार गुलाम आज़ाद करने का सवाब हासिल होता है।
- तालिबे इल्म के लिए फ़रिश्ते उनके क़दमों तले अपने पर बिछाते हैं।
- एक आलिम हज़ार आबिद से बेहतर है।

❖ तालिबे इल्म के लिए दुनिया की हर चीज़ हत्ता कि चौपाए चरिन्द परिन्द यहां तक कि समुन्द्र की तमाम मच्छिलयां भी उनके लिए दुआ करती हैं।

❖ जो उलमा की महफ़िल में बैठता है उसकी ज़बान की लुक्नत दूर होती है और ज़ेहन भी तेज़ होता है।

❖ जिस ने कुरआन सीखा उसकी क़िस्मत बढ़ गई। जिस ने इल्मे दीन (हदीस) सीखा उस की अक़्ल पुख़्ता हो गई।

❖ जिस ने इल्मे रियाज़ी सीखा, नादिर किताबों का मुताला किया उसने क़ानूने शरीअ़त से वाक़्फ़ीयत हासिल की।

❖ एक आबिद के मुक़ाबले आलिमे दीन का वह दरजा है जो सितारों के मुक़ाबले में चौदहवीं के चांद का है।

❖ उलमा अंबिया के जांनशीन व वारिस होते हैं।

❖ जिस ने इल्मे दीन सीखा वह फसाहत व बलाग़त में माहिर होता।

❖ जिसने दीनी किताबों का मुताला किया उसकी जनरल मालूमात में इज़ाफ़ा होता है।

❖ जिसने शरीअ़त सीखी उसमें तरीक़त आई। जिसमें तरीक़त आई उसमें अस्लियत आई जिसमें अस्लियत आ जाती उसके लिए मारिफ़त के दरवाज़े खुल जाते हैं। जिस पर मग़्फ़िरत के दरवाज़े खुल गये उसको अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल हो जाता है।

(कुरआन का इल्म) इल्मुल–कुरआन :

❖ अल्लाह तबारक व तआला ने खुद कुरआन पाक में इरशाद फरमाया बेशक हम ने कुरआन उतारा और हम ही उसके निगहबान हैं।

❖ सूरतुल–क़मर में फरमाया बेशक हम ने आसान कर दिया कुरआन याद करने के लिए।

❖ कुरआन का तआरुफ़ खुद कुरआन की ज़बानी है। **ला रैबा फ़ीहे हुदल–लिल–मुत्तक़ीन।** यानी उसमें कोई शक नहीं मुत्तक़ियों के लिए हिदायत है।

❖ कुरआन का मक़्सद लोगों को हिदायत देना और हिदायत वही लोग पातें हैं जिसके दिल में अल्लाह का डर हो।

❖ कुरआन मजीद को ठहर–ठहर कर तरसील और तज्वीद से पढ़ो। इल्मे तज्वीद के माहिरीन ने कुरआन की तिलावत के तीन दर्जे मुक़र्रर किए।

(१) तरतील यानी क़वाइदे तज्वीद का ख़्याल करके ठहर–ठहर कर ख़ुश इल्हानी से तिलावत करना।

(२) तदवीर यानी तरतील और हुदूद के दर्मियान तिलावत करना। जैसे आम तौर पर फ़र्ज़ नमाज़ों में अइम्मा तिलावत करते हैं।

(३) तीसरी हद यानी नमाज़ में तज्वीद का लिहाज़ रखते हुए जल्दी–जल्दी तिलावत करना। ऐसी रवानी से पढ़ना कि सुनने वालों को साफ़ अल्फ़ाज़ समझ में आए सुनने वालों को गिरां न गुज़रे, जैसे तरावीह की नमाज़ वग़ैरह

❖ कुरआन मजीद की तिलावत करते वक़्त क़ारी दिल में यूं समझे कि वह जो कुछ भी पढ़ रहा है वह कोई बशरी (इंसानी) कलाम नहीं बल्कि यह ख़ालिस अल्लाह तआला का कलाम है।

नुक़्त–ए–"ब" की हिक्मत :

हज़रत इकरमा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तबारक व तआला ने लौहे क़लम पैदा फरमाया और क़लम को हुक्म हुआ कि लौह पर लिख **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।** क़लम ने लिखा। फिर हुक्म हुआ लिख क़्यामत तक जो कुछ भी होने वाला है। क़लम ने वह भी लिख दिया।

❖ जब मोमिन **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।** पढ़ता है जन्नत उस पर वाजिब हो जाती है। जन्नत अर्ज़ करती है ऐ बारी तआला उस बन्दे को इस कलिमा की वजह से जन्नत में दाख़िल फरमा।

अल्लाह तआला ने जो चार मुक़द्दस किताबें और दीगर सहीफ़े नाज़िल फरमाए उन सबका मतन और मफ़्हूम सिर्फ़ कुरआन में मौजूद है। और पूरे कुरआन का मफ़्हूम सूर–ए–फ़ातिहा में है। सूरः फातिहा का मफ़्हूम **बिस्मिल्लाह** में है। **बिस्मिल्लाह** का मफ़्हूम **बिस्मिल्लाह** के "ब" के नुक़्ते में है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दुनिया में सबसे अव्वल यह आयत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। जब उनकी दुआ कुबूल हुई, तो उठा ली गई। फिर नूह अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई, जब उनकी कश्ती किनारे पर लगी तो उठा ली गई। फिर

इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई, जब नमरूद ने हज़रत इब्राहीम को आग में डाला गया। आपने बिस्मिल्लाह पढ़ी आग ठन्डी हो गई फिर उठा ली गई। फिर मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारी गई, उसकी बरकत से आप फ़िरऔन व हामान व जादूगरों पर ग़ालिब आए। फिर ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई और जब आप आसमान पर उठाए गये बिस्मिल्लाह भी उठा ली गई। फिर मुझ (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई क़्यामत तक यह आयत बाक़ी रहेगी। जब तराज़ू में बिस्मिल्लाह के सिर्फ़ ब के नुक़्ते को डाला जाएगा तो वह पलड़ा भारी होगा।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का इल्म :

तिर्मिज़ी में रिवायत है कि अल्लाह तबारक व तआला के हुक्म से फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बहिश्ती लिबास पहना कर सोने के तख़्त पर बिठा कर बहुक्मे इलाही उस तख़्त को चार मुक़र्रब फ़रिश्तों ने उठाया और तमाम आसमानों की सैर कराई, तमाम अजाइबात दिखाए और फिर जन्नत में ले आए। अल्लाह तआला के हुक्म से आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों को सलाम किया, अस्सलामु व अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, फ़रिश्तों ने जवाब दिया व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। तब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम से फरमाया : उनको तमाम अंबिया के नाम तमाम दीन व दुनिया की अशिया से मुत्तला करो। बहुक्मे इलाही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने तामम मख़्लूक़ के नाम बताए, फिर कहा यह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं, यह मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं, यह इस्राफील अलैहिस्सलाम हैं, यह इज़्राईल अलैहिस्सलाम हैं, यह फुलां है यह फुलां है तमाम पैग़म्बरों के नाम यहां तक कि तमाम चरिन्द, परिन्द, दरिन्द, तमाम जानदार के नाम बेजान अशिया के नाम बता दिए। तब फरिश्तों ने अपनी कम इल्मी का एतराफ किया और अपनी ग़लती क़ुबूल कर ली।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की तेज़ रफ़्तारी :

एक मरतबा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिब्रील अलैहिस्सलाम से दर्याफ़्त फरमाया : ऐ जिब्रीले अमीन! तुम्हें कितनी बार तेज़ रफ़्तारी से सिदरतुल–मुन्तहा से ज़मीन पर आना पड़ा। जिब्रीले अमीन ने कहा कि पहली मरतबा जिस वक़्त नमरूद ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दहकती हुई आग में डाला था। मुझे हुक्म हुआ फौरन मेरे हबीब के आग

में जाने से पहले उन्हें बहिश्ती हुल्ला पहनाओ ताकि उन पर आग का असर न हो, उस वक़्त तेज़ी से आया। दूसरी मरतबा जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गर्दन पर छुरी रखी तो छुरी फ़ेरने से क़ब्ल जन्नती दुंबा ला कर इस्माईल अलैहिस्सलाम की जगह रखा ताकि अगली उम्मतों को अपने बेटे की कुरबानी की नौबत न आए। तीसरी मरतबा जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके भाईयों ने चाह (कुएं) में डाला तो मैं आया कि उन्हें कोई मूज़ी कीड़े मकोड़े ईज़ा न पहुंचाएं। और उन्हें बड़े पत्थर पर बिठा दिया। और चौथी मरतबा जंगे उहद में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दन्दाने मुबारक शहीद हो गये थे और आपके दन्दाने मुबारक से ख़ून ज़मीन पर गिरने से क़ब्ल मैं आया और ख़ून को अपने हाथों में ले लिया। अगर आपके ख़ून का एक क़तरा भी ज़मीन पर गिरता तो क़्यामत तक ज़मीन पर सब्ज़ा न उगता।

यौमे मीसाक़ (अहद का दिन) :

उबय बिन कअब से रिवायत है कि अल्लाह तबारक व तआला ने मीसाक़ के दिन दुनिया बनाने से क़ब्ल औलादे आदम अलैहिस्सलाम की तमाम अरवाह को जमा किया। उन से तरह तरह की क़रार दाद मन्ज़ूर कराई फिर तमाम अरवाह में किसी को ग़रीब, किसी को अमीर बनाया, किसी को ख़ूबसूरत किसी को बदसूरत बनाया, किसी को छोटा और किसी को बड़ा बना कर उनको कुव्वते गोयाई अता की और फिर उन से अह्दो पैमान लिया। और अपने आप सबको गवाहब बना कर पूछा **अलस्तु बेरब्बेकुम**। (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं।)

तमाम अरवाह ने इक़रार किया और कहा **क़ालू बला** (बोले क्यों नहीं तू ही हमारा रब है।)

उसके बाद अल्लाह तआला ने फरमाया मैं सातों आसमानों और सातों ज़मीनों को गवाह बनाता हूं और तुम्हारा बाप भी शाहिद है। वह इसलिए कि कहीं तुम क़्यामत के दिन यह न कहने लगो कि हम इस बात से वाक़िफ़ न थे। और अच्छी तरह जान लो कि मेरे सिवा न कोई माबूद (इबादत के लाइक़) न कोई रब (पालने वाला) है। तुम मेरे साथ किसी को शरीक मत करना। मैं तुम्हारे पास रसूल भेजूंगा जो तुम्हें मेरा अह्दो पैमान याद दिलायेंगे। और उन पर अपनी किताबें भी नाज़िल करूंगा। जिस से वह तुम्हें सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तल्क़ीन करते रहेंगे। तमाम औलादे आदम ने इन बातों का इक़रार करके गवाही दी कि तू ही हमारा ख़ुदा है

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम वहां खड़े अपनी आंखों से यह मंज़र देख रहे थे उन्होंने देखा कि उनकी औलाद में किसी को काला किसी को गोरा, कोई ख़ूबसूरत कोई बद सूरत तो किसी को ग़रीब किसी को अमीर बनाया गया है। उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ रब तआला तूने तमाम बन्दों को यक्सां क्यों नहीं बनाया। यह भेद भाव क्यों रखा। अल्लाह तआला ने फरमाया मैं चाहता हूं कि मेरे यह बन्दे हर हाल में मेरा शुक्र अदा करते रहे और सब्र करते रहे। फिर आप ने अंबियाए किराम के गरोहों को देखा कि चिराग़ों के मानिन्द उनके चेहरे रौशन हैं। उन से ख़ुसूसी अह्दो पैमान लिया गया। उस गरोह में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बिन मरयम भी थे अल्लाह के हुक्म से उनकी रूह हज़रत मरयम की मुंह की जानिब से जिस्म में दाख़िल हुई। उसके बाद तमाम अंबियाए किराम से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने का और उनकी मदद का अहद लिया। जिसे यौमे मीसाक़ कहते हैं।

जिस्म और रूह :

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक रोज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरयाफ़्त किया कि अल्लाह तआला क़हां रहता है। आपने इरशाद फरमाया क़ल्बे इंसानी में यानी क़ल्बे मोमिन अर्शे इलाही है। **(अर्रहमान अलल–अरशिश–तवा)** जब दिले मोमिन अर्शे इलाही ठहरा तो यह साबित हुआ कि अल्लाह तआला इंसान के दिल में मौजूद है।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू जिस्मे इंसानी से मुख़ातब हो कर इरशाद फरमाते हैं कि ऐ इंसान ज़रा सोच तू कौन है। तूने क्या सूरत पाई है। तेरा असल मसकन क्या है तेरा असली रूप क्या है। तू अपनी असल भूल जा। क्योंकि तेरे जिस्म में कसाफ़त का महलूल डाला गया है और उसी में तुझ को तहलील किया गया है। जिसे तू कहने लगा कि यह मेरा जिस्म है। मैं फुलां का बाप हूं। फुलां का बेटा हूं, मैं भूखा हूं, मैं प्यासा हूं, अन्धा हूं, लंगड़ा हूं, मगर ऐ इंसान न तू किसी का बाप है न बेटा न तू किसी का जिस्म है न तेरा कोई जिस्म है। जो कुछ है यह तमाम सिफ़ात से मुबर्रा है। जितनी भी ख़ासियत है वह रूह में है। और रूह एक पाक साफ़ सुथरी असरारे इलाही (मारिफ़त) का गंजीना है। जिसके दिल में अर्शे इलाही मुतमक्किन है। जब तक इंसान दुनिया में है। जिस्म का तअल्लुक जुड़ा हुआ है लेकिन जैसे ही इंसान मर जाता है रूह का तअल्लुक जिस्म से

मुन्क़ता हो जाता है। जब तू क़ब्र में सड़ गल कर फना हो जाता है। मगर रूह आलमे फना से आलमे बक़ा में मुन्तक़िल हो कर आलमे बरज़ख़ में जा कर क़यामत तक वहां मुक़ीम रहेगी।

अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है : **कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइकतुल—मौत।** हर ज़ी रूह को मौत का मज़ा चखना है। जब तक मौत वाक़े न हो उसको को कौन चखेगा। उसका मज़ा तो जिस्म को चखना पड़ता है। रूह उस से मुबर्रह है। चूंकि मुर्दा अपनी क़ब्र में हर आने वालों को देखता है उसका कलाम सुनता है जबकि जिस्म तो क़ब्र में सड़ गल कर मिट्टी में मिल जाता है। अल्बत्ता मौत के बाद भी मुर्दे की समाअत व बसारत यानी देखने सुनने और इल्मे इद्राक की कुव्वत बदस्तूर बाक़ी रहती है और यह सिफ़त रूह में है न कि जिस्म में। इस से साफ़ पता चलता है कि जिस्म फानी है और रूह बाक़ी और जब अल्लाह तआला दिल में बसा हो तो उसे कैसे मौत आ सकती है वह कैसे फना होगा। उस से साफ़ ज़ाहिर है कि मौत जिस्म के लिए है रूह के लिए नहीं।

रहमते ख़ुदावन्दी :

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक काफिर चार सौ बरस तक बुतपरस्ती करता रहा। जब वह बीमार हुआ उसने सोचा मैं चार सौ साल तक बुतपरस्ती की मगर उससे कुछ नहीं मांगा आज मैं उस से अपनी बीमारी की शिफ़ा मांगूंगा। चुनांचे उस ने बुत के सामने अपनी पेशानी टेक कर उस से इल्तिजा की कि मुझे सेहतयाब कर दे। काफी दिन गुज़रने के बाद भी उसे शिफ़ा नहीं मिली तब उसने बड़ा सा पत्थर उठा कर बुत को दे मारा। उसे यक़ीन हो गया कि यह पत्थर के बुत कुछ नहीं कर सकते। तब उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा मुझे अपने ख़ुदा से इस बीमारी से नजात दिलाइए। आपने अल्लाह तआला से दुआ की वह सेहतयाब हो गया। तब उस काफिर ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा मैं ने चार सौ साल बुतों की परस्तिश में गुज़ारे अब मैं तौबा करना चाहता हूं। क्या अल्लाह मेरी तौबा कुबूल करेगा? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा। चार सौ बरस तक बुतपरस्ती करता रहा और एक ही लम्हा में जन्नत की ख़्वाहिश कर रहा है यह जवाब सुन कर काफिर मायूस हो गया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फौरन निदा आई ऐ मूसा मेरा एक बन्दा

चार सौ साल बाद मेरी तरफ़ रुजूअ् हुआ था तूने उसे मेरी रहमत से मायूस कर दिया और उसे भटका दिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे फौरन खुशख़बरी सुनाई ऐ ख़ुदा के बन्दे अल्लाह तआला ने तेरी तौबा कुबूल फरमाई। यह खुशख़बरी सुन कर यह काफिर उसी वक़्त कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।

नेक बन्दों पर अज़ाब :

एक मरतबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की ऐ अल्लाह जिस शहर के लोग तेरी नाफरमानी करते हैं तू उस शहर पर अज़ाब नाज़िल करता है और पूरे शहर को नीस्त व नाबूद कर देता है। जब कि उस में नेक बन्दे भी होते हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया जल्द ही तुम पर भेद खुलेगा। जब आप अल्लाह तआला से गुफ़्तगू करके वापस लौट रहे थे रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम की ग़रज़ से लेट गये जहां च्यूंटियों का मसकन था। इत्तिफ़ाक़ से एक च्यूंटी ने आपको काटा। आपको फौरन गुस्सा आ गया और आपने तैश में आ कर अपने पैरों से च्यूंटियों को मसल डाला। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा तुम्हें सिर्फ़ एक च्यूंटी ने काटा और तुमने उसकी पादाश में बेक़ुसूर च्यूंटियों को मसल डाला। हालांकि मेरा अज़ाब नेक व बद बन्दों पर नाज़िल होता है। वह गुनहगारों के लिए अज़ाब है लेकिन नेक बन्दों के लिए आज़माइश है और आख़िरत में उनके दरजात बुलन्द होने का सबब है।

नेकी का फल :

नेकी का फल आसमान में वजूद पाया। जन्नत के बाग़ में उसका बीज बोया गया। कौसर का पानी दिया गया फिर उस में फूलों की खुशबू डाली गई। मुहब्बत का रस, ख़ुलूस का गूदा भरा गया, फिर पक जाने के बाद नेक बन्दों में बांटा गया। जब उन्होंने उस ख़ुशबूदार फल को चखा दिल रौशन हो गया। फिर अल्लाह तआला के शुक्र गुज़ार बन्दे बन गये। और फिर वली के दर्जे को पहुंच गये और फिर दूसरों को भी फैज़ पहुंचाने लगे।

नुस्ख़-ए-कीमिया :

हुज़ूर ख़्वाजा हसन बसरी ने फरमाया कि मेरे एक साथी एक हकीम के पास गये और उन से दरयाफ़्त किया कि आपके पास कोई ऐसी दवा

है जो अमराज़े रूहानी का भी इलाज कर सके। हकीम साहब ने कहा क्यों नहीं मैं तुम्हें उसकी दवा तैयार करने का तरीक़ा बताता हूं। जिसे इस्तेमाल करके तुम तमाम रूहानी अमराज़ से छुटकारा पाओगे।

पहले ग़ैरत और फ़िक्र की जड़ें लो उनमें सब्र व तहम्मुल की बूटियां मिलाओ, फिर क़नाअत व इनाबत के बीज लो उसे तौबा के हावन दस्ते में अच्छी तरह कूट लो फिर तक़्वा और परहेज़गारी के देग में थोड़ा शर्म व हया का पानी डाल कर इश्के इलाही के चूल्हे पर आग जला कर ख़ूब पकाओ फिर सब्र व शुक्र के प्याले में डाल कर उम्मीद के पंखे से उसे ठन्डा करो। फिर अल्लाह तआला की हम्द व सना के चिमचे से दवा पी लो।

इल्म की प्यास :

ग्यारहवीं सदी ईसवी में अफ़ग़ानिस्तान से एक मुफ़क्किर आलिमे दीन हिन्दुस्तान आया था उन्होंने संस्कृति ज़बान सीखी। अरबी, फ़ार्सी, हिन्दी कई ज़बानों में किताबें भी लिखीं। उस वक़्त अल–बैरूनी ज़िन्दगी और मौत की कशमकश में मुब्तला थे। नज़अ् की हालत थी जब वह आलिमे दीन वहां पहुंचे तो अल–बैरूनी बेहद ख़ुश हुए और कहा अच्छा हुआ आप आए मुझे एक मस्अला पूछना है। आलिमे दीन को हैरत हुई कि आख़िरी वक़्त में मस्अला पूछ कर क्या करोंगे? वह ख़ामोश रहे। अल–बैरूनी ने पूछा आप ख़ामोश क्यों है। आलिमे दीन ने जवाब दिया मैं सोच रहा हूं आख़िरी वक़्त में आप मस्अला का हल जान कर क्या करोगे? अल–बैरूनी ने जवाब दिया अगर मैंने मरने से क़ब्ल इस मस्अले का हल जान जाऊं तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी। मैं आख़िरी वक़्त में इस ख़ुशी से महरूम क्यों रहूं। और जब आपको मस्अले का हल मालूम हुआ उसी वक़्त उनकी रूह परवाज़ कर गई। यह है इल्म का शौक़ कि आख़िरी दम तक मस्अले मसाइल हल करते हैं।

मुक़द्दस महफ़िल :

एक मरतबा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत अली मुर्तज़ा के मकान पर तशरीफ़ ले गये। हज़रत अली ने ख़ातिर तवाज़ु के लिए एक तश्त में शहद पेश किया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया तश्त ख़ूबसूरत है। शहद मीठा है। मगर उस में बाल है यह बाल किस चीज़ की निशानदेही करता है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने फरमाया मोमिन का दिल तश्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत है ईमान शहद से ज़्यादा मीठा है लेकिन आख़िरी वक़्त तक ईमान को संभालना बाल से ज़्यादा बारीक है। हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया बादशाहत तश्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत है। हुक्मरानी शहद से ज़्यादा मीठी है लेकिन उसमें अद्ल क़ायम रखना बाल से ज़्यादा बारीक है।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया इल्मे दीन तश्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत है उसका सीखना शहद से ज़्यादा मीठा है लेकिन उस पर अमल करना बाल से ज़्यादा बारीक है।

हज़रत अली मुर्तज़ा ने फरमाया कि मेहमान तश्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत है उसकी तवाज़ु शहद से ज़्यादा मीठी है लेकिन मेहमान की ख़ुशी का ख़्याल रखना बाल से ज़्यादा बारीक है। हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने फरमाया औरत का चेहरा तश्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत है। हया शहद से ज़्यादा मीठी है मगर नामहरम की नज़र से बचना बाल से ज़्यादा बारीक है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह का दीन इस तश्त से ख़ूबसूरत है उसकी मारिफ़त शहद से ज़्यादा मीठी है मगर उसको दिल में मख़्फ़ी रखना बाल से ज़्यादा बारीक है। हज़रत जिब्रील ने फरमाया जन्नत तश्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत है उसकी नेमतें शहद से ज़्यादा मीठी हैं मगर उसे हासिल करना बाल से ज़्यादा बारीक है सिराते मुस्तक़ीम पर चलना बाल से ज़्यादा बारीक है।

अनोखी हिकायत :

एक मरतबा हज़रत इब्राहीम बिन अदहम कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि उन्हें सिपाही मिला उसने आपसे पूछा क्या तुम ग़ुलाम हो? आपने फरमाया हां मैं ग़ुलाम हूं। उसने कहा मुझे आबादी का पता बताओ। आपने क़ब्रिस्तान की तरफ़ इशारा किया उस सिपाही को बड़ा ग़ुस्सा आया और उसने आपके सर पर डन्डा दे मारा आपके सर से ख़ून बहने लगा आपने उसके हक़ में दुआए ख़ैर फरमाई। लोगों ने यह माजरा देखा तो सिपाही से कहा अरे बेवकूफ़ यह क्या कर रहा है क्या तू उन्हें नहीं जानता कि यह

इस ज़माने के वली अल्लाह हज़रत इब्राहीम बिन अदहम है। यह सुन कर सिपाही बेहद नादिम हुआ और घोड़े से उतरकर आपके क़दमों में गिर पड़ा और अर्ज़ किया आली जाह मैं आपका ग़ुलाम हूं। अपने ग़ुलाम की ख़ता मुआफ़ फरमाइए। और साथ ही साथ यह भी बता दीजिए कि आपने अपने आपको ग़ुलाम क्यों कहा। आपने फरमाया मैं वाक़ई में अल्लाह तआला का ग़ुलाम हूं। सिपाही ने कहा जब मैंने आबादी का पता दरयाफ़्त किया तो आपने क़ब्रिस्तान की तरफ़ इशारा क्यों किया? आपने फरमाया वह इसलिए कि शहरों की आबादी तो एक दिन वीरान हो जाएगी लेकिन असल आबादी तो क़ब्रिस्तान ही है कि यही पर सबको आबाद होना है। सिपाही ने दरयाफ़्त किया जब मैंने आपको डन्डा मारा और आपका सर फोड़ डाला इसके बावजूद आपने मेरे हक़ में दुआ की। आपने फरमाया दुआ देने में दो सवाब है और मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं कि तुम से मुझे नेकी और सवाब हासिल हो और उसके एवज मैं तुम्हारे लिए बद्दुआ करूं। यानीं मैं नहीं चाहता कि तुम गुनाह के मुस्तहिक़ बनो। और मैं सवाब का मुस्तहिक़ बनूं। कुछ अरसे बाद एक बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में देखा कि अह्ले जन्नत की झोलियां मोतियों से भरी हैं। उस बुज़ुर्ग को अह्ले जन्नत ने दरयाफ़्त करने पर बताया कि एक शख़्स ने हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का सर फोड़ दिया था तो उन्होंने उसके हक़ में नेक दुआ की जिसकी वजह से अल्लाह तआला के हुक्म से हम यह मोती लिए खड़े हैं कि जब इब्राहीम बिन अदहम जन्नत में दाख़िल हों तो उन पर यह मोती निछावर किए जाएं।

अजीब वाक़या :

समरक़न्द में एक बेवह सैयद ज़ादी अपने चन्द बच्चों को लेकर एक मालदार मुसलमान शख़्स के पास मदद की ग़रज़ से गई और कहा। मैं सैयदज़ादी हूं, और मेरे बच्चे भूखे हैं। मेरे बच्चों को खाना खिला दो वह मालदार शख़्स दौलत के नशे में चूर और बराए नाम मुसलमान था कहने लगा अगर तुम वाक़ई सैयद ज़ादी हो तो कोई दलील पेश करो। बेवह ने कहा मैं ग़रीब बेवह औरत हूं। ज़बान पर एतबार करो कि मैं सैय्यद ज़ादी हूं। मैं क्या दलील पेश करूं? वह शख़्स बोला मैं ज़बानी जमा ख़र्च का

काइल नहीं हूं सैय्यद जादी दिल बर्दाश्ता हो कर अपने बच्चों को लेकर जा रही थी कि एक मजूसी को पता चला कि एक सैयद ज़ादी अपने भूखे बच्चों को लेकर परेशान है उस मजूसी ने उस सैयदज़ादी को बुला कर उसे और बच्चों को खाना खिलाया। और कहा मोहतरमा मैं मुसलमान तो नहीं हूं मगर आप एक सैय्यद ज़ादी हो मैं आपकी ताज़ीम करता हूं। फिर उस मजूसी ने उसकी मदद की। उसी रात वह मुसलमान रईस सोया तो ख़्वाब में देखा कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक निहायत हसीन नूरानी महल के क़रीब खड़े हैं उस रईस ने कहा या रसूलुल्लाह यह महल किस के लिए है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अर्ज़ किया कि मुसलमान के लिए। उसने कहा मैं भी मुसलमान हूं यह मुझे अता कर दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया तू मुसलमान है उसकी कोई दलील पेश कर। मेरी एक दुखियारी बेटी हालात से मज्बूर हो कर तेरे पास आई तूने उससे सैय्यदज़ादी होने की दलील मांगी फिर भला तुझे बेग़ैर दलील के किस तरह जन्नत अता की जाए, यह महल तो उस मजूसी के लिए हैं जिसने बेग़ैर दलील के इस सैय्यदज़ादी को पनाह दी। जब उस रईस की आंख खुली तो वह सैय्यदज़ादी और उस मजूसी को तलाश करने निकला। जब उसे पता चला कि फ़ुलां जगह पर मजूसी के मकान में सैय्यदज़ादी क़याम पज़ीर है तब वह वहां पहुंचा और मजूसी से कहा तुम्हें जितनी दौलत चाहे ले लो और उन बच्चों और सैय्यदज़ादी को मुझे सुपुर्द कर दो। मजूसी ने कहा मैं चन्द रुपयों की ख़ातिर वह नूरानी महल ठुकरा दूं। जब कि आज ही रात मेरे ख़्वाब में आ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे कलिमा पढ़ा कर मुसलमान किया और वह महल मेरे नाम कर दिया और अब मैं अपने बीवी बच्चों के साथ मुसलमान हो गया हूं। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे बशारत दी कि मैं अपने बाल बच्चों और बीवी समेत जन्नत में दाख़िल हूंगा।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इक्कीसवां बाब

अज्रामे फ़लकी

आदाद के ज़िन्दगी पर असरात :

इंसान की ज़िन्दगी का दारोमदार बारह बुर्जों (रास) पर है। और हर बुर्ज के बारह सितारे हैं हर बुर्ज और सितारा पर नाम, तारीख़ और माह व साल के हिसाब से इंसान की पैदाइश पर असर अन्दाज़ होता है। ज़ैल में ख़ाका दिया जा रहा है कि किस तारीख़ से किस तारीख़ तक किस नाम का असर होता है।

सूरज जिस में ज़मीन मख़्सूस मक़ाम रखती है हर सैयारे का अपना एक मख़्सूस अदद होता है जो सिफर से नौ तक माना जाता है किसी की भी ज़िन्दगी का अदद निकालना हो तो नाम के आदाद जमा करे जितने आदाद आएं वह मुरक्कब अदाद कहलाते हैं फ़िर तमाम आदाद को जमा करके उसका एक सिर्फ़ एक अदद बनाए। या तो तारीख़े पैदाइश, माह, साल के आदाद को जमा करके उसे मुंफ़रिद करे जो अदद आए वह लकी नम्बर है।

मसलन असलम की पैदाइश १०.०५.२००८ हो जिस में सिफर की कोई क़ीमत नहीं। तमाम आदाद की जमा मिसाल।

10-5-2008=16 फिर १६ को मुफ़रद बनाए 1+6+7 लकी नम्बर 7 हुआ।

इस तरह नामों के आदाद से भी हम मुंफ़रिद लकी निकाल सकते हैं।

कुरआन मजीद में चांद, सूरज, सितारे, सैयारे का ज़िक्र आया है जो सूरज के गर्द गर्दिश करते हैं। खुदा के हुक्म के बेग़ैर ज़र्रह बराबर भी अपनी जगह से हिल नहीं सकते।

नम्बर शुमार	तारीख़ पैदाइश	बुर्ज रास	सितारा	नाम का पहला हर्फ़
१.	२३ दिसम्बर से २० जनवरी तक	जदी	ज़हल	ज–ह–ख़–ग
२.	२१ जनवरी ता २६ फरवरी	दल्व	ज़हल	स–स–श–स
३.	२० फरवरी ता २१ मार्च	हूत	मुश्तरी	व–ज
४.	२२ मार्च ता २० अप्रैल	हमल	मुश्तरी	द–ल–अ–य
५.	२१ अप्रैल ता २१ मई	सौर	ज़हरा	ब–व
६.	२२ मई ता २१ जून	जौज़ा	अतारद	क़–क
७.	२२ जून ता २३ जुलाई	सरतान	क़मर	द
८.	२४ जुलाई ता २३ अगस्त	असद	शम्स	ह–ह
९.	२४ अगस्त ता २३ सितम्बर	सुंबुला	अतारद	प–ग़
१०.	२४ सितम्बर ता २३ अक्तूबर	मीज़ान	ज़हरा	र–त–त
११.	२४ अक्तूबर ता २३ नवम्बर	अक़रब	मरीख़	ज़–ज़–न
१२.	२३ नवम्बर ता २२ दिसम्बर	क़ौस	मुश्तर	फ़–क

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

बाईसवां बाब

मुतफ़र्रिक़ात

आलम (दुनिया) की तादाद में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं बाज़ का क़ौल है कि अट्ठारह हज़ार आलम हैं, बाज़ का क़ौल है तीन सौ साठ हैं, बाज़ का क़ौल है कि आलम की तादाद सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता।

अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार साल मख़्लूक़ की तस्वीर बनाई।

मुद्दते हमल में रहने वाले ६ अफ़राद :

(१) हज़रत सुफ़ियान बिन हयान शिकमे मादर में चार साल रहे।
(२) हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हसन अज़्ज़हाक सोला माह रहे।
(३) हज़रत यहिया बिन जाबिर दो साल शिकमे मादर में रहे।
(४) हज़रत सुलेमान ज़ह्हाक भी दो साल शिकमे मादर रहे।
(५) हज़रत यहिया बिन ज़करिया और हज़रत इमाम हुसैन बिन अली सिर्फ़ छः माह मादरे शिकम में रहे।

सूरज को रोकना या पलटाना चार मक़ामात पर वाक़े हुआ।

(१) शबे मेअ्राज से वापसी पर आपने ख़बर दी कि क़ुरैश के एक क़ाफ़िले को मैंने फ़ुलां मक़ाम पर देखा और वह कल शाम तक यहां पहुंचेगा लेकिन जब दूसरे दिन शाम हो गई सूरज डूबने का वक़्त आ गया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की सूरज एक घन्टा लेट हो गया यहां तक कि वह क़ाफ़िला मक्का पहुंच गया तब सूरज ग़ुरूब हुआ।

(२) दूसरी मरतबा ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ के मौक़े पर ख़न्दक़ खोदते वक़्त नमाज़े अस्र का वक़्त जाता रहा और लोगों की नमाज़ क़ज़ा होने को थी कि आपने दुआ फरमाई सूरज रुक गया जब तमाम सहाबा किराम ने नमाज़े अस्र अदा की तब सूरज ग़ुरूब हुआ।

(३) एक मरतबा हज़रत अली के ज़ानों पर हुज़ूर पाक अपना सर मुबारक रख कर लेटे कि आपकी आंख लग गई यहां तक कि सूरज ग़ुरूब होने का वक़्त आ गया और हज़रत अली को नमाज़े अस्र क़ज़ा हो गई। नमाज़ के क़ज़ा होने पर आप की आंख से आंसू गिर पड़े हुज़ूर पाक ने बेदार हो कर पूछा क्या बात है। हज़रत ने अली ने फरमाया नमाज़े अस्र

का वक़्त जा चुका है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की सूरज पलट आया और हज़रत अली ने नमाज़े अस्र अदा की।

(४) एक मरतबा हज़रत अली एक क़ाफ़िले के साथ दरियाए फ़ुरात से गुज़र कर बाबुल की तरफ़ जा रहे थे कि सामान उतरवाने में सूरज ग़ुरूब होने और लोगों की नमाज़े अस्र क़ज़ा होने का वक़्त आ गया लोग परेशान होने लगे तब हज़रत अली ने अल्लाह तआला से दुआ की सूरज वहीं रुक गया। जब तमाम लोगों की नमाज़ हुई तब सूरज ग़ुरूब हुआ।

❖ चार जानदार ऐसे हैं जो बेग़ैर शिकमे मादर के पैदा हुए।

(१) हज़रत हव्वा, जिन्हें अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की बाएं पसली से पैदा किया।

(२) हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी जिसे अल्लाह तआला ने पत्थर से पैदा किया।

(३) वह मेंढा जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की क़ुरबानी के फ़िदिया में ज़बह हुआ था।

(४) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने नुबुव्वत का एलान किया तो लोगों ने मोजिज़ा तलब किया। चुनांचे आपने मिट्टी से चमगादड़ बना कर उसमें फूंक मारी और वह उड़ने लगा।

❖ अल्लाह तबारक व तआला ने हज़रत आदम को फ़रिश्तों से सज्दा कराया मगर अज़ाज़ील ने सज्दा नहीं किया और रांद–ए–दर्गाह हुआ उस वक़्त फ़रिश्तों ने तीन सज्दे किए एक सज्दा अल्लाह तआला के हुक्म पर दूसरा जब इज़्राईल के सज्दा करने के बजाए मुंह फेर कर खड़े होने पर कि हम से ऐसी नाफरमानी नहीं हुई। तीसरा सज्दा जब फ़रिश्तों ने सर उठा कर देखा तो अज़ाज़ील का चेहरा मस्ख़ हो चुका था इसलिए तीसरा सज्दा किया।

❖ उसके बाद अल्लाह तआला ने रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक तमाम बनी नौऐ इंसान की रूहों को सज्दे का हुक्म दिया अल्लाह तआला के हुक्म से तमाम बनी नौऐ इंसान की दाएं जानिब खड़ी रूहें सज्दे में गिर गईं मगर बाएं जानिब की रूहें सज्दे में न गिरीं। फिर दोनों तरफ़ की रूहों को हुक्म हुआ उन में से भी बाज़ सज्दे में गिर पड़े और बाज़ ने सज्दा न किया। आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ बारी तआला यह क्या माजरा है कि पहले सज्दे में दाएं जानिब की रूहें सज्दे में गिर पड़ीं लेकिन बाएं जानिब की

रूहों ने सज्दा न किया। फिर दूसरी बार बाज़ सज्दे में गिर गईं और बाज़ नहीं। अल्लाह तआला ने फरमाया ऐ आदम पहली मरतबा जो दांए जानिब की रूहों ने सज्दा किया वह मोमिन पैदा होंगे और मोमिन ही मरेंगे। और बाएं जानिब की रूहें काफिर पैदा होंगी और काफिर ही मरेंगी। और जिन्होंने सज्दा किया वह काफिर मोमिन हो कर मरेंगे और जिन्होंने संज्दा नहीं किया वह मोमिन काफिर हो कर मरेंगे।

❖ आदम अलैहिस्सलाम की जन्नत में सबसे पहली गिज़ा अंगूर थी और आख़िरी गिज़ा गन्दुम (गेहूं) के दाने थे।

❖ पहले ज़मीन पानी की तरह ख़ून चूसती थी जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया और हाबील को दफन कर दिया जिसकी वजह से हाबील का सुराग़ न लगा इसलिए आदम अलैहिस्सलाम ने दुआ की तो अल्लाह के हुक्म से ज़मीन ने ख़ून चूसना छोड़ दिया ताकि क़ातिल का सुराग़ लग सके।

❖ पांच आदमी बहुत रोए :

(१) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपनी ख़ता पर।

(२) हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम फिराक़े फ़रज़न्द में।

(३) हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम ख़ौफ़े इलाही में।

(४) हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा अपने वालिद हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद।

(५) हज़रत ज़ैनुल–आबेदीन वाक़–ए–करबला के बाद।

हज़रत अब्दुल–मुत्तलिब की कई बीवियां थी जिन में एक लुबना जिनके बतन से अबू लहब पैदा हुआ। दूसरी बीवी नतीला के बतन से हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु ज़र्रार और क़सम पैदा हुए। तीसरी बीवी हाला से हज़रत हम्ज़ा, मुग़ीरह और एक लड़की सफ़ीया पैदा हुईं। एक बीवी फातिमा से अब्दुल्लाह हुज़ूर के वालिद। अबू तालिब, ज़ुबैर और पांच लड़कियां पैदा हुईं।

❖ उम्मे हानी हुज़ूरे अकरम की हक़ीक़ी चचा ज़ाद बहन थीं। उन्हीं के मकान में आप आराम फरमा रहे थे जिस वक़्त आपको मेअ्राज हुई।

❖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हक़ीक़ी फूफी सफ़ीया बिन्ते अब्दुल–मुत्तलिब ने ग़ज़्व–ए–ख़न्दक़ के मौक़ा पर यहूदी को मार कर उसका सर लश्करे कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंका था।

- ❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रज़ाई भाई का नाम ज़मीरा और बहन का नाम शैबा था जो दाई हलीमा की औलाद थे।
- ❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग्यारह चचाओं में दो चचा ईमान ले आए।
- ❖ हुज़ूरे अकरम की वालिदा माजिदा आमना का इंतिक़ाल मदीना और मक्का मुकर्रमा के बीच की वादी अबवा के मक़ाम पर हुआ और आप वहीं मदफ़ून हैं।
- ❖ उस वक़्त आपके साथ उम्मे ऐमन जो आपकी लौंडी थीं साथ थीं। उन्हीं ने हुज़ूर की परवरिश की।
- ❖ जंगे उहद के मौक़ा पर हज़रत उम्मे अम्मारा दादे शुजाअत दिखाते हुए हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किए गये वार को रोकती थीं।
- ❖ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी तल्वार अबुद जाना को इनाम में दीं।
- ❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सफेद रंग बेहद पसन्द था।
- ❖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऊंट, बकरी, ख़रगोश का गोश्त मरग़ूब था।
- ❖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध और मीठी चीज़ पसन्द थी।
- ❖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कद्दू और सुरीद (सालन में रोटी के टुक्ड़े भिगे हुए) बेहद पसन्द थे।
- ❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पहली वही ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई।
- ❖ और आख़िरी वही दस ज़िल–हिज्जा को मिना में नाज़िल हुई, जब आप आख़िरी खुतबा इरशाद फरमा रहे थे।
- ❖ दज्जाल जो एक आंख से काना होगा उसकी पेशानी पर क–फ़–र लिखा होगा और वह चालीस दिन में रूए ज़मीन पर गश्त लगा कर फसाद बरपा करेगा सिर्फ़ मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में दाख़िल न हो सकेगा।
- ❖ और हज़रत ईसा उसे बैतुल–मक़्दिस के क़रीब जिसे बाबुल्लाह कहा जात है क़त्ल करेंगे।
- ❖ दाब्बतुल–अर्ज़ जो एक जानवर होगा उसके पांव में खुर होंगे।

दाढ़ी होगी उसका सर बैल की तरह होगा आंखें ख़िंज़ीर जैसी कान हाथ जैसे गर्दन शुतुर मुर्ग़ की तरह शेर की तरह सीना होगा चीते जैसा रंगा होगा चार पैर और पर होंगे। उसके पास एक असाए मुसवी और सुलेमानी अंगुश्तरी होगी मोमिन की पेशानी पर निशानी लगाएगा जिस से मोमिन का चेहरा रौशन होगा और काफिर की नाक पर निशानी लगाएगा जिस से काफिर का चेहरा सियाह हो जाएगा जिस से काफिर व मोमिन में फ़र्क़ मालूम होगा।

❖ बरोज़े क़्यामत हज़रत जिब्रील से हिसाब लिया जाएगा।

❖ बरोज़े क़्यामत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में जो अलम (झण्डा) होगा उसका नाम लेवाउल–हम्द होगा। जिसकी दराज़ी एक हज़ार साल की मसाफ़त के बराबर होगी।

❖ रोज़े हश्र सबका हिसाब व किताब होगा और जन्नती जन्नत में जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ में। तब मलकुल–मौत को जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान एक मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा फिर उन्हें भी ज़बह कर दिया जाएगा।

❖ जन्नत में जन्नतियों की पहली ग़िज़ा मछली की कलेजी होगी।

❖ दोज़ख़ में सबसे पहले क़ाबील को डाला जाएगा।

❖ जन्नत में सबसे पहले मर्दों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ दाख़िल होंगे। अंबियाए किराम के दो इज्तिमा हो चुके एक मीसाक़ के दिन जिस दिन अल्लाह तआला ने तमाम बनी नौअ़े इंसान से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वफ़ादारी का हलफ़ लिया। दूसरा इज्तिमा शबे मेअ़राज के मौक़े पर बैतुल–मक़्दिस (मस्जिदे अक़्सा) में नमाज़ के वक़्त हुज़ूर ने इमामत की और तमाम अंबिया ने आपकी इक़्तिदा की। तीसरा इज्तिमा बरोज़े मशहर होगा।

❖ हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं मुझ से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया निकाह से पहले तुम्हारी शबीह ख़्वाब में दिखाई जाती थी। एक रेशम के टुकड़े में रख कर एक फरिश्ता लाया करता था और कहता था यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा है।

❖ हज़रत शीस अलैहिस्सलाम का मज़ार अयोध्या फ़ैज़ाबाद हिन्दुस्तान में मशहूर है।

- फ़लस्तीन में एक क़स्बा नासिरा है हज़रत मरयम से हज़रत ईसा वहीं पैदा हुए इसलिए उन्हें और उनकी क़ौम को नसारा कहा जाता है।
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम आसमान में ज़िन्दा हैं। हज़रत इद्रीस ने तो मौत का मज़ा चख लिया हज़रत ईसा क़रीबे क़्यामत नाज़िल होंगे और चालीस साल आप हयात रहेंगे फिर आप का विसाल होगा।
- दो पैग़म्बर ज़मीन पर ज़िन्दा है एक हज़रत ख़िज़्र और दूसरे ज़करिया अलैहिस्सलाम।

  हज़रत ख़िज़्र जहां अपना क़दम रखते वहां सब्ज़ा उगं आता। ख़िज़्र यानी सब्ज़, इसीलिए हुज़ूर पाक के गुंबद को गुंबदे ख़िज़रा कहा जाता है।
- उस वादी का नाम रक़ीम है जिसमें अस्हाबे कहफ़ हैं। जो इस ग़ार में अभी तक सोए हुए हैं साल में एक मरतबा यौमे आशूरा को करवट बदलते हैं। जो कोई भी ग़ार में गया वापस नहीं लौटा।
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब नमरूद ने आग में डाला तो गिरगिट दूर से फूंक मारता था इसलिए हुज़ूर ने उसे मारने का हुक्म दिया।
- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जब ज़बूर की तिलावत फरमाते थे तो आप के इर्द गिर्द आम लोग, जिन्नात, चरिन्द परिन्द जमा हो जाते और चिड़ियां आप पर साया करती थीं।
- जब कोई ज़ुल्मन क़त्ल किया जाता है तो उसका ख़ून क़ाबील के सर होता है। क़्यामत तक तमाम मक़्तूलीन का ख़ून क़ाबील के सर होगा, क्योंकि क़त्ल की इब्तिदा उसी ने की।
- अल्लाह तआला ने तीन अह्दो पैमान लिए थे जिन्हें मीसाक़ कहा जाता है। एक अपनी उलूहियत का आम इंसानों से, दूसरा हुज़ूर पर ईमान लाने का तमाम अंबियाए किराम से, तीसरा अह्द किताबुल्लाह न छुपाने का और लोगों तक उसे पहुंचाने का उलमा और बनी इस्राईल से।
- हज़रत सुलेमान के दरबार में शयातीन, जिन्नात इंसान मिल कर रहते थे। इंसानों ने जिन्नात से जादू टोना सीखा जिनके बल बूते पर वह अजीब व ग़रीब काम कर दिखाते थे। यही वह इल्म है

जिसे सिफ़ली इल्म कहा जाता है। जिस में शैतान का भी हाथ होता है। इंसानों ने उन मन्त्रों को किताबों में जमा किया तो आज तक गन्दे सिफ़ली इल्म के जादू टोना का आम रिवाज है।

❖ मजूसियों का अक़ीदा है दो ख़ुदा हैं। एक यज़्दान जो भलाई का ख़ालिक़ है दूसरा अहरमन जो बुराई का ख़ालिक़ है।
❖ हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ातमुन्नबीईन होने का सुबूत सूरः अहज़ाब में है।
❖ हज़रत ज़ैद बिन हारसा का नाम कुरआन पाक में आया है।
❖ सुल्हे हुदैबिया के मौक़ा पर फतहे मुबीन नाज़िल हुई।
❖ खुलफ़ा–ए–राशिदीन में सबसे ज़्यादा दराज़ क़द हज़रत उमर फारूक़े आज़म थे।
❖ परिन्दों में शुतुर मुर्ग़ ऐसा जानवर है जो अंगारों को खा जाता है।
❖ हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु के क़ातिल का नाम अस्वद था।
❖ हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु की आवाज़ आठ मील दूर तक सुनाई देती थी।
❖ हज़रत उम्मे अतीया रज़ि अल्लाहु अन्हा दौरे नुबुव्वत में औरतों को ग़ुस्ल दिया करती थीं।
❖ ग़ज़्व–ए–बद्र में शैतान सुराक़ा बिन मालिक शक्ल में आकर लश्करे कुफ़्फ़ार की हिम्मत अफ़्ज़ाई करता था।
❖ जब हज़रत उमर नमाज़ के दौरान ज़ख़्मी हुए उस वक़्त की नमाज़ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ने मुकम्मल की।
❖ ख़ुल्फ़ा–ए–राशिदीन में हज़रत उस्मान ग़नी ने बैतुल–माल से वज़ीफ़ा नहीं लिया।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम जिस सहाबी की शक्ल में हुज़ूर के पास आते थे वह हज़रत दहिया कलबी रज़ि अल्लाहु अन्हु थे।

❖ सबसे पहले हिजरी हज़रत उमर फारूक़े आज़म ने जारी की।
❖ हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुज़्दलेफ़ा में हज के दौरान मग़्रिब और इशा की नमाज़ मिला कर पढ़ी।
❖ एक बालिग़ इंसान के साथ दो फ़रिश्ते होते हैं।
❖ हज़रत इब्राहीम को बुत शिकन कहा जाता है।
❖ हज़रत मूसा को वादीए तुवा में मन्सबे नुबुव्वत अता हुई।
❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस औरत ने

ज़हर भरा गोश्त खिलाया था उसका नाम ज़ैनब बिन्ते मरहब था क़िला ख़ैबर में फ़तहे ख़ैबर के मौक़ा पर खिलाया था।

- हज़रत मूसा की ज़ौजा हज़रत शुऐब की बेटी का नाम सफूरा था।
- तूफ़ाने नूह का पानी कूफ़ा के एक तन्नूर से निकला था जिस पर हज़रत नूह की बीवी रोटी पका रही थी।
- कुरआन पाक में सूरः बक़रा में हज़रत आदम का नाम सबसे ज़्यादा आया।
- हज़रत सअद बिन वक़्क़ास को इराक़ में सबसे पहले अमीरुल–मुमिनीन का लक़ब अता हुआ।
- जंगे ख़न्दक़ और जंगे अहज़ाब एक ही ग़ज़वा का नाम है।
- ग़ज़्व–ए–रजीअ़ के मौक़ा पर हज़रत आसिम बिन साबित की लाश की हिफ़ाज़त भेड़ो (मक्खी के छत्तों) ने की थी।
- मुसलमानों के पहले जंगी बहरी बेड़े के अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस थे।
- कुरआन पाक में दो औरतों की शहादत का ज़िक्र आया है।
- कुरआन पाक में वलीद बिन मुग़ीरह को हरामज़ादा कहा गया है।
- वलीद बिन अब्दुल–मलिक ने मस्जिदे नबवी पर आबे ज़र से सूरतुश्शम्स लिखवाई।
- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा को जन्नत का अंगूर खिलाया था।
- हेरक़ल ने मन्नत मानी थी कि फारस फतह हो गया तो पा प्यादा बैतुल–मक़्दिस का हज अदा करूंगा और उसकी मन्नत पूरी हो गई।
- जन्नतुल–बक़ीअ़ में हज़रत असद बिन ज़रा को ज़िन्दा दफन किया गया था।
- मलिक–ए–सबा जो यमन की हुक्मरां थी उसका दारुल–ख़िलाफ़ा मारब था।
- मिंजिनीक़ का फन अरबों ने हज़रत सलमान फार्सी से सीखा।
- करबला के शुहदाए किराम के क़ातिलों को मुख़्तार सक़्फ़ी ने क़त्ल किया।
- हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम और हज़रत ज़ुल–क़रनैन में चचाज़ाद भाई का रिश्ता है।
- यौमे ज़ीनत फिरऔन की सालगेरह का दिन मनाते हैं।

- ❖ हज़रत ईसा पर इंजील जबले साग़ैर में नाज़िल हुई।
- ❖ हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश की मैयत सबसे पहले सन्दूक़ में रखी गई।
- ❖ हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने २५ हज पैदल अदा किए।
- ❖ फ़त्हे मक्का के दिन सबसे पहले नमाज़े ज़ुहर की अज़ान हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हु ने दी।
- ❖ हज़रत उबैदा बिन जर्राह के दादा का नाम जर्राह था।
- ❖ हज़रत हलीमा सअ़दिया रज़ि अल्लाहु अन्हा का तअल्लुक़ बनी कौकब से था।
- ❖ हज़रत अबू उबैदा रज़ि अल्लाहु अन्हु को अमीनुल–उम्मत का लक़ब मिला था।
- ❖ हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को देख कर दस हज़ार यहूदियों ने इस्लाम कुबूल किया।
- ❖ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ुलेख़ा से दो औलाद हुईं।
- ❖ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा की दो शाखे़ थीं जो दो शोअ़लों की तरह रौशन थीं।
- ❖ तूफ़ाने नूह के बाद सबसे पहले शहर मदाइन आबाद हुआ।
- ❖ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने सलाम कहलवाया।
- ❖ फिरऔन के ख़ौफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने हज़रत मूसा को दरियाए कुल्ज़ुम में जुमा के दिन डाला था।
- ❖ तायफ़ के क़रीब बीरे तुग़ला में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना लुआब डाला था जिसकी वजह से आज भी वह पानी मीठा है।
- ❖ हज़रत अदी बिन हातिम सहाबी थे जो रोटियों का चूरा करके च्यूंटियों के बिलों में डालते थे।
- ❖ सूरः अहज़ाब में अल्लाह पाक ने अपने आपको कुरआन का मुहाफ़िज़ कहा।
- ❖ अल्लाह तबारक व तआला पूरे साल में एक लाख चौबीस हज़ार बलाएं नाज़िल करता है।
- ❖ कुरैश ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख़ालिफ़त में जो मुआहेदा बनू हाशिम के बाइकाट का लिखा था वह अहद

नामा मन्सूर बिन इकरमा ने लिखा था उस पर अल्लाह का ऐसा क़हर हुआ कि उसके दोनों हाथ शल हो गये थे।

- आसमान पर सबसे पहले अज़ान हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दी और ज़मीन पर हज़रत बिलाल ने।
- इमाम नौवी का क़ौल है कि क़रीबे क़्यामत आफ़ताब एक दिन तुलूअ् होगा फिर ज़वाल के वक़्त फिर मग़्रिब की जानिब लौट कर गुरूब होगा। बाज़ का क़ौल है आफ़ताब मग़्रिब से तीन दिन तुलूअ् होगा।
- बरोज़े क़्यामत अह्ले महशर की ज़बान सुरयानी होगी।
- बरोज़े महशर अल्लाह तआला बन्दों का हिसाब किताब सिर्फ़ चार दिन में लेगा और वह चार दिन चार हज़ार साल के बराबर होंगे।
- हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जहन्नम की पुश्त पर सात पुल बिछाए जाएंगे पुल सिरात की मसाफ़त पन्द्रह हज़ार साल होगी, पांच हज़ार चढ़ाई के, पांच हज़ार उतार के और पांच हज़ार हम्वार के, दूसरी रिवायत में तीन सौ साल है यानी तीन हज़ार साल के बराबर।
- जन्नत में मर्दों की उम्र तैतीस (३३) साल होगी और औरतों की सतरह या अट्ठारह साल की होगी।
- हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जन्नत में जिस दरवाज़े से दाख़िल होंगे उसका नाम बाबुर्रहमा है।
- अल्लाह तआला ने हज़रत आदम पर ताबूते सकीना नाज़िल किया था जो वह अपने साथ ज़मीन पर ले आए थे उसमें तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तस्वीरें थीं। उनके मकानात की भी तस्वीरें थीं। यह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुंचा। इस ताबूत में हज़रत मूसा अपना असा और अपने कपड़े भी रखते थे। इसमें हज़रत हारून का अमामा, मूसा अलैहिस्सलाम के नअ्लैन और थोड़ा सा मन्ना व सल्वा था जो बनी इस्राईल के लिए नाज़िल होता था।
- ताबूते सकीना शमशाद की लकड़ी का ज़र्द सन्दूक़ था जिसका तूल तीन हाथ और अर्ज़ दो हाथ का था।
- हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन पर आने के बाद तीन सौ

बरस तक आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखा।

- ❖ हज़रत आदम को जब सरान्दीप (हिन्दुस्तान) (सलून) में उतारा गया आपके आंसू वहां के जंगलों में बह निकले तो उन आंसुवों के क़तरों से वहां दार चीनी और लोंग पैदा हुईं।
- ❖ और हज़रत हव्वा के आंसू बह कर समुन्द्र में जा मिले तो उस से सीप, मोती और लअ्ल पैदा हुए।
- ❖ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का क़द सत्तर गज़ था।
- ❖ क़ाबील को उसी के बेटों ने पत्थर मार कर हलाक कर दिया।
- ❖ हव्वा का क़द साठ हाथ दराज़ था।
- ❖ क़लम से लिखने की इब्तिदा हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम ने की।
- ❖ हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का जब नाक़ा उठाया जाएगा तो वह अपने मज़ार से उसी ऊंटनी पर सवार हो कर मैदाने हश्र में आएंगे।
- ❖ शबे मेअ्राज में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़मीन पर अंबिया की इमामत की और आसमान पर फ़रिश्तों की।
- ❖ **ला इलाहा इल्लल्लाह** में बारह हर्फ़ हैं इसी तरह मुहम्मद रसूलुल्लाह, अबू बकर सिद्दीक़, उमर बिन–ख़त्ताब, उस्मान इब्ने अफ़्फ़ान, अली बिन अबी तालिब, में भी बारह हुरूफ़ हैं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरा नाम अज़ान में सुना और मुहब्बत से अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए वह कभी नाबीना न होगा।
- ❖ दुरूदे ताज हज़रत ख़्वाजा अबुल–हसन शाज़ली ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िरी के वक़्त पेश किया था।
- ❖ शक़्क़े सुदूर चार मरतबा वाक़े हुआ। अव्वल जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाई हलीमा के घर में थे, दूसरी मरतबा जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सन्ने मुबारक दस बरस था, तीसरी मरतबा नुज़ूले वही से क़ब्ल, चौथी मरतबा शबे मेअ्राज में।
- ❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई बार रुकाना पहलवान से कुश्ती लड़ कर उसे पछाड़ा।
- ❖ मदीना मुनव्वरा में बाबे जिब्रील के क़रीब गुंबदे ख़िज़रा से मुत्तसिल सबसे बड़ा मीनारा है। अज़ाने तहज्जुद उसी मनारे पर से होती थी। अज़ाने तहज़्जुद के लफ़्ज़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सारी मस्जिदे नबवी रौशनी से मुनव्वर हो

जाती और एक साथ सारे दरवाज़े खुल जाते थे।

❖ १२३३ हिज. में तुर्की के सुल्तान महमूद बिन अब्दुल–हमीद ने गुंबद पर सब्ज़ रंग चढ़ाया जो आज तक वही सब्ज़ रंग मौजूद है।

❖ रिवायत है कि मदीने की घाटियों में फ़रिश्ते मुतऐयन हैं जो ताऊन की बीमारी और दज्जाल को रोकने के लिए हैं।

❖ जिन्न (जिन्नात) के मानी छुपी हुई मख़्लूक़ और इन्स (इंसान) के मानी हैं उन्सियत व मुहब्बत।

❖ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तैय्यबा में पांच बार नमाज़ में सह्व वाक़े हुआ अस्र की नमाज़ में पांच रकअतें पढ़ीं। दोम नमाज़े ज़ुहर में दो रकअत पर ही सलाम फेर दिया। सोम क़अ्दा औला तर्क हो गया चहारुम अस्नाए क़िरअत आयत छूट गई पांचवें मग़्रिब में दो ही रकअत पर सलाम फेर दिया।

❖ शक़्क़ुल–क़मर का मोजिज़ा हिन्दुस्तान में एक हिन्दू राजा ने देखा तब उसी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हदिया के तौर पर मिट्टी के घड़े में सोंट भेजा जिसे सहाबए किराम को खिलाया गया।

❖ एक क़ौल के मुताबिक़ हिन्दुस्तान में सत्तरह सहाबा किराम और नौ ताबईन के मुबारक क़दम ख़िलाफ़ते राशिदा के दौर में आ चुके थे।

❖ मक्का मुकर्रमा में सहाबियों में सबसे आख़िर में अबुत्तुफ़ैल आमिर बिन वासेला का इंतिक़ाल हुआ।

❖ और मदीना में सहाबियों में सबसे आख़िर वफ़ात पाने वाले हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह हैं।

❖ बीरे मऊना में सत्तर सहाब–ए–किराम शहीद हुए जो तमाम के तमाम हाफ़िज़े क़ुरआन थे जिनको क़ुर्रा कहते हैं।

❖ ग़ज़्व–ए–बद्र में हज़रत उकाशा के हाथ में लकड़ी थी। वह तल्वार बन गई थी जिसका नाम अरजून था।

❖ ग़ज़्व–ए–बद्र में आख़िर में शहीद होने वाले सहाबी हज़रत अबू सईद बिन मालिक थे।

❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे पहला ग़ज़्वा अबवा था।

❖ और सबसे आख़िर ग़ज़्वा ग़ज़्व–ए–तबूक था।

❖ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा ने पूरा क़ुरआन शरीफ़ नमाज़े इशा की

एक रकअत में ख़त्म किया है।

❖ हज़रत इमाम मालिक तीन साल मादरे शिकम में रहे।

❖ क़ब्ले मेअ्राज तहज्जुद फ़र्ज़ थी बाद में मन्सूख़ हो गई।

❖ शुरू–ए–इस्लाम में मदीना मुनव्वरा में खुतबा नमाज़े जुमा के बाद होता था।

❖ सांप बिच्छू जैसे मूज़ी को नमाज़ तोड़ कर मारने का हुक्म है।

❖ हश्र के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाक़ा अज़्बान पर सवार होंगी।

❖ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर बच्चे की नाफ़ में उसी मिट्टी का हिस्सा होता है जिस से वह बनाया गया है। यहां तक कि वह उसी जगह पर दफन होगा। अबू बकर और उमर उसी मिट्टी से बने हैं उसी में दफन होंगे।

❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत की उम्रें इसलिए कम हैं कि वह मक्कार दुनिया से जल्द छुटकारा पा सकें।

❖ हदीस में मन्कूल है कि दस आदमियों को ज़मीन नहीं खाती। (१) नबी (२) ग़ाज़ी (३) आलिम (४) शहीद (५) हाफ़िज़े कुरआन (६) मुअज़्ज़िन (७) निफ़ास की हालत में मरने वाली औरत (८) मज़्लूम जिस पर नाहक़ ज़ुल्म किया गया हो (९) मक़्तूल (१०) शबे जुमा या रोज़े जुमा को इंतिक़ाल करने वाला/वाली।

❖ हज़रत ओज़ैर ऐसे पैग़म्बर हैं जिनकी उम्र चालीस साल। फ़रज़न्द की उम्र एक सौ बीस साल और पोते की नव्वे साल थी। क्योंकि आपने सौ साल की मुद्दत में मौत में गुज़ारी और जब ज़िन्दा हुए तो खुद जवान थे मगर औलाद बूढ़ी हो चुकी थी।

❖ हलाल जानवर के यह आज़ा हराम हैं ख़ून, पित्ता, मसाना, फोता, तिल्ली, गुर्दा, ओझड़ी यह नजासत वाली चीज़ें हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन चीज़ों से बेहद नफ़रत थी आपको बकरी का सीना और दस्ते मरग़ूब थे।

❖ जानवर दो क़िस्म के हैं : दरियाई और खुश्की। दरियाई तमाम जानवर हराम है सिवाए मछली के।

❖ खुश्की की दो क़िस्में हैं। परिन्दे, चरिन्दे।

- ❖ चरिन्दों में गाय, बैल, भैंस, ऊंट, ख़रगोश, बकरी वग़ैरह हलाल हैं और दरिन्दों में कुत्ता, बिल्ली, शेर, चीता वग़ैरह हराम हैं।
- ❖ परिन्दों में मुर्ग़ी, बटेर, टिड्डा वग़ैरह हलाल हैं।
- ❖ चिड़ियों में बतख़ चील, कव्वा वग़ैरह हराम हैं।
- ❖ एक शख़्स हकीम लुक़्मान के पास आकर कहने लगा कि मुझे गुनाहों से बचने की दवा चाहिए आपने कहा तो ऐसा कर तौबा के पत्ते, शुक्र के फूल, इबादत के बीच, रियाज़त की जड़ें, हम वज़न लेकर मुजाहिदे के हावन दस्ते से कूट कर निदामत के आंसू से तर करके सब्र की आग पर पका कर उसमें इख़्लास की चाशनी डाल कर दिल की आहों से ठन्डा करके पी जा शिफ़ा हासिल हो जाएगी।
- ❖ करामिया एक फ़िर्क़ा है जिसकी बुनियाद अबू अब्दुल्लाह बिन किराम ने डाली। उसका बाप एक अंगूर के बाग़ में रखवाली करता था। अपनी इबादत व रियाज़त की वजह से लोग उसके मोतक़िद हो गये उसके अक़ाइद यह थे :
- ❖ ईमान न घटता न बढ़ता है अगर महज़ ज़बान से इक़रार कर ले चाहे वह दिल में कुफ़्रिया अक़ाइद रखता हो वह मोमिन है।
- ❖ अल्लाह तआला अर्श पर बैठा है और वह चाहे तो नीचे आ सकता है, ऊपर जा सकता। वह एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होता है।
- ❖ किरामिया के बारह फ़िर्क़े हैं इसके अलावा उनका यह भी अक़ीदा है कि अल्लाह तआला का हाथ पांव और चेहरा भी है।
- ❖ सबसे पहली किताब जिस में मुस्तक़िल तौर पर तसव्वुफ़ के मुतअद्दद मसाइल पर बहस की गई है उसका नाम अल्लमअ़ है उसके मुसन्निफ़ यहिया अस्सराज हैं जो ताऊसुल–फ़ुक़रा के नाम से पहचाने जाते हैं।
- ❖ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाब–ए–किराम के बाद ताबईन हुए ताबईन के बाद तबअ़ ताबईन हुए उसके बाद लोगों में तफ़रक़ा पड़ गया। जुदा–जुदा मरातिब पैदा हुए जो ज़ाहिद और आबिद थे वह अपने आपको जानशीन कहलाते। जिस से दीन में बिदअत का वजूद अमल में आया हर फ़िर्क़ा मुद्दई बन बैठा था चुनांचे अह्ले सुन्नत में ख़ास लोगों ने जिन्हों ने अपने इंफास को अल्लाह तआला के लिए वक़्फ़ किया तो उसका अमली नाम तसव्वुफ़ रखा।

❖ दुनियाए इस्लाम में अबू अब्दुल्लाह कुन्नियत वाले चार ज़बरदस्त फ़क़ीह गुज़रे, अबू अब्दुल्लाह बिन मालिक (२) अबू अब्दुल्लाह इमाम सुफ़ियान सूरी (३) अबू अब्दुल्लाह इमाम शाफ़ई और चौथे अबू अब्दुल्लाह इमाम अहमद बिन हंबल हैं।

❖ हज़रत इमाम शाफ़ई दधियाल की तरफ़ से क़ुरैशी हाशमी हैं क्योंकि आपके जद्दे अम्जमद साइबे रसूल थे।

❖ बद्र के मअ़रका में ईमान लाए इब्ने कल्बी ने रिवायत की कि आपके दादा की शक्ल हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलती थी।

❖ हज़रत अब्दुल–मुत्तलिब की कई बीवियां हुईं एक ख़ातून लुबना थीं उनके बतन से अबू लहब पैदा हुआ उसका असली नाम अब्दुल–उज़्ज़ा था वह बहुत ख़ूबसूरत था इसलिए उसकी कुन्नियत अबू लहब हुई और कुरआन मजीद में उसी कुन्नियत से उसका ज़िक्र हुआ दूसरी बीवी नबीला यह इस क़द्र दौलतमन्द थी कि बैतुल–हराम में ख़ान–ए–काबा पर रेशम का ग़िलाफ़ चढ़ाया उनके बतन से हज़रत अब्बास पैदा हुए।

❖ बचपन में हज़रत अब्बास गुम हो गये थे तो उन्होंने मिन्नत मानी कि अगर मेरा बेटा मिल गया तो मैं ख़ान–ए–काबा पर ग़िलाफ़ चढ़ाऊंगी। और जब हज़रत अब्बास मिल गये तो उन्होंने मिन्नत पूरी करने की ग़रज़ से ख़ान–ए–काबा पर ग़िलाफ़ चढ़ाई। उन्हीं के बतन से हज़रत ज़र्रार और क़सम पैदा हुए। बनू ज़हरा के क़बीले की लड़की हाला से हज़रत हम्ज़ा, अल–मक़ूम, मुग़ीरह और एक लड़की सफ़ीया पैदा हुईं। एक बीवी ममफ़ना से ग़ीदाक़ और एक बीवी फ़ातिमा से हज़रत अब्दुल्लाह और अबू तालिब और ज़ुबैर पैदा हुए। और पांच लड़कियां पैदा हुईं आतिका, अमीमा, बर्रह, बैज़ा और अरवा एक बीवी सफ़ीया से हारिस पैदा हुए।

❖ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा हाशिम की इक़बालमन्दी से उनके भतीजे उमैया अब्दुश्शम्स को हसद हो गया। उसने अरब के रिवाज के मुताबिक़ मज्लिस क़ाइम करके मुफ़ाख़िरत का चेलंज किया। मज्लिस में सालिस ने हाशिम की बरतरी का फ़ैसला दिया और उमैया को जलावतनी का हुक्म दिया और जुर्माने के तौर पर दो ऊंट देने पड़े इसलिए बनू हाशिम और

बनू उमैया में अदावत की बुनियाद पड़ी।

❖ ख़ार्जी के एक फ़िर्क़ा राफ़ज़ी ने इस ग़रज़ से कि हज़रत अली की मज़ार की बेहुर्मती न हो इसलिए उन्होंने आपके रौज़–ए–मुक़द्दस को पोशीदा कर दिया। एक मुद्दत तक किसी को पता न चला कि हज़रत अली का मज़ार कहां है। हारून रशीद के दौरे ख़िलाफ़त में एक रोज़ हारून रशीद शिकार के लिए अपने कुत्तों को लेकर जंगल में गया और कुत्तों को हिरन पर छोड़ा मगर न तो कुत्तों ने उन्हें पकड़ा और न हिरन डर कर भागी। हारून रशीद को तअज्जुब हुआ उसने तहक़ीक़ की तो पता चला कि उस जगह हज़रत अली का मदफन है तब उसने वहां रौज़ा तामीर किया। उस मक़ाम को अब नजफ़े अशरफ़ कहते हैं।

❖ अबू लहब का माना है शोअ्लों का बाप और यह कुन्नियत है एक सरदार क़ुरैश का नाम अब्दुल–उज़्ज़ा बिन अब्दुल–मुत्तलिब था और वह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चचा था। चूंकि उसका रंग निहायत सुर्ख़ और रुख़्सार आतिशे फ़िशां की तरह थे इसलिए लोग उसे अबू लहब कहने लगे कुरआन में इसी कुन्नियत अबू लहब के नाम से ज़िक्र आया।

❖ हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा के वालिद वालिदा और उन्हें ख़ुद भी हिजरत का शर्फ़ हासिल हुआ।

❖ हज़रत उम्मे सलमा का नाम हिन्दा था। आप पहले हज़रत अबू सलमा के निकाह में थीं जो ग़ज़्व–ए–उहद में ज़ख़्मी हो गये थे। इसी ज़ख़्म की वजह से आपका इंतिक़ाल हुआ आपके चार बच्चे थे ज़ैनब बिन्ते अबू सलम, अमर, दुर्रह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप से ४ हिज. में निकाह किया।

❖ उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा भी दो शौहरों की बेवह थीं आपको भी चार बच्चे थे आपने हिजरत से क़ब्ल निकाह फरमाया और मक्का में इंतिक़ाल फरमाया।

❖ उम्मुल–मुमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में बहुत कम मुद्दत में हयात रहीं सिर्फ़ छेः या आठ माह।

❖ हज़रत उम्मुल–मुमिनीन उम्मे सलमा के बेटे सलमा ने आपका निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया।

❖ सबसे ज़्यादा मुद्दते सोहबत पाने वाली हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा हैं जिन्होंने पचीस साल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिफ़ाक़त में गुज़ारे।

❖ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक गधा था जब किसी को बुलाना होता उसे भेजते वह सहाबी के मकान पर जाता और अपने सर से दरवाज़े को पीटता मालिक मकान बाहर आकर समझ जाता कि हुज़ूर ने याद फरमाया है।

❖ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिवाए क़ुसवा ऊंटनी के किसी सवारी पर वही नहीं उतरी।

❖ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सौ बकरियां थीं अगर एक भी ज़्यादा होती ज़बह कर दी जाती।

❖ ग़ज़्व–ए–उहद में हज़रत यमान जो हज़रत हुज़ैफ़ा के वालिद हैं मुसलमानों ही के हाथों धोखे से शहीद हो गये।

❖ ग़ज़्व–ए–बद्र में फ़रिश्ते इंसानी शक्ल में सफ़ेद लिबास और सफेद अमामा ज़ेब तन किए हुए घोड़ों पर सवार हो कर आए थे।

❖ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वक़्त फिरऔन यानी बादशाहे मिस्र का नाम रैय्यान था।

❖ अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बारह सौ ज़बानों में कलाम किया और यह कलाम आपके रोंगटों ने भी सुना।

❖ मरवी है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत यूशअ् अलैहिस्सलाम ख़लीफ़ा हुए उनकी वफ़ात के बाद बनी इस्राईल में बारह गरोह हो गये जिनमें ग्यारह गिरफ़्तार हो गये और एक गरोह जो हक़ पर था उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ की कि हम उन से बेज़ार हैं हमें उन से अलग कर दे। अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरते कामिला से उन्हें मुल्क चीन में पहुंचा दिया यह क़ौम अभी भी वहां पोशीदा तौर पर आबाद है। मेअ्राज की शब हुज़ूर वहां भी गये उन्हें कलिमा पढ़ा कर मुसलमान किया और क़ुरआन की आयतें सिखा कर अहकामे इस्लाम सिखाए।

❖ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में बनी इस्राईल के यहां हफ़्ते के दिन शिकार हराम था मगर उनके इम्तिहान के लिए हफ़्ते के दिन मछलियां बहुत आती थीं। बाज़ लोगों ने मछलियों की लालच में हलाल हराम की तमीज़ न की और मछलियों का शिकार

करने लगे खुदा की कुदरत से उस रोज़ मछलियां भी खूब आईं जिससे उनकी तिजारत और माल में इज़ाफ़ा हुआ। बाज़ लोगों ने उन से किनारा कशी अख़्तियार करके एक दीवार बना कर एलाहिदा–एलाहिदा रहने लगे।

❖ अल्लाह तआला की कुदरत से ऐसे नाफरमान इस्राईली गरोह के सबके सब लोग बन्दर हो गये। हक़ परस्त लोगों ने कहा हम न कहते थे कि हराम तिजारत मत करो यह उसी की सज़ा है।

❖ जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की रूह क़ब्ज़ करने की ख़बर हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम (मलकुल–मौत) ने सुनाई। तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे ज़ोर से तमांचा मारा कि उनकी एक आंख चली गई।

❖ कहा जाता है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सबसे पहले हज़रत जिब्रील ने सज्दा किया था इसलिए हज़रत जिब्रील को सबसे बड़ा रुतबा मिला यानी ख़िदमते अंबिया अलैहिमुस्सलाम का।

❖ बाज़ का क़ौल है कि हज़रत इस्राफील ने पहला सज्दा किया इसलिए उनकी पेशानी पर पूरा कुरआन लिखा है।

❖ हज़रत ईसा के बारह हवारियों ने माइदा की फरमाइश की तो हज़रत ईसा की दुआ से एक ख़्वान आसमान से उतरा जो सुर्ख़ ग़िलाफ़ से ढका हुआ था। उसमें सात मछलियां भुनी हुई बेग़ैर कांटे की थीं, जिससे रोग़न टपक रहा था। उनके सरों के आगे सिरका, दुम की तरफ़ नमक और आस पास सब्ज़ियां थीं, यह ख़्वान चालीस दिन तक आसमान से उतरता था।

❖ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ बनी इस्राईल जब मैदान तेया में अटक गये उन्हें कोई रास्ता न मिलता था तो हज़रत मूसा की दुआ से मैदाने तेया में मन्ना व सलवा आसमान की तरफ़ से आता था। मन जो शबनम सुबह को गिरती और बर्फ़ की तरह सफ़ेद, लज़्ज़त में घी और शहद की माजून की तरह होती थी और सलवा एक दरियाई परिन्दा जिसका क़द मुर्ग़ के बराबर और उसका गोश्त निहायत लज़ीज़ होता था। बाज़ कहते हैं कि यह पका हुआ आता था।

❖ मन सुबह सादिक़ से तुलूअ़ आफताब तक नाज़िल होता था। और

सल्वा अस्र के बाद नाज़िल होता था। मन हर शख़्स के लिए रोज़ाना एक साअ्। चार सैर के बराबर होता था।

❖ बनी·इस्राईल की तादाद छेः लाख थी।

❖ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने भी कभी कुएं, नदी का पानी नहीं पिया सिवाए बारिश के पानी के।

❖ हक़ तआला शैतान को एक लाख बरस तक जहन्नम में रखेगा फिर वहां से निकाल कर फरमाएगा तू अब भी आदम को सज्दा कर वह इंकार करेगा तब उसे दोबारा जहन्नम में डाला जाएगा हमेशा के लिए।

❖ सात पैग़म्बरों को इल्म की वजह से बड़े रुतबे अता हुए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा कराया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात हुई, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को क़ैद से रिहाई मिली, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को बिल्क़ीस जैसी हसीन बीवी और तख़्त ताज अता हुआ। दाऊद अलैहिस्सलाम को बादशाहत मिली और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने इल्मे लदुन्नी अता हुआ, हज़रत ईसा को तोहमत से बचाया और इल्म **माकाना वमा यकूनु** अता फरमा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरे मुबारक पर शफ़ाअत का ताज रखा।

❖ हज़रत सईद इब्ने जबीर फरमाते हैं कि हाबील का दुंबा आग उठा कर ले गई यह दुंबा जन्नत में रहा फिर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का फ़िदया बना।

❖ जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से तशरीफ़ लाए तो उनके चेहरे का रंग सियाह हो गया था। आपको अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि चांद की तेरह, चौदह और पन्द्रह तारीख़ का रोज़ा रखें। आप ने यह रोज़े रखने शुरू किए। हर दिन जिस्म का रंग खुलने लगा और पन्द्रहवीं को पूरा मुकम्मल रंग अपनी असली सूरत में हो गया।

❖ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तक यह रोज़े फ़र्ज़ थे अब यह रोज़े सुन्नत हो गये।

❖ अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर ताबूते सकीना नाज़िल फरमाया वह शमशाद की लकड़ी का तीन हाथ लम्बा दो

हाथ चौड़ा था जिस पर चांदी सोने का ख़ौल चढ़ा हुआ था। उसमें अंबियाए किराम और उनके मकानात की तसावीर थीं। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और आपके दौलत कदे की तस्वीर सुर्ख़ याकूत में थी और हुज़ूर को बहालते नमाज़ में अपने सहाबा के साथ दिखया गया था। यह सन्दूक़ दीगर अंबियाए किराम से मुन्तक़िल होता हुआ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुंचा। आप उसमें तौरेत की तख़्तियां अपना ख़ास सामान, असा, कपड़े, नअ्लैन रखते थे। हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का अमामा, असा और मन्ना व सल्वा थोड़ा सा था जो बनी इस्राईल पर उतरता था। मूसा अलैहिस्सलाम जंग के मौक़ा पर उस सन्दूक़ को आगे रखते थे। जिससे उन्हें फ़तह नसीब होती थी। अगर कोई मुश्किल दर पेश आती तो ताबूत को सामने रख कर दुआ करते दुआ क़ुबूल हो जाती थी।

❖ जब क़ौमे अमालिक़ा का तसल्लुत हुआ वह बनी इस्राईल से छीन कर ले गई उसकी बेहुर्मती होने लगी। लोगों ने उसे गन्दी जगह पर रखा इस बेअदबी की वजह से अमालिक़ा सख़्त मसाइब में घिर गये, जो लोग उस पर पेशाब करते वह बवासीर की मरज़ में मुब्तला हुए और अमालिक़ा की बस्ती बरबाद हो गई और जब उन्हें एहसास हुआ कि यह ताबूत की बेहुर्मती की वजह से हुआ है तो उसे बैल गाड़ी पर रख कर हांक दिया। फ़रिश्ते बैलों को हांकते हुए तालूत के पास ले आए तालूत ने जालूत का मुक़ाबला करके उसके ज़रिया फ़तह हासिल की।

❖ किसी ने एक बुज़ुर्ग से शिकायत की कि शैतान हमें बहुत परेशान करता है आपने शैतान से पूछा उसने जवाब दिया उन लोगों ने मेरी दुनिया पर क़ब्ज़ा कर रखा है मैंने उनके दीन पर क़ाबू रखा। यह लोग मेरी दुनिया छोड़ दें मैं उनका दीन छोड़ दूंगा।

❖ पहले वसीयत फ़र्ज़ थी लेकिन अब नहीं रही क्योंकि उस वक़्त तक़्सीमे माल पर वसीयत होती थी मगर अब आयाते मीरास ने हिस्से मुक़र्रर कर दिए जिस से वसीयत की ज़रूरत नहीं रही।

❖ वसीयत चार क़िस्म की फ़र्ज़ है। (१) अदाए ज़कात (२) अदाए क़र्ज़ (३) अदाए हज (४) अदाए रोज़ा।

❖ अगर मक़रूज़ अदाए क़र्ज़ की वसीयत करे और वारिस अदा न करे

तो मक़रूज़ का क़र्ज़ करने वाले पर नहीं बल्कि वारिसों पर होगा।

❖ बच्चे के अख़्लाक़ पर मां के दूध का असर ज़्यादा होता है। अगर मां नेक सालेहा हो तो बच्चा भी नेक सालेह होगा। अगर औरत बदकिरदार हो तो बच्चा भी बदकिरदार होगा। यहां तक कि अगर ग़ैर औरत ने भी दूध पिलाया तो उसका भी असर बच्चे पर पड़ता है।

❖ शौहर की मौत से औरत का निकाह नहीं टूटता मगर औरत की मौत से निकाह टूट जाता है। लिहाज़ा औरत अपने मरे हुए शौहर को बवक़्ते ज़रूरत गुस्ल भी दे सकती है और छू भी सकती है। मगर औरत की मैयत को शौहर न तो गुस्ल दे सकता न छू सकता है।

❖ इद्दत की मुद्दत चार तरह की है। (१) तीन माह (२) तीन हैज़ तक (३) चार माह दस दिन (४) बच्चे की विलादत तक।

❖ हज़रत जुनैद बग़दादी फरमाते हैं जिसने तकल्लुफ़न सिमाअ़ को चाहा उसके लिए फित्ना है मगर जिसे ख़ुद बख़ुद यह चीज़ हासिल हो उसके लिए राहत का सामान है। सिमाअ़ के लिए तीन चीज़ों की ज़रूरत है। ज़बान, मकान, अहबाब (नेक)।

❖ तुर्की के एक शहर इस्तंबूल में एक पहाड़ी पर एक महल है जहां हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबर्रुकात महफ़ूज़ हैं। उसमें एक सोने के सन्दूक़ में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चादर मुबारक रखी हुई है उसके अलावा अलमे नबवी जिसे तुर्की के ख़ुलफ़ा जंग में अपने साथ ले जाते थे। उसमें हिरन की खाल पर लिखा हुआ मशहूर मुसहफ़े उस्मानी भी रखा है। कहा जाता है कि उसी मुसहफ़ की तिलावत करते हुए हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए इस मुसहफ़ पर आज भी हज़रत उस्मान ग़नी के ख़ून के छींटे मौजूद हैं। उसके अलावा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लिखा हुआ ख़त भी है जिसे आपने मिस्र के बादशाह मक़ूक़श को भेजा था। उस ख़त पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहर भी मौजूद है।

❖ मुल्के सबा अरब का जुनूब मग़्रिबी इलाक़ा था जहां की मलिका का नाम बिल्क़ीस था। मुअर्रेख़ीन का बयान है यहां देवी, देवताओं की पूजा होती थी और माबूदे आज़म सूरज होता था।

❖ गुज़िश्ता उम्मतों में सिर्फ़ चार वक़्त की नमाज़ें थीं इशा की नमाज़ नहीं थी। सबसे पहले हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने इशा की नमाज़ पढ़ी।

❖ हदीस में वारिद है कि औरतों की अक़्ल भी नाक़िस और दीन भी नाक़िस है। अक़्ल की नाक़िस इसलिए कि दो औरतों की गवाही एक मर्द के बराबर है और दीन नाक़िस इसलिए है कि औरतों के मख़्सूस अय्याम में रोज़ा, नमाज़ मुआफ़ हुए हैं। जबकि मर्द के साथ ऐसा नहीं होता।

❖ कुफ़्फ़ारे अरब के बहुत से फ़िर्क़े थे उनमें एक फ़िर्क़ा "ज़िन्दीक़" कहलाता है। उनका अक़ीदा है कि अल्लाह तआला और इब्लीस मआज़ल्लाह आपस में भाई–भाई हैं। इंसान, बेज़रर जानवर और अच्छी चीज़ें अल्लाह तआला ने बनाईं और सांप बिच्छू जैसे मूज़ी जानदार और बुराइयां इब्लीस ने पैदा कीं। अल्लाह तआला को यज़्दान और इब्लीस को अहरमन कहते हैं। उस फ़िर्क़े का नाम मजूसी था, अरबी में उसे "ज़िन्दीक़" कहते हैं। क्योंकि उनका यह भी अक़ीदा था कि हमारा नबी ज़रतश्त है और उस पर आसमानी किताब उतरी जिसका नाम ज़िन्द है इसलिए उनका नाम ज़िन्दीक़ हुआ। अब हर मुंकिर हर बेदीन को ज़िन्दीक़ कहा जाता है।

❖ ग़ज़्व–ए–यमामा में क़बीला बनी हनीफ़ा की एक औरत ख़ौला बिन्ते जाफर को गिरफ़्तार हो कर आई जो हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के निकाह में आईं थीं उनके बतन से मुहम्मद बिन हनीफ़ा पैदा हुए उनकी औलाद अल्वी कहलाती है।

❖ रूम का बादशाह जिसे हेरक़ल भी कहते हैं। जिसके माना चीरना। चूंकि उसकी पैदाइश के वक़्त उसकी मां का इंतिक़ाल हुआ इसलिए उसके शिकम को चीरकर हेरक़ल को निकाला गया था। इसलिए उसका लक़ब क़ैसर हुआ।

❖ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तीन शख़्स मुझे न देख सकेंगे। (१) वालिदैन का नाफरमान (२) तारिके सुन्नत (३) मेरा तज़्किरा सुन कर मुझ पर दुरूद न भेजने वाला।

❖ दुनिया में सबसे पहला पहाड़ जो वजूद में आया वह जबले अबू क़ुबैस है। तूफ़ाने नूह के वक़्त हजरे अस्वद उसी में अमानत के तौर पर महफ़ूज़ रहा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा शक़्क़ुल–क़मर उसी पहाड़ पर से दुनिया वालों ने देखा।

❖ मदीना मुनव्वरा का नाम पहले यस्रिब था जो एक बुत का नाम था

जिसके मानी है फसाद करने वाला। हुज़ूर ने मदीना को यस्रिब कहने से सख़्ती से मना फरमाया।

❖ उलमा फरमाते हैं कि दूसरी मस्जिदों में सफ़ का दायां हिस्सा बाएं हिस्से से अफ़ज़ल है मगर मस्जिदे नबवी में बायां हिस्सा दाएं हिस्से से अफ़ज़ल है क्योंकि वह रौज़–ए–अक़्दस के क़रीब है।

❖ कोहे उहद जन्नत के दरवाज़ों का निगहबान है।

❖ फुक़्हा ने लिखा है कि जब अपने मुल्क या शहर में रह कर फराइज़े दीन अदा न कर सके और उसे पता हो कि फ़लां मुल्क या फ़लां शहर में फराइज़ की अदाइगी आसानी से हो सकती है तो इस मुल्क या शहर वग़ैरह की तरफ़ हिजरत करना वाजिब हो जाती है।

❖ हज़रत मुआज़ बिन अफ़रह ने जंगे बद्र में अबू जहल को वासिले जहन्नम किया उस वक़्त उनकी उम्र ग्यारह साल थी।

❖ रोज़े हश्र रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि अल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाक़ा अज़्बान पर सवार हो कर जन्नत में सबसे पहले जाएंगी। और अज़्बान की महार पकड़े लकड़हारे की बीवी होगी और उसी का क़दम सबसे अव्वल जन्नत में दाख़िल होगा।

❖ हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया हश्र का दिन पचास हज़ार बरस का होगा लेकिन मेरे उम्मती इतनी देर में पुल सिरात पर से गुज़रेंगे जितनी देर में दो रकअत नमाज़ होती है।

❖ हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इंसान के हर बच्चे की नाफ़ में उसी मिट्टी का हिस्सा होता है जहां वह दफन होगा। मैं अबू बकर, और उमर एक मिट्टी से बने हैं और उसी में दफन होंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीन गोई सहीह साबित हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर की क़ब्रे अनवर एक ही मक़ाम पर है गुंबदे ख़िज़रा में मदफून हैं।

❖ क़ारून जिस दिन धंसा तब से धंसता जा रहा है और रोज़ाना एक क़दे आदम के बराबर धंसता जा रहा है।

❖ दुनिया में चार मस्जिदें हैं जिनको नबी ने अपने हाथों से बनाया। (१) मस्जिदे बैतुल्लाह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने। (२) बैतुल–मक़्दिस हज़रत दाऊद,

ख़िज़्र और हज़रत सुलेमान अलैहिमुस्सलाम ने। (३) मस्जिदे कुबा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और (४) मस्जिदे नबवी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

- ❖ क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम का चचा ज़ाद भाई था।
- ❖ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उम्मते मुहम्मदीया को सलाम कहलवाया।
- ❖ हज़रत दानियाल ने दुआ की थी कि मुझे उम्मते मुहम्मदीया में उठाए।
- ❖ हज़रत इस्हाक़ की वालिदा ख़ुश नसीब ख़ातून हैं जिन के वालिद नबी, शौहर भी नबी, ससुर भी नबी और बेटा भी नबी था।
- ❖ अल्लाह तआला ने सूरः इख़्लास में अपनी वहदानियत का ज़िक्र किया। यासीन शरीफ़ में नेमतों का ज़िक्र किया।
- ❖ अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से दो हज़ार साल क़ब्ल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्मे गिरामी अपने इस्म के साथ जोड़ा।
- ❖ रूह के मुख़्तलिफ़ दरजात हैं, नबी, रसूल, वली, ज़ाहिद, आबिद, आरिफ़, साजिद, आमिल, आलिम, फ़ाज़िल, हमारे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम ख़ुसूसियात का मज्मूआ हैं।

अल्लाह तबारक व तआला ने बाज़ पैग़म्बरों को मुख़्तलिफ़ ख़िताबात से नवाज़ा, हज़रत आदम को सफ़ीयुल्लाह, हज़रत इब्राहीम को ख़लीलुल्लाह, हज़रत इस्माईल को ज़बीहुल्लाह, हज़रत मूसा को कलीमुल्लाह, हज़रत ईसा को रूहुल्लाह, और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा को रसूलुल्लाह (हबीबुल्लाह) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके अलावा ख़ुसूसी एजाज़ जो अता किया वह है रहमतुल–लिल–आलमीन यानी वह सारे जहां के लिए रहमत हैं।

- ❖ हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बासआदत के वक़्त हज़रत आमिना ज़ौजा अब्दुल्लाह के मकान की तरफ़ काबतुल्लाह झुक गया था।
- ❖ सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेअ्राज की शब बैतुल–हराम से बैतुल–मक़्दिस तक बुराक़ पर सफ़र तय किया। बैतुल–मक़्दिस से पहले आसमान तक एक सीढ़ी पर, वहां से सातवीं आसमान तक फ़रिश्तों के बाज़ुवों पर, वहां से

सिदरतुल–मुन्तहा तक हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के बाज़ू पर और वहां से अर्शे आज़म तक रफ़रफ़ पर तशरीफ़ ले गये और वापसी भी इसी तरतीब से हुई।

❖ आपको दोशंबा रजब की २७ वीं शब में मेअ़्राज अता हुई।

❖ मेअ़्राज के वक़्त रजब की २६ तारीख़ और २७ वीं शब में हुज़ूरे अकरम ने अंबियाए किराम की इशा की नमाज़ में इमामत फरमाई।

❖ शबे मेअ़्राज में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला से नब्वे हज़ार कलिमात समाअत फरमाए।

❖ मस्लके हनीफ़ा में उम्र में एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है मगर मस्लके शाफ़ई में दुरूद के बेग़ैर नमाज़ पढ़ना क़ुबूल न होगी।

❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बासआदत से पहले सात लोगों ने अपने लड़कों के नाम मुहम्मद रखा इस उम्मीद पर कि वही पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां होगा।

❖ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्मे मुबारक आसमान पर अहमद, ज़मीन पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ज़मीन के नीचे महमूद है।

❖ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्मे मुबारक अह्ले जन्नत के नज़्दीक अब्दुल–करीम है। दोज़ख़ियों के नज़्दीक अब्दुल–जब्बार है। तमाम फ़रिश्तों के नज़्दीक अब्दुल–हमीद है। अर्श वालों की ज़बान पर अब्दुल–मजीद है, तमाम नबियों के यहां अब्दुल–वहाब है शयातीन के मुंह पर अब्दुल–क़ादिर, जिन्नात की ज़बान पर अब्दुर्रहीम, पहाड़ों पर अब्दुल–ख़ालिक़, दरियाओं में अब्दुल–मुहैमिन, कीड़े मकूड़ों की ज़बान पर अब्दुल–ग़यास, तौरेत में मूज़–मूज़। इंजील में ताब–ताब ज़बूर में फारूक़ दीगर सहीफ़ों में आक़िब और रब्बुल–आलमीन के यहां ताहा, यासीन है।

❖ जिस तरह अल्लाह लफ़्ज़ चार हरफ़ों से मिल कर बना इसी तरह मुहम्मद भी चार हरफ़ों से बना जिस तरह अल्लाह में कोई नुक़्ता नहीं है इसी तरह मुहम्मद में भी नुक़्ता नहीं।

❖ हिन्दुस्तान के शहर दिया का राजा अपने महल से मोजिज़ा शक़्क़ुल–क़मर देख कर ईमान लाया और बारगाहे रिसालत में

अपना ऐल्ची भेज कर जवाइन और मटके इरसाल किए। उसका इस्लामी नाम अब्दुल्लाह है।

❖ सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुस्ल मुबारक का पानी चार शीशों में भर कर एक शीशी हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ली ताकि वह दीदारे इलाही के वक़्त एक क़तरा मोमिन की आंख में डाल दें ताकि दीदारे ख़ुदावन्दी की ताक़त हासिल हो। एक शीशी हज़रत हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम ने ली कि बरोज़े हश्र मोमिन के चेहरे पर छिड़क दे कि अहवाले क़्यामत में सख़्ती बर्दाश्त कर सके। एक शीशी हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम ने ली कि बन्द–ए–मोमिन को क़ब्र में मुंकिर नकीर के सवाल व जवाब में आसानी हो। एक शीशी हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम ने ली कि नज़अ् के वक़्त मोमिन को मौत की सख़्ती में आसानी हो।

❖ सफरे शबे मेअ्राज में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहले आसमान पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई, दूसरे आसमान पर हज़रत यहिया अलैहिस्सलाम से हुई। तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से हुई, चौथे आसमान पर हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम से पांचवें पर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से छठे आसमान पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से और सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई।

❖ हुज्जतुल–विदाअ् के मौक़ा पर आख़िरी ख़ुतबे के वक़्त **अल–यौमा अक्मलतु लकुम दीनुकुम।** उतरी उस दिन मुसलमानों की दो ईदें थीं। (१) हज्जे अकबर (२) जुमा का दिन, उस रोज़ यहूदियों की भी ईद थी। ईसाइयों की भी गुड फ्राईडे और मजूसियों की भी ईद थी एक दिन में छेः ईदें न उस से पहले हुई न उसके बाद हुई।

❖ अर्श एक तख़्ते मुजस्सम है जिसको ख़ुदा ने पैदा करके फ़रिश्तों को उसके उठाए रखने और ताज़ीम व तवाफ़ का हुक्म दिया, जिस तरह ज़मीन पर काबा बना कर बनी आदम को ताज़ीम व तवाफ़ का हुक्म दिया है।

❖ हदीस में वारिद है कि एक फ़रिश्ते ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया मैं अर्शे आज़म देखना चाहता हूं अल्लाह तआला ने उसे तीस

हज़ार पर अता फरमाए जिसके ज़रिया वह तीस हज़ार बरस तक उड़ता रहा इरशाद हुआ क्या तुमने अर्श देखा? फ़रिश्ते ने जवाब दिया इलाही अभी तक तो दसवां हिस्सा भी तय नहीं हुआ। इस से अन्दाज़ा नहीं लगा सकते हैं कि अर्श की उस्अत कितनी होगी।

❖ कअ्बतुल्लाह, बैतुल–मुक़द्दस से चालीस साल पहले बनाया गया।

❖ इमाम मालिक फ़रमाते हैं कि बैतुल–हराम तमाम दुनिया का क़िबला है और ख़ान–ए–काबा मस्जिदे नबवी का क़िबला है।

❖ मस्जिदे नबवी में बाबुस्सलाम पर दूसरा मीनारा तुर्की तरज़ पर तामीर हुआ जिसे नासिर बिन मुहम्मद क़लावों ने तामीर किया जिसकी बुलन्दी साठ मीटर है।

❖ जिस कुएं में हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहु अन्हु की मुहर की अंगूठी गिरी जो लाख ढूंढने के बावजूद भी न मिली उसका पुराना नाम बेरारेस था बाद में उसका नाम बीरे ख़ातम यानी अंगूठी वाला कुवां हुआ।

❖ ज़मान–ए–क़दीम से हज कअ्बतुल्लाह का ही हुआ। बैतुल–मक़्दिस का कभी नहीं हुआ।

❖ तफ़्सीरे मदारिक में मज़्कूर है कि अगर एक साल लोग ख़ान–ए–काबा का तवाफ़ न करें तो कअ्बतुल्लाह ग़ायब हो जाएगा और दुनिया बरबाद हो जाएगी।

❖ मक्का के मानी हैं चूस लेना, ख़ुश्क करना, चूंकि यह शहर हाजियों के गुनाहों को जज़्ब कर लेता है इसलिए उसे मक्का कहा जाता है।

❖ इंसान में चार सिफ़्तें चार अनासिर की वजह से पैदा हुईं। अव्वल तकब्बुर जो आग से पैदा हुआ। दूसरे शहवत जो हवा से पैदा हुई। तीसरे हिर्स जो पानी की फ़ितरत से पैदा हुई चौथे बुख़्ल जो ख़ाक की सिफ़त से पैदा हुआ।

❖ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत के दो गरोह नारे दोज़ख़ से महफ़ूज़ होंगे, एक वह जो हिन्द में जिहाद करेगा दूसरा वह जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ होगा।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

तेईसवां बाब

फ़ज़ाइले सुनन

बिस्मिल्लाह की फ़ज़ीलत :

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो भी काम बिस्मिल्लाह के बगैर किया जाए वह काम अधूरा रह जाता है। जब भी वुज़ू करो **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ कर शुरू किया करो क्योंकि जब तक वुज़ू कायम रहता तब तक किरामन कातेबीन नाम–ए–आमाल में हज़ार नेकियां लिखते रहते हैं। जो शख़्स एक बार **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ता है उसके लिए दस हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं।

हर काम बिस्मिल्लाह से शुरू किया जाए उसमें बरकत नाज़िल होती है। जब **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ा जाता है शैतान उस पर क़ब्ज़ा नहीं करता। सर में तेल डालते वक़्त, कपड़े पहनते वक़्त, पकाते वक़्त, खाते वक़्त कि उस में बरकत आती है।

तिलावत की फ़ज़ीलत :

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : कुरआन मजीद की एक आयत का हिफ़्ज़ करना हर मुसलमान मर्द, औरत, आक़िल, बालिग़ पर फ़र्ज़ ऐन है और पूरा कुरआन हिफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया है। सूरः फातिहा और एक छोटी सूरत या उसके मिस्ल तीन आयतें हिफ़्ज़ करना वाजिब है। कुरआन पाक देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल है क्योंकि यह देखना भी है और पढ़ना भी। तिलावत शुरू करने से पहले तअव्वुज़ यानी **अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम** और हर सूरत से क़ब्ल तस्मिया यानी **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ना सुन्नत है। तिलावत बावुज़ू, क़िबला रुख़ पाक साफ़ कपड़े पहन कर पाक जगह पर करे। नापाक जगह या नापाकी की हालत में तिलावत करना हराम है। अगर कोई मजमा में तिलावत कर रहा हो तो ख़ामोशी अख़्तियार करे। अगर बुलन्द आवाज़ से तिलावत करे तो तमाम हाज़िरीन ख़ामोशी से सुनें। तिलवात करते वक़्त ध्यान दे कि बुलन्द आवाज़ से न पढ़े जिस से मरीज़ को तक्लीफ़ पहुंचे या मरीज़ सोया हुआ हो या पड़ोस में कोई प्रोग्राम हो कि जिस से रियाकारी नज़र आए।

अगर कोई तिलावत में ग़लती कर रहा है तो उसकी इस्लाह करना वाजिब है। कुरआन पाक याद करके भुला देना गुनाहे कबीरा है। तिर्मिज़ी में रिवायत है कि जो कुरआन पढ़ कर भूल जाए बरोज़े क़यामत कोढ़ी उठेगा। कुरआने पाक, पाक साफ़ कपड़े में लपेट कर ऊंची जगह पर रखे न उसकी तरफ़ पीठ करे न पैर फैला कर बैठे। अगर कुरआन पाक

निहायत बोसीदा हो गया और पढ़ने के क़ाबिल न रहा तो उसे किसी पाक कपड़े में लपेट कर एहतियात की जगह लहद बना कर दफ़न कर दे। कुरआन पाक के ऊपर कोई चीज़ किताब वग़ैरह न रखे चाहे कुरआन पाक सन्दूक़ (पेटी) में क्यों न रखा हो। अगर कुरआन पाक ग़लती से हाथ से छूट जाए। या गिर जाए तो उसे तौला न जाए बाज़ लोग उसके वज़न की कोई चीज़ तौल कर तक़्सीम करते हैं। इसलिए कि उसका कोई कफ़्फ़ारा नहीं अल्बत्ता तौबा व अस्तग़्फ़िरुल्लाह पढ़ ले। या दो रकअत सलाते तौबा की नमाज़ पढ़ ले चूंकि कलाम पाक ऐसी किताब है जिस के एक ज़ेर, ज़बर की क़ीमत नहीं लगा सकते। अगर सज्द–ए–तिलावत आ जाए तो फ़ौरन खड़ा हो जाए सज्द–ए–तिलावत की नीयत करे और सीधे सज्दे में चला जाए एक सज्द–ए–तिलावत को एक सज्दा होगा। हन्फ़ी मस्लक की रू से चौदह सज्दे हैं शाफ़ई मस्लक के एतबार से कुरआन में कुल पन्द्रह सज्दे हैं यह एक सज्द–ए–इज़ाफी सत्तरहवें पारे के आख़िरी रुकूअ् में है। तिलावते कलाम पाक के दौरान जो आयत पढ़े उसका असर कुबूल करे। मसलन जहां ख़ुदा के ग़ैज़ व ग़ज़ब का ज़िक्र आए वहां डर, ख़ौफ़ पैदा करे। उसके अज़ाब से पनाह मांगे। जहां वईद का ज़िक्र आए ग़म व अफ़्सोस का इज़्हार करे। अगर रोना न आए तो रोनी सूरत बनाए जहां रहमत, मग़्फ़िरत जन्नत की ख़ुशख़बरी का ज़िक्र आए ख़ुशी व मुसर्रत से झूम जाए। जब सालेहीन का ज़िक्र आए उसका शुक्र अदा करे और खुश हो जाए ख़त्मे कुरआन पर ख़ुसूसी दुआ मांगे।

दुरूद व सलाम की फ़ज़ीलत :

अल्लाह तआला का फ़रमाने आली शान है :

"इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अलन्नबीए या ऐयुहल्लज़ीना आमनू सल्लू अलैहि व सल्लेमू तस्लीमा।

तरजमा : बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं ग़ैब बताने वाले पर, ईमान वालों उन पर ख़ूब दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

(१) क़्यामत के रोज़ लोगों में मेरे नज़्दीक सबसे ज़्यादा क़रीब वह होगा जो मुझ पर ज़्यादा दुरूद पढ़ेगा।

(२) जिसने मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और दस गुनाह मिटा देता है दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है।

(३) तुम अपनी मज्लिसों को मुझ पर दुरूद पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्योंकि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़्यामत तुम्हारे लिए नूर होगा।

(४) मुझ पर दुरूद पाक पढ़ने वाले के लिए पुल सिरात पर अज़ीमुश्शान

नूर होगा और वह अह्ले नार (दोज़ख़) से न होगा।

(५) बेशक बरोज़े क़्यामत वहशतों और दुशवार गुज़ार घाटियों से जल्द नजात पाने वाला वह शख़्स होगा जो मुझ पर दुरूद पाक पढ़ा करेगा।

(६) हौज़े कौसर पर क़्यामत के रोज़ कुछ गरोह आएंगे जिन में कसरत से दुरूद पाक पढ़ने वालों को पहचान लूंगा।

(७) जो मुझ पर दिन भर में दस हज़ार दुरूद शरीफ़ पढ़ा करेगा वह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले।

(८) जो मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा उसकी शफ़ाअत मैं करूंगा।

(९) जिस ने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा इस्मे मुबारक उस में रहेगा फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

(१०) जिस ने मेरी जानिब से कोई इल्म की बात लिखी और उसके साथ दुरूद पाक भी लिखा तो जब तक वह किताब पढ़ी जाएगी उसको सवाब मिलता रहेगा।

(११) जो मुझ पर दिन भर पचास मरतबा दुरूद पढ़ेगा क़्यामत के रोज़ मैं उस से मुसाफ़हा करूंगा।

(१२) जिसके सामने मेरा ज़िक्र हो और उस ने मुझ पर दुरूद न भेजा वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा।

(१३) हर बामक़्सद काम जो बेग़ैर ज़िक्रे दुरूद से शुरू किया जाए वह बेबरकत और ख़ैर से मुन्क़ता है।

(१४) तीन शख़्स मेरी ज़ियारत से महरूम रहेंगे। (१) वालिदैन की नाफरमान औलाद (२) मेरी सुन्नत का तारिक (३) जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह दरूद पाक न पढ़े।

सलाम की फ़ज़ीलत :

सलाम के बेहतरीन अल्फ़ाज़ अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

तरजमा : तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत व बरकत हो।

सलाम का जवाब : व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू व मग़्फ़िरतुहू।

तरजमा : और तुम पर भी सलामती हो और अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह की रहमत, बरकत व मग़्फ़िरत हो।

- ❖ जब किसी भाई से मुलाक़ात हो तो उसे सलाम करना सुन्नत है।
- ❖ जिन इस्लामी भाई को नहीं जानते उन्हें भी सलाम करना चाहिए।
- ❖ सलाम करने वाले पर नवीं रहमतें और जवाब देने वाले पर दस रहमतें नाज़िल होती हैं।

- ❖ सलाम इतनी ऊंची आवाज़ में करे कि सामने वाला अच्छी तरह से सुन सके।
- ❖ सलाम का फ़ौरन जवाब देना वाजिब है बिला उज़्र ताख़ीर की तो गुनहगार होगा।
- ❖ ग़ैर मुस्लिम को सलाम न करे अगर वह सलाम करे तो सिर्फ़ व अलैकुम कह दे।
- ❖ उंगलियों से सलाम यहूदियों और हथेली से सलाम ईसाइयों का तरीक़ा है।
- ❖ सलाम करते वक़्त रुकूअ़ की तरह झुकना हराम है।
- ❖ सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने आली शान है कि : सवार पैदल को सलाम करे। चलने वाला बैठे हुए को, छोटा बड़े को, पीछे से आने वाला आगे वाले को सलाम करे।
- ❖ अगर कुछ लोग जमा हों एक ने सलाम किया तो किसी भी एक का जवाब देना काफी है। अगर एक ने भी जवाब न दिया तो सब गुनहगार होंगे।
- ❖ कलाम से पहले सलाम करो।
- ❖ अगर ख़त वग़ैरह में पहले सलाम हो तो पहले जवाब दे बाद में ख़त पढ़े।
- ❖ अगर कोई ज़िक्रे इलाही, तिलावत में दुरूद व सलाम में मशग़ूल हो तो सलाम न करे।
- ❖ दर्स व तद्रीस या इल्मी गुफ़्तगू या हदीस की बातें हो रही हों तो सलाम न करे।
- ❖ खाना खाने वाले को सलाम न करे अगर कर लिया तो जवाब देने वाले को चाहिए कि मुंह में लुक़्मा न हो तो जवाब दे वरना जवाब वाजिब नहीं।
- ❖ साइल के सलाम का जवाब वाजिब नहीं जबकि वह भीख मांगने की ग़रज़ से आया हो।

मुसाफ़हा व मुआ़नक़ा की फ़ज़ीलत :

- ❖ दोनों हाथों से मुसाफ़हा करना सुन्नत है।
- ❖ जब दो भाई आपस में मिलें तो पहले सलाम करें फिर मुसाफ़हा करें।
- ❖ रुख़्सत होते वक़्त भी मुसाफ़हा करें मुसाफ़हा करते वक़्त सिर्फ़ उंगलियां ही न मिलाएं बल्कि हथेली से हथेली मिली हुई हो।
- ❖ मुसाफ़हा करते वक़्त गर्म जोशी से करे, दुरूद शरीफ़ पढ़े या यह दुआ पढ़े। **यग़्फ़िरल्लाहु लना व लकुम।**

- ❖ हर नमाज़ के बाद एक दूसरे से मुसाफ़हा सुन्नत है।
- ❖ मुसाफ़हा के साथ मुआनक़ा (गले मिलना) भी करना अफ़ज़ल है। सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।
- ❖ आलिम, उस्ताद, वालिदैन के हाथों को चूमना जाइज़ है।
- ❖ मुसाफ़हा के बाद अपना हाथ चूमना मक्रूह है।
- ❖ कुरआने करीम को चूमना सहाबा किराम की सुन्नत है।
- ❖ इस्लामी बहनें भी आपस में मुसाफ़हा कर सकती हैं और मुआनक़ा भी कर सकती हैं।
- ❖ इस्लामी बहनें पीर व मुर्शिद का भी हाथ नहीं चूम सकतीं बल्कि उन से पूर्दे का हुक्म है कि वह ग़ैर महरिम है।

घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब :

अगर किसी के घर गये तो दाख़िल होने से पहले सलाम करे बाहर से हरगिज़ न झांके। जब तक अन्दर से जवाब न आए अन्दर हरगिज़ हरगिज़ न जाए।

- ❖ अगर पूछा जाए कि कौन है तो अपना नाम बताए सिर्फ़ मैं हूं न कहे। अगर दाख़िले की इजाज़त मिली तो ठीक वरना बख़ुशी वापस लौट जाए कि हो सकता है किसी मज्बूरी की वजह से इजाज़त न दी हो।
- ❖ अगर दरवाज़े पर पर्दा पड़ा हो तो हट कर खड़ा हो।
- ❖ किसी के घर गये तो ताक झांक न करे।
- ❖ किसी कमी या ज़्यादती पर तन्क़ीद न करे।
- ❖ अगर किसी के यहां जाए तो कुछ न कुछ तोहफ़ा साथ ले जाए।
- ❖ अगर किसी ने खाने पीने की चीज़ें पेश कीं तो मना न करे थोड़ा सा ही क्यों न हो खा, पी ले कि मेज़बान की दिल आज़ारी न हो।
- ❖ वापसी के वक़्त अह्ले ख़ाना के हक़ में दुआ करे और शुक्रिया भी अदा करे।
- ❖ अगर मेज़बानी या मेहमान नवाज़ी में कोताही हो जाए तो पर्दा पोशी करे फ़ौरन तन्क़ीद न करे।
- ❖ अपने घर जाते हुए भी और आते हुए भी सलाम करे अगर अपने मकान में दाख़िल हो और घर में कोई न भी हो तो भी सलाम करे क्योंकि घर में भी रहमत के फ़रिश्ते होते हैं अगर घर में किसी जानदार की तस्वीर न हो हमारे आक़ा हर आशिक़ के घर तशरीफ़ रखते हैं और वह सलाम का जवाब भी देते हैं।

बात चीत के आदाब :

सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत करना मेरी सुन्नत है।

❖ छोटो के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजे में बात चीत करे। चिल्ला–चिल्ला कर बात करना ख़िलाफ़े सुन्नत है। बात करते वक़्त ताली बजाना हराम है। जब दूसरा बात कर रहा हो उसकी बात इत्मीनान से सुने उसकी बात काट कर अपनी बात कहना ख़िलाफ़े सुन्नत है। दौराने गुफ़्तगू बार–बार क़हक़हा मार कर हंसने से इंसान का वक़ार ख़त्म हो जाता है। ज़्यादा और फ़ुज़ूल बातें भी ख़िलाफ़े सुन्नत हैं। कोई हकला कर बात करने वालों की नक़ल न उतारे किसी का मज़ाक़ न उड़ाए। कभी–कभी मज़ाक़ भी झगड़े का बाइस बन जाता है। बात करने से पहले सलाम करना सुन्नत है। बात ठहर–ठहर कर करे कि सुनने वाले की समझ में आए।

फ़ुज़ूल बातों से बचना :

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि फ़ुज़ूल बातों से बचो जिस से दुनिया व आख़िरत में कोई फाइदा न हो। दुनिया में इ़ज़्ज़त न दौलत से मिलती है न ख़ूबसूरती से मिलती है। न ताक़त से मिलती है अगर इ़ज़्ज़त व अज़्मत मिलती है तो सिर्फ़ ज़बान से अगर ज़बान सीधी हो तो तमाम काम सीधे अगर ज़बान टेढ़ी तमाम काम टेढ़े होंगे।

अगर ज़बान सीधी है तो सारे आज़ा सलामत रहेंगे। मसलन अगर किसी को नाहक़ बुरा भला कहा तो सामने वाला भी चुप नहीं बैठ सकता और फिर दोनों फ़रीक़ैन में झगड़े का मौज़ू बन जाता है। ज़बान की हिफ़ाज़त न करने वाले पर शैतान ग़लबा पा लेता है। जिस्म का हर अज़्व अल्लाह तआला से ज़बान की शिकायत करता है। फ़ुज़ूल बातें करना जिहालत की अलामत है। एक दाना का क़ौल है कि चन्द बातें ऐसी हैं जिन से जिहालत की पहचान होती है।

1. ग़ुस्सा के वक़्त बेक़ाबू हो कर फ़ुज़ूल बात पर ग़ज़बनाक हो कर किसी इंसान की तमीज़ न कर सके।
2. अक़्लमन्द वह नहीं कि बेफाइदा गुफ़्तगू करे बल्कि अक़्लमन्दी उसमें है कि कम बोले मगर तौल कर बोले। जिहालत की एक अलामत यह भी है कि हर किसी के पास राज़ की बात कहता फिरे।
3. झूठ बोलने वाले, चुग़ली खाने वाले, ग़ीबत करने वाले पर किसी का एतमाद नहीं होता। लोगों का उस पर से एतमाद, भरोसा उठ जाता है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का क़ौल है कि मुबारक है वह शख़्स जिसके कलाम में अल्लाह का ज़िक्र हो। जिसकी ख़ामोशी में फ़िक्रे

आख़िरत हो। हदीस पाक में आया है कि घड़ी भर के ग़ौर व फ़िक्र (आख़िरत) से एक साल की इबादत का सवाब मिलता है। महज़ लज़्ज़त के लिए ज़्यादा खाने पीने की क़ुरआन में मज़म्मत आई है। जहां ज़्यादा खा लिया तो हंसी मज़ाक़ सूझती है और ज़बान बेक़ाबू हो जाती है और वह बक–बक करता रहता है अगर पेट भर कर खाना न मिले तो वह गुस्सा हो कर ख़ामोशी अख़्तियार करता है।

तल्वार का ज़ख़्म भर जाता है मगर ज़बान का ज़ख़्म नहीं भरता। ख़ामोश रहने वाला दूसरों की ज़बान आसानी से समझ लेता है। ज़बान संभालना माल से ज़्यादा दुशवार है। ज़्यादा बातूनी को अक्सर पछताना पड़ता है। क्योंकि वह बक–बक में ऐसी बात कह देता है जो नहीं कहना चाहिए।

❖ हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : हलाकत है उसके लिए जो मज़ाक़ में लोगों को हंसाता है और झूठ बोलता है।

छींकने की सुन्नतें व आदाब :

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब छींक आती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुंह को हाथ या कपड़े से छुपाते थे हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है जब किसी को डकार या छींक आएं तो आवाज़ बुलन्द न करो कि शैतान को यह बात बेहद पसन्द है कि यह फ़ेअ्ल करने में आवाज़ बुलन्द हो।

छींक के वक़्त सर झुकाए, आवाज़ पस्त करे। जब छींक आए तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो फरिश्ते रब्बुल–आलमीन कहते हैं अगर अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आलमीन। कहे तो फ़रिश्ते दुआ करते हैं यरहमुकल्लाह।

छींकने वाला अगर अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आलमीन। कहता है तो उसकी सत्तार बीमारियां दूर होती हैं। छींक आने पर अल्हम्दुलिल्लाह कहना सुन्नत है। सुनने वाले पर वाजिब है कि फौरन उसके जवाब में यरहमुकल्लाह कहे इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला सुन सके अगर जवाब में ताख़ीर कर दी तो गुनहगार होंगे।

छींकने वाला ज़ोर से अल्हम्दुलिल्लाह कहे ताकि सुनने वाले जवाब दे सकें कि दोनों को सवाब मिलेगा।

नमाज़ के दौरान छींक आए तो अल्हम्दुलिल्लाह न कहे। काफिर की छींक का जवाब न दे। खुत्बे के वक़्त छींकने वाला आहिस्ता से अल्हम्दु लिल्लाह कहे ताकि सुनने वाला जवाब न दे। जहां कई लोग जमा हैं बाज़ ने भी जवाब दे दिया तो सबकी तरफ़ से जवाब हो गया छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है अगर वह दोबारा अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो दोबारा वाजिब नहीं अलबत्ता मुस्तहब है एक मज्लिस में किसी को कई मरतबा छींक

आए तो सिर्फ़ तीन मरतबा जवाब वाजिब है उसके बाद अख़्तियार है।

जमाही के आदाब :

जमाही शैतान की तरफ़ से है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है कि अल्लाह तआला को छींक पसन्द है और जमाही नापसन्द। जमाही से शैतान ख़ुश होता है। जमाही में मुंह खोलते वक़्त शैतान उसमें दाख़िल होता है। इसलिए जमाही को रोकना चाहिए। जब जमाही आए तो ऊपर के दांतों से निचले होंठ को दबाए या उलटे हाथ की पुश्त मुंह पर रखे अगर क़्याभे नमाज़ में जमाही आए तो सीधे हाथ की पुश्त मुंह पर रखे बाक़ी अरकान में उलटे हाथ की पुश्त रखे जमाही रोकने का तरीक़ा यह है कि अगर जमाही आए तो दिल में ख़्याल करे कि अंबियाए किराम को कभी जमाही नहीं आई। जमाही शैतान की तरफ़ से होती है और अंबियाए किराम शैतान के शर से महफ़ूज़ रहते हैं।

लिबास की सुन्नतें :

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सफेद रंग बेहद पसन्द था। जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। तहबन्द बांधना मर्दों के लिए सुन्नत है। मर्द मर्दाना, औरत ज़नाना ही लिबास पहने। आजकल बच्चों के कपड़ों पर कारटून की तस्वीरें होती हैं जो हराम है। चूंकि जिस घर में जानदारों की तस्वीरें हों वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते इसलिए अगर बच्चों को तस्वीर वाले लिबास पहनाएंगे तो फ़रिश्ते उनकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकेंगे। पाजामा या तहबन्द पांव के टखनों से ऊपर हो या पाजामा बैठ कर पहने। अमामा खड़े हो कर बांधे अगर उलटा किया तो ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस का इलाज नहीं अगर पाजामा पहने तो दायां पैर पाजामे में डाले फिर बायां पैर। पहले कुर्ता पहने फिर पाजामा। क़मीस पहनते वक़्त पहले सीधा हाथ आस्तीन में दाख़िल करे फिर उलटा हाथ डाले। कपड़े पहनते और उतारते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले उसकी बरकत से शैतान से सतरपोशी होती है कपड़े उतारते वक़्त उलटी तरफ़ से शुरू करे नया कपड़ा जुमा से पहनना शुरू करे कि सुन्नत है लिबास उतारे तो तह करके रखे वरना शैतान इस्तेमाल करता है।

पतलून, टाई, हैट और आधी आस्तीन की क़मीस, ईसाइयों का लिबास है।

मंगल के दिन सिलाई वग़ैरह का कपड़ा क़तअ़ न करे जल जाने, डूब जाने या चोरी होने का अन्देशा है मर्दों को रेशमी कपड़ा और भड़कदार रंगीन कपड़ा पहनना मना है। हुज़ूर पाक को नफ़रत थी।

खाना खाने की सुन्नतें :

खाना खाने से पहले दोनों हाथ धोना और खाना खाने के बाद भी दोनों

हाथ कलाई तक धोना और पानी से मुंह भी साफ़ करना सुन्नत है। खाना खाने से पहले जो हाथ धोए उन्हें न पोछे खाना खाने के बाद हाथ धोए तो वह पोछने में हरज नहीं। खाते वक़्त उलटा पैर बिछा दे और दायां पैर खड़ा रखे या सुरीन पर बैठे या दोनों घुटने खड़े रखे या दोनों ज़ानुवों से भी बैठ सकते हैं। खाने से पहले **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़े **बिस्मिल्लाह** ज़ोर से पढ़े ताकि दूसरों को भी याद आए अगर शुरू में **बिस्मिल्लाह** पढ़ना भूल जाए तो याद आने पर **बिस्मिल्लाह** अव्वल व आख़िर पढ़ ले।

रोटी के ऊपर सालन, तरकारी न रखे। हाथ रोटी से न पोछें। ज़मीन पर दस्तर्ख़्वान बिछा कर खाना सुन्नत है। टेक लगा कर, नंगे सर, एक हाथ ज़मीन पर टेक कर, जूते पहन कर, लेटे–लेटे या चार ज़ानों ज़मीन पर पालती मार कर न खाए। रोटी अगर दस्तर्ख़्वान पर पहले आ गई तो सालन का इंतिज़ार किए बेग़ैर खाना शुरू कर दे। अव्वल व आख़िर नमक या नम्कीन का इस्तेमाल करे इससे सत्तरह बीमारियां दूर होती हैं। रोटी एक हाथ से न तोड़े खाना दाएं हाथ से खाए न कि बाएं हाथ। रोटी तीन उंगलियों से यानी बीच की उंगली से खाए।

शहादत की उंगली और अंगूठे से खाए कि सुन्नत है अगर लुक़्मा, रोटी का टुक्ड़ा या नान का दाना गिर जाए तो साफ करके खा ले मग़्फ़िरत की बशारत है।

खाने में किसी क़िस्म का ऐब न निकाले। बर्तन के बीच में न खाए बल्कि अपने तरफ़ के किनारों से खाए। अगर एक ही पलेट में दूसरे भी खाने रखे हुए हों तो खा सकते हैं।

ज़्यादा गर्म न खाए न फूंक मार कर ठण्डा करे। खाने के दौरान अच्छी–अच्छी बातें करे फालतू बातें न करे और न ख़ामोश रहे। खाने के दौरान ऐसी बातें न करे जिस से घिन आए मिट्टी के बर्तन इस्तेमाल करना अफ़ज़ल है। जिस घर में मिट्टी के बर्तन हों फ़रिश्ते उस घर की ज़ियारत को आते हैं। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मीठी चीज़, हल्वा, शहद, सिरका, तरबूज़, खजूर, ककड़ी, कद्दू बेहद पसन्द थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सरीद (सालन में रोटी भिगोई हुई) रोटी भी पसन्द थी।

एक उंगली से खाना शैतान का तरीक़ा है। दो उंगलियों से खाना मग़रूरों का खाना है और तीन उंगलियों से खाना सुन्नत है। भूख के तीन हिस्से करे एक हिस्सा खाना, एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा। मसलन तीन रोटी में सैरी होती तो एक रोटी खाए एक रोटी के लिए जितना पानी पीते हैं उतना ही पिए बाक़ी हिस्सा ख़ाली छोड़ दिया जाए।

दोपहर के खाने के बाद क़ैलूला यानी आराम करे शाम के खाने के बाद

थोड़ा चहलक़दमी करे। खाने के बाद शुक्र के तौर पर अल्हम्दुलिल्लाह ज़रूर कहे।

खाने के बाद मिस्वाक करे कि उस से दो कम्सिन गुलाम आज़ाद करने का सवाब है काग़ज़ से हाथ पोंछना मना है। तौलिया से पोंछ सकते हैं। (बहारे शरीअ़त)

पानी पीने की सुन्नतें :

पानी बैठ कर पिए। पानी देख कर पिए। दाएं हाथ से **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर तीन सांस में पिए।

जब पानी पी चुके तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे। पानी चूस कर पिए गट–गट बड़े–बड़े घूंट न ले। पीने के बाद बचा हुआ पानी हरगिज़ न फेंके कि इसराफ़ है किसी और को पिला दे कि हदीस शरीफ़ में आया है कि : मोमिन के जूठे में शिफ़ा है।

आबे ज़मज़म या वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े हो कर पीना सुन्नत है जो दूसरों को पानी पिलाए वह आख़िर में पिए अगर किसी मज्लिस में पानी या शर्बत या चाय तक़्सीम करे तो पहले दाएं हाथ की जानिब से शुरू करे। सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मीठा मशरूब बेहद पसन्द था उसके अलावा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर कांच, मिट्टी या लकड़ी के बर्तन में पानी पिया करते थे।

मिस्वाक की फ़ज़ीलत :

मिस्वाक अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी का बेहतरीन ज़रिया है। हमेशा मिस्वाक करने से रोज़ी में बरकत होती है। दर्दे सर दूर होता है। बल्ग़म को दूर करती और नज़र को तेज़ करती है। मेअ़्दे को दुरुस्त करती। जिस्म को तवानाई बख़्शती है। क़ुव्वते हाफ़िज़ा को तेज़ करती और अक़्ल को बढ़ाता है। दिल को पाक करती है। नेकियों में इज़ाफ़ा करती है। फ़रिश्ते मुसाफ़हा करते हैं, खाना हज़्म करती है, बदन को क़ुव्वत अता करती है, नज़्अ़ के वक़्त आसानी होती है, ज़बान में कलिम–ए–शहादत जारी होता है। क़्यामत में नाम–ए–आमाल सीधे हाथ में दिलाएगी। पुल सिरात पर बिजली की तरह गुज़ारेगी। हाजात पूरी करने में मदद देती है, क़ब्र को वसीअ़ करती है, उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं। इंसान दुनिया से पाक साफ़ हो कर रुख़्सत होता है। रूह क़ब्ज़ करने के लिए मलकुल–मौत ऐसी शक्ल में आते हैं जैसे अंबिया की रूह क़ब्ज़ करने आते थे।

मिस्वाक की सुन्नतें :

मिस्वाक न बहुत नर्म हो न ज़्यादा सख़्त। पीलू, ज़ैतून या नीम की कड़वी लकड़ी की हो। मेवे या ख़ुशबूदार दरख़्त की लकड़ी न हो। बहुत

मोटी न हो। एक बालिश्त तक लम्बी हो। मिस्वाक सीधे हाथ से करे। मिस्वाक का तरीक़ा यह है कि इस तरह हाथ में हो कि हाथ की छंगुलियां मिस्वाक के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो। कम अज़ कम तीन मरतबा दाएं बाएं ऊपर नीचे मिस्वाक करे पहले सीधी जानिब ऊपर के दांतों पर मिस्वाक करे फिर उलटी तरफ़ भी ऊपर के हिस्से में करे। फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उलटी तरफ़ नीचे की तरफ़ मिस्वाक करे।

मुट्ठी बांध कर मिस्वाक न करे उस से बवासीर का अन्देशा है। मिस्वाक हमेशा खड़ी रखे यानी रेशा ऊपर की जानिब हो ज़मीन पर डालने या आढ़ी रखने से पागल होने का अन्देशा है। चित लेट कर मिस्वाक करने से तिल्ली बढ़ जाती है। बैतुल–खुला में मिस्वाक करना मम्नूअ् है। मिस्वाक को एक ही सिरे से इस्तेमाल करे। दोनों तरफ़ न करे। वुज़ू से क़ब्ल मिस्वाक करना सुन्नते मुअक्कदह है। मिस्वाक वुज़ू के लिए सुन्नत है नमाज़ के लिए नहीं। मुंह की बदबू दूर करने के लिए रोज़ाना मिस्वाक करे। अगर वुज़ू के वक़्त मिस्वाक न कर सके तो नमाज़ के वक़्त कर ले मिस्वाक जब क़ाबिले इस्तेमाल न रहे तो उसे फेंक न दे बल्कि किसी जगह एहतियात से रख दे या दफन कर दे या समुन्द्र में डाल दें क्योंकि वह आल–ए–सुन्नत है। मिस्वाक करना सुन्नत है जब चाहे कर सकते हैं। अगर मिस्वाक न हो तो उंगली या मोटे कपड़े से दांत साफ़ करे। अगर दांत न भी हों तो उंगली फिराए इस्लामी बहनें भी मिस्वाक कर सकती हैं।

पड़ोसियों के हुक़ूक़ :

एक सहाबी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पड़ोसी का हक़ अदा करो। वह यहां तक वसीयत करते रहे कि मुझे गुमान होने लगा कि पड़ोसियों को विरासत में हक़्दार न बना दें। ताजदारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया पड़ोसियों की तीन क़िस्म हैं बाज़ के तीन हक़ है। बाज़ के दो। बाज़ का एक।

(१) वह पड़ोसी जो मुसलमान होने के साथ–साथ रिश्तेदार भी हो उसके तीन हुक़ूक़ हैं। पड़ोसी, हक़्क़े इस्लाम, रिश्तेदारी।

(२) मुसलमान पड़ोसियों के दो हुकूक़ है। हक़्क़े पड़ोसी, हक़्क़े इस्लाम।

(३) काफिर पड़ोसी का सिर्फ़ एक हक़ है। वह है हक़्क़े पड़ोसी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम्हें मालूम है कि पड़ोसी के क्या हुक़ूक़ हैं? फिर फरमाया वह तुम से मदद मांगे तो मदद करो, वह क़र्ज़ मांगे क़र्ज़ दो, वह बीमार हो तो अयादत करो, जब उसे ख़ैर पहुंचे उसे मुबारकबाद दो, जब मुसीबत आए तो ताज़ियत करो, वह इंतिक़ाल कर जाए तो जनाज़े में शामिल हो (दुख में) बेग़ैर उसकी इजाज़त

अपनी इमारत की दीवार बुलन्द न करो, मेवे ख़रीदो तो उसके पास भी हदिया भेजा करो।

हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से मरवी है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर पड़ोसी का बच्चा आ जाए तो उसके हाथ में कुछ न कुछ दो कि वह ख़ुश हो जाए मज़ीद फरमाया कि चालीस घर हम्साइगी के हैं यानी चालीस इधर से चालीस उधर से और चारों सिम्त इशारा किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया जो अल्लाह और क़्यामत पर यक़ीन रखता हो उसे चाहिए कि पड़ोसी को तक्लीफ़ न पहुंचाए। उसकी इज़्ज़त करे और अच्छी बात करे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि पड़ोसियों को ईज़ा पहुंचाने वाला जहन्नमी है।

वह शख़्स जन्नत में दाख़िल न होगा जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी महफ़ूज़ न हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स फौत हो जाए और उसके तीन हम्साया उससे राज़ी हों तो शख़्स की मग़्फ़िरत होगी। मोमिन वह नहीं कि उसका पड़ोसी भूखा हो और वह पेट भर कर खाए। हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ मुसलमान औरतो! तुम भी ख़ूब अच्छी तरह से समझ लो कि पड़ोसन किसी पड़ोसन के लिए किसी चीज़ को हक़ीर न समझे ख़्वाह वह बकरी का घर ही क्यों न हो और फरमाया हम्साए का हक़ सिर्फ़ यह नहीं कि उसकी तक्लीफ़ को दूर करे बल्कि ऐसी चीज़ें भी उस से दूर करनी चाहिए जिन से उसे दुख, तक्लीफ़ पहुंचने का एहतमाल हो। ग़रीब और नादार पड़ोसियों को हक़ीर समझने के बजाए उसकी माली एआनत करे।

सोने और जागने की सुन्नतें :

सोने से क़ब्ल मिस्वाक करना सुन्नत है। बावुज़ू सोए। **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** पढ़ कर बिस्तर को तीन मरतबा झाड़ ले कि कोई मूज़ी जानवर कीड़े मकोड़े वग़ैरह हों तो निकल जाएं। सोने से क़ब्ल दुआ पढ़े **अल्लाहुम्मा बेइस्मिका अमूतु व अहया। (तरजमा)** ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम से सोता हूं। और जागता हूं। उलटा यानी पेट के बल न सोए कि दोज़ख़ियों का तरीक़ा है।

बेग़ैर मुंडेर की छत पर न सोए कि गिरने का ख़दशा है। अस्र के बाद न सोऐ अक़्ल ज़ाइल होने का ख़दशा है। ख़्याल रहे कि लेटते वक़्त जुनूब की तरफ़ पैर करके लेटे और शुमाल की तरफ़ सर रखे। सीधी करवट और सीधे गाल के नीचे हाथ रख कर सोए ताकि चेहरा क़िबला की जानिब हो। सोते वक़्त क़ब्र को याद करे। ज़िक्रे इलाही और दुरूदे पाक में मगन हो कर मदीने की गलियों में खो जाए। क़िबला और सरकारे दो आलम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़-ए-मुबारक की जानिब पैर न करे जो शुमाल मग़रिब के दर्मियान है कुरआन पाक और दीगर मज़्हबी किताबों की तरफ़ भी पैर न करे अगर वह ऊंची जगह पर हों तो जाइज़ है। दोपहर में क़ैलूला यानी कुछ देर लेटना सुन्नत है।

रात में अगर बुरा ख़्वाब देखे तो बाएं तरफ़ तीन मरतबा थूक कर **अऊज़ुबिल्लाह** पढ़ कर सीधी करवट सो रहे। अगर अच्छा ख़्वाब देखा तो अल्लाह की हम्द करे। **(अल्हम्दु लिल्लाह)** कहे। दो आदमियों का एक चारपाई पर एक चादर में एक तकिए पर सोना मना है। कभी चटाई पर सोए, कभी चमड़े पर, कभी चारपाई पर और कभी फ़र्श पर सोए सब सुन्नत है। लेटे हुए दुरूद पढ़े तो पांव समेट कर पढ़े। पैर फैला कर पढ़ना मक्रूह है। जागते ही सबसे पहले अल्लाह का ज़िक्र करके उठे जाग कर दुआ पढ़े। **अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअ्दा मा अमातना व इलैहिन्नुशूर।**

सो कर उठे तो पहले दोनों हाथ कुहनियों तक धोए। उठने के बाद बिस्तर को लपेट कर रखे वरना शैतान इस्तेमाल करता है।

रात में नींद से बेदार हो तो तहज्जुद अदा करे तो यह बड़ी सआदत मन्दी है। नींद से बेदार हो तो मिस्वाक करना न भूले ज़्यादा देर तक सोने से रहमत के फ़रिश्ते मकान में दाख़िल नहीं होते इसलिए सुबह जल्द उठ कर फज्र की नमाज़ का एहतमाम करे।

इत्र लगाने की सुन्नत :

मुश्क व अंबर क्या करूं ऐ दोस्त ख़ुशबू के लिए
मुझको सुल्ताने मदीना का पसीना चाहिए

सरकारे मदीना हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुशबू बेहद पसन्द थी और बदबू नापसन्द। यूं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वजूद ही ख़ुद क़ुदरती तौर पर महकता रहता था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पसीने का क्या कहना। खुद काइनात की ख़ुशबू आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पसीने के सामने हैच है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा उम्दा ख़ुशबू को पसन्द फरमाया। इसलिए उम्दा क़िस्म की ख़ुशबू इस्तेमाल करना सुन्नत है। हुज़ूर पाक अक्सर सर के बालों में और दाढ़ी मुबारक में भी ख़ुशबुवों का तेल लगाया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि मर्दाना ख़ुशबू वह है जिसकी ख़ुशबू ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर न हो और ज़नाना ख़ुशबू वह है कि उसका रंग ज़ाहिर हो मगर ख़ुशबू ज़ाहिर न हो। हदीस पाक से ज़ाहिर है कि इस्लामी भाईयों को अपने लिबास पर ऐसी ख़ुशबू इस्तेमाल करनी चाहिए कि जिसकी ख़ुशबू को फैले मगर रंग न फैले जैसे सन्दल, केवड़ा वग़ैरह और इस्लामी बहनें रंगदार ख़ुशबू जैसे हिना वग़ैरह इस्तेमाल कर सकती हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर ऊद की धोनी लेते थे। इस

तरह अगरबत्ती की ख़ुशबू जलाना जाइज़ है उस में कोई इसराफ़ नहीं है। बल्कि ख़ुशबूदार चीज़ें इस्तेमाल करना जैसे ऊद, अगरबत्ती, सन्दल वग़ैरह मर्द औरत सब इस्तेमाल कर सकते हैं। आजकल बाज़ारों में रेडी मेड (तैयार) ख़ुशबू का इस्प्रे मिलते हैं जिसमें अल–कोहल इस्प्रिट की आमेज़िश होती है जो हराम है इस्प्रिट वाले स्प्रे इस्तेमाल करना गुनाह है। किसी को तोहफ़ा दे तो उम्दा तोहफ़ा दे कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है।

सुरमा लगाने की सुन्नत :

सुरमा लगाना हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निहायत प्यारी सुन्नत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोने से क़ब्ल अपनी मुबारक आंखों में सुर्मा लगाया करते थे। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्मद सुर्मा पसन्द फरमाते थे। इब्ने माजा की रिवायत है कि तमाम सुर्मों में अस्मद सुर्मा बेहतरीन है कि निगाह को तेज़ और पल्कें उगाता है सोते वक़्त सुर्मा लगाना सुन्नत है। अस्मद सुर्मा अस्फ़हान में पाया जाता है उसका रंग सियाह होता है।

सुर्मा लगाने का तरीक़ा :

हदीस में आया है कि प्यारे रसूल सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों आंखों में तीन, तीन सलाइयां सुर्मा लगाते बाज़ औक़ात एक आंख में तीन दाएं आंख में तीन सलाइयां और बाएं आंख मुबारक में दो सलाइयां। बाज़ औक़ात दो–दो भी सलाइयां लगाया करते। इसीलिए हमें भी चाहिए कि तमाम सुन्नत पर अमल क़रें कि दाएं आंख में तीन और बाएं आंख में दो–दो सलाई लगाएं या दांए आंख में दो और बाएं आंख में एक लगाएं।

सर में तेल डालना :

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सरे अक़्दस में कसरत से तेल इस्तेमाल फरमाते और साथ ही साथ कंघी भी किया करते थे और बीच बालों में मांग भी निकाला करते थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरे मुबारक में तेल डालते तो अपने अमामा मुबारक और उसकी टोपी वग़ैरह को तेल के असर से बचाने के लिए सरे अक़्दस पर एक कपड़ा लपेट लिया करते थे।

हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिन के बाल हो उनको धोया करो तेल डाला करो, कंघा किया करो उसका एहतराम करो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बिखरे बाल पसन्द न थे। बिखरे बालों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शैतान से तशबीह फरमा दी। दाढ़ी में भी तेल लगा कर कंघी करना सुन्नत है।

सर में तेल डालने का तरीक़ा :

सर में तेल डालने से क़ब्ल बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़े वरना सत्तर (७०) शैतान सर पर सवार हो जाते हैं। तेल की शीशी बाएं हाथ में से दाएं हाथ की हथेली पर थोड़ा सा तेल डाले। फिर पहले सीधी आंख की अबरू पर तेल लगाए फिर बाएं की। उसके बाद सीधी आंख की पल्कों पर फिर उल्टी आंख की पल्कों पर फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर सर में तेल डाले तेल डालते वक़्त पेशानी की जानिब से इब्तिदा करे फिर दाएं तरफ़ फिर बाएं तरफ़ तेल लगाए।

कंघा करने की फ़ज़ीलत :

रिवायत है कि सरकारे मदीना अलैहिस्सलातु वस्सलाम का फ़रमान है कि जो शख़्स रोज़ाना रात में अपने सर और दाढ़ी में कंघा करता है वह तरह–तरह की बलाओं से महफ़ूज़ रहता है। उसकी उम्र दराज़ होती है। कंघा करने से तंगदस्ती दूर होती है। अबरूवों पर कंघा फेरने से वह वबा से महफ़ूज़ रहता है।

हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहमान सफ़्वी अलैहिर्रहमा नक़ल करते हैं कि जो इतवार को कंघी करे अल्लाह उसको कसीर खुशियां देता है। जो पीर के दिन करे उसके लिए आसानियां पैदा होती हैं। बुध को करे नेमतों की कसरत होती है। जुमेरात को करने से नेकियों में बरकत होती है जुमा को करने से खुशियां बढ़ती हैं और हफ़्ता के दिन करे तो दिल बुराई से पाक हो जाता है। कंघा सीधी तरफ़ से शुरू करना सुन्नत है।

नाख़ुन व बाल तराशने की सुन्नत :

दांत से नाखुन तराशना मकरूह है। इससे बरस (कोढ़) होने का अन्देशा है। चालीस दिन के अन्दर नाखुन और ज़ेरे नाफ़ बाल साफ करना सुन्नत है। बाल, नाखुन तराशने के बाद उसे दफ्न करना चाहिए। बैतुल–ख़ला, गुस्ल ख़ाना में नाखुन डालना मकरूह है। नाखुन काटने के बाद हाथ धोना अफ़ज़ल है।

नाख़ुन तराशने का तरीक़ा :

पहले दाएं हाथ की शहादत की उंगली का नाखुन काटे और छंगुली (छोटी उंगली) पर ख़त्म करे। फिर बाएं हाथ की छंगुलिया से शुरू करके अंगूठे पर ख़त्म करे और उसके बाद दाएं हाथ के अंगूठे का नाखुन तराशे। इसी तरह पैरों के नाखुन भी सीधे पैर से शुरू करके उलटे पैर पर ख़त्म करे।

दाढ़ी का ख़त बनाना जाइज़ है। मगर एहतियात करे कि एक मुट्ठी से कम न हो। एक मुट्ठी से कम करना हराम है। मोछों को कम करना सुन्नत है इतनी कम करे कि अबरू के मिस्ल हो जाए। मूए ज़ेरे नाफ़ को नाफ़ के नीचे से शुरू करे यह कि बाल ऐसी जगह न डाले जहां ग़ैर मर्द की नज़र पड़े क्योंकि औरत के बाल सतर में आते हैं। जनाबत की हालत में नाखुन काटना या बाल तराशना मकरूह है।